सामवेद

डा. रेखा व्यास

एम.ए. (संस्कृत), पी-एच.डी.

सामवेद

डा. रेखा व्यास
एम. ए., पी-एच. डी.

संस्कृत साहित्य प्रकाशन
नई दिल्ली

© संस्कृत साहित्य प्रकाशन
संस्करण : २०१५

ISBN 81-87164-97-2
वि. प्र.– 535.5H15*
संस्कृत साहित्य प्रकाशन के लिए
विश्व बुक्स प्रा. लि.
एम-१२, कनाट सरकस, नई दिल्ली-११०००१
द्वारा वितरित

अपनी बात

आमतौर पर सामवेद को ऋग्वेद के मंत्रों का संग्रह माना जाता है. छांदोग्य उपनिषद् में कहा भी गया है—'या ऋक् तत् साम' अर्थात् जो ऋक् है, वह साम है.

इस का यह अर्थ कदापि नहीं है कि सामवेद में समस्त छंद ऋग्वेद से ही लिए गए हैं. सामवेद की अनेक ऋचाएं ऋग्वेद से भिन्न हैं. कुछ स्थलों पर सामवेद की ऋचाओं में ऋग्वेद की ऋचाओं से आंशिक साम्य दिखाई देता है. इसे पाठभेद के रूप में भी स्वीकार नहीं किया जा सकता है. यदि यह पाठभेद होता तो ऋचाएं उसी रूप और क्रम में ली गई होतीं, जिस रूप और क्रम में वे ऋग्वेद में ली गई हैं.

दूसरी बात यह है कि यदि ऋग्वेद से केवल गायन के लिए ऋचाओं का सामवेद के रूप में संग्रह किया गया होता तो केवल गेय मंत्रों का ही संग्रह होना चाहिए था, जबकि उपलब्ध सामवेद में लगभग ४५० मंत्र पूरी तरह गेय नहीं हैं.

तीसरी बात यह है कि अगर सामवेद के मंत्र ऋग्वेद से उद्धृत माने जाएं, तो उन के रूप और स्वर निर्देश ऋग्वेद से भिन्न हैं. ऋग्वेदीय मंत्रों में उदात्त, अनुदात्त और स्वरित स्वर पाए जाते हैं, जबकि सामवेदीय मंत्रों में सप्त स्वर विधान है.

इन दृष्टिकोणों से देखने पर स्पष्ट प्रतीत होता है कि सामवेद के मंत्र ऋग्वेद से ऋण स्वरूप नहीं लिए गए हैं. उन की अपनी स्वतंत्र सत्ता है. वे उतने ही स्वतंत्र हैं, जितने ऋग्वेद के मंत्र.

हां, एक बात अवश्य है कि ऋग्वेद और सामवेद के मंत्रों में वर्ण्य विषयगत अंत:संबंध है. ऋग्वेद के समान सामवेद में भी अग्नि, इंद्र, सोम, अश्विनीकुमारों आदि की स्तुति की गई है. इसी माध्यम से उन का स्वरूप निर्धारित करने का प्रयास किया गया है.

ऋग्वेद के समान सामवेद से भी तत्कालीन उन्नत समाज का पता चलता है. चूंकि सामवेद ऋग्वेद के बाद की रचना है, इसलिए उक्त संदर्भ में सामवेद का अध्ययन रोचक ही नहीं, ज्ञानवर्द्धक भी हो सकता है. इतना ही नहीं, सामवेद का अध्ययन ऋग्वेद काल के पश्चात विकसित लोककला और संस्कृति को भी रेखांकित करता है.

इस प्रकार सामवेद को ऋग्वेद का पूरक कहा जा सकता है. इस की महत्ता ऋग्वेद से किसी भी रूप में कम नहीं मानी जा सकती है. इसीलिए यह वेदत्रयी (ऋक्, यजु और सामवेद) में गिना जाता है. गीता में उपदेशक कृष्ण ने 'वेदानां सामवेदो ऽ स्मि' कह कर सामवेद की विशिष्टता की ओर ही संकेत किया है.

यहां एक बात और ध्यान देने योग्य है कि आज 'वेद' शब्द भले ही चार वेदों—ऋक्, यजु, अथर्व और साम के साथ जुड़ कर ग्रंथवाची हो गया हो, किंतु मूल रूप में यह ज्ञान का ही बोधक रहा है. आरंभ में इन चारों को मिला कर एक ही 'वेद ग्रंथ' माना जाता था, जैसा कि महाभारत में कहा भी गया है—

एक एव पुरा वेदः प्रणवः सर्ववाङ्मयः.

बाद में आकारगत विशालता को देखते हुए इस के चार भाग किए गए—ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद और सामवेद. इन्हें 'चतुर्वेद' कहा जाता है. श्रुति परंपरा से पीढ़ी दर पीढ़ी निरंतर विकसित होते रहने वाले इस ज्ञान के भंडार का संभवतया प्रथम विभाजन व्यास ने किया था. यह विभाजन प्रमुखतया साहित्यिक विधाओं पर आधारित है—पद्य, गद्य और गान. सामान्यतया किसी भी भाषा का साहित्य इन्हीं तीन रूपों में पाया जाता है. इस दृष्टि से ऋग्वेद और अथर्ववेद पद्य प्रधान, यजुर्वेद गद्य प्रधान और सामवेद गान प्रधान हैं.

सामवेद की आचार्य परंपरा

सामवेद के आदि आचार्य जैमिनि माने जाते हैं. वायु, भागवत, विष्णु आदि पुराणों से भी इस कथन की पुष्टि होती है. पुराणों के अनुसार, वेदव्यास ने अपने शिष्य जैमिनि को सामवेद की शिक्षा दी थी. जैमिनि के बाद सुमंतु, सुन्वान, स्वकीय सूनु सुकर्मा तक पीढ़ी दर पीढ़ी यह अध्ययन परंपरा जारी रही. सुकर्मा ने सामवेद संहिता का व्यापक विस्तार किया.

पौराणिक उल्लेखों के अनुसार सामवेद की एक हजार शाखाएं थीं. आचार्य पतंजलि ने भी इस की पुष्टि की है—'सहस्रवर्त्मा सामवेदः.' आज इन में से केवल तीन ही शाखाएं मिलती हैं—कौथुमीय, राणायणी और जैमिनीय.

तीनों शाखाओं में उपलब्ध सामवेद की ऋचाओं की संख्या तो अलगअलग है ही, उन में पाठभेद भी मिलता है. ब्राह्मण तथा पुराण ग्रंथों के अनुसार, साम मंत्रों (ऋचाओं) के पदों की संख्या एक लाख से भी अधिक है लेकिन सामवेद की कुल उपलब्ध ऋचाओं की संख्या अधिक नहीं है.

सामवेद के मुख्यतया दो भाग हैं—आर्चिक और गान. आर्चिक का अर्थ है ऋचाओं का समूह. इस के दो भाग हैं—पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक.

पूर्वार्चिक में छह अध्याय हैं. हर अध्याय में कईकई खंड हैं. इन्हें 'दशति' भी कहा गया है. 'दशति' से दस (संख्या) का बोध होता है. किंतु हर खंड में ऋचाओं की संख्या १० नहीं है. किसी में यह संख्या १० से कम है तो किसी में ज्यादा भी. इसीलिए इसे 'दशति' न कह कर खंड कहना अधिक उचित प्रतीत होता है.

सामवेद के पहले अध्याय में अग्नि से संबंधित ऋचाएं हैं. इसलिए इसे 'आग्नेय पर्व' कहा गया है. दूसरे से चौथे अध्याय तक इंद्र की स्तुति की गई है. इसलिए यह 'ऐंद्र पर्व'

कहलाया.

पांचवां अध्याय पवमान पर्व कहलाता है. इस में सोम विषयक ऋचाएं हैं, जो ऋग्वेद के नवम मंडल से ली गई हैं. पहले से पांचवें अध्याय तक की ऋचाएं 'ग्राम गान' कहलाती हैं.

छठे अध्याय का शीर्षक है 'आरण्यक पर्व'. इस में यद्यपि देवताओं और छंदों की भिन्नता है तथापि इस में गायन संबंधी एकता दिखाई देती है. इस अध्याय की ऋचाएं 'अरण्य गान' कही गई हैं, पूर्वार्चिक के छह अध्यायों में कुल ६४० ऋचाएं हैं.

उत्तरार्चिक में २१ अध्याय हैं. ऋचाओं की संख्या १२२५ है. इस प्रकार सामवेद में कुल १८६५ ऋचाएं हैं.

यह अनुवाद

सामवेद की इन ऋचाओं का यह अनुवाद सायण भाष्य पर आधारित है, क्योंकि सायणाचार्य ने वैदिक ऋचाओं (मंत्रों) को समझने के लिए यास्काचार्य द्वारा निर्दिष्ट तीनों साधनों—परंपरागत ज्ञान, तर्क एवं मनन का पूरा सहारा लिया था. इस से भी बड़ी बात यह थी कि उन्होंने अन्य आचार्यों के समान वैदिक ऋचाओं को किसी विशेष वाद का चश्मा पहन कर नहीं देखा है.

सायणाचार्य ने वैदिक ऋचाओं के प्रसंग के अनुसार मानव जीवन, यज्ञ और अध्यात्म संबंधी अर्थ दिए हैं. वैसे अधिकतर अर्थ मानव जीवन से संबंधित ही हैं. यज्ञ और अध्यात्म से जुड़े अर्थ प्रायः कम स्थानों पर ही दिए गए हैं. इन्हीं कारणों से अनुवाद करते समय सायण भाष्य को आधार बनाया गया है.

अनुवाद के दौरान इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि सायणाचार्य का आशय पूरी तरह स्पष्ट हो जाए. अनुवाद की भाषा यथासंभव सरल एवं सुबोध रखी गई है, ताकि आम हिंदी पाठक भी आसानी से समझ सकें कि वास्तव में वेदों में क्या है!

— प्रकाशक

विषय सूची

पूर्वार्चिक

आग्नेय पर्व
पहला अध्याय
ऐंद्र पर्व
दूसरा अध्याय
तीसरा अध्याय
चौथा अध्याय
पवमान पर्व
पांचवां अध्याय
आरण्यक पर्व
छठा अध्याय

उत्तरार्चिक

पहला अध्याय
दूसरा अध्याय
तीसरा अध्याय
चौथा अध्याय
पांचवां अध्याय
छठा अध्याय
सातवां अध्याय
आठवां अध्याय
नौवां अध्याय

दसवां अध्याय
ग्यारहवां अध्याय
बारहवां अध्याय
तेरहवां अध्याय
चौदहवां अध्याय
पंद्रहवां अध्याय
सोलहवां अध्याय
सत्रहवां अध्याय
अठारहवां अध्याय
उन्नीसवां अध्याय
बीसवां अध्याय
इक्कीसवां अध्याय

पूर्वार्चिक

आग्नेय पर्व

अध्याय	खंड	विषय	मंत्र
१.	१.	अग्नि की स्तुति	१-१०
		यज्ञ पुरोहित	२
		धन के स्वामी	३
		धनदाता अग्नि	४
		सर्वश्रेष्ठ अग्नि	९
	२.	अग्नि की स्तुति	१-१०
		अग्नि की श्रेष्ठता	१
		ज्ञान के स्वामी अग्नि	२
		यज्ञ रक्षक अग्नि	७
	३.	अग्नि की स्तुति	१-१४
		सूर्य के रूप में अग्नि	११
		शत्रुनाशक अग्नि	१२
		कल्याणकारी जल	१३
	४.	अग्नि की स्तुति	१-१०
	५.	अग्नि के लिए आमंत्रण	१-१०
		अग्नि की स्तुति	२-६
		स्वर्ग के निवासी	७
	६.	धनदाता अग्नि	१-८
		कल्याणकारी यश	२
		अग्नि की स्तुति	३-८
	७.	उपासकों के लिए संबोधन	१-१०
		बाल एवं तरुण अग्नि	२
		मृत्युधर्मा मनुष्य	३
		अग्नि की स्तुति	४-१०
	८.	अग्नि की स्तुति	१-८
		कल्याणकारी पूषा देव	३
	९.	अग्नि की स्तुति	१-१०
	१०.	सोम, वरुण, अग्नि आदि का आह्वान	१-६
		अंगिरस	२
		अग्नि की स्तुति	३-६
	११.	अग्नि की स्तुति	१-१०
		अदिति देव	६
	१२.	अग्नि की स्तुति	१-८

		सुखशांति दाता	४
		देव श्रेष्ठ	६

ऐंद्र पर्व

२.	१.	उपासकों के लिए उद्‌बोधन	१-१०
		इंद्र की स्तुति	२
		गौओं की स्तुति	३
		उपासकों को सलाह	४
		इंद्र की स्तुति	५-८
		शूरवीर इंद्र	९
		अंतर्यामी इंद्र	१०
	२.	श्रेष्ठ वीर इंद्र	१-१०
		इंद्र की स्तुति	२-८
		चिर युवा इंद्र	९
		इंद्र की स्तुति	१०
	३.	मरुद्‌गणों का चाबुक	१-१०
		इंद्र की स्तुति	२-३
		देवताओं की स्तुति	४
		ब्रह्मणस्पति की स्तुति	५
		वृत्रासुर हंता इंद्र	६
		सूर्य की स्तुति	७
		समर्थ इंद्र	८
		बुद्धिमान इंद्र	९
		इंद्र की स्तुति	१०
	४.	इंद्र की स्तुति	१-१०
		सूर्य का दिव्य तेज	३
		इंद्र के सहायक पूषा	४
		धन संपन्न पृथ्वी	५
		इंद्र की स्तुति	६-९
		सोम और पूषा	१०
	५.	उपासकों का आह्वान	१-१०
		इंद्र की स्तुति	३-९
		उपासकों का आह्वान	१०
	६.	इंद्र की स्तुति	१-१०
		गायों के स्वामी इंद्र	४
		शत्रुनाशक इंद्र	५
	७.	इंद्र की माता	१-१०
		वेदानुसार आचरण	२
		अथर्ववेदी ब्राह्मण	३
		अपूर्व उषा	४

		इंद्र की स्तुति	५-९
		वायु से निवेदन	१०
	८.	वरुण, मित्र और अर्यमा	१-९
		इंद्र की स्तुति	२-४
		विद्या की देवी सरस्वती	५
		मनुष्यों में क्षमता	६
		इंद्र का आह्वान	७
		इंद्र, अर्यमा और वरुण	८
		धनवान इंद्र	९
	९.	इंद्र की स्तुति	१-१०
		महान इंद्र	३-४
		बृहत्साम	५
		ऋभु देव	६
		सर्वद्रष्टा इंद्र	७
		इंद्र की स्तुति	८
		इंद्र और पूषा	९
		वृत्रासुर संहारक इंद्र	१०
	१०.	भयनाशक इंद्र	१-१०
		इंद्र की स्तुति	२-१०
	११.	इंद्र और सोमरस	१-९
		इंद्र की स्तुति	२
		इंद्र का प्रश्न	३
		लोक की रक्षा	४
		मित्र और वरुण	५
		उषा	६
		मित्र व वरुण	७
		मरुत्	८
		वामन अवतार	९
	१२.	इंद्र की स्तुति	१-१०
३.	१.	इंद्र की स्तुति	१-१०
		धनवान व दु:खनाशक इंद्र	३-४
		शत्रुनाशक इंद्र	५
		तारनहार इंद्र	६
		इंद्र की स्तुति	७-८
		मरुद्गणों की स्तुति	९
		बलवान इंद्र	१०
	२.	उन्नतिशील इंद्र	१-१०
		इंद्र की स्तुति	२-१०
	३.	इंद्र की स्तुति	१-१०
		मित्र, वरुण और अर्यमा	३
		इंद्र की स्तुति	४

	यजमानों को संबोधन	५
	बृहत्साम स्तोत्र	६
	इंद्र की स्तुति	७-१०
४.	इंद्र की स्तुति	१-१०
	यशस्वी इंद्र	३
	सुखदायी मकान	४
	आश्रयदाता इंद्र	५
	इंद्र की स्तुति	६-१०
५.	इंद्र की स्तुति	१-१०
६.	इंद्र की स्तुति	१-१०
	वज्रधारी इंद्र	३
	सज्जन पालक इंद्र	४
	अश्विनीकुमारों की स्तुति	५
	पाप निवारक वरुण	६
	इंद्र की स्तुति	७-१०
७.	इंद्र की स्तुति	१-१०
	विभिन्न देवीदेवताओं की स्तुति	७
	प्रकाशमान इंद्र	८
	बलवान इंद्र	९
	वज्रधारी इंद्र	१०
८.	सूर्य पुत्री उषा	१-१०
	अश्विनीकुमारों की स्तुति	२-४
	पोषक इंद्र	५
	पुरोहित को संबोधन	६
	इंद्र की स्तुति	७-१०
९.	गाय के दूध से सोमरस	१-१०
	इंद्र की स्तुति	२-७
	सूर्य की स्तुति	८
	ब्रह्मतेज	९
	महावीर इंद्र	१०
१०.	सर्वप्रिय इंद्र	१-९
	मरुद्गणों की मित्रता	२
	अमिट महिमाशाली इंद्र	३
	अजातशत्रु इंद्र	४
	विजयदाता इंद्र	५
	कल्याणकारी इंद्र	६
	अन्नदाता इंद्र	७
	वसिष्ठ की स्तुति	८
	जलवर्षक इंद्र	९
११.	देवदूत गरुड़	१-१०
	रक्षक इंद्र	२
	वेगशील इंद्र	३

		शक्तिमान इंद्र	४
		इंद्र की स्तुति	६-१०
	१२.	इंद्र की स्तुति	१-१०
४.	१.	यज्ञ संचालक इंद्र	१-८
		पर्वतवासी इंद्र	२
		शत्रुजित इंद्र	३
		देवपालक इंद्र	४
		आनंददायी मरुद्गण	५
		हितकारी इंद्र	६
		दधिक्राव ऋषि	७
		विश्वपालक इंद्र	८
	२.	वीर इंद्र	१-१०
		सर्वज्ञ इंद्र	२
		शत्रुजित इंद्र	३
		क्षमतावान इंद्र	४
		इंद्र के लिए आमंत्रण	५
		इंद्र की स्तुति	६-७
		उषा की स्तुति	८
		देवताओं से प्रश्न	९
		यज्ञ सदन	१०
	३.	सेनानायक इंद्र	१-११
		जन कल्याण के लिए जलवर्षा	२
		स्वर्ग के स्वामी	३
		इंद्र की स्तुति	४-६
		धन के भंडार	७
		आत्मज्ञाता	८
		स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक	९
		सम्राट्	१०
		इंद्र का आह्वान	११
	४.	इंद्र की स्तुति	१-१०
		उपासकों के लिए उद्बोधन	२
		इंद्र के ओज की प्रशंसा	३
		इंद्र द्वारा सोमपान	४
		वीर इंद्र	५
		रसीला सोमरस	६
		सखाओं का आह्वान	७
		ब्राह्मणों के लिए उद्बोधन	८
		सब प्राणियों के स्वामी	९
		सब के कल्याण के लिए	१०
	५.	इंद्र की स्तुति	१-८
		आदित्यों की स्तुति	५

	विघ्न निवारक इंद्र	६
	आदित्यों की स्तुति	७
	अश्ववान	८
६.	भ्रातृ कलह से मुक्त	१-१०
	धनदाता इंद्र	२
	मरुद्गणों की स्तुति	३
	गायों के स्वामी	४
	बैल के समान बलवान इंद्र	५
	सम भाव वाले मरुद्गण	६
	इंद्र की स्तुति	७-१०
७.	सूर्य रूपी इंद्र की किरणें	१-१०
	स्वराज्य की स्थापना	२
	प्रसन्नता और उत्साह की कामना	३
	इंद्र की स्तुति	४-८
	सूर्य और चंद्र	९
	अश्विनीकुमारों की स्तुति	१०
८.	अग्नि की स्तुति	१-८
	उषा की स्तुति	३
	सोम की स्तुति	४
	इंद्र की स्तुति	५-६
	अग्नि की उपासना	७
	अर्यमा, मित्र और वरुण	८
९.	सोम की स्तुति	१-१०
	मरुद्गणों से रुद्र का संबंध	७
	ऊह स्तोत्र	८
	तेजोमय सविता	९
	प्रकाशमान सोम	१०
१०.	इंद्र की स्तुति	१-१०
	देव कृपा से धन प्राप्ति	५
	पवित्र गाएं	६
	धनधान्य	७
	इंद्र/मरुद्गणों की उपासना	९
	ब्राह्मण और गाथाएं	१०
११.	अग्नि की स्तुति	१-१०
	उषा की बहन रात	५
	इंद्र की स्तुति	६-१०
१२.	दिव्य गुण वाला सोमरस	१-१०
	प्रकाशमान सूर्य	२
	इंद्र की स्तुति	३-४
	अग्नि की उपासना	५
	एवयामरुत ऋषि	६
	हरित सोम	७

		सविता की उपासना	८
		अग्नि की उपासना	९
		श्रेष्ठ इंद्र	१०

पवमान पर्व

५.	१.	सोम की स्तुति	१-१०
		यज्ञ के समय	५
		सोम की स्तुति	६-१०
	२.	सोम की स्तुति	१-१०
	३.	शत्रुनाशक सोम	१-१०
		बुद्धिवर्धक सोम	२
		शुद्ध सोमरस	३
		वेगमान सोम	४-५
		मदमस्तकर्ता सोम	६
		सोम की स्तुति	७-१०
	४.	सूर्य के समान प्रकाशमान	१-१४
		बलदाता सोम	२
		निचोड़ा गया सोम	३-४
		सोम की उत्पत्ति	६
		सोम की स्तुति	७-१४
	५.	सोम की स्तुति	१-१२
		आनंददायी सोमरस	५
		शत्रुनाशक सोम	६
		धनदाता सोम	७
		आनंददायी सोमरस	८
		पवित्र और श्रेष्ठ सोम	९
		आनंददायी सोमरस	१०
		अन्नदाता सोम	११
		इंद्रप्रिय सोम	१२
	६.	सोम का आह्वान	१-१०
		प्रकाशमान सोमरस	२
		सोम स्तुति	३-४
		आनंदमय सोमरस	५
		सर्वदाता सोम	६
		रक्षक सोम	७
		पवित्र सोमरस	८
		इंद्रप्रिय सोमरस	९
		सोम स्तुति	१०
	७.	सोम की स्तुति	१-१२
		बलशाली सोम	६

		सूर्य द्वारा सज्जित सोम	७
		बलवर्धक सोमरस	८
		सोम की स्तुति	९
		देवताओं के पालक सोम	१०
		धन प्रदाता सोम	११
		स्तुतियां	१२
	८.	यजमानों को संबोधन	१-९
		पालनहार सोमरस	२
		सोम का आनंददायी स्वरूप	३
		आत्मज्ञाता सोम	४
		सोम की स्तुति	५
		इंद्रप्रिय सोमरस	६
		शत्रुहंता सोम	७
		गुणागार सोमरस	८
		यजमानों को संबोधन	९
	९.	दिव्यदृष्टि सोम	१-१२
		सोम की स्तुति	२-३
		मित्रवत सोमरस	४
		वेगवान सोमरस	५
		शक्तिदाता सोम	६
		कल्याणकारी सोम	७
		स्तुति सोम	८
		प्रकाशमान सोमरस	९
		मधुर सोमरस	१०
		आनंदमय सोमरस	११
		सामर्थ्यवान सोम	१२
	१०.	सोम की स्तुति	१-१२
		जल पुत्र सोम	५
		सोम की स्तुति	६
		पवित्र सोमरस	७
		सोम की स्तुति	८-१२
	११.	सोम की स्तुति	१-८
		शक्तिवर्धक सोमरस	४
		संतानदाता सोम	५
		पूजनीय सोम	६
		आनंददायी सोम	७
		शत्रुनाशक सोम	८

आरण्यक पर्व

६.	१.	इंद्र की स्तुति	१-९

		धन देने वाले इंद्र	२
		दानी इंद्र	३
		वरुण की स्तुति	४
		सोम की स्तुति	५-८
		अन्न देव द्वारा आत्मप्रशंसा	९
	२.	इंद्र की स्तुति	१-७
		सूर्य की स्तुति	२
		वज्रधारी इंद्र	३
		इंद्र की स्तुति	४
		प्रथ और सप्रथ	५
		वायु की स्तुति	६
		इंद्र की स्तुति	७
	३.	प्रजापति की स्तुति	१-१३
		सोम की स्तुति	२-३
		अग्नि की स्तुति	४
		स्तुतियों की उत्पत्ति	५
		आनंदकारी सोमरस	६
		आरामदायी रात्रि	७
		प्रकाशमान अग्नि	८
		देवगणों की स्तुति	९
		यजमानों की यशकामना	१०
		इंद्र की स्तुति	११
		सर्वस्वरूप आत्मा	१२
		रक्षक अग्नि	१३
	४.	अग्नि की स्तुति	१-१२
		ऋतुएं	२
		पूर्ण पुरुष	३-७
		स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक की स्तुति	
		इंद्र की स्तुति	९
		तेजस्विता	१०
		इंद्र की स्तुति	११-१२
	५.	अग्नि की स्तुति	१-१४
		अन्न देने व आयु बढ़ाने की प्रार्थना	
		सूर्य की स्तुति	२-१४

उत्तरार्चिक

१.	१.	यजमानों को संबोधन	१-९
		दिव्य सोमरस	२
		सोम की स्तुति	३
		उज्ज्वल सोमरस	४

		सोम की स्तुति	५-९
	२.	अग्नि की स्तुति	१-१२
		मित्र और वरुण की स्तुति	४-६
		इंद्र की स्तुति	७-९
		अग्नि की स्तुति	१०-१२
	३.	सोम की स्तुति	१-८
		उशना ऋषि	८
	४.	इंद्र की स्तुति	१-९
		आदरणीय सोम	४
		इंद्र की स्तुति	५-७
		सहायक इंद्र	८
		इंद्र की स्तुति	९
	५.	इंद्र हेतु सोमरस	१-१४
		राक्षसनाशक सोम	२
		सोम की स्तुति	३-५
		चमकीला सोमरस	६
		सेव्य सोमरस	७-८
		सोम की स्तुति	९
		यजमान सहायक सोमरस	१०
		दुष्टनाशक सोम	११
		कल्याणकारी सोम	१२
		मधुर सोमरस	१३
		व्यापक सोमरस	१४
	६.	यजमानों को संबोधन	१-१०
		कल्याणकारी अग्नि	२
		अग्नि की स्तुति	३-५
		इंद्र की स्तुति	६-१०
२.	१.	यजमानों को संबोधन	१-१२
		इंद्र की स्तुति	६-८
		सोमयज्ञ	९
		सोम की स्तुति	१०
		सोमयज्ञ	११-१२
	२.	इंद्र की स्तुति	१-१२
	३.	इंद्र की स्तुति	१-१२
		यजमानों को संबोधन	४, ५, ७, ९, ११
	४.	अग्नि की स्तुति	१-६
		उषा	३
		सूर्य	४
		अश्विनीकुमारों का आह्वान	५-६
	५.	ज्ञानवर्धक सोमरस	१-९
		प्रवहमान सोम	२

		प्रतिष्ठित सोम	३
		दिव्य सोमरस	४
		सर्वोपरि सोम	५
		परिष्कृत सोमरस	६
		सोम की स्तुति	७
		सोम का आह्वान	८
		यजमानों को संबोधन	९
	६.	घुलनशील सोमरस	१-११
		शक्तिमान सोमरस	२
		सभी देवों को प्राप्त सोम	३
		सोम की स्तुति	४
		वेगवान सोम	५
		यशदाता सोमरस	६
		सोमरस	७
		सोम की स्तुति	८
		पवित्र सोम	९
		हरा सोमरस	१०
		भृगु	११
३.	१.	सोम की स्तुति	१-१५
		स्फूर्तिदायी सोमरस	४
		सोम की स्तुति	५-१५
	२.	यज्ञ संचालक अग्नि	१-१३
		अग्नि की स्तुति	२-३
		मित्र और वरुण का आह्वान	४-६
		सामगान से इंद्र की स्तुति	७
		आभूषणधारी इंद्र	८
		इंद्र की स्तुति	९-१०
		इंद्र और अग्नि की उपासना	११-१३
	३.	सोम की स्तुति	१-६
	४.	इंद्र की स्तुति	१-६
		यजमानों को संबोधन	३
		रक्षक इंद्र	४
		इंद्र की स्तुति	५
		शस्त्रधारी इंद्र	६
	५.	सोम की स्तुति	१-९
		अपूर्व सोम	८
		हितकारी सोम	९
	६.	इंद्र की स्तुति	१-६
४.	१.	सोम की स्तुति	१-१४
	२.	अग्नि की स्तुति	१-१२

		मित्र की स्तुति	४-६
		मरुद्गणों की स्तुति	७-८
		इंद्र की स्तुति	९-१२
	३.	सोम की स्तुति	१-६
	४.	इंद्र की स्तुति	१-७
	५.	यजमानों की वाणी	१-९
		सोम की उपासना	२
		सोम की स्तुति	३-४
		इंद्र की स्तुति	५
		इंद्र के सखा	६
		पवित्र सोम ब्रह्मज्ञान के स्वामी	८
		सूर्य की स्तुति	९
	६.	यजमानों को संबोधन	१-८
		अग्नि की स्तुति	२
		इंद्र की स्तुति	३-८
५.	१.	सोम की स्तुति	१-१२
	२.	सोम की स्तुति	१-९
	३.	अग्नि की स्तुति	१-१२
		मित्र और वरुण की स्तुति	४-५
		यजमानों को संबोधन	६
		वैभववान इंद्र	७
		पर्वतपति इंद्र	८
		यजमानों को संबोधन	९
		अग्नि की स्तुति	१०-१२
	४.	सोम की स्तुति	१-८
		अरुण आभा वाला सोमरस	७
	५.	इंद्र की स्तुति	१-८
		राजा इंद्र	७
		यजमानों को संबोधन	८
	६.	सोम की स्तुति	१-११
		सूर्य की स्तुति	५
		सोमरस का परिष्करण	७
		सर्वलोक जनक सोम	९
		सर्वव्याप्त सोम	१०
	७.	यजमानों को संबोधन	१-९
		अग्नि की स्तुति	३
		इंद्र की स्तुति	४-५
		यजमानों को संबोधन	६
		इंद्र की स्तुति	७-९
६.	१.	सोम की स्तुति	१-१३

		इंद्र की स्तुति	८, १०
	२.	सोम की स्तुति	१-१४
	३.	अग्नि की स्तुति	१-१२
		सूर्य की स्तुति	४-५
		मित्र और वरुण की स्तुति	६
		इंद्र की स्तुति	७-१२
	४.	सोम की स्तुति	१-८
		इंद्र और सोम की स्तुति	८
	५.	इंद्र की स्तुति	१-६
	६.	सोम की स्तुति	१-१४
	७.	अग्नि की स्तुति	१-९
		ब्राह्मणों को संबोधन	४
७.	१.	सोम की स्तुति	१-१६
		शोधित सोमरस	९
		शक्तिदायी सोमरस	१२
	२.	सोम की स्तुति	१-१७
		यजमानों को संबोधन	४
		मददायी सोमरस	१५
	३.	अग्नि की स्तुति	१-१२
		मित्र और वरुण की स्तुति	४-६
		इंद्र की स्तुति	७-१२
	४.	सोम की स्तुति	१-८
	५.	इंद्र की स्तुति	१-९
	६.	सोम की स्तुति	१-१४
		यजमानों को संबोधन	६
	७.	अग्नि की स्तुति	१-९
		इंद्र की स्तुति	४-५
		चिकित्सा	६
		उपासकों को संबोधन	७
८.	१.	पोषक सोम	१-१२
		शत्रुहंता सोम	२
		सोम की स्तुति	३-५
		सोमरस का परिष्करण	६
		मादक सोमरस	७
		सोमरस का परिष्करण	८
		सोम की स्तुति	९-१०
		विद्वान सोम	११
		सर्वप्रिय सोमरस	१२
	२.	सोम की स्तुति	१-१२
		हरी आभायुक्त सोमरस	६

		यजमानों को आश्वासन	७
	३.	अग्नि की स्तुति	१-१२
		यजमानों को संबोधन	४-५
		मित्र और वरुण को संबोधन	६
		इंद्र की स्तुति	७-९
		बलशाली अग्नि	१०
		इंद्र की स्तुति	११-१२
	४.	परिष्कृत सोमरस	१-५
		सोम की स्तुति	२-३
		इंद्र की स्तुति	४
		इंद्र की अभ्यर्थना	५
	५.	यजमानों को संबोधन	१-९
		सोम की स्तुति	४-५
		इंद्र के निमित्त सोमरस	६
		सोम का परिष्करण	७
		सोमरस की उत्पत्ति	८
		पोषक सोमरस	९
	६.	अग्नि की स्तुति	९
		इंद्र की स्तुति	४-९
९.	१.	सोम की स्तुति	१-१२
	२.	वायु और इंद्र के निमित्त सोम	१-९
		ब्राह्मणों को संबोधन	२
		सोम की स्तुति	३-९
	३.	सोम की स्तुति	१-९
		यजमानों को संबोधन	२
		पवित्र सोमरस	५
		मधुमय सोमरस	६
	४.	सोम की स्तुति	१-५
	५.	सोम की स्तुति	१-९
		विकार रहित सोमरस	४
		इंद्र सहायक सोम	९
	६.	देवगणों को संबोधन	१-६
		अग्नि	२
		अग्नि की स्तुति	३
		समर्थ इंद्र	४
		बलिष्ठ इंद्र	५
		इंद्र की स्तुति	६
	७.	पुरोहितों को संबोधन	१-१०
		सोम की स्तुति	२
		यजमानों को संबोधन	३
		प्रशंसनीय सोमरस	४

		शस्त्रधारी सोम	५
		सोम की स्तुति	६
		इंद्र की स्तुति	७-१०
	८.	सोम की स्तुति	१-९
		तेजस्वी सोमरस	६
	९.	अग्नि की स्तुति	१-९
		प्रतिष्ठित अग्नि	२
		इंद्र की स्तुति	३-९
१०.	१.	रक्षक सोम	१-१३
		उत्प्रेरक सोमरस	२
		गर्भ स्वरूप सोम	३
		अमर सोम	४
		दिव्य सोम	५
		ऐश्वर्यशाली सोम	६
		पवित्र सोम	७
		स्वच्छ सोम	८
		शत्रुहंता सोम	९
		शत्रुजित सोम	१०
		सामर्थ्यवान सोम	११
		हरी आभायुक्त सोम	१२
		पोषक सोम	१३
	२.	शूरवीर सोम	१-८
		यज्ञ	२
		अन्न उत्पादक सोमरस	३
		यज्ञ हवि सोमरस	४
		रसराज सोम	५
		शक्तिशाली सोम	६
		क्षमतावान सोम	७
		मदकारी सोम	८
	३.	गतिमान सोम	१-६
		इंद्र के निमित्त सोमरस	२
		द्रुतगामी सोमरस	३
		सर्वद्रष्टा सोम	४
		सर्वधारक सोम	५
		इंद्र हेतु सोम	६
	४.	सर्वजनीन सोम	१-६
		अमर सोम	२
		देवप्रिय सोम	३
		शक्तिशाली सोम	४
		आनंदमय सोम	५
		बंधनमुक्त सोम	६

५.	स्फूर्तिदायी सोम	१-६
	सुखदाता सोम	२
	सर्वज्ञाता सोम	३
	स्फूर्तिदायी सोम	४
	बलवान सोम	५
	देव रक्षक सोम	६
६.	विघ्नहर्ता सोम	१-६
	विलक्षण सोम	२
	दुष्टहंता सोम	३
	प्रकाशमान सोम	४
	धनदाता सोम	५
	देव समर्थक सोम	६
७.	भाग्यवान यजमान	१-६
	सरस्वती	२
	कल्याणकारी मंत्र	३
	हितकारी मंत्र	४
	पवित्र मंत्र	५
	यजमान	६
८.	अग्नि की स्तुति	१-६
	महान इंद्र देव	४
	इंद्र की स्तुति	५
	इंद्र सहायक अग्नि	६
९.	सोम स्तुति	१-९
	श्रेष्ठ हवि सोमरस	४
	विलक्षण सोमरस	६
	दर्शनीय सोमरस	७
	सोम की काया	८
१०.	यजमानों को संबोधन	१-४
	दाता इंद्र	२
	इंद्र की स्तुति	३-४
११.	सोम की स्तुति	१-१५
	आनंदकारी सोमरस	७
	सर्वप्रिय सोमरस	८
	इंद्रप्रिय सोमरस	१४
१२.	युवा इंद्र	१-९
	यजमान मित्र इंद्र	२
	शत्रुहंता इंद्र	३
	संसार के ईश्वर इंद्र	४
	इंद्र की स्तुति	५-७
	यज्ञ में तत्पर इंद्र	८
	यज्ञ में आने का आग्रह	९

११.	१.	अग्नि की स्तुति	१-१०
		धन की इच्छा	५
		देवताओं की स्तुति	६
		देवतागण	७
		इंद्र की स्तुति	८-१०
	२.	जाग्रत सोम	१-१३
		पवित्र सोम	२
		अभीष्ट साधक सोम	३
		यजमानों को संबोधन	४
		शत्रुनाशक इंद्र	५
		इंद्र की अर्चना	६
		विश्व व्याप्त इंद्र	७
		सोम की स्तुति	८-१३
	३.	प्रसारित सोम	१-९
		प्रेरक सोम	२
		दिव्य रूप सोम	३
		नरों को संबोधन	४
		अग्नि की स्तुति	५-७
		सूर्य की स्तुति	८
		तेजस्वी सूर्य	९
१२.	१.	अग्नि उपासना	१-१०
		प्रकाशमान अग्नि	२
		कल्याणकारी अग्नि	३
		शत्रुजित अग्नि	४
		अग्नि स्तुति	५-७
		सेव्य सोमरस	८
		भ्राता समान सोम	९
		पोषक सोम	१०
	२.	इंद्र की स्तुति	१-७
		यजमानों को संबोधन	६
		सुखकारी सोमरस	७
	३.	अग्नि की स्तुति	१-९
		प्रकाशमान सोम	४
		सोम की स्तुति	५-६
		इंद्र की स्तुति	७-९
	४.	अग्नि की स्तुति	१-१०
		सोम की स्तुति	४-६
		इंद्र की स्तुति	७-८
	५.	अग्नि की स्तुति	१-११
		दिव्य सोमरस	४
		सर्वश्रेष्ठ सोमरस	५

		बुद्धिमान सोम	६
		इंद्र की स्तुति	७-८
		सोम उपासना	९
		अमृत ग्राही सोमरस	१०
		अमर सोम	११
	६.	सोम की स्तुति	१-९
		इंद्र की स्तुति	४-९
१३.	१.	सोम की स्तुति	१-९
		पवित्र सोम	५
		यजमानों को संबोधन	६-८
		पुरोहितों को संबोधन	९
	२.	यजमानों को संबोधन	१-९
		सोम की स्तुति	४
		मन के स्वामी इंद्र	५
		धन याचना	६
		इंद्र की स्तुति	७-९
	३.	प्रजापालक सूर्य	१-७
		दुष्टनाशक सूर्य	२
		क्षमतावान सूर्य	३
		इंद्र की स्तुति	४-७
	४.	सरस्वती की स्तुति	१-११
		सविता की उपासना	३
		ब्रह्मणस्पति की स्तुति	४
		अग्नि की स्तुति	५
		वरुण की स्तुति	६
		सत्यपालक वरुण	७
		मित्र की स्तुति	८
		अग्निस्वरूप सूर्य	९
		इंद्र की स्तुति	१०
		सूर्य की अभ्यर्थना	११
	५.	इंद्र की स्तुति	१-९
		सोम की स्तुति	३
		अग्नि की स्तुति	४-७
		बलवान अग्नि	८
		सर्वव्यापक	९
	६.	देवताओं को संबोधन	१-९
		सरल सोम	२
		इंद्र और अग्नि	३
		ब्रह्म	४
		इंद्र की स्तुति	५-६
		इंद्र हेतु सोम	७

		इंद्र की स्तुति	८-९
१४.	१.	यजमानों को संबोधन	१-१४
		इंद्र के अश्व	२
		इंद्र का सोमरस पान	३
		इंद्र की स्तुति	४-५
		अमृत तुल्य सोमरस	६
		भ्राता तुल्य सोम	७
		सोम की स्तुति	८
		अग्नि की स्तुति	९-१२
		कण्व ऋषि	१३
		इंद्र की स्तुति	१४
	२.	अग्नि की स्तुति	१-१०
		सोम की स्तुति	४-६
		यजमानों को संबोधन	७
		इंद्र की स्तुति	८-९
	३.	यजमानों को संबोधन	१-११
		होता अग्नि	२
		पथ प्रदर्शक अग्नि	३
		यज्ञ कराने वाले अग्नि	५
		अग्नि की स्तुति	६-११
	४.	अग्नि की स्तुति	१-११
१५.	१.	अग्नि की स्तुति	१-११
	२.	अग्नि की स्तुति	१-१०
	३.	अग्नि की स्तुति	१-८
	४.	अग्नि की स्तुति	१-९
१६.	१.	इंद्र की स्तुति	१-१२
		अग्नि की स्तुति	११-१२
	२.	वरुण की स्तुति	१-८
		इंद्र की स्तुति	२-५
		सोम की स्तुति	६-८
	३.	पूषा देव	१-१२
		मरुद्गणों की स्तुति	२-३
		स्वर्गलोक	४
		देवी	५-६
		इंद्र की स्तुति	७-९
		गौएं	१०
		सोमरस का विसर्जन	११
		यजमानों की याचना	१२
	४.	इंद्र की स्तुति	१-१२

		सोम की स्तुति	७-८
		सुख याचना	९
		सर्वद्रष्टा इंद्र	१०
		यजमानों को संबोधन	११-१२
१७.	१.	अग्नि की स्तुति	१-११
		यजमानों को संबोधन	४
		इंद्र की स्तुति	५-६
		विष्णु की स्तुति	९-११
	२.	वायु की स्तुति	१-११
		इंद्र की स्तुति	२-३
		सोम की स्तुति	४
		मददायी सोमरस	५
		सोम की उपासना	६
		अग्नि की स्तुति	७-९
		विघ्नहारी व रक्षक इंद्र	१०-११
	३.	यज्ञ	१-९
		इंद्र प्रशंसा	२
		सूर्य प्रशंसा	३
		इंद्र की स्तुति	४-९
	४.	अग्नि का आह्वान	१-९
		वृत्रासुरहंता इंद्र	५
		ओजवान इंद्र	६
		इंद्र स्तुति	७-८
		यजमानों को संबोधन	९
१८.	१.	यजमानों को संबोधन	१-१२
		इंद्र की स्तुति	२-७, ११-१२
		अग्नि की स्तुति	८-९
	२.	विष्णु प्रशंसा	१-१५
		यजमानों को संबोधन	३
		विष्णु	४
		यजमान	५
		प्रतिष्ठा स्थापित करना	६
		इंद्र की स्तुति	७-८, १०-११, १४-१५
		यजमानों को संबोधन	९
		पराक्रमी सोमरस	१२
		मनोहर सोमरस	१३
	३.	यजमानों को संबोधन	१-१५
		इंद्र की स्तुति	२-३, १०-१५
		ब्राह्मण	५, ७
		सोम की स्तुति	६

	४.	सोम की स्तुति	१-१२
		इंद्र की स्तुति	४-६
		अग्नि की स्तुति	७-१२
१९.	१.	अग्नि की स्तुति	१-१४
		सोम की स्तुति	४-७
		इंद्र की स्तुति	८-१४
	२.	सूर्य पुत्री उषा	१-१२
		उषा स्तुति	४, ७-९
		अश्विनीकुमारों की स्तुति	५-६, १०-१२
	३.	अग्नि स्तुति	१-९
		उषा स्तुति	४-६
		अश्विनीकुमारों की स्तुति	७-९
	४.	अग्नि की स्तुति	१-९
		उषा की स्तुति	४-५
		उषा और रात्रि	६
		अग्नि और उषा	७
		अश्विनीकुमारों की स्तुति	८-९
	५.	उषा की स्तुति	१-१०
		यजमानों को प्रलोभन	३
		अग्नि, सूर्य, उषा	४
		अश्विनीकुमार	५
		अश्विनीकुमारों को संबोधन	६
		सोम की स्तुति	७-१०
२०.	१.	सोम की स्तुति	१-१५
		इंद्र की स्तुति	४-९
		अग्नि की स्तुति	१०-१५
	२.	अग्नि की स्तुति	१-१०
		यजमानों को संबोधन	३
		इंद्र की स्तुति	४-५
		सोम की स्तुति	६-७
		सूर्य की स्तुति	९, १०
	३.	इंद्र की स्तुति	१-११
	४.	यजमानों को संबोधन	१-१२
		इंद्र की स्तुति	२-८
		सोम की स्तुति	९-१२
	५.	अग्नि की स्तुति	१-९
	६.	अग्नि की स्तुति	१-१२
		जाग्रतों के मित्र सोम	५
		जाग्रत अग्नि	६
		देवताओं को नमस्कार	७

	गेय ऋचाएं	८
	अग्नि की स्तुति	९-१२
७.	इंद्र की स्तुति	१-१५
	जल की स्तुति	४-६
	वायु की स्तुति	७-९
	अग्नि की स्तुति	१०-११
	यजमानों को संबोधन	१२
	वेन की स्तुति	१३-१५
२१.	इंद्र की स्तुति	१-२७
	पाप को संबोधन	१३
	मनुष्यों को संबोधन	१४
	अभिमंत्रित बाण	१५
	देवगणों को संबोधन	२६
	सर्वदेव उपासना	२७

पूर्वार्चिक

आग्नेय पर्व

पहला अध्याय

पहला खंड

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये. नि होता सत्सि बर्हिषि.. (१)

हे अग्नि! हम सब आप की स्तुति (पूजा) करते हैं. यज्ञ में आप को आमंत्रित करते हैं. आप आ कर कुश (घास) के आसन पर बैठिए. आप हवि (अग्नि में डाली जाने वाली पवित्र चीजें) देवताओं तक पहुंचाइए. (यह माना जाता है कि हम अग्नि में जो पदार्थ डालते हैं, वे अग्नि के द्वारा मंत्र से संबंधित देवता तक पहुंचते हैं). (१)

त्वमग्ने यज्ञाना ꣳ होता विश्वेषा ꣳ हितः. देवेभिर्मानुषे जने.. (२)

हे अग्नि! आप यज्ञों के पुरोहित हैं. आप सब का कल्याण करने वाले हैं. देवताओं ने ही आप को मनुष्यों (जनों) के बीच में स्थापित किया है. (२)

अग्निं दूत वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्. अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्.. (३)

हे अग्नि! आप सब कुछ जानने वाले हैं. आप धन के स्वामी हैं. इस यज्ञ को अच्छी तरह करने के लिए हम आप को दूत मान कर भेज रहे हैं. (हवि अग्नि के माध्यम से संबंधित देवता तक पहुंचती है, इसलिए अग्नि को देवता का दूत माना जाता है). (३)

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया. समिद्धः शुक्र आहुतः.. (४)

हे अग्नि! आप अपने पूजकों को धन देने वाले हैं. समिधा (जिस से यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित की जाती है) से आप को अच्छी तरह प्रकाशित किया गया है. आप हमारी स्तुति से प्रसन्न होइए. यज्ञ में विघ्न डालने वालों (राक्षसों एवं दुष्ट प्रवृत्तियों) को नष्ट कीजिए. (४)

प्रेष्ठं वो अतिथि ꣳ स्तुषे मित्रमिव प्रियम्. अग्ने रथं न वेद्यम्.. (५)

हे अग्नि! आप पूजकों को धन देने वाले हैं. उन्हें मित्र की तरह बहुत प्रिय हैं. मेहमान की तरह पूजा करने योग्य हैं. आप हमारी पूजा से प्रसन्न होइए. (५)

त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः. उत द्विषो मर्त्यस्य.. (६)

हे अग्नि! आप ईर्ष्याद्वेष करने वाले लोगों और दुश्मनों से हमें बचाइए. हे अग्नि! हमें बहुत सुखसंपन्नता प्रदान कीजिए. (६)

एह्यू षु ब्रवाणि ते ऽ ग्न इत्थेतरा गिरः. एभिर्वर्धास इन्दुभिः.. (७)

हे अग्नि! आप पधारिए. हम आप के लिए शुद्ध वाणी से मंत्र पढ़ रहे हैं. आप उन्हें सुनिए. सोमरस से आप समृद्ध बनिए. (७)

आ ते वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात्. अग्ने त्वां कामये गिरा.. (८)

हे अग्नि! हम आप के पुत्र हैं. मन से आप को आमंत्रित करना चाहते हैं. आप श्रेष्ठ जगह से भी हमारे लिए आइए. हम वाणी (मंत्र पाठ) से आप को भजते हैं. (८)

त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत. मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः.. (९)

हे अग्नि! आप सर्वश्रेष्ठ और सारे संसार के धारक हैं. अथर्वा (ऋषि) ने कमल के पत्तों पर अरणि (लकड़ी) मथ कर आप को उत्पन्न (प्रकाशित) किया. (९)

अग्ने विवस्वदा भरास्मभ्यमूतये महे. देवो ह्यसि नो दृशे.. (१०)

हे अग्नि! आप हमारी रक्षा कीजिए. स्वर्ग देने वाले इस काम को सिद्ध करिए (साधिए). आप ही हमें राह दिखाने वाले हैं. (१०)

दूसरा खंड

नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः. अमैरमित्रमर्दय.. (१)

हे अग्नि! बल चाहने वाले मनुष्य आप को नमस्कार करते हैं. मैं भी आप को नमस्कार करता हूं. आप अपने बल से दुश्मनों का नाश कीजिए. (१)

दूतं वो विश्ववेदस ꣳ हव्यवाहममर्त्यम्. यजिष्ठमृञ्जसे गिरा.. (२)

हे अग्नि! आप ज्ञान के स्वामी हैं. आप हवि को देवताओं तक ले जाने वाले हैं. आप देवताओं के दूत हैं. मैं आप की कृपा पाने के लिए प्रार्थना करता हूं. (२)

उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः. वायोरनीके अस्थिरन्.. (३)

हे अग्नि! यजमान की वाणी से प्रकट होने वाली श्रेष्ठ स्तुतियां आप का गुणगान कर रही हैं. हम आप को वायु के पास स्थापित करते हैं. (३)

उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्. नमो भरन्त एमसि.. (४)

हे अग्नि! हम आप के सच्चे भक्त हैं. दिनरात आप की पूजा करते हैं. दिनरात आप का

गुणगान करते हैं. आप हम पर कृपा करिए. (४)

जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय. स्तोम ꣳ रुद्राय दृशीकम्.. (५)

हे अग्नि! हम प्रार्थना कर के आप को आमंत्रित करते हैं. आप हम सब पर कृपा करने के लिए यज्ञ मंडप में आइए. दुष्टों का नाश करने वाले आप को हम सुंदर प्रार्थनाओं से बारबार आमंत्रित कर रहे हैं. (५)

प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे. मरुद्भिरग्न आ गहि.. (६)

हे अग्नि! आप इस उत्तम यज्ञ में सोमपान के लिए बुलाए जाते हैं. आप मरुतों (देवताओं) के साथ आइए. (६)

अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः. सम्राजन्तमध्वराणाम्.. (७)

हे अग्नि! आप प्रसिद्ध (यज्ञ के) पूंछ वाले घोड़े के समान हैं. आप यज्ञ के रक्षक हैं. हम प्रार्थनाओं से आप की पूजा व नमस्कार कर रहे हैं. अर्थात् जैसे घोड़ा अपनी पूंछ से कष्ट देने वाले मच्छर आदि हटा देता है, वैसे ही आप अपनी लपटों (ज्वालाओं) से हमारे कष्ट दूर कीजिए. (७)

और्वभृगुवच्छुचिमप्नवानवदा हुवे. अग्नि ꣳ समुद्रवाससम्.. (८)

हे अग्नि! आप समुद्र में रहने वाले हैं. भृगु और अप्नवान जैसे ऋषियों ने जिस तरह सच्चे मन से आप की प्रार्थना की, उसी तरह हम भी सच्चे मन से आप की प्रार्थना करते हैं. (८)

अग्निमिन्धानो मनसा धिय ꣳ सचेत मर्त्यः. अग्निमिन्धे विवस्वभिः.. (९)

हे अग्नि! मनुष्य मन लगा कर आप को तथा अपनी श्रद्धा को जगाता है. सूर्य की किरणों के साथ आप को प्रकाशित करता है. (९)

आदित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति वासरम्. परो यदिध्यते दिवि.. (१०)

हे अग्नि! स्वर्गलोक से ऊपर सूर्य रूप में अग्नि प्रकाशित होती है. तभी सब प्राणी उस प्रकाश वाले तेज का दर्शन करते हैं. (१०)

तीसरा खंड

अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्. अच्छा नप्त्रे सहस्वते.. (१)

हे ऋत्विजो (उपासको)! अग्नि तुम्हारे अहिंसक यज्ञों में सहायक, श्रेष्ठ (उत्तम), सब के हितकारी व बलशाली हैं. तुम ज्वालाओं (लपटों) से बढ़ते हुए अग्नि की सेवा में जाओ. (१)

अग्निस्तिग्मेन शोचिषा य ꣳ सद्विश्वं न्य ३ त्रिणम्. अग्निर्नो व ꣳ सते रयिम्.. (२)

अग्नि अपनी तेज लपटों से राक्षसों और अन्य विघ्नों को नष्ट करें. अग्नि हमें सब प्रकार का धन (सुख) प्रदान करें. (२)

अग्ने मृड महाँ अस्यय आ देवयुं जनम्. इयेथ बर्हिरासदम्.. (३)

हे अग्नि! आप हमें सुख दीजिए. आप महान व गतिशील यानी सामर्थ्यवान हैं. आप देवताओं के दर्शन के इच्छुक यजमान के पास कुश (घास) के आसन पर विराजने के लिए यहां पधारिए. (३)

अग्ने रक्षा णो अ ꣳ हसः प्रति स्म देव रीषतः. तपिष्ठैरजरो दह.. (४)

हे अग्नि! आप पापों से हमारी रक्षा कीजिए. आप दिव्य तेज वाले हैं. आप अजर (बुढ़ापे से रहित) हैं. आप हमारा नुकसान करने की इच्छा रखने वाले शत्रुओं को अपने तेजताप से भस्म कर दीजिए. (४)

अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः. अरं वहन्त्याशवः.. (५)

हे अग्नि! अपने तेज गति वाले श्रेष्ठ और कुशल घोड़ों को (यहां पधारने के लिए) रथ में जोतिए. (५)

नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं धीमहे वयम्. सुवीरमग्न आहुत.. (६)

हे अग्नि! हम आप की शरण में हैं. यजमान आप को आमंत्रित करते हैं. आप की पूजा करते हैं. आप की पूजा से सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं. हम ने हृदय से आप को यहां स्थापित किया है. (६)

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्. अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति.. (७)

हे अग्नि! आप सर्वोच्च (सब से ऊंचे) हैं. आप स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक का पालन करने वाले हैं. आप इन के स्वामी हैं. आप जल के सारे जीवों को जीवन देते हैं और काम में लगाते हैं. (७)

इममू षु त्वमस्माक ꣳ सनिं गायत्रं नव्य ꣳ सम्. अग्ने देवेषु प्र वोचः.. (८)

हे अग्नि! आप हमारी इस हवि को देवताओं तक पहुंचाइए. हम गायत्री छंद में आप की प्रार्थना कर रहे हैं. आप हमारी इन दोनों चीजों को देवताओं तक पहुंचा दीजिए. (८)

तं त्वा गोपवनो गिरा जनिष्ठदग्ने अङ्गिरः. स पावक श्रुधी हवम्.. (९)

हे अग्नि! गोपवन ऋषि ने आप को अपनी स्तुति से उत्पन्न किया है. आप अंगों में रस के रूप में निवास करते हैं. आप पवित्र करने वाले हैं. आप हमारी प्रार्थना सुनिए. (९)

परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्. दधद्रत्नानि दाशुषे.. (१०)

हे अग्नि! आप सर्वज्ञ व अन्नों के स्वामी हैं. आप हवि के रूप में दिए गए पदार्थों को

स्वीकार करते हैं. उन हवियों को व्याप्त करते हैं यानी देवताओं तक पहुंचाते हैं. आप दानशील लोगों को धनधान्य प्रदान करते हैं. (१०)

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः. दृशे विश्वाय सूर्यम्.. (११)

सारे भुवनों को देखने के लिए सूर्य की किरणें जिस से उत्पन्न हुई हैं, ऐसे सूर्य के रूप में वे अग्नि को भलीभांति धारण किए रहती हैं. (११)

कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे. देवममीवचातनम्.. (१२)

हे ऋत्विजो (यज्ञ करने वालो)! इस यज्ञ में आप सब ज्ञान वाले अग्नि की स्तुति कीजिए. वे सत्य धर्म से युक्त हैं. वे शत्रुओं का (रोगों का) नाश करने वाले हैं. (१२)

शं नो देवीरभिष्टये शं नो भवन्तु पीतये. शं योरभि स्रवन्तु नः.. (१३)

हमारा कल्याण हो. दिव्य जल हमारे पीने के लिए कल्याणकारी हो. जल रोग शांत करने वाला हो. जल सुखशांति देते हुए अमृत रूप में प्रवाहित हो. (१३)

कस्य नूनं परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते. गोषाता यस्य ते गिरः.. (१४)

हे अग्नि! आप सत्य (सज्जन) के पालनहार हैं. आप इस समय किस तरह के मानव के कर्मों को सत्य मार्ग (ब्रज) तक पहुंचा रहे हैं. किस कर्म से आप की कृपा गौओं को प्राप्त कराने वाली होगी. (१४)

चौथा खंड

यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा व दक्षसे.
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न श ꣳ सिषम्.. (१)

हे अग्नि! आप सब कुछ जानने वाले व अमर हैं. आप मित्र की तरह सहयोग करने वाले हैं. हम आप की स्तुति करते हैं. हे श्रोताओ! आप भी ऐसे अग्नि की स्तुति कीजिए. (१)

पाहि नो अग्न एकया पाह्यू ३ त द्वितीयया.
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो.. (२)

हे अग्नि! आप पहली स्तुति से हमारी रक्षा कीजिए. दूसरी स्तुति से हमें संरक्षण प्रदान कीजिए. तीसरी स्तुति से हमारी रक्षा (पालनपोषण रूप) कीजिए. चौथी स्तुति से आप हमारी सब प्रकार से रक्षा कीजिए. हे अग्नि! आप सब को संरक्षण देने वाले हैं. (२)

बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा.
भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य रेवत्पावक दीदिहि.. (३)

हे अग्नि! आप बड़ी ज्वालाओं वाले व युवा हैं. आप संपन्नता व पवित्रता देने वाले हैं.

आप अपने प्रखर तेज से भरद्वाज (ऋषि) के लिए अत्यंत तेजस्वी रूप में प्रज्वलित होइए. (३)

त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः.
यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वं दयन्त गोनाम्.. (४)

हे अग्नि! यजमान भलीभांति हवन करते हैं. वे आप को प्रिय हों. जो धन देने वाले और प्रजा की देखभाल करने वाले हैं, वे भी आप को प्रिय हों. गौओं का पालन करने वाले आप को प्रिय हों. (४)

अग्ने जरितर्विश्पतिस्तपानो देव रक्षसः.
अप्रोषिवान् गृहपते महाँ असि दिवस्पायुर्दुरोणयुः.. (५)

हे अग्नि! आप ज्ञानी, प्रजा का पालनपोषण करने वाले, राक्षसों (कष्ट देने वालों) का नाश करने वाले, घर के स्वामी, उपासकों के घर को नहीं छोड़ने वाले व स्वर्गलोक के रक्षक हैं. आप हमारे घर में सदा निवास करिए. (५)

अग्ने विवस्वदुषसश्चित्र राधो अमर्त्य.
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः.. (६)

हे अग्नि! आप अमर, प्राणिमात्र को जानने वाले और उषा (उषाकाल) से प्राप्त होने वाला विशेष धन दानदाता यजमान को दीजिए. आप सब कुछ जानने वाले हैं. आप उषाकाल में जागे हुए देवताओं को भी यहां आमंत्रित कीजिए. (६)

त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधा सि चोदय.
अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः.. (७)

हे अग्नि! आप सर्वव्यापक, अद्‌भुत शक्ति वाले, दर्शनीय, अपार व बहुत क्षमतावान हैं. आप समृद्धि (वैभव) लाने में समर्थ हैं. आप हमें समृद्धि दीजिए. आप हमारी संतानों को भी समृद्धि एवं प्रतिष्ठा दीजिए. (७)

त्वमित्सप्रथा अस्यग्ने त्रातर्ऋतः कविः.
त्वां विप्रासः समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधसः.. (८)

हे अग्नि! आप रक्षक हैं. आप (अपने गुण तथा धर्म के लिए) बहुत प्रसिद्ध हैं. आप सत्यवान और ज्ञानी हैं. हे तेजस्वी अग्नि! प्रज्वलित (प्रकाशित) हो जाने पर ज्ञानी जन आप की उपासना व सेवा करते हैं. (८)

आ नो अग्ने वयोवृध रयिं पावक श स्यम्.
रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृह सुनीती सुयशस्तरम्.. (९)

हे अग्नि! आप पवित्र करने वाले व धनधान्य की समृद्धि करने वाले हैं. आप हमें यश

बढ़ाने वाला धन दीजिए. आप हमें सही रास्ते से आने वाला धन प्रदान करें. आप हमें ऐसा धन प्रदान करें जिसे अनेक लोग चाहते हों. (९)

यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम्.
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्वग्नये.. (१०)

यजमानों को सब प्रकार की समृद्धि दे कर आनंदित करने वाले अग्नि की हम पहले स्तुति करते हैं, जैसे उन्हें सब से पहले सोमरस का पात्र समर्पित किया जाता है. (१०)

पांचवां खंड

एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे.
प्रियं चेतिष्ठमरति ꣳ स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम्.. (१)

हे उपासको! अन्न से शक्ति देने वाले (बल के पुत्र), पूर्णज्ञानी, स्नेह देने वाले, सुंदर यज्ञ वाले देवताओं के दूत अग्नि को मैं नमस्कारपूर्वक प्रार्थना से आमंत्रित करता हूं. (१)

शेषे वनेषु मातृषु सं त्वा मर्तास इन्धते.
अतन्द्रो हव्यं वहसि हविष्कृत आदिद्देवेषु राजसि.. (२)

हे अग्नि! आप वनों में व्याप्त हैं. आप माताओं में गर्भ के रूप में व्याप्त हैं. आप शेष पदार्थों में भी फैले हैं. हम मनुष्य समिधाओं द्वारा आप को प्रज्वलित करते हैं. आप आलस्य रहित हैं. आप यजमान की हवि देवताओं तक पहुंचाते हैं. आप देवताओं के मध्य (बीच में) सुशोभित होते हैं. (२)

अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन्व्रतान्यादधुः.
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्तु नो गिरः.. (३)

धर्म के मार्ग को पूरी तरह जानने वाले अग्नि प्रकट हो रहे हैं. इन के माध्यम से यज्ञ के नियम पूरे किए जाते हैं. अग्नि आर्यों को प्रगति देने वाले हैं. वे वाणी रूप में की जा रही हमारी प्रार्थनाओं को स्वीकार करने की कृपा करें. (३)

अग्निरुक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिरध्वरे.
ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पते देवा अवो वरेण्यम्.. (४)

स्तोत्र वाले हिंसा रहित यज्ञ में सब से पहले अग्नि देवता की स्थापना की जाती है. सोमलता से रस निकालने वाले पत्थर एवं आसन भी स्थापित किए जाते हैं. हे मरुतो! हे ब्रह्मणस्पति! हे देव! हम वेदमंत्रों द्वारा अपनी रक्षा का अनुरोध करते हैं. (४)

अग्निमीडिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम्.
अग्नि ꣳ राये पुरुमीढ श्रुतं नरो ऽ ग्निः सुदीतये छर्दिः.. (५)

हे उपासको! अपनी रक्षा के लिए विस्तृत तथा विकराल स्वरूप वाले अग्नि की स्तुति करो. धन प्राप्ति के लिए अग्नि की स्तुति करो. (५)

श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर्देवैरग्ने सयावभिः.
आ सीदतु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावभिरध्वरे.. (६)

हे अग्नि! आप समर्थ कानों वाले हैं. आप हमारी प्रार्थना स्वीकार कीजिए. अग्नि के साथ मित्र और अर्यमा आदि देवता भी यज्ञ के कुशासन पर विराजमान हों. (६)

प्र दैवोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना.
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि.. (७)

अग्नि इंद्र के समान शक्तिशाली हैं. अग्नि दिव्य (अच्छे) कार्य करने वालों के लिए पृथ्वी पर प्रकट हुए. हवि पहुंचाने के अपने श्रेष्ठ कामों से वे स्वर्ग में रहने लगे. (७)

अध ज्मो अध वा दिवो बृहतो रोचनादधि.
अया वर्धस्व तन्वा गिरा ममा जाता सुक्रतो पृण.. (८)

हे अग्नि! आप उत्तम यज्ञ के आधार हैं. आप स्वर्गलोक एवं पृथ्वीलोक में अपनी आभा फैलाएं. आप हमारी तथा हमारे संबंधियों की मनोकामनाएं पूरी कीजिए. (८)

कायमानो वना त्वं यन्मातृरजगन्नपः.
न तत्ते अग्ने प्रमृषे निवर्तनं यद् दूरे सन्निहाभुवः.. (९)

हे अग्नि! आप वन की इच्छा करने वाले हो कर भी माता के समान जल के पास गए. आप का जाना हम से नहीं सहा गया. आप अदृश्य हो कर भी हमारे आसपास प्रकट हो जाते हैं. (९)

नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते.
दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः.. (१०)

हे अग्नि! मननशील मनुष्य आप को धारण करते हैं. अनंत काल से मानव जाति के लिए आप का प्रकाश प्रकाशित है. आप ज्ञानी ऋषियों के आश्रम में प्रकाशित होते हैं. प्रजापति ने यजमान के लिए आप को देव यज्ञ स्थान में स्थापित किया. हम सब आप को नमस्कार करते हैं. (१०)

छठा खंड

देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्वासिचम्.
उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते.. (१)

अग्नि धन देने वाले हैं. इसलिए हे होताओ! यज्ञ में अच्छी तरह भरे हुए स्रुक (एक

पात्र) से बारबार आहुति दो. सोमरस से पात्र को सींचो. इस तरह अग्नि आहुति पहुंचा कर यजमान की मनोकामनाएं पूरी करते हैं. (१)

प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता.
अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः.. (२)

हमें ब्रह्मणस्पति देवता प्राप्त हों (यानी हमारे पास पहुंचें). सत्य और प्रिय देवी एवं वाग् देवता (वाणी के देवता) हमें प्राप्त हों. सभी देवगण हमारे शत्रुओं का नाश करें. कल्याणकारी यश देने वाले वीर को सब देवता श्रेष्ठ मार्ग से ले जाएं. (२)

ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता.
ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे.. (३)

हे अग्नि! हमारे संरक्षण के लिए आप ऊंचे आसन पर विराजिए. सूर्य के समान उन्नत हो कर हमें अन्न आदि प्रदान कीजिए. हम इसीलिए अच्छे स्तोत्रों से स्तुति करते हुए आप को आमंत्रित करते हैं. (३)

प्र यो राये निनीषति मर्तो यस्ते वसो दाशत्.
स वीरं धत्ते अग्न उक्थशꣳ सिनं त्मना सहस्रपोषिणम् .. (४)

हे अग्नि! आप व्यापक हैं. हम आप के भक्त धन के लिए आप को प्रसन्न करना चाहते हैं. जो मनुष्य आप को हवि प्रदान करता है, वह स्तुति करने वाले हजारों मनुष्यों का पालनपोषण करने वाले वीर पुत्र को प्राप्त करता है. (४)

प्र वो यह्वं पुरूणां विशां देवयतीनाम्.
अग्निꣳ सूक्तेभिर्वचोभिर्वृणीमहे यꣳ समिदन्य इन्धते.. (५)

हे अग्नि! आप मनुष्य में देवत्व का विकास करने वाले हैं. हम अपनी स्तुतियों से आप की महानता का वर्णन करते हैं. हे अग्नि! आप को अन्य ऋषियों ने भी अच्छी तरह दीप्त (प्रसन्न) किया है. (५)

अयमग्निः सुवीर्यस्येशे हि सौभागस्य.
राय ईशे स्वपत्यस्य गोमत ईशे वृत्रहथानाम्.. (६)

अग्नि संपत्ति और सौभाग्य के ईश हैं. वे गौ आदि पशुओं के स्वामी हैं. संतान और धन के स्वामी हैं. शत्रुओं का नाश करने वालों के भी स्वामी हैं. (६)

त्वमग्ने गृहपतिस्त्वꣳ होता नो अध्वरे.
त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि यासि च वार्यम्.. (७)

हे अग्नि! आप घर के स्वामी हैं. हमारे हिंसा रहित यज्ञ के होता (पुरोहित) हैं. आप की आराधना सभी कर सकते हैं. आप पवित्र करने वाले हैं. आप श्रेष्ठ हवि का यज्ञ कीजिए. हमें

धनादि (सुख) प्रदान कीजिए. (७)

सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्तास ऊतये.
अपां नपात ꣳ सुभग ꣳ सुद सम ꣳ सुप्रतूर्तिमनेहसम्.. (८)

हे अग्नि! आप हमारे सखा हैं. आप श्रेष्ठ कर्म करने वाले हैं. मनुष्य की शीघ्र इच्छा पूर्ति करते हैं. आप धन के स्वामी व जल को धारण करने वाले हैं. हम समान बुद्धि वाले सभी साधक आप से अपने संरक्षण की प्रार्थना करते हैं. (८)

सातवां खंड

आ जुहोता हविषा मर्जयध्वं नि होतारं गृहपतिं दधिध्वम्.
इडस्पदे नमसा रातहव्य ꣳ सपर्यता यजतं पस्त्यानाम्.. (१)

हे ऋत्विजो (यजमानो)! आप अग्नि देव को आमंत्रित कीजिए. आप सब ओर शुद्धता फैलाने वाली हवि अग्नि देव को प्रदान कीजिए. गृहपति गृह की रक्षा करने वाली अग्नि की स्थापना करें. हवन की चीजों के साथसाथ आप स्तुति कर के उन का स्वागतसत्कार करें. (१)

चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य वक्षथो न यो मातरावन्वेति धातवे.
अनूधा यदजीजनदधा चिदा ववक्षत्सद्यो महि दूत्यां ३ चरन्.. (२)

हे अग्नि! बाल एवं तरुण (युवा) रूप आप का हवि पहुंचाना बहुत आश्चर्य वाला है. आप पैदा होने के बाद दूध पीने के लिए अपनी दोनों ही माताओं (पृथ्वी और अरणियों) के पास नहीं जाते, बल्कि अच्छे दूत की भूमिका निभाते हुए देवताओं के पास हवि पहुंचाने जाते हैं. (२)

इदं त एकं पर ऊ त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व.
संवेशनस्तन्वे ३ चारुरेधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे.. (३)

हे मृत्यु धर्म वाले मनुष्य! अग्नि तुम्हारा एक भाग है. वायु तुम्हारा दूसरा भाग (शरीर) है. सूर्य रूप तीसरे भाग (तेज) से तुम मिलते हो. उन से मुक्त हो कर मुनष्य तेजस्वी रूप प्राप्त करता है. अर्थात् मनुष्य को पावन स्थान में जन्म ले कर देव शक्तियों के लिए प्रिय तथा श्रेष्ठ बनना चाहिए. (पिछले मंत्र में मृत्यु के बाद पुनः प्रकृति में मिलने की क्रिया बताई है). (३)

इम ꣳ स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया.
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य स ꣳ सद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव.. (४)

हे अग्नि! आप सब कुछ जानने वाले हैं. हम स्तोत्र रूप को रथ के समान उत्तम बुद्धि से तैयार करते हैं. हे अग्नि! हम आप के मित्र हैं. हमें किसी प्रकार का कोई कष्ट न हो. (४)

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्.
कवि सम्राजमतिथिं जनानामासन्नः पात्रं जनयन्त देवाः.. (५)

हे अग्नि! आप सब से ऊपर (सर्वोपरि) हैं. आप स्वर्गलोक के वासी हैं. आप भूलोक के स्वामी हैं. आप यज्ञ में उत्पन्न हैं. आप ज्ञानी मनुष्यों में मेहमान की तरह पूजनीय हैं. मुख की तरह मुख्य हैं. आप को देवताओं ने उत्पन्न किया है. (५)

वि त्वदापो न पर्वतस्य पृष्ठादुक्थेभिरग्ने जनयन्त देवाः.
तं त्वा गिरः सुष्टुतयो वाजयन्त्याजिं न गिर्ववाहो जिग्युरश्वाः.. (६)

हे अग्नि! जैसे पर्वत के ऊपरी भाग से जल उत्पन्न होता है, वैसे ही विद्वान् यजमान आप को अपनी स्तुतियों से प्रकट करते हैं. जैसे घोड़े युद्ध में विजय पाते हैं, वैसे ही आप हमारी स्तुतियों से संचालित होते हैं. इस से हमें विजय (कामना सिद्धि) मिलती है. (६)

आ वो राजानमध्वरस्य रुद्र होतार सत्ययज रोदस्योः.
अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्.. (७)

हे अग्नि! आप यज्ञ के स्वामी हैं. आप देवताओं को बुलाने वाले हैं. आप शत्रुओं को रुलाने वाले हैं. आप स्वर्गलोक तथा पृथ्वीलोक के अन्नदाता हैं. आप आनंद एवं सत्य रूप को प्राप्त कराने वाले हैं. आप स्वर्ण के समान चमक वाले हैं. ऐसे स्वरूप वाले अग्नि को स्वाभाविक रूप से विद्युत् से पहले संरक्षण के लिए उत्पन्न किया है. (७)

इन्धे राजा समर्यो नमोभिर्यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन.
नरो हव्येभिरीडते सबाध आग्निरग्रमुषसामशोचि.. (८)

हे अग्नि! आप श्रेष्ठ हैं. आप राजा हैं. आप को अन्नों से प्रज्वलित किया जाता है. आप को घी से बढ़ाया जाता है. सभी मिल कर हवन से आप की पूजा करते हैं. इस प्रकार अग्नि उषा काल के पूर्व (यानी माता के गर्भ से ही) उत्पन्न हुए हैं. (८)

प्र केतुना बृहता यात्यग्निरा रोदसी वृषभो रोरवीति.
दिवश्चिदन्तादुपमामुदानडपामुपस्थे महिषो ववर्ध.. (९)

हे अग्नि! आप महान प्रकाश के साथ प्रकट होते हैं. स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक में बलवान हो कर गर्जना करते हैं. बिजली के गर्जन और जल मेघों के बीच बढ़ते हैं. (९)

अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम्.
दूरेदृशं गृहपतिमथव्युम्.. (१०)

हे अग्नि! आप प्रशंसा के योग्य हैं. आप दूर से दिखाई देते हैं. आप घर के रक्षक हैं. यजमान ने अग्नि को अरणि मथ कर प्रकट किया. (यानी अंगुलियों में अरणियों को पकड़ कर, घिस कर प्रकट किया है). (१०)

आठवां खंड

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्.
यह्वा इव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सस्रते नाकमच्छ.. (१)

हे अग्नि! आप यजमानों की श्रद्धा से प्रज्वलित हैं. जैसे अग्निहोत्र (सुबह यज्ञ करने वाले) के लिए पाली हुई गाय प्रातःकाल उठ जाती है, वैसे ही प्रातःकाल आप प्रज्वलित होते हैं (किए जाते हैं). पेड़ की फैली हुई शाखाओं के समान आप की किरणें भी दूरदूर तक फैलती हैं. (१)

प्र भूर्जयन्तं महां विपोधां मूरैरमूरं पुरां दर्माणम्.
नयन्तं गीर्भिर्वना धियं धा हरिश्मश्रुं न वर्मणा धनर्चिम्.. (२)

हे अग्नि! आप राक्षसों को जीतने वाले हैं. आप विद्वानों को धारण करने वाले हैं. मूर्खों के आश्रय (स्थान) का नाश करने वाले हैं. आप स्तुति करने वाले को ऐश्वर्य देने वाले हैं. आप कवच के समान रक्षा करने वाले हैं. आप सुनहरी ज्वालाओं वाले हैं. हे मनुष्य! तुम ऐसे अग्नि की आराधना करो. (२)

शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि.
विश्वा हि माया अवसि स्वधावन्भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु.. (३)

हे पूषा! आप का तेजस्वी रंग वाला दिन अलग है. उसी तरह काले रंग वाली रात्रि अलग है. आप की महिमा से ये अलगअलग रंग वाले भाग एक ही दिनरात के हैं. आप पोषण करने वाले हैं. आप सारे जग की रक्षा करने वाले हैं. आप कल्याण करने वाले हैं. आप हमारा कल्याण करें. (३)

इडामग्ने पुरुद ꣳ स ꣳ सनिं गोः शश्वत्तम ꣳ हवमानाय साध.
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे.. (४)

हे अग्नि! आप अनेक कामों में उपयोगी सुमति हमें दीजिए. आप गायों को देने वाली स्तुति हमें दीजिए. आप हमें पुत्रपौत्र प्रदान कीजिए. आप उत्तम बुद्धि वाले हैं. कृपया भली प्रकार आराधना करने वाले यजमान को ये सब प्रदान कीजिए. (४)

प्र होता जातो महान्नभोविन्नृषद्मा सीददपां विवर्ते.
दधद्यो धायी सुते वया ꣳ सि यन्ता वसूनि विधते तनूपाः.. (५)

हे अग्नि! आप सभी घरों में मौजूद रहते हैं. आप बादलों के बीच बिजली के रूप में रहते हैं. इस समय आप यज्ञ में मौजूद हैं. आप महान हैं. आप अंतरिक्ष को जानने वाले हैं. हवि को धारण करने वाले हैं. आप हमें अन्न, धन व संरक्षण प्रदान कीजिए. (५)

प्र सम्राजमसुरस्य प्रशस्तं पु ꣳ सः कृष्टीनामनुमाद्यस्य.

इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि वन्दद्वारा वन्दमाना विवष्टु.. (६)

हे अग्नि! आप बलवान और वीर मनुष्य के स्तुति योग्य हैं. आप बल में इंद्र के समान हैं. आप के इस प्रशंसनीय स्वरूप की स्तुति करते हैं. हे यजमान! स्तुति और आराधना से अग्नि की उपासना करो. (६)

अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भ इवेत्सुभृतो गर्भिणीभिः.
दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः.. (७)

हे अग्नि! आप सब प्रकार के ज्ञान वाले हैं. आप अच्छी तरह गर्भ धारण करने वाली स्त्री के समान अरणियों द्वारा धारण किए जाते हैं. यज्ञ के लिए जागरूक रहने वाले यजमानों द्वारा प्रतिदिन आप वंदनीय हैं. (७)

सनादग्ने मृणसि यातुधानान्न त्वा रक्षा ꣳ सि पृतनासु जिग्युः.
अनु दह सहमूरान्कयादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः.. (८)

हे अग्नि! आप हमेशा शत्रुओं को बाधा देने वाले हैं. आप को युद्ध में राक्षस नहीं जीत सकते. आप मांस खाने वाले राक्षसों को अपने तेज से भस्म कर दीजिए. आप के इस हथियार से कोई शत्रु न बचे. (८)

नौवां खंड

अग्न ओजिष्ठमा भर द्युम्नमस्मभ्यमध्रिगो.
प्र नो राये पनीयसे रत्सि वाजाय पन्थाम्.. (१)

हे अग्नि! आप हमें खूब बल तथा धन दीजिए. आप बेरोकटोक गति वाले हैं. धन का मार्ग हमें दिखाइए. आप अन्न और बल वाला मार्ग हमें दिखाइए. (१)

यदि वीरो अनु ष्यादग्निमिन्धीत मर्त्यः.
आजुह्वद्धव्यमानुषक् शर्म भक्षीत दैव्यम्.. (२)

हे अग्नि! मनुष्य वीर पुत्र को पाने के लिए आप को प्रज्वलित करे. हवन के पदार्थों से सदा हवन करे. आप की कृपा से सदा परम सुख प्राप्त करे. (२)

त्वेषस्ते धूम ऋण्वति दिवि सञ्छुक्र आततः.
सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे.. (३)

हे अग्नि! प्रज्वलित होने के बाद आप का धुआं आकाश में फैलता है. बादल रूप में बदल जाता है. आप पवित्र करने वाले हैं. स्तुति के प्रभाव से आप सूर्य के समान प्रकाशित होते हैं. (३)

त्व ꣳ हि क्षैतवद्यशो ऽ ग्ने मित्रो न पत्यसे.

त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि.. (४)

हे अग्नि! निश्चय ही आप सूखी समिधा रूप में अन्न को ग्रहण करते हैं. आप उसे (अन्न को) बहुत ज्यादा मात्रा में बढ़ाते हैं (पुष्ट करते हैं). आप सूर्य के समान तेजस्वी हैं. आप सभी को शरण (आश्रय) देने वाले व सब कुछ देखने वाले हैं. (४)

प्रातरग्निः पुरुप्रियो विश स्तवेतातिथिः.
विश्वे यस्मिन्नमर्त्ये हव्यं मर्तास इन्धते.. (५)

हे अग्नि! आप अनेक लोगों को प्रिय लगने वाले हैं. आप यजमानों के घर धन स्थापित करने वाले हैं. आप यजमानों के घर मेहमान के समान आने वाले हैं. आप प्रातःकाल स्तुति किए जाने वाले हैं. आप अमर हैं. सभी मनुष्य आप को पवित्र हवन सामग्री प्रदान करें. (५)

यद्वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो.
महिषीव त्वद्रयिस्त्वद्वाजा उदीरते.. (६)

हे अग्नि! शीघ्र पहुंचने वाले स्तोत्र से हम आप की आराधना करते हैं. आप तेजस्वी हैं. हमें बहुत सा अन्न और धन प्रदान कीजिए क्योंकि आप ही से बहुत सा धन और अन्न प्राप्त होता है. (६)

विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम्.
अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः.. (७)

हे यजमानो! आप अन्न और बल की इच्छा करते हुए अग्नि की स्तुति करो. वे सब के प्रिय व पूजनीय हैं. हे अग्नि! हम गृहपति आप की सुखदायी स्तोत्रों से आराधना करते हैं. (७)

बृहद्वयो हि भानवे ऽ र्चा देवायाग्नये.
यं मित्रं न प्रशस्तये मर्तासो दधिरे पुरः.. (८)

हे अग्नि! आप तेजस्वी हैं. आप के लिए बहुत सा हवि का अन्न दिया जाता है. हम प्रकाश वाले आप की पूजा करते हैं. हम आप को मित्र के समान मानते हैं. हम उत्तम स्तुति करने के लिए आप को आगे कर के स्थापित करते हैं. (८)

अगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम्.
यः स्म श्रुतर्वन्नार्क्षे बृहदनीक इध्यते.. (९)

हे अग्नि! आप पापों का नाश करने वाले व प्रशंसनीय मनुष्यों के हितकारी हैं. ऋक्ष पुत्र श्रुतर्वा के लिए हम बड़ीबड़ी ज्वालाओं के साथ आप को प्रकट करते हैं. (९)

जातः परेण धर्मणा यत्सवृद्भिः सहाभुवः.
पिता यत्कश्यपस्याग्निः श्रद्धा माता मनुः कविः.. (१०)

हे अग्नि! कश्यप आप के पिता और श्रद्धा माता हैं. मनु कवि हैं. आप श्रेष्ठ कर्मों द्वारा शुरू किए गए यज्ञ में प्रकट होते हैं. (१०)

दसवां खंड

सोम ꣳ राजानं वरुणमग्निमन्वारभामहे.
आदित्यं विष्णु ꣳ सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम्.. (१)

हम सोम, राजा, वरुण, अग्नि, अदिति के पुत्र, विष्णु, सूर्य एवं ब्रह्मा को बारबार याद करते हुए आमंत्रित करते हैं. अर्थात् इन सभी देवताओं को स्तुतियों से आमंत्रित करते हैं. (१)

इत एत उदारुहन्दिवः पृष्ठान्या रुहन्.
प्र भूर्जयो यथा पथोद्यामङ्गिरसो ययुः.. (२)

यज्ञ करने वाले आंगिरस ऋषि स्वर्गलोक को पहुंचे. उसी के प्रभाव से और भी ऊपर गए. (२)

राये अग्ने महे त्वा दानाय समिधीमहि.
ईडिष्वा हि महे वृषं द्यावा होत्राय पृथिवी.. (३)

हे अग्नि! हम बहुत धन दान के लिए आप को प्रदीप्त करते हैं. आप वरदान की वर्षा करने वाले हैं. महान यज्ञ के लिए स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक की स्तुति करते हैं. (३)

दधन्वे वा यदीमनु वोचद्ब्रह्मेति वेरु तत्.
परि विश्वानि काव्या नेमिश्चक्रमिवाभुवत्.. (४)

हे अग्नि! आप को संबोधित कर के अध्वर्यु आदि पुरोहित स्तोत्र उचारते हैं. आप सब कुछ जानते हैं. आप सब कर्मों को वैसे ही वश में रखते हैं, जैसे पहिए गाड़ी को. (४)

प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणाहि विश्वतस्परि.
यातुधानस्य रक्षसो बलं न्युब्जवीर्यम्.. (५)

हे अग्नि! आप अपने तेज से यातना देने वाले राक्षसों को सब ओर (प्रकार) से नष्ट कर दीजिए. (५)

त्वमग्ने वसू ꣳ रिह रुद्राँ आदित्याँ उत.
यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम्.. (६)

हे अग्नि! आप यहां वसु, रुद्र एवं आदित्य देवता के लिए यज्ञ कीजिए. आप उत्तम यज्ञ करने वाले, घी से सींचने वाले, मनु से उत्पन्न हुए मनुष्य का सत्कार (मनोकामना सिद्धि द्वारा) कीजिए. (६)

ग्यारहवां खंड

पुरु त्वा दाशिवाँ वोचे ऽ रिरग्ने तव स्विदा.
तोदस्येव शरण आ महस्य.. (१)

हे अग्नि! आप को बहुत सी हवि प्रदान करते हुए मैं उसी तरह आप की शरण में आया हूं, जैसे बहुत धनवान की शरण में सेवक आते हैं. (१)

प्र होत्रे पूर्व्यं वचो ऽ ग्नये भरता बृहत्.
विपां ज्योती षि बिभ्रते न वेधसे.. (२)

हे स्तुति करने वालो! अग्नि ज्ञानियों के तेज को धारण करने वाले हैं. विधाता आदि देवों को बुलाने वाले हैं. आप इन के लिए महान और प्राचीन स्तोत्र का पाठ कीजिए. (२)

अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो.
अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः.. (३)

हे अग्नि! आप बल से उत्पन्न हुए हैं. आप अन्न के स्वामी व अंतर्यामी हैं. आप हमें बहुत सा अन्नधन दीजिए. (३)

अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवां देवयते यज.
होता मन्द्रो वि राजस्यति स्रिधः.. (४)

हे अग्नि! आप यज्ञ में पूजनीय हैं. यजमान के लिए देवताओं का यजन कीजिए. देवों को बुलाने वाले आप शत्रुओं को हरा कर शोभायमान होते हैं. (४)

जज्ञानः सप्त मातृभिर्मेधामाशासत श्रिये.
अयं ध्रुवो रयीणां चिकेतदा.. (५)

हे अग्नि! आप सात माताओं की सहायता से उत्पन्न होने वाले हैं. आप सोम को सेवा कार्य में शोभित करते हैं (प्रेरित करते हैं). सोम कर्म का विधान करने वाले हैं. आप धनसंपदा को अच्छी तरह जानने वाले हैं. (५)

उत स्या नो दिवा मतिरदितिरूत्यागमत्. सा शन्ताता मयस्करदप स्रिधः.. (६)

हे अदिति! आप स्तुति के योग्य हैं. आप अपने पूरे रक्षा साधनों के साथ हमारे पास पधारें. हमें सुखशांति प्रदान करें. हमारे शत्रुओं को दूर करें. (६)

ईडिष्वा हि प्रतीव्यां ३ यजस्व जातवेदसम्. चरिष्णुधूममगृभीतशोचिषम्.. (७)

हे स्तुति करने वालो! शत्रुओं को भस्म करने (हराने) वाले अग्नि की स्तुति करो. इन का धुआं सब ओर घूम सकता है. इन के प्रकाश को कोई नहीं रोक सकता. ये सब कुछ जानने वाले हैं. आप हवि से इन की आराधना कीजिए. (७)

न तस्य मायया च न रिपुरीशीत मर्त्यः. यो अग्नये ददाश हव्यदातये.. (८)

हे अग्नि! जो आप के लिए हवि पदार्थ देता है, उस पर कभी भी किसी दुष्ट (शत्रु) के छलकपट का असर नहीं होता है. (८)

अप त्यं वृजिन ꣳ रिपु ꣳ स्तेनमग्ने दुराध्यम्. दविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम्.. (९)

हे अग्नि! आप छलीकपटी शत्रु को बहुत दूर फेंक दीजिए. आप सत्य के पालनहार हैं. हमारे लिए सुखशांति का मार्ग सुगम बनाइए. (९)

श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्पते. नि मायिनस्तपसा रक्षसो दह.. (१०)

हे अग्नि! आप वीर हैं. हमारी इन नई प्रार्थनाओं को सुन कर छली, दुष्ट राक्षसों को अपने ताप से भस्म कीजिए. राक्षस हमारे कर्मों में विघ्न डालते हैं. (१०)

बारहवां खंड

प्र म ꣳ हिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे. उपस्तुतासो अग्नये.. (१)

हे स्तुति करने वालो! अग्नि यज्ञ व सत्य के पालनहार हैं. वे महान तेज वाले हैं. आप ऐसे महान रक्षक अग्नि की स्तुति कीजिए. (१)

प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्मभिः.
यस्य त्व ꣳ सख्यमाविथ.. (२)

हे अग्नि! आप जिन यजमानों के मित्र हो जाते हैं, वे अन्नबल की रक्षा करने वाली श्रेष्ठ संतान प्राप्त करते हैं. (२)

तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे. देवत्रा हव्यमूहिषे.. (३)

हे स्तुति करने वालो! स्वर्ग में देवताओं तक हवि पहुंचाने वाले अग्नि की स्तुति करो. आप जिस देवता को इष्ट मान कर पूजते हैं, आप की हवि अग्नि उस देवता तक पहुंचा देते हैं. (३)

मा नो हृणीथा अतिथिं वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः. यः सुहोता स्वध्वरः.. (४)

अग्नि यज्ञ में मेहमान की तरह हैं. उन्हें यज्ञ से दूर मत ले जाओ. वे देवताओं को बुलाने वाले हैं. वे सुखशांति देने वाले हैं. वे अनेक लोगों द्वारा पूजित व सब को बसाने वाले हैं. (४)

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः. भद्रा उत प्रशस्तयः.. (५)

हे अग्नि! आप को हवियों से तृप्त किया है. आप हमारा कल्याण कीजिए. आप ऐश्वर्यशाली हैं. हमें शुभ धन प्रदान कीजिए. हमें कल्याणकारी यज्ञ प्राप्त कराइए. हमारी प्रार्थनाएं हमारे लिए मंगलमयी हों. (५)

यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम्. अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्.. (६)

हे अग्नि! आप देवों में श्रेष्ठ हैं. आप श्रेष्ठ यज्ञ कराने वाले हैं. आप अमर हैं. इस यज्ञ को अच्छी तरह पूरा करने वाले हैं. हम आप की स्तुति करते हैं. (६)

तदग्ने द्युम्नमा भर यत्सासाह सदने कं चिदत्रिणम्. मन्युं जनस्य दूढ्यम्.. (७)

हे अग्नि! आप हमें तेजस्वी बनाइए. आप हमें यश प्रदान कीजिए. यज्ञ में विघ्न पहुंचाने वाले दुष्टों को हम वश में कर सकें. उन का तिरस्कार कर सकें. आप दुर्बुद्धि वाले लोगों की बुद्धि ठीक कीजिए. आप उन के क्रोध को दूर कीजिए. (७)

यद्वा उ विश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशे.
विश्वेदग्निः प्रति रक्षा ꣳसि सेधति.. (८)

हे अग्नि! आप यजमानों के पालनहार हैं. हवियों से तृप्त और प्रसन्न होने पर आप जब तक मनुष्यों के घर रहते हैं तब तक उन के सभी कष्ट दूर करते हैं. यह बात जग प्रसिद्ध है. (८)

ऐंद्र पर्व

दूसरा अध्याय

पहला खंड

तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने. शं यद्गवे न शाकिने.. (१)

हे स्तुति करने वालो! सोम तैयार करने के बाद बहुत से यजमान जिन की स्तुति करते हैं जो धन दाता हैं, तुम उन इंद्र के लिए प्रार्थना करो. वे प्रार्थनाएं उन्हें उसी प्रकार सुख देती हैं, जिस प्रकार गायों को घास. (१)

यस्ते नून ꣳ शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः. तेन नूनं मदे मदेः.. (२)

हे इंद्र! आप सैकड़ों कर्म करने वाले हैं अथवा आप सैकड़ों प्रकार का ज्ञान रखने वाले हैं. वह सोमरस हम ने आप ही के लिए निकाला था. आप उस रस को पी कर आनंदित होइए और हमें भी आनंद प्रदान कीजिए. (२)

गाव उप वदावटे मही यज्ञस्य रप्सुदा. उभा कर्णा हिरण्यया.. (३)

हे गौओ! आप यज्ञ स्थान की ओर जाइए. आप धार्मिक यज्ञ विधाओं के लिए दूध आदि प्रदान कीजिए. आप के दोनों कान स्वर्ण से सुशोभित हैं. (३)

अरमश्वाय गायत श्रुतकक्षारं गवे. अरमिन्द्रस्य धाम्ने.. (४)

हे स्तुति करने वालो! इंद्र के घोड़े, गायों व इंद्र धाम के लिए पूरी तरह वैदिक स्तुतियां गाइए. (४)

तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे. स वृषा वृषभो भुवत्.. (५)

हे इंद्र! आप उस बड़े राक्षस (वृत्रासुर) को मारने वाले हैं. आप वज्र के समान बलवान हैं. हम अपनी सहायता के लिए आप को आमंत्रित करते हैं. आप धन दाता हैं. हमें धन प्रदान कीजिए. (५)

त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः. त्व ꣳ सन्वृषन्वृषेदसि.. (६)

हे इंद्र! आप शत्रुओं को हराने वाले हैं. आप बल और हृदय के धैर्य के कारण प्रसिद्ध हैं. आप वरदानों तथा मनोवांछित फलों को देने वाले हैं. (६)

यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्यद्भूमिं व्यवर्तयत्. चक्राण ओपशं दिवि.. (७)

हे इंद्र! अंतरिक्ष में मेघों को फैला कर आप ने बरसात आदि से पृथ्वी को बढ़ाया (समृद्ध किया). हम यजमानों के यज्ञों ने आप का यश बढ़ाया है. (७)

यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्. स्तोता मे गोसखा स्यात्.. (८)

हे इंद्र! जैसे आप अकेले समस्त वैभव के स्वामी हैं, यदि वैसे ही मैं भी सारे वैभव का स्वामी हो जाऊं तो मेरी स्तुति करने वाले गौ आदि धनधान्य वाले हो जाएं. (८)

पन्यंपन्यमित्सोतार आ धावत मद्याय. सोमं वीराय शूराय.. (९)

सोमरस निकालने वाले पुरोहितो! आप शूरवीर इंद्र के लिए सोमरस अर्पित कीजिए. यह सोमरस सर्वत्र प्रशंसा के योग्य है. (९)

इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम्. अनाभयिन्नरिमा ते.. (१०)

हे इंद्र! आप अंतर्यामी हैं. यह सोमरस लीजिए. अपनी प्रसन्नता के लिए इसे पीजिए, जिस से आप का पेट पूरी तरह भर जाए. आप सब ओर से निर्भय हैं. (१०)

दूसरा खंड

उद्घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्. अस्तारमेषि सूर्य.. (१)

उदीयमान इंद्र (सूर्य रूप में) श्रेष्ठ वीर, धन देने वाले व मनुष्यों के हितकारी हैं. वे उदार स्वभाव के हैं और (शत्रुओं पर) शस्त्र प्रहार करने वाले हैं. (१)

यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य. सर्वं तदिन्द्र ते वशे.. (२)

हे इंद्र! आप जल रोकने वाले मेघ को नष्ट करते हैं. अभी उदित हुए आप से सब कुछ प्रकाशित हो रहा है. सब कुछ आप के अधीन है. (२)

य आनयत्परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम्. इन्द्रः स नो युवा सखा.. (३)

हे इंद्र! तुर्वश और यदु को शत्रुओं ने दूर फेंक दिया था, आप अपनी श्रेष्ठ नीति से उन्हें फिर पास लौटा लाए. आप युवा हैं. आप हमारे मित्र हो जाइए. (३)

मा न इन्द्राभ्या ३ दिशः सूरो अक्तुष्वा यमत्. त्वा युजा वनेम तत्.. (४)

हे इंद्र! राक्षस चारों ओर से शस्त्र बरसाने वाले व सब ओर विचरण करने वाले हैं. आप कृपा कीजिए जिस से ऐसे राक्षस हमारी ओर न आ सकें. आप की सहायता से हम ऐसे राक्षसों को नष्ट कर सकें. (४)

एन्द्र सानसि ꣳ रयि ꣳ सजित्वान ꣳ सदासहम्. वर्षिष्ठमूतये भर.. (५)

हे इंद्र! आप हमारे संरक्षण के लिए, भोग के लिए तथा शत्रुओं पर विजय पाने के लिए हमें बहुत सा धन दीजिए. (५)

इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे. युजं वृत्रेषु वज्रिणम्.. (६)

हे इंद्र! हम थोड़ा धन होने पर भी बहुत धन वाले आप को बुलाते हैं. हम छोटीबड़ी सभी विपत्तियों से रक्षा करने वाले तथा शत्रुओं का नाश करने में सहायक आप को आमंत्रित करते हैं. (६)

अपिबत्कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्रबाह्वे. तत्राददिष्ट पौ स्यम्.. (७)

हे इंद्र! आप ने कद्रु से निकाले हुए सोमरस को पीया. आप ने हजारों भुजाओं वाले शत्रु को मारा. आप की वीरता उसी समय प्रकाशित हुई. (७)

वयमिन्द्र त्वायवो ऽ भि प्र नोनुमो वृषन्. विद्धी त्वा ३ स्य नो वसो.. (८)

हे इंद्र! आप कामनाओं की वर्षा करने वाले हैं. हम आप की कामना करते हैं. आप की ओर मुंह कर के बारबार प्रणाम करते हैं. आप सर्वव्यापक हैं. आप हमारे स्तोत्र (की भावना) को समझ लीजिए. (८)

आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्. येषामिन्द्रो युवा सखा.. (९)

चिर युवा इंद्र श्रेष्ठ अग्नि को प्रज्वलित करने वाले यजमानों के मित्र हैं. यज्ञ करने वाले उन के लिए कुश का आसन बिछाते हैं. (९)

भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः. वसु स्पार्हं तदा भर.. (१०)

हे इंद्र! आप द्वेष करने वाले सारे शत्रुओं का नाश कीजिए. विघ्न डालने वाले शत्रुओं को हराइए. हमें यश देने वाला भरपूर धन प्रदान कीजिए. (१०)

तीसरा खंड

इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वदान्. नि यामं चित्रमृञ्जते.. (१)

मरुद्गणों के हाथों में चाबुक है. उन चाबुकों से जो आवाज होती है, वह हमें सुनाई देती है. ये आवाजें (ध्वनियां) युद्ध में अनेक प्रकार की वीरता प्रदर्शित करती हैं. (१)

इम उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः. पुष्टावन्तो यथा पशुम्.. (२)

हे इंद्र! यजमान हाथों में सोमरस ले कर आप की ओर उसी तरह एकाग्रचित्त हो कर देख रहे हैं, जैसे पशु पालक घास हाथ में ले कर प्रेम भाव से पशु की ओर देखता है. (२)

समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः. समुद्रायेव सिन्धवः.. (३)

हे इंद्र! सारी प्रजा (जनता) नम्रतापूर्वक वैसे ही आकर्षित हो रही है, जैसे समुद्र की ओर जाने वाली नदियां. (३)

देवानामिदवो महत्तदा वृणीमहे वयम्. वृष्णामस्मभ्यमूतये.. (४)

हे देवताओ! आप का संरक्षण पूजनीय व महान है. आप सारी इच्छाओं को पूरा करते हैं. यह संरक्षण हमारे लिए धन रूप है. हम अपने संरक्षण के लिए आप से चारों ओर से (सब ओर से) प्रार्थना करते हैं. (४)

सोमाना स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते. कक्षीवन्तं य औशिजः.. (५)

हे ब्रह्मणस्पति! आप सोम यज्ञ करने वाले उशिज के पुत्र कक्षीवान को प्रकाशित करने की कृपा कीजिए. (५)

बोधन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूर्यासुतिः. शृणोतु शक्र आशिषम्.. (६)

हे इंद्र! आप वृत्र नामक राक्षस को मारने वाले हैं. आप के लिए बहुत से लोग सोमरस तैयार करते हैं. आप हमेशा हमारे मनोरथों को जानने वाले हैं. आप युद्ध में शत्रुओं का नाश करने वाले हैं. आप सामर्थ्यवान हैं. कृपया आप हमारी स्तुति सुनिए. (६)

अद्या नो देव सवितः प्रजावत्सावीः सौभगम्. परा दुःष्वप्न्य सुव.. (७)

हे सूर्य! आप हमें पुत्रपौत्रों सहित धन प्रदान कीजिए. गरीबी बुरे सपने की तरह दुःखदायी है. आप उसे दूर कीजिए. (७)

क्व ३ स्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः. ब्रह्मा कस्त सपर्यति.. (८)

हे इंद्र! आप समर्थ व युवा हैं. आप इच्छाएं पूरी करने वाले हैं. आप बलवान हैं. आप किसी के सामने झुकने वाले नहीं हैं. आप कहां हैं? इस समय कौन ज्ञानी आप की पूजा कर रहा है? (८)

उपह्वरे गिरीणा सङ्गमे च नदीनाम्. धिया विप्रो अजायत.. (९)

पर्वतों पर और नदियों के संगम पर बुद्धि से की हुई प्रार्थना को सुनने के लिए बुद्धिमान इंद्र प्रकट होते हैं. (९)

प्र संम्राजं चर्षणीनामिन्द्र स्तोता नव्यं गीर्भिः. नरं नृषाहं म हिष्ठम्.. (१०)

मनुष्यों में इंद्र भली प्रकार प्रकाशित हैं. वे स्तुति करने योग्य हैं. शत्रुओं को जीतने वाले हैं. हम उन महान इंद्र की स्तुति करते हैं. (१०)

चौथा खंड

अपादु शिप्रयन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः. इन्दोरिन्द्रो यवाशिरः.. (१)

हे इंद्र! आप सुंदर ठोड़ी वाले और सुंदर मुकुट धारण करने वाले हैं. यजमान हवि देने में विशेष कुशल हैं. आप ने दूध और जौ से बनाए हुए सोमरस को ग्रहण किया. (१)

इमा उ त्वा पुरूवसो ऽ भि प्र नोनुवुर्गिरः. गावो वत्सं न धेनवः.. (२)

हे इंद्र! आप अनेक प्रकार के वैभव वाले हैं. हमारी स्तुतियां बारबार आप के पास उसी तरह आना चाहती हैं, जैसे दूध वाली गाएं बारबार बछड़ों की ओर आती हैं. (२)

अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्. इत्था चन्द्रमसो गृहे.. (३)

गतिमान चंद्र मंडल में सूर्य का दिव्य तेज है, ऐसा विद्वान् मानते हैं अर्थात् सूर्य के छिप जाने पर उन्हीं के प्रकाश से चंद्रमा प्रकाशित होता है. (३)

यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः. तत्र पूषाभुवत्सचा.. (४)

हे इंद्र! आप बहुत बरसात के रूप में जल प्रवाहित करते हैं, इस लोक तक पहुंचाते हैं तब पूषा देवता आप के सहायक होते हैं. वे पोषण करने में समर्थ देवता हैं. (४)

गौर्धयति मरुता श्रवस्युर्माता मघोनाम्. युक्ता वह्नी रथानाम्.. (५)

पृथ्वी माता धनसंपन्न हैं. वे मरुतों के रथ में जुड़ी हुई हैं. वे सब ओर पूजित हैं. वे अन्न आदि उत्पन्न कर के अपने पुत्रों का पालनपोषण करती हैं. (५)

उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते. उप नो हरिभिः सुतम्.. (६)

हे इंद्र! आप सोम के स्वामी हैं. हम ने आप के लिए सोमरस निचोड़ कर रखा है. आप अपने हजारों घोड़ों से (सहित या माध्यम से) हमारे इस यज्ञ में पधारिए. आप जल्दी और बारबार पधारिए. (६)

इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं वृधन्तो अध्वरे. अच्छावभृथमोजसा.. (७)

हे इंद्र! हम यजमान बारबार आप की स्तुति करते हैं. हम अपने तेज से यज्ञ खत्म होने पर होने वाले स्नान तक बारबार आप के लिए आहुति प्रदान करते हैं. (७)

अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह. अह सूर्य इवाजनि.. (८)

हे इंद्र! आप पालनकर्ता हैं. हम ने आप की बुद्धि को अपनी ओर आकर्षित कर लिया है. यानी हम ने आप की कृपा प्राप्त कर ली है. अब हम सूर्य देव के समान प्रकाशित हो गए हैं. (८)

रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः. क्षुमन्तो याभिर्मदेम.. (९)

हे इंद्र! आप की कृपा से हम धनधान्य संपन्न हो कर प्रसन्न हो जाते हैं. हमारी गायों पर भी आप की कृपा हो. वे भी अधिक अन्न और दूध देने वाली हो जाएं. (९)

सोमः पूषा च चेततुर्विश्वासा सुक्षितीनाम्. देवत्रा रथ्योर्हिता.. (१०)

सोम और पूषा देवताओं के रथ में विराजमान हैं. वे इसी रथ में बैठने योग्य हैं. वे सभी मनुष्यों का उत्साह बढ़ाने वाले हैं. (१०)

पांचवां खंड

पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत.
विश्वासाह ꣳ शतक्रतुं म ꣳ हिष्ठं चर्षणीनाम्.. (१)

हे याजको (यज्ञ करने वालो)! आप इंद्र की विशेष स्तुति करें. वे शत्रुओं का नाश करने वाले हैं. सैकड़ों कर्म करने वाले हैं. वे धन दाता हैं. वे सोमरस का पान करने वाले हैं. (१)

प्र व इन्द्राय मादन ꣳ हर्यश्वाय गायत. सखायः सोमपाव्ने.. (२)

हे साधको! इंद्र हरि नामक घोड़े वाले हैं. वे सोमरस पीने वाले हैं. आप इन इंद्र को प्रसन्न करने वाली प्रार्थनाएं गाइए. (२)

वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः. कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते.. (३)

हे इंद्र! हम आप को अपना मित्र बनाना चाहते हैं. हम आप के मित्र होना चाहते हैं. हम कण्ववंशी हैं. हम आप की स्तुति करना अपना कर्तव्य मानते हैं. हम आप की स्तुति कर रहे हैं. (३)

इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः. अर्कमर्चन्तु कारवः.. (४)

हे इंद्र! आप प्रसन्न स्वभाव वाले हैं. हम आप के लिए निचोड़े गए सोमरस की स्तुति करते हैं. यज्ञ करने वालों से निवेदन है कि सोमरस की स्तुति करें. सोमरस पूजा योग्य है. (४)

अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि. एहीमस्य द्रवा पिब.. (५)

हे इंद्र! वेदी के आसन पर आप के लिए शुद्ध कर के सोमरस रखा हुआ है. आप इस स्थान पर शीघ्र पधारिए. आप इस सोमरस को ग्रहण कीजिए. (५)

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे. जुहूमसि द्यविद्यवि.. (६)

हे इंद्र! आप सुंदर कार्य करने वाले हैं. हम आप को अपने संरक्षण के लिए उसी प्रकार बुलाते हैं, जिस प्रकार अच्छा दूध देने वाली गाय को पुकारा जाता है. (६)

अभि त्वा वृषभा सुते सुत ꣳ सृजामि पीतये. तृम्पा व्यश्नुही मदम्.. (७)

हे इंद्र! आप इच्छा पूरी करने वाले हैं. हम सोम यज्ञ में पीने के लिए आप को सोमरस अर्पित कर रहे हैं. आप आनंददायी सोमरस ग्रहण कीजिए. (७)

य इन्द्र चमसेष्वा सोमश्चमूषु ते सुतः. पिबेदस्य त्वमीशिषे.. (८)

हे इंद्र! आप के लिए सोमरस 'चमस' और 'ग्रह' नामक बरतनों में रखा हुआ है. आप इसे अवश्य ग्रहण कीजिए. आप बहुत सामर्थ्य वाले हैं. (८)

योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे. सखाय इन्द्रमूतये.. (९)

हे इंद्र! हम हर शुभ काम के शुरू में आप को आमंत्रित करते हैं. हर तरह के संग्राम (युद्ध, कष्ट) में आप को आमंत्रित करते हैं. हम अपने संरक्षण के लिए मित्र की तरह आप को आमंत्रित करते हैं. (९)

आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत. सखायः स्तोमवाहसः.. (१०)

हे यज्ञ करने वाले मित्रो! आप जल्दीजल्दी आओ. आ कर बैठ जाओ. आप हर प्रकार से इंद्र की स्तुति करो. (१०)

छठा खंड

इद ꣳ ह्यन्वोजसा सुत ꣳ राधानां पते. पिबा त्वा ३ स्य गिर्वणः.. (१)

हे इंद्र! आप धन के स्वामी हैं. आप प्रार्थना करने योग्य हैं. हम ने बहुत मेहनत से आप के लिए सोमरस निचोड़ा है. आप रुचिपूर्वक इसे ग्रहण कीजिए. (१)

महाँ इन्द्रः पुरश्च नो महित्वमस्तु वज्रिणे. द्यौर्न प्रथिना शवः.. (२)

हे इंद्र! आप महान हैं. आप के गुण श्रेष्ठ हैं. आप वज्रधारी हैं. आप की कीर्ति स्वर्गलोक की तरह फैले. आप के बल की चारों ओर प्रशंसा हो. (२)

आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभ ꣳ सं गृभाय. महाहस्ती दक्षिणेन.. (३)

हे इंद्र! आप बड़ेबड़े हाथों वाले हैं. आप हमारे लिए यशदायी धन दाएं हाथ में लीजिए. वह धन बहुत प्रशंसनीय हो. कई लोगों द्वारा लेने योग्य हो. (३)

अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे. सूनु ꣳ सत्यस्य सत्पतिम्.. (४)

हे याजको! यज्ञ वाले इंद्र गौओं के स्वामी हैं. वे यजमानों के पालनहार हैं. वे यज्ञ के पुत्र व सत्य के रक्षक हैं. आप मन से उन की स्तुति कीजिए. (४)

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा. कया शचिष्ठया वृता.. (५)

हे इंद्र! आप सदा बढ़ने वाले हैं. आप विलक्षण हैं. आप किस कर्म, पूजा विधि और भेंट से हम पर कृपा करेंगे? आप किन दिव्य तेजों से भर कर हमारे पास पधारेंगे? (५)

त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम्. आ च्यावयस्यूतये.. (६)

हे याजको! इंद्र बहुत से शत्रुओं का नाश करने वाले हैं. सभी स्तुतियों में इंद्र का वर्णन है. आप अपने संरक्षण के लिए उन का आह्वान कीजिए. (६)

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्. सनिं मेधामयासिषम्.. (७)

हे इंद्र! आप अपूर्व, इच्छित धन देने वाले और श्रेष्ठ हैं. अपनी बुद्धि को बढ़ाने के लिए हम ने आप को प्राप्त किया. (७)

ये ते पन्था अधो दिवो येभिर्व्यश्वमैरयः. उत श्रोषन्तु नो भुवः.. (८)

हे इंद्र! स्वर्गलोक में नीचे जो रास्ता है, जिस रास्ते से आप पृथ्वी का संचालन करते हैं, वह रास्ता हमारे यज्ञ स्थान तक पहुंचता है. आप उस रास्ते से हमारे यज्ञ में पधारें. (८)

भद्रंभद्रं न आ भरेषमूर्ज शतक्रतो. यदिन्द्र मृडयासि नः.. (९)

हे इंद्र! आप सैकड़ों काम करने वाले हैं. आप हमें खूब सुखदायी धन व बलशाली बनाने वाला अन्न दीजिए. आप हमें सुखी बनाने वाले हैं. हे इंद्र! हमें सुख दीजिए. (९)

अस्ति सोमो अय सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः.
उत स्वराजो अश्विना.. (१०)

हे इंद्र! हम ने साफ, छान कर यह सोमरस तैयार किया है. तेजस्वी मरुद्गण और अश्विनी देवता इस सोमरस का पान करते हैं. (१०)

सातवां खंड

ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते. वन्वानासः सुवीर्यम्.. (१)

इंद्र की माता उत्तम बल चाहने वाली हैं. वे श्रेष्ठ कार्य करने की इच्छुक हैं. वे इंद्र से वीरतापूर्ण धन चाहती हैं. वे प्रकट हुए इंद्र की सेवा करती हैं. (१)

न कि देवा इनीमसि न क्या योपयामसि. मन्त्रश्रुत्यं चरामसि.. (२)

हे इंद्र! हम वेद मंत्रों के अनुसार आचरण करते हैं. हम किसी को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं. हम धर्म (नियम) के विरुद्ध कोई काम नहीं करते हैं. (२)

दोषो आगाद् बृहद्गाय द्युमद्गामन्नाथर्वण. स्तुहि देव सवितारम्.. (३)

हे बृहत्साम का गायन करने वाले, प्रकाश वाले मार्ग से जाने वाले अथर्ववेदी ब्राह्मण! आप यज्ञ कार्य से जाने अनजाने होने वाले दोष को दूर करने के लिए सविता देवता की स्तुति कीजिए. (३)

एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः. स्तुषे वामश्विना बृहत्.. (४)

यह उषा अपूर्व और बहुत प्रसन्नता देने वाली है. यह स्वर्गलोक से आ कर अंधकार का नाश करती है. हे उषा के कार्य सहयोगी अश्विनीकुमारो! हम आप की विशेष स्तुति करते हैं. (४)

इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः. जघान नवतीर्नव.. (५)

हे इंद्र! आप को कोई नहीं जीत सकता. आप ने दधीचि की हड्डियों से बने वज्र से निन्यानवे असुरों का नाश किया. (५)

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः महाँ अभिष्टिरोजसा.. (६)

हे इंद्र! आप सोमरस के रूप में अन्न ग्रहण कीजिए व प्रसन्न होइए. हमारे यहां पधारिए. अपनी शक्ति से हमें शक्तिमान बनाइए. शत्रुओं को जीतने की शक्ति दीजिए. (६)

आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि. महान्महीभिरूतिभिः.. (७)

हे इंद्र! आप शत्रुनाशक व बहुत महान हैं. आप हमारे पास जल्दी आइए. आप अपने रक्षा साधनों के साथ शीघ्र हमारे यहां पधारिए. (७)

ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत्समवर्तयत्. इन्द्रश्चर्मेव रोदसी.. (८)

हे इंद्र! आप का बल प्रकट होने लगा है. आप स्वर्गलोक और पृथ्वी को चमड़े के समान फैला रहे हैं. (८)

अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम्. वचस्तच्चिन्न ओहसे.. (९)

हे इंद्र! सोमरस के पास आप उसी तरह बराबर बने रहते हैं, जिस तरह गर्भवती कबूतरी के साथ कबूतर बना रहता है. आप से निवेदन है कि आप भी हमारी स्तुतियों के साथ बने रहें. (९)

वात आ वातु भेषजꣳ शम्भु मयोभु नो हृदे. प्र न आयूꣳषि तारिषत्.. (१०)

वायु हमारे पास शांति और सुखदायी ओषधियां पहुंचाएं. ये ओषधियां हमारी आयु बढ़ाएं. (१०)

आठवां खंड

यꣳ रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा. न किः स दभ्यते जनः.. (१)

जिस यजमान की रक्षा श्रेष्ठ ज्ञान वाले वरुण, मित्र तथा अर्यमा देवता करते हैं, उस यजमान का कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता. (१)

गव्यो षु णो यथा पुराश्वयोत रथया. वरिवस्या महोनाम्.. (२)

हे इंद्र! आप हमेशा की तरह गौओं का समूह, घोड़ों का समूह और यशदायी धन वैभव देने के लिए पधारिए. (२)

इमास्त इन्द्र पृश्नयो घृतं दुहत आशिरम्. एनामृतस्य पिप्युषीः.. (३)

हे इंद्र! आप की गौएं बहुत सुंदर रंग वाली हैं. ये सत्य और यज्ञ को बढ़ाने वाली हैं. ये हमारे लिए घी देने वाले दूध को टपकाती हैं (देती हैं). (३)

अया धिया च गव्यया पुरुणामन्पुरुष्टुत. यत्सोमेसोम आभुवः.. (४)

हे इंद्र! आप अनेक नामों वाले हैं. अनेक लोग आप की स्तुति करते हैं. आप जहां पधारते हैं, वहां हम गौओं की इच्छा से आप की प्रार्थना करते हैं. (४)

पावकाः नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती. यज्ञं वष्टु धियावसुः.. (५)

सरस्वती पवित्र करने वाली, पोषण देने वाली व बुद्धि से धन देने वाली हैं. विद्या की वे देवी हमारे यज्ञ को सफल बनाएं. (५)

क इमं नाहुषीष्वा इन्द्र सोमस्य तर्पयात्. स नो वसून्या भरात्.. (६)

मनुष्यों में ऐसी क्षमता कहां, जो इंद्र को तृप्त कर सकें? वे हमारे यज्ञ में तृप्त हों तथा हमें धन प्रदान करें. (६)

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्. एदं बर्हिः सदो मम.. (७)

हे इंद्र! आप आइए. हम ने आप के लिए सोमरस निकाला है. आप उसे पीजिए. हम ने आप के लिए कुश का आसन बिछाया है. आप उस पर विराजमान होइए. (७)

महि त्रीणामवरस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः. दुराधर्षं वरुणस्य.. (८)

इंद्र, अर्यमा और वरुण—इन तीनों देवताओं का तेजस्वी संरक्षण हमें मिले ताकि हम शत्रुओं को हरा सकें. (८)

त्वावतः पुरूवसो वयमिन्द्र प्रणेतः. स्मसि स्थातर्हरीणाम्.. (९)

हे इंद्र! आप बहुत धनवान, श्रेष्ठ कर्म करने वाले व हरि नामक घोड़े वाले हैं. हमारी रक्षा करिए. हम आप के अपने हैं. (९)

नौवां खंड

उत्त्वा मन्दन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः. अव ब्रह्मद्विषो जहि.. (१)

हे इंद्र! सोमरस आप को आनंद दे. हे वज्रधारी इंद्र! आप हम पर धन बरसाइए. आप ब्राह्मणों के द्वेषियों का नाश कीजिए. (१)

गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे. इन्द्र त्वादातमिद्यशः.. (२)

हे इंद्र! आप स्तुति करने योग्य हैं. आप हमारे छाने हुए इस सोमरस को पीजिए. आप को सोम की धारा से सींचा जाता है. हमें आप की कृपा से शुद्ध किया हुआ अन्न (धन) प्राप्त होता है. (२)

सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा उपो नु स सपर्यन्. न देवो वृतः शूर इन्द्रः.. (३)

हे यजमानो! इंद्र हमेशा आप के पास हैं. वे पूजा किए जाने पर आप के यज्ञ की ओर आते हैं. हम ने महान इंद्र का वरण किया है. (३)

आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः. न त्वामिन्द्राति रिच्यते.. (४)

हे इंद्र! जैसे नदियां समुद्र में मिलती हैं, वैसे ही सोमरस आप में मिलता है. आप से बढ़ कर कोई महान नहीं है. (४)

इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः. इन्द्रं वाणीरनूषत.. (५)

सामगान गाते हुए उद्गाता (साम गाने वाले पुरोहित) बृहत्साम गा कर इंद्र को प्रसन्न करते हैं. पूजा करने वाले मनुष्य स्तोत्रों से और हम यजमान मंत्रों के द्वारा उन्हें प्रसन्न करते हैं. (५)

इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभु ं३ रयिम्. वाजी ददातु वाजिनम्.. (६)

हम जिस इंद्र की स्तुति कर रहे हैं, वे हमें श्रेष्ठ धन प्रदान करें. इंद्र हमें उन ऋभु देवता को प्रदान करें, जो सोमरस पीने से अमर हो गए. बलवान इंद्र! हमें बलवान छोटे भाई दें ताकि हम अन्न प्राप्त कर सकें. (६)

इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत्. स हि स्थिरो विचर्षणिः.. (७)

हे इंद्र! आप स्थिर हैं. आप सारे संसार को देखने वाले व ज्ञानी हैं. आप शीघ्र ही भय को दूर करने वाले तो हैं ही, साथ ही भय को हमेशा के लिए हटा देते हैं. (७)

इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः. गावो वत्सं न धेनवः.. (८)

हे इंद्र! आप ऋचा (मंत्रों) से स्तुति करने योग्य हैं. प्रत्येक यज्ञ में हमारी प्रार्थनाएं आप के पास वैसे ही जल्दी पहुंचती हैं, जैसे दुधारू गाएं अपने बछड़ों के पास पहुंचती हैं. (८)

इन्द्रा नु पूषणा वय ं३ सख्याय स्वस्तये. हुवेम वाजसातये.. (९)

इंद्र और पूषा देवता को अपने कल्याण के लिए बुलाते हैं. हम मित्रता के लिए उन्हें बुलाते हैं. हम अन्न व जल की प्राप्ति के लिए इन दोनों देवताओं को बुलाते हैं. (९)

न कि इन्द्र त्वदुत्तरं न ज्यायो अस्ति वृत्रहन्. न क्येवं यथा त्वम्.. (१०)

हे इंद्र! आप वृत्र नामक असुर को मारने वाले हैं. इंद्रलोक में भी आप से श्रेष्ठ कोई नहीं है. आप जैसा महान कोई दूसरा नहीं है. (१०)

दसवां खंड

तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः. समानमु प्र श ं३ सिषम्.. (१)

हे यजमानो! इंद्र हमारा बेड़ा पार लगाने वाले हैं. वे हमारे शत्रुओं को भय दिखाने वाले हैं. वे पशु धन देने वाले हैं. वे अन्नधन देने वाले हैं. मैं उन की सदा स्तुति करता हूं. (१)

असृग्रमिन्द ते गिरः प्रति त्वामुदहासत. सजोषा वृषभं पतिम्.. (२)

हे इंद्र! आप के लिए हम ने स्तुतियां रची हैं. आप बलशाली हैं. सब का पालनपोषण करने वाले हैं. वे स्तुतियां आप तक पहुंचीं. सोम पीने वाले इंद्र ने उन का भी सेवन किया. (२)

सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा. मित्रास्पान्त्यद्रुहः.. (३)

हे इंद्र! द्रोह (द्वेष) न करने वाले मरुत्, अर्यमा और मित्र देवता जिस की रक्षा करते हैं, वह यजमान निश्चय ही अच्छी राह पर चलने वाला होता है. (३)

यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्. वसु स्पार्हं तदा भर.. (४)

हे इंद्र! आप के पास जो अचंचल और स्थिर धन है, ऐसा ही पुरुषार्थ वाला धन हमें प्रदान कीजिए. (४)

श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्र शर्धं चर्षणीनाम्. आशिषे राधसे महे.. (५)

वृत्रासुर को मारने वाले बल की महिमा सब ने सुनी है. मनुष्य को अच्छा धन प्राप्त कराने की इच्छा से वह बल आप को देता हूं. (५)

अरं त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः. अरं ꣳ शक्र परेमणि.. (६)

हे इंद्र! आप वीर हैं. आप की प्रसिद्धि हम ने कई बार सुनी है. आप जैसे श्रेष्ठ दूसरे देवता की प्रसिद्धि भी हमें प्राप्त हो. (६)

धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्. इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः.. (७)

हे इंद्र! दही और भुजे हुए सत्तुओं वाले यज्ञ के पुरोडाश (प्रसाद) की हवि हम मंत्र के साथ समर्पित कर रहे हैं. आप इस सोम को प्रातःकाल ग्रहण कीजिए. (७)

अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः. विश्वा यदजय स्पृधः.. (८)

जब डाह करने वाली राक्षसों की सारी सेना को इंद्र ने हरा दिया तब आप ने जल के झाग से नमुचि राक्षस का सिर तोड़ (काट) दिया. (८)

इमे त इन्द्र सोमाः सुतासो ये च सोत्वाः. तेषां मत्स्व प्रभूवसो.. (९)

हे इंद्र! आप के लिए यह सोमरस निचोड़ व छान कर तैयार किया है. आप बहुत धनवान हैं. आप सोमरस से प्रसन्न होने की कृपा करें. (९)

तुभ्य ꣳ सुतासः सोमाः स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो. स्तोतृभ्य इन्द्र मृडय.. (१०)

हे इंद्र! आप तेजस्वी व धनवान हैं. आसन पर शुद्ध सोमरस रखा हुआ है. आप कुशासन पर बैठिए. सोमरस पीजिए. स्तुति करने वालों को सुख (अपनी कृपा) दीजिए. (१०)

ग्यारहवां खंड

आ व इन्द्रं कृविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम्. म ꣳ हिष्ठ ꣳ सिञ्च इन्दुभिः.. (१)

हे यजमानो! जैसे अन्न चाहने वाले खेत को जल से सींचते हैं, वैसे ही बल (पराक्रम) चाहने वाले हम पूजनीय इंद्र को सोमरस से सींचते हैं. (१)

अतश्चिदिन्द्र न उपा याहि शतवाजया. इषा सहस्रवाजया.. (२)

हे इंद्र! आप सैकड़ों प्रकार के बल से पूर्ण हो कर हमारे यज्ञ में पधारिए. आप हजारों प्रकार के अन्न से युक्त हो कर हमारे यज्ञ में पधारिए. आप अनेक रस ले कर हमारे यज्ञ में पधारिए. (२)

आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छाद्विमातरम्. क उग्राः के ह शृण्विरे.. (३)

हे यजमानो! जन्म लेते ही हाथ में बाण ले कर वृत्रासुर को मारने वाले इंद्र ने अपनी मां से पूछा कि अन्य प्रसिद्ध वीर कौनकौन से हैं. (३)

बृबदुक्थ ꣳ हवामहे सृप्रकरस्नमूतये. साधः कृण्वन्तमवसे.. (४)

लोक की रक्षा और पालन के लिए हम साधन सहित इंद्र को आमंत्रित करते हैं. इंद्र की बहुत स्तुति की जाती है. (४)

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयति विद्वान्. अर्यमा देवैः सजोषाः.. (५)

मित्र और वरुण देवता हमें सरल गति से न्याय के उत्तम पथ पर ले जाते हैं. अन्य देवताओं के साथ अर्यमा देवता भी सरल गति से हमें उस स्थान पर पहुंचाएं. (५)

दूरादिहेव यत्सतो ऽ रुणप्सुरशिश्वितत्. वि भानुं विश्वथातनत्.. (६)

दूर आकाश से पास आती उषा प्रकाश फैलाने वाली है, जिस से सारा जग प्रकाशित हो जाता है. (६)

आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्. मध्वा रजा ꣳ सि सुक्रतू.. (७)

मित्र और वरुण देवता अच्छे काम करने वाले हैं. ये देवता हमारी गायों के समूह को घी, दूध से सींचें. ये देवता परलोकों को भी मधुर रस (अमृत) से सींचें. (७)

उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा यज्ञेष्वत्नत. वाश्रा अभिज्ञु यातवे.. (८)

प्रसिद्ध गर्जना करते हुए मरुत् देवता यज्ञ में जल के समान फैलते हैं. जल का विस्तार करते हैं. उस जल को पीने के लिए रंभाती हुई गायों के समूह को घुटनों तक के पानी से जाना पड़ता है. (८)

इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्. समूढमस्य पा ꣳ सुले.. (९)

विष्णु के वामन अवतार ने तीन पैरों से विश्व को नाप लिया. उन के धूल से भरे चरणों के नापे गए स्थान में सारा जग समाया. (९)

बारहवां खंड

अतीहि मन्युषाविण सुषुवा समुपेरय. अस्य रातौ सुतं पिब.. (१)

हे इंद्र! जो यजमान क्रोधित हो कर सोमरस निचोड़े, आप उसे स्वीकार मत कीजिए. जो अच्छे विधिविधान से सोमरस निचोड़े, आप उसी के यज्ञ में सोमरस ग्रहण कीजिए. (१)

कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते. तदिद्ध्यस्य वर्धनम्.. (२)

हे इंद्र! आप महान हैं. आप की कृपा से हमारी मामूली प्रार्थना भी प्रशंसा पाती है. हमारी ये प्रार्थनाएं भी आप का गुणगान करती हैं. अतः यजमान पर आप की कृपा होती है. (२)

उक्थं च न शस्यमानं नागो रयिरा चिकेत. न गायत्रं गीयमानम्.. (३)

स्तुति न करने वाले इंद्र के शत्रु हैं. इंद्र यजमानों द्वारा पढ़े गए स्तोत्रों को अच्छी तरह जानते हैं. इंद्र पुरोहित के गाए गए साम को भी जानते व समझते हैं. हम इंद्र की स्तुति करते हैं. (३)

इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो वाजानां च वाजपतिः. हरिवांत्सुताना सखा.. (४)

हे इंद्र! आप शक्तिशालियों में सब से ज्यादा शक्तिशाली हैं. आप हरि नामक घोड़े वाले हैं. आप प्रार्थनाओं से बहुत प्रसन्न होते हैं. आप सोमरस से मित्र के समान स्नेह रखने की कृपा करें. (४)

आ याह्युप नः सुतं वाजेभिर्मा हृणीयथाः. महाँ इव युवजानिः.. (५)

हे इंद्र! जिस प्रकार युवा स्त्री (पत्नी) वाला पुरुष किसी दूसरी स्त्री पर नजर नहीं डालता, उसी प्रकार आप भी औरों की हवि पर नजर मत डालिए (मत ललचाइए). आप हमारे ही सोम यज्ञ में पधार कर हवि ग्रहण करने की कृपा करें. (५)

कदा वसो स्तोत्र हर्यत आ अव श्मशा रुधद्वाः. दीर्घ सुतं वाताप्याय.. (६)

हे इंद्र! आप सब ओर व्यापक हैं. बनाई गई नहर में जल रोकने की तरह हम सोमरस तैयार कर के आप को भेंट करने के लिए कब रोकें. (६)

ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतू रनु. तवेद सख्यमस्तृतम्.. (७)

हे इंद्र! ब्राह्मण यजमान से सोमरस पीजिए. आप मौसम के अनुसार सोमरस पीजिए. आप का और हमारा अटूट नाता है. (७)

वयं घा ते अपि स्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः. त्वं नो जिन्व सोमपाः.. (८)

हे इंद्र! हम आप के प्रशंसक व पूजक हैं. आप सोम पान करने वाले हैं. आप हमें संतुष्टि (तृप्ति) प्रदान कीजिए. (८)

एन्द्र पृक्षु कासु चिन्नृम्णं तनूषु धेहि नः. सत्राजिदुग्र पौ ꣳ स्यम्.. (९)

हे इंद्र! आप बहुत शक्तिमान हैं. आप हमारे अंगों में शक्ति दीजिए, हमें ऐसी शक्ति दीजिए जिस से हम अपने सारे शत्रुओं को एक साथ जीत सकें. (९)

एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः. एवा ते राध्यं मनः.. (१०)

हे इंद्र! आप वीर व अडिग हैं. आप वीर शत्रुओं का भी नाश कर सकते हैं. आप धैर्यवान हैं. आप का मन स्तुतियों से आराधना करने योग्य है. (१०)

तीसरा अध्याय

पहला खंड

अभि त्वा शूर नोनुमो ऽ दुग्धा इव धेनवः.
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः.. (१)

हे इंद्र! आप इस जग के व जड़चेतन के स्वामी हैं. आप सब कुछ देख सकते हैं. जैसे थनों में दूध लिए गाएं बछड़ों के पास जाने के लिए उतावली रहती हैं, वैसे ही हम उतावले हो कर आप को प्रणाम करते हैं. (१)

त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः.
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः.. (२)

हे इंद्र! स्तुति करने वाले यजमान हवि दान के लिए आप को आमंत्रित करते हैं. आप सत्य (या सज्जनों) के पालनहार हैं. हम तथा दूसरे सभी शत्रु या घोड़ों से संबंधित युद्धों में मदद के लिए आप को ही पुकारते हैं. (२)

अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे.
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति.. (३)

हे यजमानो! इंद्र पशु आदि बहुत प्रकार के धन वाले हैं. वे अपनी स्तुति करने वाले को बहुविध धन देते हैं. आप श्रेष्ठ धन देने वाले इंद्र की हर प्रकार से पूजाअर्चना करें. (३)

तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः.
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे.. (४)

हे यजमानो! जैसे गाएं बछड़ों को देख कर खुशी से रंभाती हैं, वैसे ही आप भी सोमरस पीने से प्रसन्न इंद्र के लिए स्तुति गाइए. वे शत्रुओं (दुःखों) का नाश करने वाले हैं. (४)

तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्र ꣳ सबाध ऊतये.
बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम्.. (५)

हे यजमानो! इंद्र के बहुत तेज गति वाले घोड़े हैं. वे इंद्र बहुत धनदाता हैं. वे बाधाओं से हमारी रक्षा करते हैं. हम बृहत्साम गाते हुए उन को उसी प्रकार रक्षा के लिए बुलाते हैं, जैसे बच्चे अपनी रक्षा के लिए अपने मातापिता को बुलाते हैं. (५)

तरणिरित्सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा.

आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम्.. (६)

इंद्र तारनहार हैं. हम बुद्धि से अन्न प्राप्त करना चाहते हैं. जैसे बढ़ई अपनी कारीगरी से लकड़ी को नम्र कर के पहिए को गाड़ी के अनुकूल कर लेता है, वैसे ही हम इंद्र देव को अपनी स्तुतियों से अपने अनुकूल करना चाहते हैं. (६)

पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः.
आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधे ३ ऽ स्मां अवन्तु ते धियः.. (७)

हे इंद्र! आप गाय का दूध मिला कर तैयार किए हुए रसीले सोमरस को पीजिए. उसे पी कर आप प्रसन्न होइए. आप हमें धन देने वाले बंधु बनिए. आप हमें प्रगति की राह दिखाइए. आप की बुद्धि हम यजमानों की रक्षा करे. (७)

त्व ꣳ ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये.
उद्वावृषस्व मघवन् गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये.. (८)

हे इंद्र! आप मुझे धन देने के लिए आइए. अच्छे आचारविचार वाले हम लोगों को राह दिखाइए व धन दीजिए. हम गायों के इच्छुक हैं. हमें गोधन दीजिए. हम घोड़ों के इच्छुक हैं. हमें अश्वधन दीजिए. (८)

न हि वश्चरमं च न वसिष्ठः परिम ꣳ सते.
अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबन्तु कामिनः.. (९)

हे मरुद्गणो! वसिष्ठ ऋषि आप में से छोटों को भी छोड़ कर स्तुति नहीं करते हैं अर्थात् छोटों की भी स्तुति करते हैं. आज हमारे इस सोम यज्ञ में आप सभी इकट्ठे हो कर सोमरस पीजिए. (९)

मा चिदन्यद्वि श ꣳ सत सखायो मा रिषण्यत.
इन्द्रमित्स्तोता वृषण सचा सुते मुहुरुक्था च श ꣳ सत.. (१०)

हे यजमानो! आप इंद्र के अलावा किसी अन्य देव की स्तुति मत करो. बेकार मेहनत मत करो. एक साथ सोम यज्ञ में बलवान इंद्र की ही स्तुति करो. उन्हीं के बारे में प्रार्थनाओं को बारबार उचारो. (१०)

दूसरा खंड

नकिष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम्.
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा.. (१)

हे यजमानो! इंद्र सदा उन्नतिशील व समृद्ध हैं. वे सब से पूजित और महान बलशाली हैं. किसी से नहीं दबने वाले व शत्रुनाशक हैं. जो यज्ञ से इंद्र को अपने अनुकूल बना लेता है, उसे कोई भी नहीं दबा सकता है. (१)

य ऋते चिदभिश्रिषः पुरा जत्रुभ्य आतृदः.
सन्धाता सन्धिं मघवा पुरूवसुर्निष्कर्ता विह्रुत पुनः.. (२)

हे इंद्र! आप गले की नाड़ियों को खून निकलने पर भी बिना जोड़ने की सामग्री के ही जोड़ सकते हैं. इंद्र बहुत वैभव वाले हैं. वे कटे हुए भागों को फिर से जोड़ सकते हैं. (२)

आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये.
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये.. (३)

हे इंद्र! आप के घोड़े मंत्र के प्रभाव से रथ में जुत जाते हैं. आप के घोड़ों की गरदन पर लंबेलंबे बाल हैं. वे सैकड़ों घोड़े आप के सुनहरे रथ में जुत जाएं और सोमपान के लिए आप को यज्ञ में ले आएं, यह अनुरोध है. (३)

आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः.
मा त्वा के चिन्नि येमुरिन्न पाशिनो ऽ ति धन्वेव तां इहि.. (४)

हे इंद्र! जैसे राहगीर शीघ्र ही रेगिस्तान को पार कर लेता है, वैसे ही आप भी मोर जैसे रोम वाले घोड़ों से यहां आइए. जाल फैलाने वाले शिकारी आप की राह में रोड़ा न अटका सकें. (४)

त्वमङ्ग प्र श सिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम्.
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः.. (५)

हे इंद्र! आप बलवान व प्रकाश वाले हैं. आप अपने पूजकों की प्रशंसा करते हैं. आप धनवान हैं. आप के अलावा कोई सुख देने वाला नहीं है. इसी कारण मैं आप की स्तुति करता हूं. (५)

त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः.
त्वं वृत्राणि ह स्यप्रतीन्येक इत्पुर्वनुत्तश्चर्षणीधृतिः.. (६)

हे इंद्र! आप शक्तिशाली हैं. आप सोमरस पीने वाले और यशवान हैं. आप यजमानों के हित के लिए बड़े से बड़े शत्रु को भी अकेले ही नष्ट कर सकते हैं. (६)

इन्द्रमिद्देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे.
इन्द्र समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये.. (७)

देवों के लिए किए जाने वाले यज्ञ में हम इंद्र को ही आमंत्रित करते हैं. यज्ञ के शुरू और समापन दोनों ही समय हम इंद्र को आमंत्रित करते हैं. धन लाभ के लिए हम इंद्र को ही आमंत्रित करते हैं. आप शीघ्र पधारिए. (७)

इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम.
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितो ऽ भिस्तोमैरनूषत.. (८)

हे इंद्र! आप धनवान हैं. हमारी प्रार्थनाएं आप का यश बढ़ाएं. यजमान अग्नि के समान पवित्र, तेजस्वी व विद्वान् हैं. वे प्रार्थनाओं से बारबार आप की स्तुति करते हैं. (८)

उदु त्ये मधुमत्तमा गिर स्तोमास ईरते.
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव.. (९)

हे इंद्र! आप हमेशा शत्रुओं को जीतने वाले व धन देने वाले हैं. आप का दिया संरक्षण कभी खत्म नहीं होता. बलशाली रथ के समान ये प्रार्थनाएं आप की ओर बढ़ रही हैं. ये प्रार्थनाएं मधुर और श्रेष्ठ वचनों से भरी हुई हैं. (९)

यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम्.
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब.. (१०)

हे इंद्र! जैसे प्यासे गौर हिरण पानी से भरे हुए तालाब के पास जाते हैं, उसी प्रकार आप हमारी प्रार्थनाओं से भरेपूरे यज्ञ में पधारिए. कण्व के यज्ञ में जल्दी से जल्दी आइए. सोमरस पी कर प्रसन्न होइए. (१०)

तीसरा खंड

शग्ध्यू ३ षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः.
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि.. (१)

हे इंद्र! आप शची के पति हैं. आप पराक्रमी हैं. आप हमें संरक्षण के साथसाथ चाहे गए वरदान दीजिए तथा सौभाग्य जैसा यशस्वी धन दीजिए. हम आप की आराधना करते हैं. (१)

या इन्द्र भुज आभरः स्ववाँ असुरेभ्यः.
स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः.. (२)

हे इंद्र! आप आत्म शक्ति वाले हैं. आप ने बलवान राक्षसों से भोग के साधन जीते हैं. इस धन से आप अपने पूजकों को संरक्षण दीजिए. जो आप को बारबार आमंत्रित या याद करते हैं, आप उन्हें धनवान बनाइए. (२)

प्र मित्राय प्रार्यम्णे सचथ्यमृतावसो.
वरूथ्ये ३ वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्र ꣳ राजसु गायत.. (३)

हे यज्ञ करने वालो! आप का धन आप के यज्ञ हैं. आप मित्र, वरुण और अर्यमा देवता के लिए छंदबद्ध प्रार्थनाएं उन के यज्ञशाला में विराजमान हो जाने पर गाइए. (३)

अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः.
समीचीनास ऋभवः समस्वरन्रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम्.. (४)

हे इंद्र! प्रार्थना करने वाले यजमान सब से पहले आप सभी देवताओं से स्तोत्र के

माध्यम से सोमरस पीने का निवेदन करते हैं. सब ने इकट्ठे हो कर आप की आराधना की. रुद्र के पुत्र मरुत् ने भी आदि पुरुष (पहले पुरुष) के रूप में आप की स्तुति की. (४)

प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत.
वृत्र हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा.. (५)

हे यजमानो! आप अपने इंद्र के लिए स्तुति करो. इंद्र वृत्रासुर के नाशक हैं. वे सौ धारों वाले वज्र से राक्षसों (कष्टों) का नाश करें. (५)

बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम्.
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि.. (६)

हे याजको! इंद्र के लिए बृहत्साम स्तोत्र का पाठ कीजिए. यज्ञ को बढ़ाने वाले ऋषियों ने उस के सहयोग से इंद्र के लिए दिव्य ज्योति पैदा की है. (६)

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा.
शिक्षा णो अस्मिन्पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि.. (७)

हे इंद्र! हमें यज्ञ कार्य करने की शिक्षा दीजिए, जैसे पिता अपने पुत्र को शिक्षा देता है. यानी हमें शिक्षा रूपी धन दीजिए. हम प्रतिदिन सुबह सूर्य के दर्शन करें. (७)

मा न इन्द्र परा वृणग्भवा नः सधमाद्ये.
त्वं न ऊती त्वमिन्न आप्यं मा न इन्द्र परावृणक्.. (८)

हे इंद्र! आप हम यज्ञ करने वालों को कभी मत छोड़िए. आप हमारे संरक्षक हैं. आप हमारे बंधु हैं. आप हमें अपनी शरण में रखिए. आप कभी अपनेआप से हमें दूर मत करिए. (८)

वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः.
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन्परि स्तोतार आसते.. (९)

हे इंद्र! आप वृत्रासुर के नाशक हैं. जैसे जल नीचे की ओर बहता है, वैसे ही सोमरस के साथ हम आप को नीचे झुक कर नमस्कार करते हैं. पवित्र यज्ञ में सभी यजमान कुश के आसन पर बैठ कर आप की आराधना करते हैं. (९)

यदिन्द्र नाहुषीष्वा ओजो नृम्णं च कृष्टिषु.
यद्वा पञ्चक्षितीनां द्युम्नमा भर सत्रा विश्वानि पौ स्या.. (१०)

हे इंद्र! मनुष्यों में जो धन व पांच भूमियों का चमकता हुआ अन्न है, वह सब हमें दीजिए. हमें आप सब प्रकार के बल (शक्ति) भी दीजिए. (१०)

चौथा खंड

सत्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नो ऽ विता.
वृषा ह्युग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः.. (१)

हे इंद्र! निश्चय ही आप वीर व मनोकामना पूरी करने वाले हैं. सोम यज्ञ करने वाले यजमानों ने अपनी रक्षा के लिए आप को बुलाया है. आप हमारी रक्षा कीजिए. आप की प्रसिद्धि पास भी है और बहुत दूरदूर तक भी फैली हुई है. (१)

यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन्.
अतस्त्वा गीर्भिर्द्युगदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ आ विवासति.. (२)

हे इंद्र! आप वृत्रासुर नाशक हैं. आप हमारे पास हों चाहे दूर, पर हम सोम यज्ञ करने वाले यजमान आप को आमंत्रित करते हैं. हम गरदन पर सुंदर बाल वाले घोड़ों के समान अपनी श्रेष्ठ स्तुतियों से आप को बुलाते हैं. (२)

अभि वो वीरमन्धसो मदेषु गाय गिरा महा विचेतसम्.
इन्द्रं नाम श्रुत्य ꣳ शाकिनं वचो यथा.. (३)

हे यजमानो! आप अपने हित के लिए इंद्र की स्तुति करो. वे राक्षसों को जीतने वाले हैं. वे सोमरस से खुश होने वाले हैं. वे यशस्वी, वीर व बुद्धिमान हैं. आप ऐसे इंद्र की जैसे भी हो विशेष स्तुति करो. (३)

इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथ ꣳ स्वस्तये.
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः.. (४)

हे इंद्र! आप धनवान यजमानों को और मुझे तीनों ऋतुओं में सुखदायी कल्याणकारी तीन मंजिला घर दीजिए. इन्हें पाने के लिए हमें शस्त्रों का प्रयोग न करना पड़े. (४)

श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षतः.
वसूनि जातो जनिमान्योजसा प्रति भागं न दीधिमः.. (५)

हे यजमानो! जैसे सारी किरणें सूर्य के सहारे रहती हैं, वैसे ही सारा संसार इंद्र के सहारे है. हम भी उन्हीं के सहारे हैं. जैसे पिता के धन में संतान की भागीदारी होती है, वैसे ही इंद्र के धन में हमारी भागीदारी हो. इंद्र उत्पन्न हुए और उत्पन्न होने वालों को बल से भाग प्रदान करते हैं. (५)

न सीमदेव आप तदिषं दीर्घायो मर्त्यः.
एतग्वा चिद्य एतशो युयोजत इन्द्रो हरी युयोजते.. (६)

हे इंद्र! आप चिरायु हैं. आप के प्रति श्रद्धा के बिना मनुष्य उस श्रेष्ठ अन्न को नहीं पा सकता है. जो इंद्र को पाने के लिए अपनी स्तुतियों के घोड़े नहीं जोड़ता है, इंद्र भी उस के यज्ञ में जाने के लिए हरि तथा अन्य घोड़ों को नहीं जोड़ते हैं. (६)

आ नो विश्वासु हव्यमिन्द्र ं३ समत्सु भूषत.
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन्परमज्या ऋचीषम.. (७)

हे इंद्र! युद्धों में सहायता के लिए आप को बुलाया जाता है. आप हमारी प्रशंसा, प्रार्थनाओं से सुशोभित होते हैं. आप वृत्रासुर नाशक हैं. आप के धनुष की प्रत्यंचा अविनाशी है. आप तीनों समय की संध्याओं की प्रार्थनाओं को शोभित कीजिए. (७)

तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम्.
सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि न किष्ट्वा गोषु वृण्वते.. (८)

हे इंद्र! आप निम्न, मध्यम और उत्तम सभी तरह के धनों के अकेले स्वामी हैं. आप जब गाय आदि अपने यजमानों को दान करना चाहते हैं तो आप को कोई भी नहीं रोक सकता है. (८)

क्वेयथ क्वेदसि पुरुत्रा चिद्धि ते मनः.
अलर्षि युध्म खजकृत्पुरंदर प्र गायत्रा अगासिषुः.. (९)

हे इंद्र! आप पहले कहां चले गए थे? आप इस समय कहां हैं? आप बहुत जगह रमते (घूमते) रहते हैं. आप राक्षसों का नाश करने वाले हैं. हमारे यजमान प्रार्थना गाने में कुशल हैं. वे आप की स्तुति करते हैं. (९)

वयमेनमिदा ह्यो ऽ पीपेमेह वज्रिणम्.
तस्मा उ अद्य सवने सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते.. (१०)

हे इंद्र! हम ने कल भी आप को सोमरस भेंट किया था. हम आज भी यज्ञ में आप को सोमरस भेंट करते हैं. हे यजमानो! आप स्तोत्र गा कर इंद्र की शोभा बढ़ाइए. (१०)

पांचवां खंड

यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः.
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठं यो वृत्रहा गृणे.. (१)

हे इंद्र! आप मनुष्यों के राजा हैं. आप के रथ की गति की कोई भी बराबरी नहीं कर सकता है. आप शत्रुओं की सेना और वृत्रासुर को मारने वाले हैं. हम सर्वश्रेष्ठ इंद्र की स्तुति करते हैं. (१)

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि.
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये वि द्विषो वि मृधो जहि.. (२)

हे इंद्र! जिस से हम डरें आप उसी से हमें निडर बनाइए. हमें अभय दान दीजिए. हमारे शत्रुओं को और हमें मारने वालों को आप नष्ट कीजिए. (२)

वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणा ꣳ सत्र ꣳ सोम्यानाम्.
द्रप्सः पुरां भेत्ता शश्वतीनामिन्द्रो मुनीना ꣳ सखा.. (३)

हे इंद्र! आप घर के स्वामी हैं. हमारे घर के खंभे व सोम यज्ञ करने वालों का शरीर मजबूत हो. सोम पीने वाले राक्षसों की बहुत सी नगरियां उजाड़ने वाले इंद्र हम ऋषियों के मित्र हों. (३)

वण्महाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि.
महस्ते सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महाँ असि.. (४)

हे इंद्र! आप प्रेरणा देने वाले, बहुत तेजस्वी, अदिति के पुत्र व बहुत बलशाली हैं. हम सच कहते हैं कि आप बहुत महान हैं. (४)

अश्वी रथी सुरूप इद्गोमान् यदिन्द्र ते सखा.
श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा चन्द्रैर्याति सभामुप.. (५)

हे इंद्र! जो आप को अपना मित्र बना लेता है, वह बहुत सुंदर रूप वाला हो जाता है. वह बहुत घोड़ों वाला हो जाता है. वह बहुत रथों वाला हो जाता है. वह बहुत गायों वाला हो जाता है. वह बहुत अन्न, धन वाला हो जाता है. वह सदा अच्छे वस्त्रों और आभूषणों से तैयार हो कर सभा में जाता है. (५)

यद्द्याव इन्द्र ते शत ꣳ शतं भूमीरुत स्युः.
न त्वा वज्रिन्त्सहस्र ꣳ सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी.. (६)

हे इंद्र! स्वर्गलोक सौ गुना हो जाए तो भी आप की बराबरी नहीं कर सकता. भूमिलोक (पृथ्वीलोक) सौ गुना हो जाए तो भी आप के समान नहीं हो सकता. हे वज्रधारी इंद्र! सौ सूर्य भी आप को प्रकाशित नहीं कर सकते. बाद में होने वाले भी आप की बराबरी नहीं कर सकते यानी आप के सामने कोई कुछ नहीं है. आप ही सब से बड़े हैं. (६)

यदिन्द्र प्रागपागुदङ्न्यग्वा हूयसे नृभिः.
सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवे ऽ सि प्रशर्ध तुर्वशे.. (७)

हे इंद्र! पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण सभी दिशाओं से मनुष्य आप को सहायता के

लिए बुलाते हैं. आप शत्रुओं का नाश करने वाले हैं. अनु और तुर्वश के लिए स्तुतियों से आप को बुलाया जाता है. (७)

कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति.
श्रद्धा हि ते मघवन्पार्ये दिवि वाजी वाज ꣳ सिषासति.. (८)

हे इंद्र! आप सब को बसाने वाले हैं. आप को कौन डरा सकता है. आप के प्रति जो यजमान श्रद्धालु होता है, वह दुःख से पार होने पर भी हवि देने की इच्छा रखता है. (८)

इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात्पद्वतीभ्यः.
हित्वा शिरो जिह्वया रारपच्चरत् त्रि शत्पदा न्यक्रमीत्.. (९)

हे इंद्र! हे अग्नि! बिना पैरों वाली उषा पैरों वाली जनता से पहले आ जाती हैं. सिर न होने पर भी जीभ से सब को प्रेरणा देती हुई एक दिन में तीस मुहूर्तों को पार कर जाती हैं. (९)

इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः.
आ शंतम शंतमाभिरभिष्टिभिरा स्वापे स्वापिभिः.. (१०)

हे इंद्र! हमारी यज्ञशाला बहुत नजदीक (पास) है. आप बुद्धिमानों और रक्षा की इच्छा रखने वालों के साथ पधारिए. आप बहुत सुखदायी हैं. आप बहुत शांतिदायी व बंधु हैं. आप अवश्य पधारिए. (१०)

छठा खंड

इत ऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम्.
आशुं जेतार होतार रथीतममतूर्तं तुग्रियावृधम्.. (१)

हे इंद्र! आप बूढ़े नहीं होते. आप शत्रुओं को मारने वाले हैं. आप जल्दी विजय पाने वाले हैं. आप बहुत तेज गति वाले हैं. आप जल्दी यज्ञ में जाने वाले हैं. आप अच्छे रथ चलाने वाले हैं. आप जल को बढ़ाने वाले हैं. हे यजमानो! ऐसे इंद्र को आप अपनी रक्षा के लिए बुलाइए. (१)

मो षु त्वा वाघतश्च नारे अस्मन्नि रीरमन्.
आरात्ताद्वा सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि.. (२)

हे इंद्र! यज्ञ करने वाले भी आप को हम से दूर न कर सकें. आप दूर रह कर भी हमारे पास जल्दी आइए. आप यहीं रह कर हमारी स्तुतियां सुनिए. (२)

सुनोता सोमपाव्ने सोममिन्द्राय वज्रिणे.
पचता पक्तीरवसे कृणुध्वमित्पृणन्नित्पृणते मयः.. (३)

हे यज्ञ करने वालो! वज्रधारी इंद्र के लिए सोमरस निचोड़ो. इंद्र को प्रसन्न करने के लिए पुरोडाश (भोग) पकाइए (बनाइए). यजमान की प्रसन्नता के लिए इंद्र स्वयं हवि ग्रहण करते हैं. (३)

यः सत्राहा विचर्षणिरिन्द्रं त हूमहे वयम्.
सहस्रमन्यो तुविनृम्ण सत्पते भवा समत्सु नो वृधे.. (४)

हे इंद्र! आप शत्रुओं का वध करने वाले हैं. आप सब को देखने वाले हैं. हम स्तुतियों से आप को बुलाते हैं. आप क्रोध वाले, बहुत धन वाले व सज्जनों के पालक हैं. आप युद्धों में

हमारा यश बढ़ाइए. (४)

शचीभिर्नः शचीवसू दिवा नक्तं दिशस्यतम्.
मा वा ꣳ रातिरुपदसत्कदाचनास्मद्रातिः कदाचन.. (५)

हे अश्विनीकुमारो! आप अपने कर्म को ही धन मानने वाले हैं. आप अपनी शक्ति से दिनरात हमारी इच्छाएं पूरी कीजिए. आप का दान कभी कम नहीं होता. आप के ही दान की तरह हमारे दान भी कभी कम न हों. (५)

यदा कदा च मीढुषे स्तोता जरेत मर्त्यः.
आदिद्वन्देत वरुणं विपा गिरा धर्त्तारं विव्रतानाम्.. (६)

जब कभी हवि दाता यजमान के लिए मनुष्य प्रार्थना करे तब विशेष रक्षा करने वाली प्रार्थनाओं से वरुण देवता की स्तुति करे. वे वरुण पापों को दूर करने वाले व अनेक प्रकार के कर्मों को धारण करने वाले हैं. (६)

पाहि गा अन्धसो मद इन्द्राय मेध्यातिथे.
यः संमिश्लो हर्योर्यो हिरण्यय इन्द्रो वज्री हिरण्ययः.. (७)

हे इंद्र! आप यज्ञ में मेहमान बनने वाले हैं. आप सोमरस पी कर, प्रसन्न हो कर हमारी गायों की रक्षा कीजिए. आप हरि नामक घोड़े को रथ में जोतते हैं. आप वज्र धारण करने वाले, सुंदर, हित साधने वाले और सुनहरे रथ वाले हैं. (७)

उभय ꣳ शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः.
सत्राच्या मघवान्त्सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत्.. (८)

हे इंद्र! आप हमारे दोनों ही प्रकार के वचन पास आ कर सुनिए. सब की प्रार्थना सुन कर यहां पधारिए और प्रसन्न होइए. हे इंद्र! आप बलवान व धनवान हैं. सोमपान के लिए आप यहां पधारिए. (८)

महे च न त्वाद्रिवः परा शुल्काय दीयसे.
न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ.. (९)

हे इंद्र! आप वज्र धारण करने वाले हैं. बहुत से धन के बदले भी मैं आप को नहीं छोड़ सकता हूं. हजार के बदले भी आप को नहीं बेचा जा सकता. अपार धन के बदले भी आप को नहीं बेचा जा सकता. (९)

वस्याँ इन्द्रासि मे पितुरुत भ्रातुरभुञ्जतः.
माता च मे छदयथः समा वसो वसुत्वनाय राधसे.. (१०)

हे इंद्र! आप हमारे पिता से भी ज्यादा धन वाले हैं. पालन न करने वाले हमारे भाई से भी ज्यादा धनवान हैं. आप हमारी मां के समान हैं. मुझे धनवान, अन्नवान और यशवान

बनाइए. (१०)

सातवां खंड

इम इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः.
ताँ आ मदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्योक आ.. (१)

हे इंद्र! आप वज्र धारण करने वाले हैं. आप दही मिला कर तैयार किए गए इस सोमरस को पीने के लिए अपने घोड़ों से यज्ञ मंडप में पधारिए. (१)

इम इन्द्र मदाय ते सोमाश्चिकित्र उक्थिनः.
मधोः पपान उप नो गिरः शृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः.. (२)

हे इंद्र! आप की प्रसन्नता के लिए खास तौर से साफ कर के मधुर सोमरस को तैयार किया है. आप हमारी प्रार्थना की वाणी को सुनिए. आप हमें मनचाहे फल दीजिए. (२)

आ त्वा ३ द्य सबर्दुघा हुवे गायत्रवेपसम्.
इन्द्रं धेनु सुदुघामन्यामिषमुरु धारामरङ्कृतम्.. (३)

हे इंद्र! आप उस गाय के समान शोभा पा रहे हैं जो बहुत दूध देने वाली है, जिस की चाल प्रशंसा करने योग्य है, जो आसानी से दुहने योग्य है, जो विशेष लक्षणों वाली है, जिस के स्तनों से दूध की कई धाराएं बहती हैं. आप शीघ्र पधारिए. (३)

न त्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीडवः.
यच्छिक्षसि स्तुवते मावते वसु न किष्टदा मिनाति ते.. (४)

हे इंद्र! बड़ेबड़े पर्वत भी आप को नहीं डिगा सकते. आप हम पूजकों को जो धन देते हैं, उस धन को कोई नहीं रोक सकता है. (४)

क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे.
अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्रयन्धसः.. (५)

हे इंद्र! सोम यज्ञ में एक ही जगह सोमरस पीने वाले आप को कौन (नहीं) जानता है. आप कितना अन्न धारण करने वाले हैं, यह भी कौन जानता है? सोमरस पी कर प्रसन्न होने वाले इंद्र अपने बल से शत्रुओं के नगरों को नष्ट कर देते हैं. (५)

यदिन्द्र शासो अव्रतं च्यावया सदसस्परि.
अस्माकम शुं मघवन्पुरुस्पृहं वसव्ये अधि बर्हय.. (६)

हे इंद्र! आप यज्ञ में विघ्न डालने वालों को दंड देते हैं. आप दुष्टों को दंड दीजिए. आप धनवान हैं. आप हमारे घरों में सोमरस बढ़ाइए. (६)

त्वष्टा नो दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः.

पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टरं त्रामणं वचः.. (७)

त्वष्टा देवताओं के शिल्पी (कारीगर) हैं. पर्जन्य देव बरसात के स्वामी हैं. ब्रह्मणस्पति देवता अपने बेटों और भाइयों के साथ हमारी रक्षा करें. देवताओं की माता अदिति हमारी रक्षा करें. अदिति दुःख दूर करने वाली और रक्षा करने वाली हमारी स्तुतियों से हम पर कृपा करें. (७)

कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे.
उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते.. (८)

हे इंद्र! आप अहिंसक हैं. आप हवि देने वाले यजमान पर कृपा रखते हैं. आप प्रकाशमान हैं. आप की कृपा हमें प्राप्त होती है. (८)

युङ्क्ष्वा हि वृत्रहन्तम हरी इन्द्र परावतः.
अर्वाचीनो मघवन्त्सोमपीतय उग्र ऋष्वेभिरा गहि.. (९)

हे इंद्र! आप वृत्रासुर का नाश करने वाले हैं. आप अपने हरि नामक घोड़े को रथ में जोतिए. आप धनवान व बलवान हैं. आप सुंदर मरुद्गणों के साथ स्वर्गलोक से यहां पधारिए. (९)

त्वामिदा ह्यो नरो ऽ पीप्यन्वज्रिन्भूर्णयः.
स इन्द्र स्तोमवाहस इह श्रुध्युप स्वसरमा गहि.. (१०)

हे इंद्र! आप वज्र धारण करने वाले हैं. यज्ञ करने वाले यजमानों ने आप को आज भी और पहले भी सोमरस भेंट किया है. आप यज्ञ मंडप में पधारिए. स्तोत्र पढ़ने वाले यजमानों के स्तोत्र सुनिए. (१०)

आठवां खंड

प्रत्यु अदर्श्यायत्यू ३ च्छन्ती दुहिता दिवः.
अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी.. (१)

अंधेरे को दूर कर के आती हुई सूर्य की पुत्री उषा सब को दिखाई दे रही है. वह अपने प्रकाश से घनघोर अंधेरे को दूर कर देती है. (१)

इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना.
अयं वामह्वे ऽ वसे शचीवसू विंश विशꣳ हि गच्छथः.. (२)

हे अश्विनीकुमारो! प्रकाश चाहने वाले यजमान आप को बुलाते हैं. मैं भी कर्म को धन मानने वाले आप को बुलाता हूं. हम अपनी रक्षा के लिए आप दोनों को बुलाते हैं. हम आप दोनों को तृप्त (प्रसन्न) करने के लिए बुलाते हैं. आप स्तुति करने वाले हर एक यजमान के पास पधारते हो. (२)

कुष्ठः को वामश्विना तपानो देवा मर्त्यः.
घ्नता वामश्मया क्षपमाणो शुनेत्थमु आद्वन्यथा.. (३)

हे अश्विनीकुमारो! आप प्रकाश वाले हैं. इस पृथ्वी पर रहने वाला कौन आप को प्रकाशित कर सकता है. जो यजमान आप के लिए पत्थरों से सोम कूटकूट कर थक जाता है, वह राजा के समान इच्छानुसार भोग करने वाला होता है. (३)

अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोमो दिविष्टिषु.
तमश्विना पिबतं तिरोअह्न्यं धत्त रत्नानि दाशुषे.. (४)

हे अश्विनीकुमारो! आप के लिए होने वाले यज्ञों में यह मीठा सोमरस तैयार किया गया है. यह सोमरस हम ने एक दिन पहले तैयार किया है. आप इस का सेवन कीजिए. आप हवि देने वाले यजमान को श्रेष्ठ धन प्रदान कीजिए. (४)

आ त्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्नहं ज्या.
भूर्णिं मृगं न सवनेषु चुक्रुधं क ईशानं न याचिषत्.. (५)

हे इंद्र! आप शेर के समान शक्तिशाली हैं. आप भरणपोषण करने में समर्थ हैं. हम आप को यज्ञ में सोमरस प्रदान करते हैं. हम विजय दिलाने वाली प्रार्थना से आप से याचना करते हैं. आप हम पर गुस्सा मत कीजिए. ऐसा कौन व्यक्ति है, जो अपने स्वामी से याचना नहीं करता है. (५)

अध्वर्यो द्रावया त्व सोममिन्द्रः पिपासति.
उपो नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा.. (६)

हे पुरोहित! आप सोमरस को जल्दी तैयार कीजिए. इंद्र जल्दी सोमरस पीना चाहते हैं. उन्होंने अपने घोड़े रथ में जोत लिए हैं. वृत्रासुर का नाश करने वाले इंद्र पहुंच भी गए. (६)

अभीषतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः.
पुरूवसुर्हि मघवन्बभूविथ भरेभरे च हव्यः.. (७)

हे इंद्र! आप सब से बड़े हैं. आप सब ओर से ला कर श्रेष्ठ धन मुझ तुच्छ मनुष्य को प्रदान कीजिए. आप धनवान हैं और युद्ध में सहायता के लिए बुलाने योग्य हैं. (७)

यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय.
स्तोतारमिद्दधिषे रदावसो न पापत्वाय र सिषम्.. (८)

हे इंद्र! आप जितने धन के स्वामी हैं, हम भी उतने धन के स्वामी हो जाएं. आप धन देने वाले हैं. स्तुति करने वालों को धन देने की इच्छा है. पापियों को धन देने की इच्छा नहीं है. (८)

त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः.

अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः.. (९)

हे इंद्र! आप युद्धों में शत्रुओं का नाश करते हैं. आप शत्रुओं को बाधा पहुंचाने वाले हैं. आप प्राकृतिक विपत्तियों का नाश करने वाले हैं. आप हमारे शत्रुओं के लिए आपत्तियां पैदा करने वाले हैं. आप दुष्टों के नाशक हैं. (९)

प्र यो रिरिक्ष ओजसा दिवः सदोभ्यस्परि.
न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिवमति विश्वं ववक्षिथ.. (१०)

हे इंद्र! स्वर्गलोक में आप की प्रतिष्ठा है. पूरी पृथ्वी का कणकण भी आप को घेर नहीं सकता, व्याप्त नहीं कर सकता. आप पूरे संसार को व्याप्त करने में समर्थ हैं. (१०)

नौवां खंड

असावि देवं गोऋजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुषेमुवोच.
बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर्बोधा न स्तोममन्धसो मदेषु.. (१)

हम ने तेजस्वी गाय के दूध से सोमरस तैयार किया है. ऐसा सोमरस इंद्र को स्वभाव से ही बहुत पसंद आता है. आप इस सोमरस को पी कर मस्त हो जाइए, प्रसन्न हो जाइए. हमारी प्रार्थनाओं पर खासतौर से ध्यान देने की कृपा कीजिए. (१)

योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत प्र याहि.
असो यथा नो ऽ विता वृधश्चिद्ददो वसूनि ममदश्च सोमैः.. (२)

हे इंद्र! आप को बैठाने के लिए हम ने खास यज्ञ वेदिका तैयार की है. आप मरुतों के साथ पधारिए. आप सब उस स्थान पर विराजिए. आप हमारे रक्षक व हमारे पालक हैं. आप हमें कई तरह के धन दीजिए. आप सोमरस पी कर प्रसन्न होइए. (२)

अदर्दरुत्समसृजो वि खानि त्वमर्णवान्बद्बधानाँ अरम्णाः.
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजद्धारा अव यद्दानवान्हन्.. (३)

हे इंद्र! आप ने बादलों का जल निकालने के लिए खासतौर पर दरवाजों को (रास्तों को) बनाया है, जिस से बादलों को भेद कर पानी पाया जा सके. आप पानी के रास्ते की सब बाधाओं को दूर करते हैं. आप की कृपा से बहुत जल धाराएं बही हैं. आप ने राक्षसों का नाश किया है. (३)

सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि त्वा सनिष्यन्तश्चित्तुविनृम्ण वाजम्.
आ नो भर सुवितं यस्य कोना तना त्मना सह्याम त्वोताः.. (४)

हे इंद्र! आप बहुत धन देने वाले हैं. सोमरस निचोड़ने वाले यमराज आप की स्तुति करते हैं. पुरोडाश पकाने वाले यजमान आप की स्तुति करते हैं. आप हमें हमारा चाहा गया धन दीजिए. हम आप से शक्ति पा कर बहुत धन पाते हैं. (४)

जगृह्मा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तं वसूयवो वसुपते वसूनाम्.
विद्मा हि त्वा गोपति ꣳ शूर गोनामस्मभ्यं चित्रं वृषण ꣳ रयिं दाः.. (५)

हे इंद्र! आप बहुत धनवान हैं. हम धन बल की कामना करते हैं. अतः आप का दाहिना हाथ ग्रहण करते हैं. हम जानते हैं कि आप गौओं के स्वामी हैं. आप हमें हमारी इच्छा पूरी करने वाले अनेक धन दीजिए. (५)

इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः.
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः.. (६)

हे इंद्र! युद्ध और संकट के समय में युद्ध करने वाले मनुष्य युद्ध में (और यज्ञ में) आप को सहायता के लिए बुलाते हैं. आप शूरवीर व धनदाता हैं. आप गायों और पशूओं के बाड़े में हमें पहुंचा दीजिए, ताकि हम अन्न, धन व बल तीनों का लाभ पा सकें. (६)

वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः.
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्या ३ स्मान्निधयेव बद्धान्.. (७)

अच्छे पंखों वाली चिड़िया के समान यज्ञ से प्रेम रखने वाली सूर्य की किरणें इंद्र तक पहुंचती हैं. हे इंद्र! आप अब अंधेरे को दूर कीजिए. आप आंखों को प्रकाश से भर दीजिए. आप रस्सी से बंधे हुए के समान हम को उन बंधनों से छुड़ाइए. (७)

नाके सुपर्णमुप यत्पतन्त ꣳ हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा.
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम्.. (८)

हे सूर्य! आप पक्षी की तरह आकाश में उड़ने वाले हैं. आप वेग वाले हैं. आप सब का पालनपोषण करने वाले हैं. वरुण के दूत हैं. आप को लोग मन से स्नेह करते हैं (चाहते हैं). आप को लोग अग्नि के उत्पत्ति स्थान अंतरिक्ष में पक्षी की तरह उड़ते हुए देखते हैं. (८)

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः.
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः.. (९)

वेन गंधर्व पैदा हुए. उन्होंने सब से पहले उत्पन्न होने वाले ब्रह्मतेज का उपदेश किया. उस तेज से सब को प्रकाशित किया. उन्होंने खासतौर पर उस तेज को अंतरिक्ष में स्थापित किया. जो पैदा हो चुके और जो पैदा होंगे, उन सब का कारण भी वही ब्रह्मतेज है. (९)

अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीराय तवसे तुराय.
विरप्शिने वज्रिणे शन्तमानि वचा ꣳ स्यस्मै स्थविराय तक्षुः.. (१०)

हे इंद्र! आप महान वीर व बलवान हैं. आप जल्दी काम करने वाले हैं. आप पूजनीय व वज्रधारी हैं. आप के लिए यजमान बहुत सी सुखदायी स्तुतियां गा रहे हैं. (१०)

दसवां खंड

अव द्रप्सो अꣳशुमतीमतिष्ठदियानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः.
आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमप स्नीहितिं नृमणा अधद्राः.. (१)

इंद्र सभी को प्रिय हैं. उन्होंने शत्रुओं द्वारा आक्रमण किए जाने पर उन पर फिर से आक्रमण कर के उन की सेना को हरा दिया. उन्होंने कृष्णासुर को भी हराया. कृष्णासुर बहुत तीव्र गति वाला था. उस ने दस हजार सैनिकों को साथ ले कर उन पर हमला किया था. कृष्णासुर सभी के लिए दुःखदायक था. अंशुमती (नदी) के तट पर उस ने सभी को (आकृष्ट कर के) अपने चंगुल में फंसा लिया था. उन्होंने इतने शक्तिमान कृष्णासुर को भी हरा दिया. (१)

वृत्रस्य त्वाश्वसथादीषमाणा विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः.
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि.. (२)

हे इंद्र! सभी सहायक देवतागण वृत्रासुर से डर कर आप का साथ छोड़ कर भाग गए (चले गए). उन सब के चले जाने पर आप ने मरुद्गणों की मित्रता के कारण उन के सहयोग से दुश्मनों की सेना को हराया. (२)

विधुं दद्राणꣳ समने बहूनां युवानꣳ सन्तं पलितो जगार.
देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान.. (३)

हे यजमानो! इंद्र युद्ध में वीरता दर्शाते हैं. वे शत्रुओं की सेना को हराने वाले हैं. उन की कृपा (प्रभाव) से बूढ़ा भी जवान हो जाता है. आप उन की काव्य महिमा देखिए, जो आज मरी हुई सी लगने पर भी कल फिर जी जाती है अर्थात् उन की महिमा अमिट है. (३)

त्वꣳ ह त्यत्सप्तभ्यो जायमानो ऽ शत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र.
गूढे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भयो भुवनेभ्यो रणं धाः.. (४)

हे इंद्र! आप का कोई शत्रु उत्पन्न नहीं हुआ है अर्थात् आप अजातशत्रु हैं. आप उत्पन्न होते ही वृत्रासुर आदि छह राक्षसों के दुश्मन हो गए. अपने अंधकार से स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को बचाया. आप ने दोनों लोकों को प्रकाश युक्त बनाया. आप ने ही दोनों लोकों को स्थिरता दी. आप ने ही दोनों लोकों को सुंदर बनाया. (४)

मेडिं न त्वा वज्रिणं भृष्टिमन्तं पुरुधस्मानं वृषभꣳ स्थिरप्स्नुम्.
करोष्यर्यस्तरुषीर्दुवस्युरिन्द्र द्युक्षं वृत्रहणं गृणीषे.. (५)

हे यजमानो! अच्छे कर्मों के कारण सभी जगह इंद्र की सराहना होती है. वे वृत्रासुर व शत्रुविनाशक हैं. उन की स्वर्गलोक में प्रतिष्ठा है. वे बलवान हैं. वे युद्धों में स्थिर रहते हैं. वे वज्रधारी और दुष्टनाशक हैं. वे विजयदाता हैं. हम भी उन की महिमा की सराहना करते हैं. (५)

प्र वो महे महे वृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम्.

विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः.. (६)

हे यजमानो! इंद्र महान कार्य करने वाले और प्रसिद्ध हैं. आप उन को सोमरस चढ़ाते समय उत्तम स्तोत्रों से उन की उपासना कीजिए. वे उपासकों की इच्छा पूरी करते हैं. वे उपासकों का कल्याण करते हैं. (६)

शुन ꣳ हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ.
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानि.. (७)

हे यजमानो! इंद्र अन्नदाता, उत्साही, वैभववान व उत्तम वीर हैं. वे हमारी प्रार्थना को बहुत गौर से सुनते हैं. वे शत्रुओं के संचित धन को जीत लेते हैं. वे शत्रुनाशक हैं. हम उन की सहायता चाहते हैं. हम इसलिए उन का आह्वान करते हैं. (७)

उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्र ꣳ समर्ये महया वसिष्ठ.
आ यो विश्वानि श्रवसा ततानोपश्रोता म ईवतो वचा ꣳ सि.. (८)

हे वसिष्ठ (ऋषि)! आप इंद्रियों को जीतने वाले हैं. वे यशवर्द्धक हैं. वे उपासकों की प्रार्थना ध्यान से सुनते हैं. हम उन से अन्न चाहते हैं. आप यज्ञ में उन की महिमा वर्णित करने वाली प्रार्थनाएं पढ़ने की कृपा कीजिए. (८)

चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तमुतो तदस्मै मध्विच्चच्छद्यात्.
पृथिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु.. (९)

हे यजमानो! इंद्र अंतरिक्ष में देदीप्यमान हैं. वे अपने वज्र से यजमानों के लिए मीठा जल भेजते हैं (बरसाते हैं). वही जल पृथ्वी पर गायों में दूध और ओषधियों में गुणकारी रस के रूप में हम सभी को प्राप्त होता है. (९)

ग्यारहवां खंड

त्यमू षु वाजिनं देवजूत ꣳ सहोवानं तरुतार ꣳ रथानाम्.
अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशु ꣳ स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवेम.. (१)

हे यजमानो! हम अपने कल्याण के लिए तार्क्ष्य (गरुड़) का आह्वान करते हैं. वे देवदूत और बलवान हैं. वे युद्धों में हमारा भला कर सकते हैं. वे शत्रुजित् व अबाध गति वाले हैं. वे बहुत तेज गति से उड़ने में समर्थ हैं. (१)

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवेहवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्.
हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिद ꣳ हविर्मघवा वेत्विन्द्रः.. (२)

हे यजमानो! हम अपने कल्याण के लिए इंद्र का आह्वान करते हैं. वे हमारे त्राता (रक्षक), सहायक, शक्तिशाली व सक्षम हैं. वे बहुत से उपासकों द्वारा स्तुत्य (उपासना योग्य) और धनवान हैं. वे हवि के अन्न को ग्रहण करने की कृपा करें. (२)

यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिण ꣳ हरीणा ꣳ रथ्यां ३ विव्रतानाम्.
प्र श्मश्रुभिर्दोधुवदूर्ध्वधा भुवद्वि सेनाभिर्भयमानो वि राधसा.. (३)

हे यजमानो! इंद्र हाथ में वज्र धारण करते हैं. वे वेगशील हैं. वे रथ पर विराजमान हैं. वे अपनी दाढ़ीमूंछों से शत्रु को डराने वाले व उपासकों को धनवैभव प्रदान करने वाले हैं. (३)

सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं महामपारं वृषभ ꣳ सुवज्रम्.
हन्ता यो वृत्र ꣳ सनितोत वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः.. (४)

हे यजमानो! इंद्र शत्रुओं के जत्थों के नाशक हैं. उन्हें भयभीत करने वाले हैं. इंद्र बहुत शक्तिमान हैं. वे वज्रधारी, वृत्रनाशक, अन्नदाता व यजमानों को धन देने वाले हैं. (४)

यो नो वनुष्यन्नभिदाति मर्त उगणा वा मन्यमानस्तुरो वा.
क्षिधी युधा शवसा वा तमिन्द्राभी ष्याम वृषमणस्त्वोताः.. (५)

हे इंद्र! आप हमारी रक्षा कीजिए. आप की कृपा से हम शत्रुओं को हरा सकें. हम शत्रुओं को मारने के इच्छुक हैं. हम मारक अस्त्रशस्त्र के साथ आक्रमण करने के लिए तैयार हैं. हम दृढ़ निश्चय वाले हैं. (५)

यं वृत्रेषु क्षितयः स्पर्धमाना यं युक्तेषु तुरयन्तो हवन्ते.
य ꣳ शूरसातौ यमपामुपज्मन्यं विप्रासो वाजयन्ते स इन्द्रः.. (६)

हे इंद्र! यजमान युद्ध में सहायता के लिए आप को पुकारते हैं. आप उन की पुकार सुनते हैं. आप अस्त्रशस्त्र वाले योद्धाओं के बुलाने पर उन की सहायता करते हैं. जल वर्षा के लिए आप से ही निवेदन किया जाता है. ब्राह्मणगण आप को ही हवि समर्पित करते हैं. (६)

इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आ वहत ꣳ सुवीराः.
वीत ꣳ हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्धेथां गीर्भिरिडया मदन्ता.. (७)

हे इंद्र! आप पर्वतवासी, विशाल रथ वाले एवं उपासना योग्य हैं. अच्छी संतान वाले यजमान आप को हवि भेंट करते हैं. आप उस हवि का भोग लगाते हैं. आप उस हवि से प्रसन्न होते हैं. आप हमारी प्रार्थनाओं से और यशस्वी बनिए. आप हमें अन्न प्रदान करने की कृपा कीजिए. (७)

इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा अपः प्रैरयत्सगरस्य बुध्नात्.
यो अक्षेणेव चक्रियौ शचीभिर्विष्वक्तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम्.. (८)

हे इंद्र! आप ने अपने सामर्थ्य से स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को उसी तरह घेर रखा है, जैसे लोहे की पट्टी चारों ओर से पहिए को घेरे रखती हैं. हमारी प्रार्थनाएं अंतरिक्ष से जल बरसाने की सामर्थ्य रखती हैं. (८)

आ त्वा सखायः सख्या ववृत्युस्तिरः पुरू चिदर्णवां जगम्याः.

पितुर्नपातमा दधीत वेधा अस्मिन्क्षये प्रतरां दीद्यानः.. (९)

हे इंद्र! आप अंतरिक्षलोक में मौजूद हैं. हम आप के मित्र हैं. हम उत्तम प्रार्थनाओं से आप का आह्वान करते हैं. आप के प्रभाव और कृपा से हमें पुत्र और पौत्रों की प्राप्ति हो. (९)

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून्.
आसन्नेषामप्सुवाहो मयोभून्य एषां भृत्यामृणधत्स जीवात्.. (१०)

हे इंद्र! आप के अलावा आप के रथ में इन घोड़ों को जोत सकने की किस की सामर्थ्य है? आप के घोड़े रथ की धुरी की सहायता से गति पाते हैं, क्षमतावान हैं. आप शत्रुओं पर क्रोध करने वाले व सुखदायी हैं. आप के घोड़ों का भृत्य (भरणपोषण करने वाला) ही जीवन धारण करता है. (१०)

बारहवां खंड

गायन्ति त्वा गायत्रिणो ऽ र्चन्त्यर्कमर्किणः.
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्व शमिव येमिरे.. (१)

हे इंद्र! आप सैकड़ों कर्म करने वाले हैं. गाने वाले आप के गुण गाते हैं. मंत्रों से आप का आह्वान करते हैं. ब्रह्मा नामक ऋत्विक् वैसे ही स्वर साध कर आप की उपासना करते हैं, जैसे बांस के ऊपर नट अपनेआप को साधते हैं. (१)

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः.
रथीतम रथीनां वाजाना सत्पतिं पतिम्.. (२)

हे इंद्र! आप श्रेष्ठ रथ पर विराजमान हैं. आप श्रेष्ठ योद्धा, अन्न व बल के स्वामी हैं. आप सज्जनों के रक्षक हैं. हमारी सारी प्रार्थनाएं आप का गुणगान करती हैं. (२)

इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम्.
शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन्धारा ऋतस्य सादने.. (३)

हे इंद्र! आप अमर व प्रसन्नतादायी हैं. सदन में परिष्कृत सोमरस आप की ओर बढ़ रहा है. आप उसे स्वीकारने की कृपा कीजिए. (३)

यदिन्द्र चित्र म इह नास्ति त्वादातमद्रिवः.
राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर.. (४)

हे इंद्र! आप धनवान व विलक्षण हैं. हमारे पास ऐसा कोई धन नहीं है, जो हम आप को भेंट कर सकें. आप खुले हाथों से हमें भरपूर धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (४)

श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति.
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि.. (५)

हे इंद्र! तिरश्चि (ऋषि) आप की उपासना कर रहे हैं. आप उन की प्रार्थना सुनने की कृपा कीजिए. आप महान हैं. आप हमें धनवान, गोवान व श्रेष्ठ वीर्यवान बनाने की कृपा कीजिए. (५)

असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि.
आ त्वा पृणक्त्विन्द्रिय ꣳ रजः सूर्यो न रश्मिभिः.. (६)

हे इंद्र! आप बलवान, शत्रुजित एवं अंतरिक्ष को सूर्य की तरह प्रकाशित करने वाले हैं. सोमरस आप को भी अपार शक्ति से भर दे. (६)

एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम्.
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो.. (७)

हे इंद्र! आप तेजोमय हैं. आप घोड़ों की सहायता से कण्व ऋषि की प्रार्थनाएं सुनने के लिए स्वर्गलोक से पृथ्वीलोक पर पधारिए. आप को हमारे लोक में भी सुख मिलेगा. आप कुछ समय यहीं वास करने के लिए पधारिए. (७)

आ त्वा गिरो रथीरिवास्थुः सुतेषु गिर्वणः.
अभि त्वा समनूषत गावो वत्सं न धेनवः.. (८)

हे इंद्र! आप उपासना के योग्य हैं. सोमयज्ञ में हमारी प्रार्थनाएं वैसे ही आप के पास पहुंचती हैं, जैसे गाएं झटपट अपने बछड़ों के पास पहुंचती हैं और योद्धा रथ पर चढ़ कर सुरक्षित स्थान पर पहुंचता है. (८)

एतो न्विन्द्र ꣳ स्तवाम शुद्ध ꣳ शुद्धेन साम्ना.
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वा ꣳ स ꣳ शुद्धैराशीर्वान्ममत्तु.. (९)

हे इंद्र! आप जल्दी आइए. हम शुद्धता से साम और यजु मंत्र पढ़ कर आप की उपासना कर रहे हैं. हम बल बढ़ाने वाला मंत्रों से शुद्ध किया और गाय के दूध में मिला हुआ सोमरस आप को भेंट कर रहे हैं. वह सोमरस आप की प्रसन्नता बढ़ाए. (९)

यो रयिं वो रयिन्तमो यो द्युम्नैर्द्युम्नवत्तमः.
सोमः सुतः स इन्द्र ते ऽ स्ति स्वधापते मदः.. (१०)

हे इंद्र! आप शक्तिमान, सुंदर एवं प्रकाशमान हैं. उपासकों की आहुति आप को आनंद देने वाली हो. (१०)

चौथा अध्याय

पहला खंड

प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर. अरङ्गमाय जग्मये ऽ पश्चादध्वने नरः.. (१)

हे यजमानो! इंद्र यज्ञ के संचालक हैं. वे सोमरस पीने के इच्छुक रहते हैं. वे सभी जगह निर्धारित समय पर पहुंचते हैं. वे उपयुक्त स्थान के भागीदार हैं. सब से पहले उन को ही यज्ञ की वेदी पर प्रतिष्ठित किया जाता है. मनुष्यों के यज्ञ में वे जाने की इच्छा रखते हैं. आप सभी उन्हीं इंद्र को सोमरस से तृप्त करने की कृपा कीजिए. (१)

आ नो वयो वयःशयं महान्तं गह्वरेष्ठाम्.
महान्तं पूर्विणेष्ठामुग्रं वचो अपावधीः.. (२)

हे इंद्र! आप पर्वतवासी हैं. हमें सोमरस दीजिए. वह सब जगह उपलब्ध है. आप घोर निंदास्पद बातों को हम से दूर करने की कृपा कीजिए. हे इंद्र! आप शत्रुओं को हराने वाले हैं. (२)

आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि.
तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्र ꣳ शविष्ठ सत्पतिम्.. (३)

हे इंद्र! आप शत्रुओं को हराते व यजमानों का पोषण करते हैं. हम आप से संरक्षण व सुख चाहते हैं. जैसे गतिशील रथ सब जगह घुमा कर ले आता है, उसी प्रकार यजमान आप को यज्ञ स्थान पर ले आते हैं. (३)

स पूर्व्यो महोनां वेनः क्रतुभिरानजे.
यस्य द्वारा मनुः पिता देवेषु धिय आनजे.. (४)

यजमान द्वारा भेंट किए गए हवि के अन्न का भोग लगाने के लिए इंद्र यज्ञस्थल पर उपस्थित होते हैं. वे सभी देवताओं के पालक व बुद्धिशील हैं. (४)

यदी वहन्त्याशवो भ्राजमाना रथेष्वा.
पिबन्तो मदिरं मधु तत्र श्रवा ꣳ सि कृण्वते.. (५)

मरुद् आनंददायी हैं. वे मीठा सोमरस पीते और अन्न उपजाते हैं. वे तेजस्वी एवं तीव्र गतिमान हैं. वे इंद्र को यज्ञवेदी तक पहुंचाते हैं. (५)

त्यमु वो अप्रहणं गृणीषे शवसस्पतिम्.

इन्द्रं विश्वासाहं नर ꣳ शचिष्ठं विश्ववेदसम्.. (६)

हे इंद्र! आप यजमानों के हितकारी, अन्न व बल के स्वामी, शत्रुजित्, यज्ञ के स्वामी, शक्तिनायक एवं सर्वज्ञ हैं. हम आप की उपासना करते हैं. (६)

दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः.
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयू ꣳ षि तारिषत्.. (७)

हे यजमानो! हम दधिक्राव (ऋषि) की उपासना करते हैं. दधिक्राव (ऋषि) विजेता, घोड़े के समान गतिशील व शरीर को पोषण देने वाले एवं हमारी आयु में बढ़ोतरी करने वाले हैं. (७)

पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत.
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः.. (८)

इंद्र शत्रुओं की नगरियों को ध्वस्त करने वाले एवं जवान हैं. वे कवि, शक्तिमान, विश्वपालक, वज्रधारी एवं अग्रगण्य हैं. (८)

दूसरा खंड

प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं वन्दद्वीरायेन्दवे.
धिया वो मेधसातये पुरन्ध्या विवासति.. (१)

हे यजमानो! आप वीर इंद्र को हवि प्रदान करो. वे यज्ञ को पूरा करने में बुद्धि से किए गए श्रेष्ठ कार्यों की प्रशंसा व मनोकामनाएं पूरी करते हैं. वे यजमानों का सम्मान करते हैं. (१)

कश्यपस्य स्वर्विदो यावाहुः सयुजाविति.
ययोर्विश्वमपि व्रतं यज्ञं धीरा निचाय्य.. (२)

इंद्र के घोड़े अपनेआप को जानने वाले व सर्वज्ञ हैं. ये घोड़े इंद्र को यज्ञ में ले जाने में लगे रहते हैं. विद्वान् कहते हैं कि यज्ञ में जाने का निश्चय होते ही ये घोड़े अपनेआप रथ में जुत जाते हैं. (२)

अर्चत प्रार्चत नरः प्रियमेधासो अर्चत.
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरमिद् धृष्णवर्चत.. (३)

हे यजमानो! इंद्र आप को अपनी कृपा से ऐसी संतान प्रदान करते हैं, जो यज्ञ में रुचि रखती हों. वे यजमानों की आकांक्षा पूरी करते हैं. वे शत्रुजित् हैं. आप सभी इंद्र की अर्चना कीजिए. (३)

उक्थमिन्द्राय श ꣳ स्यं वर्धनं पुरुनिष्षिधे.
शक्रो यथा सुतेषु नो रारणत्सख्येषु च.. (४)

हे यजमानो! आप क्षमतावान इंद्र के लिए प्रार्थना गाइए. आप उन शत्रुनाशक के लिए श्रेष्ठ प्रार्थना गाइए. ऐसा करने से हम पर, हमारी संतान पर और हमारे मित्रों पर उन की कृपा होगी. (४)

विश्वानरस्य वस्पतिमनानतस्य शवसः. एवैश्च चर्षणीनामूती हुवे रथानाम्.. (५)

हे मरुद्गणो! आप के सैनिकों पर आक्रमण होता है तो इंद्र रक्षा करते हैं. वे शत्रुओं के सैनिकों पर आक्रमण करने वाले हैं. उन को कोई नहीं जीत सकता. हम रथों की रक्षा हेतु उन शक्तिमान को आमंत्रित करते हैं. (५)

स घा यस्ते दिवो नरो धिया मर्तस्य शमतः.
ऊती स बृहतो दिवो द्विषो अ ꣳ हो न तरति.. (६)

हे इंद्र! वह व्यक्ति आप के दिव्य संरक्षण में रहता है. वह व्यक्ति पाप एवं दुश्मनों से रक्षित रहता है, जो व्यक्ति यजमान की प्रभावी प्रार्थनाओं से आप का सखा बन जाता है. (६)

विभोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो.
अथा नो विश्वचर्षणे द्युम्नं सुदत्र म ꣳ हय.. (७)

हे इंद्र! आप धनवान, सर्वज्ञाता, सैकड़ों यज्ञ करने वाले, विलक्षण महिमाशाली हैं. आप हमें धन दीजिए और संपन्न बनाइए. (७)

वयश्चित्ते पतत्रिणो द्विपाच्चतुष्पादर्जुनि.
उषः प्रारन्नृतू ꣳ रनु दिवो अन्तेभ्यस्परि.. (८)

हे उषा! आप प्रकाशवाली हैं. आप जब उदय हो जाती हैं तो अंतरिक्ष में पक्षी दूरदूर तक उड़ते हैं. पशु भी विचरण करते हैं. मनुष्य भी गतिशील हो जाते हैं. (८)

अमी ये देवा स्थन मध्य आ रोचने दिवः.
कद्व ऋतं कदमृतं का प्रत्ना व आहुतिः.. (९)

हे देवगणो! कृपया आप हमें यह बताइए कि जब सूर्योदय होता है और आकाश प्रकाशित हो जाता है तब हमारी प्रार्थना आप तक पहुंचती है या नहीं? हमारी विशेष आहुति को आप पाते हैं या नहीं? (९)

ऋच ꣳ साम यजामहे याभ्यां कर्माणि कृण्वते.
वि ते सदसि राजतो यज्ञं देवेषु वक्षतः.. (१०)

हम यजमान ऋग्वेद और सामवेद के मंत्रों से यज्ञ करते हैं. इन मंत्रों से हम जो कार्य करते हैं, वही इस यज्ञ सदन से देवताओं तक पहुंच पाता है. (१०)

तीसरा खंड

विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरः सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे.
क्रत्वे वरे स्थेमन्यामुरीमुतोग्रमोजिष्ठं तरसं तरस्विनम्.. (१)

इंद्र यज्ञ में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर विराजते हैं. वे सेनानायक व ओजस्वी हैं. उन की सेना संगठित है. वे अस्त्रशस्त्र धारण करते हैं. वे शत्रुनाशक, उग्र व महिमावान हैं. यजमान तेजी से कार्य करते हैं. वे इंद्र की उपासना करते हैं. (१)

श्रत्ते दधामि प्रथमाय मन्यवे ऽ हन्यद्दस्युं नर्यं विवेरपः.
उभे यत्वा रोदसी धावतामनु भ्यसाते शुष्मात्पृथिवी चिदद्रिवः.. (२)

हे इंद्र! आप दुष्टों (दुश्मनों) का नाश करने वाले हैं. आप प्राणियों के हित के लिए जल बरसाते हैं. स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक आप की इच्छा से क्रियाशील होते हैं. हम इंद्र के उस क्रोध की प्रशंसा करते हैं, जो अन्याय को दूर करता है. हम यजमान आप पर बहुत श्रद्धा रखते हैं. (२)

समेत विश्वा ओजसा पतिं दिवो य एक इद्भूरतिथिर्जनानाम्.
स पूर्व्यो नूतनमाजिगीषन् तं वर्तनीरनु वावृत एक इत्.. (३)

हे यजमानो! इंद्र अपने पुरुषार्थ से स्वर्गलोक के स्वामी बने हैं. वे मनुष्यों में पूजनीय, अपूर्व व जीतने के इच्छुक को विजय दिलाते हैं. आप सब मिल कर उन की उपासना कीजिए. (३)

इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो.
न हि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिव प्रति तद्धर्य नो वचः.. (४)

हे इंद्र! आप बहुत धनवान हैं. सभी जगह आप की प्रशंसा होती है. हम आप की शरण में हैं. आप जैसा उपासना योग्य और कोई देवता नहीं हैं. हम आप की उपासना करते हैं. आप हमारे उपासना वचनों को (सब कुछ स्वीकारने वाली) पृथ्वी माता के समान स्वीकारिए. (४)

चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्या ३ मिन्द्रं गिरो बृहतीरभ्यनूषत.
वावृधानं पुरुहूत ं३ सुवृक्तिभिरमर्त्यं जरमाणं दिवेदिवे.. (५)

हे इंद्र! आप सभी मनुष्यों का पालनपोषण करते हैं. आप धनवान, प्रसिद्ध एवं आप यजमानों की बढ़ोतरी करते हैं. आप अमर हैं. हम प्रतिदिन आप के लिए कई प्रशंसापरक स्तुतियां करते हैं. हम कई दिव्य उपासनाओं से बारबार आप की उपासना करते हैं. (५)

अच्छा व इन्द्रं मतयः स्वर्युवः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषत.
परिष्वजन्त जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये.. (६)

हे इंद्र! हम अपने संरक्षण, धनसंपदा व बुद्धि पाने के लिए आप को चाहते हैं. हम आप से अपनी उन्नति की इच्छा रखते हैं. महिलाएं जैसे पति को चाहती हैं, वैसे ही हमारी प्रार्थनाएं

आप को चाहती हैं. (६)

अभि त्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्द्रं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम्.
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषं भुजे म हिष्ठमभि विप्रमर्चत.. (७)

हे यजमानो! आप इंद्र की उपासना कीजिए. इंद्र शत्रुओं को जीतने वाले हैं. वे बहुप्रशंसित हैं. वे धन के भंडार और स्वर्गलोक की भांति विस्तृत हैं. उन की महिमा चारों ओर व्याप्त हैं. ऐसे ज्ञानवान इंद्र को आप सब भजिए. (७)

त्य सु मेषं महया स्वर्विद शतं यस्य सुभुवः साकमीरते.
अत्यं न वाज हवनस्यद रथमिन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः.. (८)

हे यजमानो! इंद्र आत्मज्ञाता व महिमाशाली हैं. वे सौसौ कार्य एक साथ करने वाले व शत्रुओं से होड़ करने वाले हैं. यजमानों को धनदान करने के लिए वे हवन में पधारते हैं. घोड़े की तरह तेजी से पहुंचते हैं. आप अपने संरक्षण के लिए सौसौ प्रार्थनाओं से उन की उपासना कीजिए. (८)

घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा.
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा.. (९)

स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक प्रकाश संपन्न हैं. सभी प्राणियों को आधार देते हैं. वे विशाल व विस्तृत हैं. वे मीठे जल वाले हैं व परम शक्ति पर टिके हुए हैं. वे अविनाशी हैं. उन की उत्पादन क्षमता श्रेष्ठ है. (९)

उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव.
महान्तं त्वा महीना सम्राजं चर्षणीनाम्.
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत्.. (१०)

हे इंद्र! आप स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को उषा द्वारा प्रकाशित करते हैं. आप बहुत महान व सम्राट् हैं. देवताओं को जनने वाली अदिति ने आप को जन्म दिया है. (१०)

प्र मन्दिने पितुमदर्चता वचो यः कृष्णगर्भा निरहन्नृजिश्वना.
अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वन्त सख्याय हुवेमहि.. (११)

हे यजमानो! आप इंद्र को हवि प्रदान कीजिए. आप उन की अर्चना कीजिए. उन्होंने ऋजिश्व की मदद से कृष्णासुर की गर्भवती स्त्रियों के साथ उस का वध किया. वे दाएं हाथ में वज्र धारण करने वाले हैं. वे मरुद्गणों की सेना के साथ मौजूद रहते हैं. वे शक्तिमान हैं. यजमान उन से अपना संरक्षण चाहते हैं. हम यजमान मित्रता के लिए उन का आह्वान करते हैं. (११)

चौथा खंड

इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीष उक्थ्यम्. विदे वृधस्य दक्षस्य महा हि षः.. (१)

हे इंद्र! आप के पुत्रों (यजमानों) ने आप के लिए सोमरस परिष्कृत किया है. आप यजमान और उपासक दोनों की बढ़ोतरी व उन्हें पवित्र कीजिए. आप दक्ष व महान हैं. (१)

तमु अभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम्. इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत.. (२)

हे उपासको! आप इंद्र का आह्वान कीजिए. आप उन की प्रशंसा कीजिए. आप उन के गुण गाइए एवं उन का चिंतन कीजिए. (२)

तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृक्षु सासहिम्. उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम्.. (३)

हे इंद्र! आप के हाथ में वज्र है. आप बलवान व शत्रुजित् हैं. आप के घोड़े मनुष्यों का हित साधते हैं. सोमपान से आप में ऊर्जा आती है. हम उस ओज की प्रशंसा करते हैं. (३)

यत्सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्त्ये. यद्वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः.. (४)

हे इंद्र! यज्ञ में विष्णु पधारे. आप ने उस के बाद सोमरस पिया. आप आप्त्य त्रित (ऋषि) और मरुद्गणों के साथ सोमरस पी कर प्रसन्न हुए. आप कई अन्य यज्ञों में सोमरस पी कर प्रसन्न हुए (उसी प्रकार) आप हमारे इस यज्ञ में भी सोमरस पी कर प्रसन्न होइए. (४)

एदु मधोर्मदिन्तर सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः. एवा हि वीरस्तवते सदावृधः.. (५)

हे यजमानो! मधुर सोमरस से प्रसन्न होने वाले इंद्र को सोमरस दीजिए. वे वीर, स्तुति के योग्य हैं. वे सदा बढ़ोतरी पाते हैं. (५)

एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबति सोम्यं मधु. प्र राधा सि चोदयते महित्वना.. (६)

हे यजमानो! सोमरस इंद्र को अर्पित कीजिए. मीठा रसीला सोमरस पीने के बाद अपनी महिमा से वे यजमानों को भरपूर धन देते हैं. (६)

एतो न्विन्द्र स्तवाम सखायः स्तोम्यं नरम्.
कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत्.. (७)

हे सखाओ! जल्दी आइए. हम इंद्र की स्तुति करें. वे सर्वश्रेष्ठ हैं और अकेले ही शत्रुओं को हरा सकते हैं. (७)

इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्. ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे.. (८)

हे ब्राह्मणो! आप इंद्र के लिए बृहत्साम के मंत्र उचारिए. वे ब्रह्मज्ञानी, विवेकी, महान एवं उपासना के योग्य हैं. (८)

य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे. ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग.. (९)

हे यजमानो! इंद्र ईश्वर, दानशील व धनदाता हैं. वे प्रतिकार नहीं करते हैं. अकेले होने

पर भी वे सब प्राणियों के स्वामी हैं. (९)

सखाय आ शिषामहे ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे. स्तुष ऊ षु वो नृतमाय धृष्णवे.. (१०)

हे सखाओ! इंद्र वज्रवाले हैं. हम प्रार्थनाओं से उन की उपासना करते हैं. हम ब्रह्मज्ञानी इंद्र से आशीष चाहते हैं. वे सर्वोत्तम पराक्रमी व शत्रुओं को मात देने वाले हैं. हम सब के हित हेतु उन की उपासना करते हैं. (१०)

पांचवां खंड

गृणे तदिन्द्र ते शव उपमां देवतातये. यद्ध ꣳ सि वृत्रमोजसा शचीपते.. (१)

हे इंद्र (शचीपति)! हम पास ही हो रहे इस यज्ञ में आप की महिमा की उपासना करते हैं. आप अपने ओज से वृत्रासुर का नाश कर सके. (१)

यस्य त्यच्छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयन्. अय ꣳ स सोम इन्द्र ते सुतः पिब.. (२)

हे इंद्र! आप सोमरस पीजिए. सोमरस से मदमस्त हो कर ही आप ने दिवोदास के लिए शंबर का नाश किया. (२)

एन्द्र नो गधि प्रिय सत्राजिदगोह्य. गिरिर्न विश्वतः पृथुः पतिर्दिवः.. (३)

हे इंद्र! आप सभी को प्रिय व शत्रुजित् हैं. आप को कोई नहीं हरा सकता. आप गिरि जैसे विशाल व स्वर्गलोक के स्वामी हैं. आप विश्व के सभी वैभव हमें प्रदान कराने के लिए हमारे पास पृथ्वी पर पधारने की कृपा कीजिए. (३)

य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति. येना ह ꣳ सि न्या ३ त्रिणं तमीमहे.. (४)

हे इंद्र! आप अधिक सोमरस का पान करते हैं. आप अतीव बलशाली व बहुत अधिक ऊर्जस्वी हैं. इसी ऊर्जा (उत्साह) से आप दुश्मनों का नाश कर पाते हैं. हम इसलिए आप की उपासना करते हैं. (४)

तुचे तुनाय तत्सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे. आदित्यासः सुमहसः कृणोतन.. (५)

हे आदित्यो! आप महान हैं. आप हमारी संतान को लंबी आयु दीजिए. आप हमारी संतान की संतान को दीर्घ आयु प्रदान करने की कृपा कीजिए. (५)

वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम्. अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव.. (६)

हे इंद्र! आप विघ्नों को दूर करना जानते हैं. आप पवित्रतापूर्वक आपत्तियों का निराकरण करते हैं. आप रोग निवारक (चिकित्सक) मनुष्य के समान सभी आपत्तियों को दूर कर सकते हैं. (६)

अपामीवामप स्रिधमप सेधत दुर्मतिम्. आदित्यासो युयोतना नो अ ꣳ हसः.. (७)

हे आदित्यो! आप हमें रुग्णता व शत्रुता के प्रभाव से दूर रखने की कृपा कीजिए. आप हमें दुर्बुद्धि से बचाइए. (७)

पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः.
सोतुर्बाहुभ्या ꣳ सुयतो नार्वा.. (८)

हे इंद्र! आप अश्ववान (घोड़े वाले) हैं. आप प्रसन्नता देने वाले सोमरस को पीने की कृपा कीजिए. जिन पत्थरों से कूटकूट कर सोमरस निकाला जाता है, वे पत्थर यज्ञशाला में वैसे ही स्थिर हैं, जैसे घुड़साल में रस्सियों से बंधे घोड़े स्थिर रहते हैं. (८)

छठा खंड

अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि. युधेदापित्वमिच्छसे.. (१)

हे इंद्र! आप शुरू से ही भाइयों के लड़ाईझगड़ों से मुक्त हैं. आप के ऐसे भाईबंधु भी नहीं हैं, जो आप की मदद करें या आप पर राज करें. आप युद्ध में संरक्षण दे कर अपने भक्तों के साथ भाईबंधुता स्थापित करते हैं. (१)

यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु व स्तुषे. सखाय इन्द्रमूतये.. (२)

हे यजमानो! इंद्र आरंभ से ही धनदाता हैं. हम अपने कल्याण के लिए उन की उपासना करते हैं. (२)

आ गन्ता मा रिषण्यत प्रस्थावानो माप स्थात समन्यवः. दृढा चिद्यमयिष्णवः.. (३)

हे मरुद्गणो! आप हमारे पास पधारिए. आप हमें कोई नुकसान न पहुंचाते हुए हमारे पास आइए. जो बलशाली हैं, जो दुश्मनों को दुःखी करने वाले हैं, वे भी हमारे पास रहें. वे हम से दूर न रहें. (३)

आ याह्ययमिन्दवे ऽ श्वपते गोपत उर्वरापते. सोम ꣳ सोमपते पिब.. (४)

हे इंद्र देव! आप घोड़ों के मालिक, गायों व उर्वर भूमि के स्वामी और सोमरस को पीने वाले हैं. हम आप को सोमरस पीने के लिए आमंत्रित करते हैं. आप आइए और सोमरस पीजिए. (४)

त्वया ह स्विद्युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभ ब्रुवीमहि.
स ꣳ स्थे जनस्य गोमतः.. (५)

हे इंद्र! आप बैल के समान बलवान हैं. जो गोपालकों के प्रति क्रोध करते हैं हम उन के प्रति अपने को जोड़ें. आप की सहायता से उचित उत्तर देते हुए उन का विरोध करें. उन्हें दूर करने में आप हमारा साथ दीजिए. (५)

गावश्चिद्धा समन्यवः सजात्येन मरुतः सबन्धवः. रिहते ककुभो मिथः.. (६)

हे मरुद्गणो! आप सभी एक जैसे भाव वाले हैं. गाएं समान जाति के भाव वाली हैं. वे हर दिशा में विचरती हैं और परस्पर चाट कर प्रेम भाव को अभिव्यक्त करती हैं. (६)

त्वं न इन्द्रा भर ओजो नृम्ण शतक्रतो विचर्षणे. आ वीरं पृतनासहम्.. (७)

हे इंद्र! आप सैकड़ों कर्म करने वाले व विलक्षण हैं. आप हमें बलवान बनाइए. आप हमें वैभव व वीर पुत्र प्रदान करने की कृपा कीजिए. (७)

अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे. उदेव ग्मन्त उदभिः.. (८)

हे इंद्र! आप प्रशंसा के योग्य हैं. जल के साथ जाने वाले लोग भी उस के समान हो जाते हैं. हम आप से अपनी इच्छा पूर्ण करने की कामना करते हैं. हम आप के पास आ कर आप की उपासना करते हैं. (८)

सीदन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते मधौ मदिरे विवक्षणे. अभि त्वामिन्द्र नोनुमः.. (९)

हे इंद्र! सोमरस परिष्कृत होने के बाद गाय के दूध के साथ एकमेक हो जाता है. सोमरस ऊर्जादायी व वाणी को ओज देता है. उस के पास जैसे पक्षी इकट्ठे हो कर चहचहाते हैं, वैसे ही हम इकट्ठे हो कर आप को नमन करते हैं. (९)

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तो ऽ वस्यवः. वज्रिं चित्र हवामहे.. (१०)

हे इंद्र! आप वज्र वाले व विलक्षण हैं. जैसे गुणी व्यक्ति को लोग (आदर पूर्वक) बुलाते हैं, उसी प्रकार हम आप को बुलाते हैं. हम सोमरस से आप को पूरी तरह तृप्त करते हैं. हम आप की उपासना करते हैं. (१०)

सातवां खंड

स्वादोरित्था विषूवतो मधोः पिबन्ति गौर्यः.
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभथा वस्वीरनु स्वराज्यम्.. (१)

हे इंद्र! सूर्य रूप में आप की किरणें आप के साथ शोभित होती हैं. वे किरणें स्वादिष्ट मीठे सोमरस को पीती हैं. वे किरणें स्वराज्य में शोभित होती हैं. (१)

इत्था हि सोम इन्मदो ब्रह्म चकार वर्धनम्.
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम्.. (२)

हे इंद्र! आप वज्रधारी व बलवान हैं. सोमरस गुणी है. इन प्रार्थनाओं में हम ने सोमरस के गुणों का वर्णन किया है. पृथ्वी पर हमारे शत्रुओं का नाश हो. पूरी तरह स्वराज्य की स्थापना हो. (२)

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः.
तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नो ऽ विषत्.. (३)

हे यजमानो! हम यजमान प्रसन्नता और उत्साह की कामना से इंद्र की कीर्ति की बढ़ोतरी करते हैं. छोटेबड़े हर प्रकार के युद्ध में वे हमारी रक्षा करते हैं. रक्षा के लिए उन का आह्वान करते हैं. वे युद्ध में हमारी रक्षा करें. (३)

इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवो ऽ नुत्तं वज्रिन्वीर्यम्.
यद्ध त्यं मायिनं मृगं तव त्यन्माययावधीरर्चन्ननु स्वराज्यम्.. (४)

हे इंद्र! आप वज्रधारण करते हैं. आप गिरि (पर्वत) पर निवास करते हैं. आप स्वराज की इच्छा से अर्चना करने वालों की सहायता करते हैं. युद्धों में आप मायावी हिरण की तरह छलीकपटी के नाश के लिए कूटनीति का सहारा लेते हैं. (४)

प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि य ꣳ सते.
इन्द्र नृम्ण ꣳ हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपो ऽ र्चन्ननु स्वराज्यम्.. (५)

हे इंद्र! आप सब ओर से दुश्मनों पर हमला कीजिए. आप दुश्मनों का नाश कीजिए. आप का वज्र शक्तिशाली व आप की शक्ति अतुलनीय है. आप ने अपने राज्य की इच्छा से वृत्रासुर का वध किया, विजय प्राप्त की व जल प्राप्त किया. (५)

यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम्.
युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी क ꣳ हनः कं वसौ दधो ऽ स्मां इन्द्र वसौ दधः.. (६)

हे इंद्र! आप मद चुआने वाले अपने घोड़ों को रथ में जोतिए. आप किस का नाश करेंगे यह आप पर निर्भर है. आप किस को धन प्रदान करेंगे यह भी आप पर निर्भर करता है. आप हमें धन प्रदान कीजिए. युद्ध में शत्रुओं को जीतने वाले ही धन प्राप्त करते हैं. (६)

अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत.
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी.. (७)

हे इंद्र! यजमान आप के दिए हुए अन्न से तृप्त हुए. यजमान सिर हिला कर प्रसन्नता प्रकट करते हैं. तेजस्वी ब्राह्मण नई प्रार्थना पढ़ते हैं. आप यज्ञ में पधारने के लिए घोड़ों को रथ में जोतने की कृपा कीजिए. (७)

उपो षु शृणुही गिरो मघवन्मातथा इव.
कदा नः सूनृतावतः कर इदर्थयास इद्योजा न्विन्द्र ते हरी.. (८)

हे इंद्र! आप धनवान हैं. आप हमारी प्रार्थना को सुनने की कृपा कीजिए. आप हमें कब अच्छी वाणी वाला बनाएंगे? आप हमारी स्तुतियों को अच्छी तरह सुनने के लिए पधारिए. आप पधारने के लिए अपने घोड़ों को रथ में जोतने की कृपा कीजिए. (८)

चन्द्रमा अप्स्वा ऽ ३ न्तरा सुपर्णो धावते दिवि.
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी.. (९)

चंद्र अंतरिक्ष में अपनी किरणों के साथ गतिशील हैं. सूर्य की किरणें सुनहरी और चमकीली हैं. हमारी इंद्रियां उन्हें नहीं पकड़ सकतीं. हे स्वर्गलोक! व पृथ्वीलोक! आप हमारी प्रार्थना स्वीकार कीजिए. (९)

प्रति प्रियतम रथं वृषणं वसुवाहनम्.
स्तोता वामश्विनावृषि स्तोमेभिर्भूषति प्रति माध्वी सम श्रुत हवम्.. (१०)

हे अश्विनीकुमारो! आप का रथ अत्यंत प्रिय व बलवान है. वह धन ढोता है. उपासक ऋषि अपनी प्रार्थनाओं से उसे सुशोभित करते हैं. आप दोनों मधुर विद्याओं के ज्ञाता हैं. आप हमारी प्रार्थनाएं सुनिए. (१०)

आठवां खंड

आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम्.
यद्ध स्या ते पनीयसी समिद्दीदयति द्यवीष स्तोतृभ्य आ भर.. (१)

हे अग्नि! आप अजर (बुढ़ापे से मुक्त) हैं. आप प्रकाशमान हैं. हम आप को प्रज्वलित करते हैं. आप स्वर्गलोक को प्रकाशित करते हैं. आप उपासकों को भरपूर धन दीजिए. (१)

आग्निं न स्ववृक्तिभिर्होतारं त्वा वृणीमहे.
शीरं पावकशोचिषं वि वो मदे यज्ञेषु स्तीर्णबर्हिषं विवक्षसे.. (२)

हे अग्नि! अच्छी प्रार्थनाओं से आप को हवि दी जाती है. यज्ञ में आप के लिए कुश का आसन बिछाया जाता है. आप सर्वत्र मौजूद हैं. आप प्रकाशमान व महान हैं. हम विशेष प्रसन्नता के साथ आप की उपासना करते हैं. (२)

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती.
यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते.. (३)

हे उषा! आप पहले भी हमें जाग्रत करती रही हैं. आप हमें अब भी जाग्रत कीजिए. आप धनप्राप्ति के लिए हमें जाग्रत कीजिए. आप प्रकाशयुक्त और श्रेष्ठ विधि (अच्छी तरह) से उत्पन्न हैं. आप वय के पुत्र सत्यश्रवा पर कृपा दृष्टि रखिए. (३)

भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम्.
अथा ते सख्ये अन्धसो वि वो मदे रणा गावो न यवसे विवक्षसे.. (४)

हे सोम! सोमरस से हमारा मन प्रसन्न हो जाता है. आप हमारे प्रसन्न मन को बल दीजिए. क्रियाशील बनाने की कृपा कीजिए. आप हमें हितकारी शक्ति दीजिए. श्रेष्ठ बनाइए. आप हमें मित्रता के लिए प्रेरित कीजिए. हमारा आप से वैसा ही सखा भाव हो जाए, जैसा गाय का घास से हो जाता है. (४)

क्रत्वा महाँ अनुष्वधं भीम आ वावृते शवः.

श्रिय ऋष्व उपाकयोर्नि शिप्री हरिवां दधे हस्तयोर्वज्रमायसम्.. (५)

हे इंद्र! आप भीम (भीषण बलवान) हैं. फिर भी आप सोमरस का पान कर के अपने बल की बढ़ोतरी करते हैं. आप सुंदर हैं. आप सिर पर अच्छी पगड़ी धारते हैं. आप रथ में घोड़ों को जोतते हैं. आप दाएं हाथ में वज्र को कड़े की भांति धारण करते हैं. (५)

स घा तं वृषण रथमधि तिष्ठाति गोविदम्.
यः पात्र हारियोजनं पूर्णमिन्द्र चिकेतति योजा न्विन्द्र ते हरी.. (६)

हे इंद्र! आप गायों को जानने वाले (गोविद) हैं. आप रथ में विराजते हैं. आप का रथ शक्तिशाली है. आप अपने घोड़ों को रथ में जोतिए. आप हमारी मनोकामनाएं पूरी करने की कृपा कीजिए. (६)

अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः.
अस्तमर्वन्त आशवो ऽ स्तं नित्यासो वाजिन इष स्तोतृभ्य आ भर.. (७)

हे अग्नि! आप बादलों में घर की तरह रहते हैं. आप की ओर यज्ञ स्थान में गाएं आती हैं. आप की ओर तीव्र गति से घोड़े आते हैं. आप की ओर हवि वाले यजमान आते हैं. हम आप की उपासना करते हैं. आप यजमानों को भरपूर अन्न प्रदान करने की कृपा कीजिए. (७)

न तम हो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम्.
सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयति वरुणो अति द्विषः.. (८)

हे देवताओ! आप मनुष्यों को प्रगति की राह पर बढ़ाते हैं. अर्यमा, मित्र और वरुण दुराचारियों को दूर करते हैं. आप की कृपा से मनुष्य पापों से दूर रहता है. आप की कृपा से मनुष्य की दुर्गति नहीं हो पाती है. (८)

नौवां खंड

परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय.. (१)

हे सोम! आप का रस सुस्वादु (स्वादिष्ट) होता है. आप इंद्र, पूषा व भग देव के लिए प्रवाहित होइए. (१)

पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः.
द्विषस्तरध्या ऋणया न ईरसे.. (२)

हे सोम! आप सोमरस से कलश को भर दीजिए. आप उस भरेपूरे द्रोणकलश में भरे रहिए. आप शक्तिमान होइए. आप दुश्मनों पर आक्रमण कीजिए. हमें आप कर्जों से मुक्त कराइए. आप हमारे शत्रुओं को हराइए. आप उन पर हमला करने के लिए जाइए. (२)

पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता देवानां विश्वाभि धाम.. (३)

हे सोम! आप फैले हुए हैं. आप महान व समुद्र जैसे हैं. आप पिता (पालक) हैं. आप सभी देवताओं के धाम हैं. (३)

पवस्व सोम महे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय.. (४)

हे सोम! घोड़े की तरह आप को परिष्कृत किया है. आप शक्ति की बढ़ोतरी करते हैं. आप बल व वैभव दीजिए. आप द्रोणकलश में भरे रहिए. (४)

इन्दुः पविष्ट चारुर्मदायापामुपस्थे कविर्भगाय.. (५)

हे सोम! आप कवि व सुंदर हैं. आप को भग देवता को प्रसन्न करने के लिए जल में मिलाया जाता है. (५)

अनु हि त्वा सुत सोम मदामसि महे समर्यराज्ये.
वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे.. (६)

हे सोम! रस निकालने के बाद हम आप का पूजापाठ करते हैं. आप को परिष्कृत करते हैं. आप राज्य की रक्षा कीजिए. आप दुश्मनों की सेना पर हमला करने के लिए प्रस्थान करते हैं. (६)

क ईं व्यक्ता नरः सनीडा रुद्रस्य मर्या अथा स्वश्वाः.. (७)

हे व्यक्त करने वाले मनुष्यो! हमें जानकारी देने की कृपा कीजिए कि एक ही आवास में रहने वाले अपने घोड़ों वाले मरुद्गणों के साथ रुद्र का क्या संबंध है. (७)

अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्र हृदिस्पृशम् ऋध्यामा त ओहैः.. (८)

हे अग्नि! आप घोड़ों के समान गतिमान हैं. हम ऊह स्तोत्र गा रहे हैं. यह ऊह स्तोत्र हृदय को स्पर्श करने वाला है. आप की यशगाथा की बढ़ोतरी करने वाला है. (८)

आविर्मर्या आ वाजं वाजिनो अग्मं देवस्य सवितुः सवम्. स्वर्गां अर्वन्तो जयत.. (९)

सविता ने परिष्कृत सोमरस को ग्रहण कर लिया है. वे तेजस्वी व मनुष्य के लिए हितकारी हैं. यजमानों को उन से जीतने के लिए घोड़े और स्वर्ग की इच्छा करनी चाहिए. (९)

पवस्य सोम द्युम्नी सुधारो महाँ अवीनामनुपूर्व्यः.. (१०)

हे सोम! आप प्रकाशमान हैं. आप अच्छी धारा से द्रोणकलश में झरिए. आप अपूर्व व महान हैं. (१०)

दसवां खंड

विश्वतोदावन्विश्वतो न आ भर यं त्वा शविष्ठमीमहे.. (१)

हे इंद्र! आप शत्रुओं का सर्वनाश करने वाले हैं. आप हमें भरपूर धन दीजिए. हम उसी के लिए आप की उपासना करते हैं. (१)

एष ब्रह्मा य ऋत्विय इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे.. (२)

हे इंद्र! आप ज्ञाता हैं. आप ऋतु के अनुकूल कार्य करते हैं. आप का प्रसिद्ध नाम इंद्र है. हम आप की उपासना करते हैं. (२)

ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कैरवर्धयन्नहये हन्तवा उ.. (३)

हे इंद्र! हम आप के यज्ञ की बढ़ोतरी करते हैं. हम अहि राक्षस के नाश के लिए बुद्धिपूर्वक रचे गए मंत्रों से आप की स्तुति करते हैं. (३)

अनवस्ते रथमश्वाय तक्षुस्त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम्.. (४)

हे इंद्र! कई ऋषि मुनि आप की उपासना करते हैं. देवताओं ने आप के घोड़ों के लिए रथ बनाया है. त्वष्टा (देवताओं के शिल्पकार) ने आप के लिए द्युमान (चमचमाते) वज्र का निर्माण किया है. (४)

शं पदं मघ रयीषिणो न काममव्रतो हिनोति न स्पृशद्रयिम्.. (५)

यजमान देवताओं की कृपा से धन व सुख की प्राप्ति करते हैं. वे अच्छे भवन की प्राप्ति करते हैं. जो यज्ञयाग नहीं करते, उन्हें इन सब की प्राप्ति नहीं होती है. (५)

सदा गावः शुचयो विश्वधायसः सदा देवा अरेपसः.. (६)

हे यजमानो! गाएं पवित्र व पाप रहित होती हैं. वे सभी प्राणियों (विश्व) का भरणपोषण करने वाली होती हैं. (६)

आ याहि वनसा सह गावः सचन्त वर्तनिं यदूधभिः.. (७)

हे उषा! आप आइए. आप दूध से भरे थनों वाली गायों को वन से साथ ले कर पधारिए. (७)

उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र.. (८)

हे इंद्र! हम मधुयुक्त चम्मचों से झरता हुआ धनधान्य पाएं. हम आप के पास रहने के लिए इच्छुक हैं. हम आप से धन पाना चाहते हैं. हम आप का ध्यान धरते हैं. (८)

अर्चन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः.. (९)

हे मरुद्गण! आप उत्तम व प्रकाशमान हैं. इंद्र उपासना के योग्य हैं. हम उन की उपासना करते हैं. इंद्र जवान, प्रसिद्ध व शत्रुनाशक हैं. (९)

प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायत यं जुजोषते.. (१०)

हे यजमानो! आप वृत्र का नाश करने वाले इंद्र के लिए गाथाएं गाइए. आप ब्राह्मण के लिए जिन गाथाओं को गाएंगे, उन्हें वे प्रसन्न हो कर सुनते हैं. (१०)

ग्यारहवां खंड

अचेत्यग्निश्चिकितिर्हव्यवाट् न सुमद्रथः.. (१)

हे अग्नि! आप हविवाहक, प्रकाशमान, ज्ञानवान हैं. जैसे रथ निर्धारित जगह ले जाता है, वैसे ही आप जिनजिन देवताओं के लिए जोजो वस्तु समर्पित की जाती है, उसे उनउन देवताओं तक पहुंचाते हैं. आप सर्वज्ञाता हैं. (१)

अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः.. (२)

हे अग्नि! आप हमारे समीप हैं. आप रक्षक, कल्याणकारी, संरक्षक व उपासना के योग्य हैं. (२)

भगो न चित्रो अग्निर्महोनां दधाति रत्नम्.. (३)

हे अग्नि! आप महान व रत्न धारण करते हैं. आप सूर्य जैसे हैं और यजमानों को सौभाग्यवान बनाते हैं. (३)

विश्वस्य प्र स्तोभ पुरो वा सन्यदिवेह नूनम्.. (४)

हे अग्नि! आप सभी शत्रुओं के नाशक हैं. आप यज्ञवेदी पर निश्चित रूप से उपस्थित रहते हैं. (४)

उषा अप स्वसुष्टमः सं वर्तयति वर्तनि सुजातता.. (५)

उषा अच्छी तरह प्रकट हो कर अपनी किरणों से अपनी बहन रात के अंधेरे को दूर करती है. वह अपना मार्ग प्रकाशित करती है. (५)

इमा नु कं भुवना सीषधेमेन्द्रश्च विश्वे च देवाः.. (६)

इंद्र और अन्य सभी देवों की मदद से ऋषिगण इस भुवन को अपने अनुशासन (वश) में रखते हैं. इस से संसार में सुख बना रहता है. (६)

वि स्रुतयो यथा पथा इन्द्र त्वद्यन्तु रातयः.. (७)

हे इंद्र! जैसे छोटे पथ राजपथ से मिल जाते हैं, वैसे ही आप की कृपा से सभी को धन की राह मिलती है. (७)

अया वाजं देवहित सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः.. (८)

हमें देवहित प्राप्त हों. हमें अन्न व बल प्राप्त हो. हम शतायु हों. हम प्रसन्न रहें. हमें सुवीर (श्रेष्ठ वीर) संतान मिले. (८)

ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वतेडाः पीवरीमिषं कृणुही न इन्द्र.. (९)

हे इंद्र! मित्र और वरुण हमें ऊर्जस्वी धन प्रदान करते हैं. आप हमारे अन्न को और अधिक पौष्टिक बनाने की कृपा कीजिए. (९)

इन्द्रो विश्वस्य राजति.. (१०)

इंद्र विश्व की शोभा हैं. (१०)

बारहवां खंड

त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृम्पत्सोममपिबद्विष्णुना सुतं यथावशम्.
स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरु ꣳ सैन ꣳ सश्चद्देवो देव ꣳ सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम्.. (१)

उत्तम दिव्य गुणों वाला सोमरस इंद्र को प्राप्त हुआ. शक्तिशाली इंद्र ने विष्णु के साथ सोमरस को पीया. उस सोमरस में जौ का आटा मिलाया. वह तृप्तिकारी और त्रिलोक में व्याप्त था. उस ने इंद्र को महान कार्य करने की भी प्रेरणा प्रदान की. (१)

अय ꣳ सहस्रमानवो दृशः कवीनां मतिर्ज्योतिर्विधर्म.
ब्रध्नः समीचीरुषसः समैरयदरेपसः सचेतसः स्वसरे मन्युमन्तश्चिता गोः.. (२)

सूर्य हजारों मनुष्यों का हित करने वाले कवि, देखने योग्य, प्रकाशमान व अंधकारभेदक हैं. वे उषा को भेजते हैं. उन के प्रकाश के सामने चंद्रमा और दूसरे नक्षत्रों की चमक फीकी लगती है. (२)

एन्द्र याह्युप नः परावतो नायमच्छा विदथानीव सत्पतिरस्ता राजेव सत्पतिः.
हवामहे त्वा प्रयस्वन्तः सुतेष्वा पुत्रासो न पितरं वाजसातये म ꣳ हिष्ठं वाजसातये.. (३)

हे इंद्र! आप सज्जनों के पालनहार हैं. जैसे अग्नि यज्ञशाला में पधारते हैं, वैसे ही आप हमारे पास पधारते हैं. आप सत्पति हैं. जैसे दुश्मनों को हरा कर राजा घर आता है, वैसे ही आप अंतरिक्षलोक से हमारे पास पधारते हैं. हम युद्ध में मदद के लिए उसी तरह आप का आह्वान करते हैं, जैसे अन्नादि के लिए पुत्र पिता को बुलाते हैं. हम अन्न आदि भोग के साथ अन्नादि की प्राप्ति के लिए आप का आह्वान करते हैं. (३)

तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्र ꣳ सत्रा दधानमप्रतिष्कुत ꣳ श्रवा ꣳ सि भूरि.
म ꣳ हिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्त राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री.. (४)

हे इंद्र! आप धनवान, उग्र व बलवान हैं. आप को कोई नहीं हरा सकता है. सभी यज्ञों में आप की पूजा की जाती है. हम भी आप की पूजा करते हैं. हम वाणी से आप की उपासना करते हैं. वज्रधारी इंद्र हमारे सभी पथ सुपथ बनाने की कृपा करें. (४)

अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं धिया दध आ नु त्यच्छर्धो दिव्यं वृणीमह इन्द्रवायू वृणीमहे.
यद्ध क्राणा विवस्वते नाभा सन्दाय नव्यसे.
अध प्र नूनमुप यन्ति धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः.. (५)

हम यजमानों ने बुद्धिपूर्वक अग्नि की यज्ञवेदी में स्थापना की है. हम दिव्य अग्नि की उपासना करते हैं. हम इंद्र और वायु से भी अपनी स्तुति सुनने का अनुरोध करते हैं. दोनों देव हमें यश और धन प्रदान करने की कृपा करें. हमारी प्रार्थनाएं संबंधित देवों के पास जरूर पहुंचेंगी. हमारे सभी यज्ञ संबंधी कार्य देवों के पास पहुंचाने के लिए ही किए जा रहे हैं. (५)

प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत्.
प्र शर्धाय प्र यज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे.. (६)

हे इंद्र! आप महान हैं. एवयामरुत् (ऋषि) आप की उपासना करते हैं. एवयामरुत् ऋषि की स्तुतियां मरुद्गणों तक पहुंचें. एवयामरुत् ऋषि की स्तुतियां विष्णु तक पहुंचें. यजमानों का कल्याण हो. यजमानों को सुखादि प्राप्त हो. यजमानों को मरुद्गणों का बल प्राप्त हो. (६)

अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषा ꣳ सि तरति सयुग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः.
धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः.
विश्वा यद्रूपा परियास्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः.. (७)

हे सोम! आप का रस हरे रंग का है. परिष्कृत सोमरस शत्रुनाशक है. उस की धारा चमकीली और तमहारी (अंधकार दूर करने वाली) है. परिष्कृत हरी व लाल आभा वाला सोमरस चमकता हुआ शोभित होता है. उस की सात रंगों वाली किरणें अनेक रूप धारण करती हैं. (७)

अभि त्यं देव ꣳ सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसव ꣳ रत्नधामभि प्रियं मतिम्.
ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः.. (८)

हे सविता! हम आप की उपासना करते हैं. आप कवि, सत्यवान व अत्यंत प्रिय हैं. आप का प्रकाश पृथ्वीलोक से अंतरिक्षलोक तक फैलता है. आप सुनहरे प्रकाश वाले हैं. आप हम यज्ञ करने वालों पर अपनी कृपा बनाए रखते हैं. (८)

अग्नि ꣳ होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः सूनु ꣳ सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम्.
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा.
घृतस्य विभ्राष्टिमनु शुक्रशोचिष आजुह्वानस्य सर्पिषः.. (९)

हे अग्नि! आप को हम होता मानते हैं. हम आप के दास हैं. आप धनदाता, ज्ञानदाता व सर्वज्ञाता हैं. आप जैसे सर्वज्ञाता और ब्राह्मण को हम आहुति प्रदान करते हैं. हम अपने यज्ञ में ऊर्ध्व (ऊंचे) लोकों में रहने वाले देवों की कृपा चाहते हैं. पवित्र और प्रकाशमान आप को

हम घी की आहुति भेंट करते हैं. आप प्रसन्न होइए. (९)

तव त्यन्नर्यं नृतो ऽ प इन्द्र प्रथमं पूर्व्यं दिवि प्रवाच्यं कृतम्.
यो देवस्य शवसा प्रारिणा असु रिणन्नपः.
भुवो विश्वमभ्यदेवमोजसा विदेदूर्ज ꣳ शतक्रतुर्विदेदिषम्.. (१०)

हे इंद्र! आप सर्वश्रेष्ठ, अपूर्व, दिव्य व मनुष्यों के लिए कल्याणकारी हैं. स्वर्ग में आप की प्रशंसा होती है. आप ने शत्रुनाश किया. शत्रुओं को हराया. आप ने जल प्रवाहित किया. आप सैकड़ों कर्म करने वाले हैं. आप सर्वज्ञाता हैं. आप अपने बल के साथ पधारिए. आप हमारी हवि स्वीकारने की कृपा कीजिए. (१०)

पवमान पर्व

पांचवां अध्याय

पहला खंड

उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे. उग्र ꣳ शर्म महि श्रवः.. (१)

हे सोम! स्वर्गलोक में आप के पोषक रस का जन्म हुआ है. उसी स्वर्गलोक से आप महत्त्वपूर्ण सुख और प्रचुर अन्न पृथ्वी पर पहुंचाते हैं. (१)

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया. इन्द्राय पातवे सुतः.. (२)

इंद्र के लिए सोमरस निचोड़ा गया है. हे सोम! आप रसीले हैं. आप प्रसन्नता देने वाले और स्वादिष्ट हैं. आप की धाराएं निरंतर झरें. (२)

वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः. विश्वा दधान ओजसा.. (३)

हे सोम! आप गाढ़ीगाढ़ी धाराओं से यजमान के मटकों में पधारिए. आप उन इंद्र को प्रसन्न कीजिए, जिन की मरुद्गण भी सेवा करते हैं. आप इंद्र की सामर्थ्य और बढ़ाइए और यजमानों की मनोकामनाएं पूरी कीजिए. (३)

यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा. देवावीरघश ꣳ सहा.. (४)

हे सोम! आप का रस देवताओं को बहुत प्रिय, राक्षसों का नाशक है. आप का रस बहुत प्रसन्नतादायी है. आप इस रस के साथ कलशों (मटकों) में पधारिए. (४)

तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः. हरिरेत कनिक्रदत्.. (५)

यज्ञ के समय तीनों वेदों के मंत्र गाए जाते हैं. दुधारू गाएं अपने दोहन के लिए रंभाती हैं. हरा सोमरस आवाज करता हुआ मटकों में जाता है. (५)

इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः. अर्कस्य योनिमासदम्.. (६)

हे सोम! आप बहुत मीठे हैं. आप यज्ञशाला में पधारिए. आप इंद्र के लिए कलश में पधारिए (जाइए). (६)

असाव्य ꣳ शुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः. श्यनो न योनिमासदत्.. (७)

हे सोम! आप पर्वत पर पैदा हुए हैं. आप को प्रसन्नता के लिए निचोड़ा जाता है. जल से

आप की मात्रा बढ़ाई जाती है. जैसे श्येन (बाज) पक्षी अपने स्थान पर स्थित रहता है, वैसे ही आप यज्ञ में अपने निर्धारित स्थान पर विराजिए. (७)

पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे. मरुद्भ्यो वायवे मदः.. (८)

हे सोम! आप हरीहरी आभा वाले व शक्तिमान हैं. देवों और मरुद्गणों के पीने के लिए कलश में पधारिए. (८)

परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत्. मदेषु सर्वधा असि.. (९)

यह सोमरस पवित्र पात्र में छाना जा रहा है. यह पर्वत पर उत्पन्न होता है. आप सब से ज्यादा आनंददायी हैं. (९)

परि प्रिया दिवः कविर्वया ऽ सि नप्त्योर्हितः. स्वानैर्याति कविक्रतुः.. (१०)

हे सोम! आप बुद्धि को बढ़ाने वाले और ज्ञानी हैं. आप का रस निकालने के लिए दो फलकों (स्वर्गलोक और पृथ्वी) के बीच में रखा जाता है. आप का रस निकाल कर यज्ञ करने वाले अपना यज्ञ साधते हैं. (१०)

दूसरा खंड

प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम्. सुता विदथे अक्रमुः.. (१)

हे सोम! आप प्रसन्नता बढ़ाने वाले हैं. आप को हवि देने के लिए निचोड़ा गया है. आप को अन्न और यश प्राप्ति के उद्देश्य से इन कलशों में भरा गया है. (१)

प्र सोमासो विपश्चितो ऽ पो नयन्त ऊर्मयः. वनानि महिषा इव.. (२)

हे सोम! आप बुद्धि बढ़ाने वाले हैं. आप पानी की लहरों की तरह कलशों में जाते हैं. आप वन के पशुओं की तरह पवित्र पात्र में पधारते हैं. (२)

पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने. विश्वा अप द्विषो जहि.. (३)

हे सोम! आप बल और इच्छा पूर्ति के लिए निचोड़े गए हैं. आप हमें यशस्वी बनाइए. आप हमारे सभी शत्रुओं को नष्ट कीजिए. (३)

वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे. पवमान स्वर्दृशम्.. (४)

हे सोम! आप इच्छा पूर्ति, पवित्र करने वाले व प्रकाशमान हैं. आप सब को एक नजर (समान दृष्टि) से देखते हैं. हम इस यज्ञ में आप को आमंत्रित करते हैं. (४)

इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मतिः. सृजदश्व ऽ रथीरिव.. (५)

हे सोम! आप चेतना देने वाले हैं. आप सभी को प्रिय हैं. विद्वानों की स्तुति के साथ आप को पात्रों में छाना जाता है. जैसे सारथी घोड़े को वश में रखता है, वैसे ही आप को धार

से वश में कर के कलशों में भरा जाता है. (५)

असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया. शुक्रासो वीरयाशवः.. (६)

हे सोम! आप बलवान, बल देने वाले एवं वेगवान हैं. यजमान ने गायों, घोड़ों और पुत्रों को पाने की इच्छा से आप को निचोड़ा है. (६)

पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः. वायुमा रोह धर्मणा.. (७)

हे सोम! आप प्रकाशमान हैं. आप छनने के लिए पात्र में पधारिए. आप का आनंददायी रस इंद्र को पहुंचे. आप धारा के रूप में वायु को प्राप्त कीजिए. (७)

पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तन्यतुम्. ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत्.. (८)

सोम पवित्र हुए. उस के बाद उन्होंने स्वर्गलोक से सब को प्रकाशित कर सकने वाली ज्योति (वैश्वानर) को बिजली की तरह चमकाया. (८)

परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा. मधो अर्षन्ति धारया.. (९)

सोमरस निचोड़ने के बाद पवित्र प्रार्थनाओं से यजमान स्तुति करते हुए धारा में बांध कर उसे छानते हैं. (९)

परि प्रासिष्यदत्कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः. कारुं बिभ्रत्पुरुस्पृहम्.. (१०)

सोमरस बुद्धि बढ़ाने वाला है. अनेक लोगों द्वारा चाहा गया है. लहरों की तरह जल में मिलता है. यह यजमानों की इच्छा से पात्र में छनछन कर चू रहा है. (१०)

तीसरा खंड

उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्. इन्दुं देवा अयासिषुः.. (१)

सोमरस को पानी, गाय का दूध और घी मिला कर अच्छी तरह तैयार किया गया है. यह शत्रुनाशक है. यह उत्तम सोमरस देवताओं तक पहुंचे. (१)

पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः. शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः.. (२)

सोमरस बुद्धि बढ़ाने वाला, पवित्र व सभी शत्रुओं पर आक्रमण करता है. ज्ञानी उस सोम की स्तोत्रों से शोभा बढ़ाते हैं. (२)

आविशन्कलश सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः. इन्दुरिन्द्राय धीयते.. (३)

शुद्ध सोमरस निकाल लिया गया है. यह कलश में भरा जा रहा है. यह इच्छा पूर्ति करने वाला सोमरस इंद्र के लिए भेंट किया जाता है. (३)

असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे चम्वोः सुतः. कार्ष्मन्वाजी न्यक्रमीत्.. (४)

जैसे रथ का घोड़ा छोड़ा जाता है, वैसे ही सोम को दो फलकों से निचोड़ कर छानने वाले बरतन में छोड़ा जाता है. घोड़े की तरह वेगवान सोमरस यज्ञ रूपी युद्ध में जाता है. (४)

प्र यद्गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः. घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम्.. (५)

सोमरस वेगवान और प्रकाशवान है. वह अपनी काली छाल दूर कर के उसी तरह यज्ञ में जाता है, जिस तरह गाएं वेग से अपने बाड़े में जाती हैं. (५)

अपघ्नन्पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः. नुदस्वादेवयुं जनम्.. (६)

सोमरस मदमस्त करने वाला, यज्ञ के विधिविधानों (कर्मकांडों) को जानने वाला और शत्रुओं का नाशक है. सोम देवताओं को न चाहने वाले राक्षसों को दूर करने वाला है. (६)

अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः. हिन्वानो मानुषीरपः.. (७)

हे सोम! आप मनुष्यों का हित करने वाले व जल को बरसात के लिए प्रेरणा देने वाले हैं. जिस धारा से आप सूर्य को प्रकाशित करते हैं, उसी धारा से आप इस पात्र में प्रवेश कीजिए. (७)

स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे. वव्रिवा ꣳ सं महीरपः.. (८)

हे सोम! आप जल रोकने वाले वृत्रासुर को मारने के लिए इंद्र का उत्साह बढ़ाइए. आप अपनी धाराओं से कलश को पूर्ण कर दीजिए. (८)

अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा. अवाहन्नवतीर्नव.. (९)

हे सोम! इंद्र के भोग के लिए आप कलश में छनिए. सोमरस शंबर राक्षस की निन्यानवे नगरियों को तोड़ने का इंद्र को सामर्थ्य प्रदान करता है. (९)

परि द्युक्ष ꣳ सनद्रयिं भरद्वाजं नो अन्धसा. स्वानो अर्ष पवित्र आ.. (१०)

हे सोम! आप प्रकाशित और देने योग्य धन हमें दीजिए. आप हमें बल और अन्न प्रदान कीजिए. आप का पवित्र रस छनने के बाद मटकों में बना रहे (स्थिरता से भरा रहे). (१०)

चौथा खंड

अचिक्रदद्वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः. स ꣳ सूर्येण दिद्युते.. (१)

सोम कामना पूरी करते हैं. वे हरे और हमारे महान मित्र हैं. वे सूर्य के समान प्रकाशित होते हैं. निचोड़ते समय वे शब्द करते हैं. (१)

आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे. पान्तमा पुरुस्पृहम्.. (२)

हे सोम! आप बलदाता, सुखदाता, धनदाता, शत्रुनाशक व अनेक लोगों द्वारा चाहे जाते हैं. आज यज्ञ में हम आप के उस बल को याद करते हैं. (२)

अध्वर्यो अद्रिभिः सुत ꣳ सोमं पवित्र आ नय. पुनाहीन्द्राय पातवे.. (३)

हे पुरोहितो! पत्थरों से कूटकूट कर निचोड़े गए सोमरस को आप छान कर मटकों में पहुंचाइए. इंद्र के पीने के लिए आप सोमरस को शुद्ध बनाइए. (३)

तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः. तरत्स मन्दी धावति.. (४)

निचोड़ी गई सोमरस की धाराएं इंद्र को प्रसन्नता देने वाली हैं. यह सोमरस जो इंद्र को देता है, वह ऊर्ध्व (ऊंची) गति पाता है. वह सभी पापों से पार हो जाता है. (४)

आ पवस्व सहस्रिण ꣳ रयिं ꣳ सोम सुवीर्यम्. अस्मे श्रवा ꣳ सि धारय.. (५)

हे सोम! आप हजारों प्रकार के श्रेष्ठ धन व अन्न हमें प्रदान कीजिए. (५)

अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः. रुचे जनन्त सूर्यम्.. (६)

पुराने समय में लोगों ने श्रेष्ठ स्थान पाने के लिए सूर्य के समान तेजस्वी सोम को उत्पन्न किया. (६)

अर्षा सोम द्युमत्तमो ऽभि द्रोणानि रोरुवत्. सीदन्योनौ वनेष्वा.. (७)

हे सोम! आप बहुत प्रकाशमान एवं शब्द करते हुए यज्ञ पात्र में छनते हैं. आप वन और यज्ञशालाओं में विराजिए. (७)

वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः. वृषा धर्माणि दध्रिषे.. (८)

हे सोम! आप बलवान, तेजस्वी व इच्छा पूर्ति के संकल्प वाले हैं. आप बल बढ़ाने वाले इन गुणों को धारण करने वाले हैं. (८)

इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः. इन्दो रुचाभि गा इहि.. (९)

हे सोम! विद्वान् यजमान आप को निचोड़ते व छानते हैं. हमें अन्न रस प्राप्त कराने के लिए आप धारा के रूप में छनते हुए कलश में पधारिए. आप गौ आदि पशुओं को प्राप्त होइए. (९)

मन्द्रया सोम धारया वृषा पवस्य देवयुः. अव्या वारेभिरस्मयुः.. (१०)

हे सोम! आप इच्छा पूरी करने वाले व देवताओं द्वारा चाहे गए हैं. हम भी आप को चाहते हैं. बालों से बनी छलनी से छनिए. आप आनंददायी धारा का रूप धरिए व संरक्षण दीजिए. (१०)

अया सोम सुकृत्यया महान्त्सन्नभ्यवर्धथाः. मन्दान इद् वृषायसे.. (११)

हे सोम! आप महान, अपने अच्छे कार्यों के कारण सम्माननीय व आनंददाता हैं. आप बैल की तरह शक्ति देते हैं. (११)

अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः स चेतति. हिन्वान आप्यं बृहत्.. (१२)

हे सोम! आप विशेष बुद्धि देने वाले हैं. छान कर साफ बरतन में भरा जल मिला हुआ सोमरस बहुत आनंद व अन्न देता है. बहुत लोग इस के गुण गाते हैं. (१२)

प्र न इन्दो महे तु न ऊर्मिं न बिभ्रदर्षसि. अभि देवाँ अयास्यः.. (१३)

हे सोम! बहुत धन पाने के लिए हम मटकों में आप को छानते हैं. अयास्य ऋषि देव पूजन के लिए आप की लहरों को धारण करते हुए गाते हैं. (१३)

अपघ्नन्पवते मृधो ऽ प सोमो अराव्णः. गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्.. (१४)

हे सोम! आप शत्रु व धन न देने वालों के भी नाशक हैं. सोम इंद्र के पास जाने के लिए छनछन कर टपक रहे हैं. (१४)

पांचवां खंड

पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि.
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः.. (१)

हे सोम! आप पवित्र करने वाले व पानी के साथ मिल कर जलधार के रूप में आप मटकों में प्रवेश करते हैं. आप रत्न आदि कीमती धन देने वाले और यज्ञ मंडप में विराजमान होते हैं. आप प्रकाशमान, देवताओं का हित साधने वाले, सुंदर, चमकीले व बहने वाले हैं. (१)

परीतो षिञ्चता सुत ꣳ सोमो य उत्तम ꣳ हविः.
दधन्वाँ यो नर्यो अप्स्वा ३ न्तरा सुषाव सोममद्रिभिः.. (२)

हे सोम! आप देवताओं के लिए सर्वश्रेष्ठ हवि हैं. आप मनुष्यों का हित साधने वाले हैं. आप को पुरोहित पत्थरों के द्वारा निचोड़ते हैं. हे यजमानो! आप इस सोमरस में जल मिलाइए. (२)

आ सोम स्वानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया.
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दध्रिषे.. (३)

हे सोम! पत्थरों से कूट कर आप का रस निकाल लिया जाता है. उस के बाद भेड़ों के बालों से बनी छलनी से छाना जाता है. हरे रंग वाला सोमरस द्रोणकलश में ऐसे प्रवेश करता है, जैसे नगर में पुरुष. सोमरस लकड़ी के बरतनों में विराजमान रहता है. (३)

प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा.
अ ꣳ शोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम्.. (४)

हे सोम! देवताओं के पीने के लिए आप को सिंधु के समान जल के साथ मिलाया जाता

है. आप आनंददायी होने के साथसाथ चेतना जगाने वाले भी हैं. आप जल से मिल कर मीठा रस बरसाने वाले बरतन में विराजिए. (४)

सोम उ ष्वाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम्.
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया.. (५)

यजमान सोमरस निचोड़ते हैं. सोमरस भेड़ के बालों से बनी छलनी से छन कर नीचे कलश में गिरता है. यह हरा और आनंददायी है. यह धारा से मटकों में जाता है. (५)

तवाह ꣳ सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे.
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधी ꣳ रति तां इहि.. (६)

हे सोम! हम आप की मित्रता में हर दिन रमे रहें. कई दुष्ट राक्षस हमें कष्ट देते हैं. आप उन सब का नाश कीजिए. (६)

मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि.
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि.. (७)

हे सोम! आप को अच्छे हाथों की अच्छी अंगुलियों से निकाला गया है. आप पवित्र करने वाले हैं. आप कलश में जाते समय आवाज करते हैं. आप आराधकों को चाहा गया एवं पीला धन (स्वर्ण) देते हैं. (७)

अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम्.
समुद्रस्याधि विष्टपे मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः.. (८)

सोमरस वेगवान है. वह मन को भाने वाला है. सोमरस आनंददायी है. पानी से भरे मटकों में साफ कर के सोमरस डाला जाता है. (८)

पुनानः सोम जागृविरव्या वारैः परि प्रियः.
त्वं विप्रो अभवो ऽ ङ्गिरस्तम मध्वा यज्ञं मिमिक्ष णः.. (९)

हे सोम! आप जाग्रति देने वाले, प्रिय व पवित्र हैं. आप भेड़ के बालों से बनी छलनी में छन कर नीचे गिरते हैं. आप अंगिरस ऋषियों की परंपरा में सब से श्रेष्ठ हैं. आप बुद्धिवर्द्धक हैं. आप हमारे इस यज्ञ को पवित्र कीजिए. (९)

इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वते सुतः.
सहस्रधारो अत्यव्यमर्षति तमी मृजन्त्यायवः.. (१०)

सोमरस आनंददायी है. वह साफ छाना हुआ है. वह मरुतों से युक्त इंद्र के लिए तैयार किया जाता है. सोमरस अनेक धाराओं वाला है. यह छलनी में छन कर शुद्ध होता है. फिर यजमान मंत्रों से इसे और शुद्ध करते हैं. (१०)

पवस्व वाजसातमो ऽ भि विश्वानि वार्या.

त्व ꣳ समुद्रः प्रथमे विधर्मन् देवेभ्यः सोम मत्सरः.. (११)

हे सोम! आप को सब स्तोत्रों से पवित्र किया गया है. आप खासतौर पर अन्न, धन प्राप्त कराने वाले व देवताओं को आनंद देने वाले हैं. आप को उन्हीं के लिए खासतौर पर तैयार किया जाता है. (११)

पवमाना असृक्षत पवित्रमति धारया.
मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रिया हया मेधामभि प्रया ꣳ सि च.. (१२)

सोम मरुद्‌गणों से युक्त, आनंददायी, इंद्र के प्रिय व अन्नमय हैं. यज्ञ में काम आने वाला शुद्ध सोमरस पवित्र हो कर पात्र में गिरता है. (१२)

छठा खंड

प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष.
अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तो ऽ च्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति.. (१)

हे सोम! आप शीघ्र आइए. आप कलश में विराजिए. यजमान आप को पवित्र करते हैं. आप यजमान को अन्न व धन दीजिए. जैसे बलवान घोड़े की रस्सी अंगुली से पकड़ कर उस को शुद्ध किया जाता है, वैसे ही यजमान पवित्र कर के आप को यज्ञशाला तक पहुंचाते हैं. (१)

प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति.
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन्.. (२)

यजमान उशना ऋषि की तरह स्तोत्रों का पाठ करते हैं. वे देवताओं से संबंधित वृत्तांत बताते हैं. वे व्रती हैं. सोमरस प्रकाशमान व पवित्रकारी है. उत्तम सोमरस आवाज करते हुए कलश में छनता है. (२)

तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम्.
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः.. (३)

यजमान ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद के मंत्रों से सोम की स्तुति करते हैं. उन की स्तुति ज्ञानमय है. वह स्तुति यज्ञ को धारण करने वाली है. जैसे गायों के पास बैल जाते हैं, वैसे ही आराधक उत्तम सुख की इच्छा से सोम के पास स्तुति करने के लिए जाते हैं. (३)

अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम्.
सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् मितेव सद्म पशुमन्ति होता.. (४)

सोमरस सोने से शुद्ध किया गया है. यह दिव्य और पवित्र है. इसे देवताओं को चढ़ाया जाता है. निचोड़ा गया सोमरस वैसे ही पात्र में जाता है, जैसे ग्वाला गाय के बाड़े में जाता है. (४)

सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः.
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः.. (५)

सोमरस बुद्धिदायी, स्वर्गलोक को प्रकाशित करने वाला, पृथ्वी को पुष्ट करने वाला व आनंददायी है. वह अग्नि, इंद्र और विष्णु को आनंद देने वाला है. इसे पात्र में तैयार किया जाता है. (५)

अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामङ्गोषिणमवावशन्त वाणीः.
वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा दयते वार्याणि.. (६)

सोम तीन स्थानों— अंतरिक्ष, वनस्पति और शरीर में वास करने वाले हैं. वे शक्तिमान और अन्नदाता हैं. उपासक ऊंची वाणी से उन की स्तुति करते हैं. जल के देवता वरुण की तरह जल में मिलने वाले सोम उपासकों को धन देते हैं. (६)

अक्रांत्समुद्रः प्रथमे विधर्मं जनयन् प्रजा भुवनस्य गोपाः.
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः.. (७)

सोम जलमय हैं. वे यज्ञ के रक्षक, इच्छा पूरक और शक्तिवर्धक हैं. वे यजमानों को सब से ज्यादा उत्साह और उन्नति देने वाले हैं. (७)

कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः सीदन्वनस्य जठरे पुनानः.
नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजं गामतो मतिं जनयत स्वधाभिः.. (८)

यजमान सब ओर से दबा व कूट कर सोमरस निकालते हैं. वह हरा व पवित्र है. वह लकड़ी के बरतन में गिरता हुआ बारबार आवाज करता है. उसे गाय के दूध में मिलाया जाता है. इस से हवि बनाई जाती है. यजमान इस की स्तुति करते हैं. (८)

एष स्य ते मधुमाँ इन्द्र सोमो वृषा वृष्णः परि पवित्रे अक्षाः.
सहस्रदाः शतदा भूरिदावा शश्वत्तमं बर्हिरा वाज्यस्थात्.. (९)

हे इंद्र! आप का प्रिय सोमरस इच्छा पूरी करता है. आप के लिए यह मधुर शक्तिदायी सोमरस छन रहा है. यह सैकड़ों, हजारों प्रकार का धन देने वाला है. सोम प्राचीन काल से ही यज्ञ में जा कर विराजते हैं. (९)

पवस्व सोम मधुमाँ ऋतावापो वसानो अधि सानो अव्ये.
अव द्रोणानि घृतवन्ति रोह मदिन्तमो मत्सर इन्द्रपानः.. (१०)

हे सोम! आप मधुर, जल में मिलने वाले व ऊंचे स्थान पर विराजते हैं. आप छन कर पवित्र होते हैं. आप आनंददायी व इंद्र के लिए जल में मिल कर तैयार होते हैं. (१०)

सातवां खंड

प्र सेनानीः शूरो अग्ने रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना.
भद्रान् कृण्वन्निन्द्रहवांत्सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते.. (१)

हे सोम! आप सेनानायक व वीर हैं. आप यजमान के लिए गौ आदि धनों को देने की इच्छा रखते हैं. आप रथ के आगेआगे चलते हैं. आप को देख कर सेना का हौसला बढ़ता है. आप मित्रों और यजमानों के लिए इंद्र की प्रार्थनाओं को कल्याणकारी बनाते हैं. आप तेजस्वी हैं. (१)

प्र ते धारा मधुमतीरसृग्रन्वारं यत्पूतो अत्येष्यव्यम्.
पवमान पवसे धाम गोनां जनयंत्सूर्यमपिन्वो अर्कैः.. (२)

हे सोम! जब आप भेड़ों की ऊन को पार कर के छनते हुए कलश में जाते हैं तब आप की धाराएं आनंद बरसाती हैं. पवित्र हो कर आप तेजस्वी सूर्य देव की तरह चमकने लगते हैं. (२)

प्र गायताभ्यर्चाम देवान्त्सोम हिनोत महते धनाय.
स्वादुः पवतामति वारमव्यमा सीदतु कलशं देव इन्दुः.. (३)

हे यजमानो! हम सोम व अन्य देवताओं की स्तुति करें. हम बहुत धन पाने की इच्छा से अपनी स्तुतियों से सोम को प्रेरित करें. भेड़ के बालों से बनी छलनी से इस सोमरस को छानें. वह घड़ों में भरा रहे. (३)

प्र हिन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वाज सनिषन्नयासीत्.
इन्द्रं गच्छन्नायुधा स शिशानो विश्वा वसु हस्तयोरादधानः.. (४)

सोम स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को उत्पन्न करने वाले हैं. वे दोनों लोकों को गति देने वाले हैं. वे तेजी से इंद्र के पास जाते हैं. वे यजमानों को बहुत वैभव देने के लिए आते हैं. (४)

तक्षद्यदी मनसो वेनतो वाग् ज्येष्ठस्य धर्मं द्युक्षोरनीके.
आदीमायन्वरमा वावशाना जुष्टं पतिं कलशे गाव इन्दुम्.. (५)

स्तुति उन्नति की भावना लिए व विचारों से प्रेरित होती है. उपासकों की स्तुतियां यज्ञों में देवताओं का गुणगान करती हैं. इस प्रकार तैयार कर के सोमरस में गायों का दूध मिलाया जाता है. यह सोमरस सब के लिए बहुत पौष्टिक होता है. (५)

साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः.
हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी.. (६)

कर्मठ (काम करने वाली) अंगुलियां सोमरस को तैयार व उस को शुद्ध करती हैं. दसों अंगुलियां बलशाली सोम को धारण करती हैं. हरा सोमरस उसी तरह सभी दिशाओं में जाता है, जैसे गतिशील घोड़ा. वह घड़े में भरा रहता है. (६)

अधि यदस्मिन्वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूरे न विशः.
अपो वृणानः पवते कवीयान्व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म.. (७)

सोम को अपने किरण रूपी आभूषणों से सूर्य उसी तरह सजाते हैं, जिस तरह आभूषणों से घोड़े को सजाया जाता है. उसे निकालने में अंगुलियां एकदूसरे से होड़ करती हैं. जैसे ग्वाला गायों को पोसने के लिए गोशाला में ले जाता है, वैसे ही सोमरस को यजमान मटकों में ले जाते हैं. (७)

इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय.
हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं वरिवस्कृण्वन्वृजनस्य राजा.. (८)

सोमरस इंद्र का बल बढ़ाने वाला, यजमानों को धन देने वाला व शक्ति में राजा है. ज्यादा आनंद के लिए इसे छाना जाता है. यह दुष्टों का दलन करता है. यह राक्षसों और शत्रुओं का नाश करने वाला है. (८)

अया पवा पवस्वैना वसूनि माँ श्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व.
ब्रध्नश्चिद्यस्य वातो न जूतिं पुरुमेधाश्चित्तकवे नरं धात्.. (९)

हे सोम! आप की धाराएं पवित्र हैं. आप हमें धन प्रदान करने की कृपा करें. जिस प्रकार सूर्य सृष्टि के मूलाधार हैं, वे वायु को बहाते हैं वैसे ही आप वसतीवरी नामक घड़े में बहिए. बुद्धिशाली इंद्र आप को प्राप्त करें और हम अच्छी संतान प्राप्त करें. (९)

महत्तत्सोमो महिषश्चकारापां यद्गर्भो ऽ वृणीत देवान्.
अदधादिन्द्रे पवमान ओजो ऽ जनयत्सूर्ये ज्योतिरिन्दुः.. (१०)

सोम महान हैं. वे महान कार्य करने वाले हैं. वे गर्भ में जल धारण करते हैं. वे देवताओं को पालते हैं. वे इंद्र को बलशाली और सूर्य को तेजस्वी बनाते हैं. (१०)

असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ धिया मनोता प्रथमा मनीषा.
दश स्वसारो अधि सानो अव्ये मृजन्ति वह्नि सदनेष्वच्छ.. (११)

जिस प्रकार युद्धों में घोड़े भेजे जाते हैं, वैसे ही सोमरस में जल भेजा (मिलाया) जाता है. दसों अंगुलियां सोम को भेड़ के बालों से बनी छलनी में छानती हैं. यह सोम सभी को श्रेष्ठ धन प्रदान कराता है. (११)

अपामिवे दूर्म यस्तर्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोममच्छ.
नमस्यन्तीरुप च यन्ति सं चाच विशन्त्युशतीरुशन्तम्.. (१२)

तेजी से उठने वाली लहरों की तरह यजमान की स्तुतियां उठती हैं. यजमान जल्दी से जल्दी अपनी स्तुति देवता के पास पहुंचाना चाहते हैं. स्तुतियां देवता की प्रशंसा करती हैं, उन के पास पहुंचती हैं और उन्हीं में एकमेक हो जाती हैं. (१२)

आठवां खंड

पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे.
अप श्वान ꣳ श्नथिष्टन सस्नखायो दीर्घजिह्वयम्.. (१)

हे यजमानो! आप के आगे आनंददायी सोमरस रखा हुआ है. लंबीलंबी जीभ वाले कुत्ते इस के पास जाना चाहते हैं. आप उन कुत्तों को दूर भगाओ. (१)

अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति.
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे.. (२)

सोमरस पोषक, पीने योग्य व शोभादायी है. वह छन कर बरतन में गिरता है. वह सभी प्राणियों का पालनहार है. वह स्वर्गलोक तथा पृथ्वीलोक दोनों को अपने प्रकाश से प्रकाशित करता है. (२)

सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः.
पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गच्छन्तु वो मदाः.. (३)

इंद्र के लिए मीठा और मादक सोमरस तैयार किया जाता है. हे सोम! आप का यह आनंददायी रस देवताओं तक अवश्य पहुंचे. (३)

सोमाः पवन्त इन्दवो ऽ स्मभ्यं गातुवित्तमाः.
मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः.. (४)

सोम सभी रास्तों को भलीभांति जानने वाले हैं. वे मित्रों के समान हैं. सोम आत्मज्ञाता, मन को पाप रहित करने वाले व उस को एकाग्र करने वाले हैं. उस को हमारे लिए छाना जाता है. (४)

अभी नो वाजसातम ꣳ रयिमर्ष शतस्पृहम्.
इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभासहम्.. (५)

हे सोम! सैकड़ों लोग आप की प्रशंसा करते हैं. आप हजारों जीवों के पालनहार व बहुत अन्न, धन और प्रकाश वाले हैं. आप हमें बुद्धिशाली और बलशाली पुत्र प्रदान कीजिए. (५)

अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्.
वत्सं न पूर्व आयुनि जात ꣳ रिहन्ति मातरः.. (६)

गाएं जैसे बछड़ों को चाटती हैं, वैसे ही जल सोमरस में मिलते हैं. वे किसी प्रकार का विद्रोह नहीं करते. वे इंद्र को चाहने वाले सोमरस में मिल जाते हैं. (६)

आ हर्यताय धृष्णवे धनुष्टन्वन्ति पौ ꣳ स्यम्.

शुक्रा वि यन्त्यसुराय निर्णिजे विपामग्रे महीयुवः.. (७)

योद्धा जैसे धनुष पर डोरी चढ़ाते हैं, वैसे ही यजमान सोमरस को छानते हैं. सोम शत्रुओं को हराने वाले और पूजनीय हैं. गाय का दूध मिला कर सोमरस को और श्रेष्ठ बनाया जाता है. (७)

परि त्य हर्यत हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण.
यो देवान्विश्वाँ इत्परि मदेन सह गच्छति.. (८)

सोमरस हराभरा और सुंदर है. उसे भेड़ के बालों से बनी छलनी से छाना जाता है. यह आनंददायी गुणों वाला है. यह अपने इन्हीं गुणों के साथ इंद्र और अन्य देवों के पास जाता है. (८)

प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद्वचः.
अप श्वानमराधस हता मखं न भृगवः.. (९)

छाने जाने के समय सोम के वचन (ध्वनि को) विघ्न पैदा कर के संतोष पाने वाले लोग न सुनें. भृगु नामक ऋषि ने जैसे मख नामक राक्षस को यज्ञ स्थल से दूर हटा दिया था, वैसे ही यजमान यज्ञ स्थल के पास आने के इच्छुक कुत्तों को हटा दें. (९)

नौवां खंड

अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते.
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वञ्चमरुहद्विचक्षणः.. (१)

हे सोम! आप दिव्य दृष्टि वाले हैं. सूर्य का रथ सब जगह जा सकता है. आप उस रथ पर विराजमान होते हैं और सारे संसार को देखते हैं. आप प्रिय जल में मिलते हैं एवं अन्नों को बढ़ाते हैं. आप व्यापक होते हुए बहते हैं. (१)

अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः प्र स्वानासो बृहद्देवेषु हरयः.
वि चिदश्नाना इषयो अरातयो ऽ र्यो नः सन्तु सनिषन्तु नो धियः.. (२)

हे सोम! आप दूसरों से प्रेरित नहीं होते. आप का रस हरा है. आप को विधिवत निचोड़ा जाता है. आप हमारे यज्ञ में पधारिए. आप यज्ञ और यजमान के दुश्मन तथा दान न देने वाले लोगों को अन्न की इच्छा होने पर भी अन्न, धन मत दीजिए. हमारी प्रार्थनाएं जिनजिन देवताओं के लिए हैं, वे उनउन देवताओं तक पहुंचें. (२)

एष प्र कोशे मधुमाँ अचिक्रददिन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टमः.
अभ्यृ ३ तस्य सुदुघा घृतश्चुतो वाश्रा अर्षन्ति पयसा च धेनवः.. (३)

हे सोम! आप का रस इंद्र के वज्र की भांति बहुत ही बलवान और मीठा है. यह रस ध्वनि करता हुआ द्रोणकलश में प्रवेश करे. सोमरस की धाराएं फलों को मधुर बनाने वाली,

जल बरसाने वाली व दुधारू गायों के समान आवाज करने वाली हैं. (३)

प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृत सखा सख्युर्न प्र मिनाति सङ्गिरम्.
मर्य इव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयामना पथा.. (४)

यह सोमरस इंद्र के पेट में पहुंचता है. मित्र की तरह सोम इंद्र को किसी भी प्रकार का कोई कष्ट नहीं देते. युवक जैसे युवतियों के साथ घुलमिल कर रहता है, वैसे ही सोमरस जल के साथ घुलमिल कर रहता है. वह छलनी के अनेक छेदों से छनछन कर मटके में जाता है. (४)

धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः.
हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजा सि कृणुषे नदीष्वा.. (५)

सोमरस सब को धारण कर सकता है. यह कर्म करने वाला और देवताओं की शक्ति बढ़ाने वाला है. यह छनछन कर घड़े में प्रवेश करता है. शक्तिशाली यजमान इस को निचोड़ते हैं. यह शक्तिशाली घोड़े की तरह वेग से नदियों के जल में स्वयं को मिला लेता है. (५)

वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः.
प्राणा सिन्धूनाँ कलशाँ अचिक्रददिन्द्रस्य हार्द्याविशन्मनीषिभिः.. (६)

सोम सब की इच्छा पूरी करने वाले, विशेष कृपा दृष्टि रखने वाले, उषा और सूर्य की शक्ति बढ़ाने वाले हैं. विद्वान् यजमान इसे छानते हैं. नदियों का जल मिला कर इसे तैयार किया गया है. इंद्र के पेट में पहुंचने के लिए यह शब्द करता हुआ घड़े में प्रवेश करता है. (६)

त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रिरे सत्यामाशिरं परमे व्योमनि.
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत.. (७)

सोम श्रेष्ठ यज्ञ में निवास करने वाले हैं. इन के लिए इक्कीस गाएं नियमित रूप से शुद्ध दूध देती हैं. चारों लोकों के जल, शुद्ध दूध होने के लिए कल्याणकारी रूप से बहते हैं. (७)

इन्द्राय सोम सुषुतः परि स्रवापामीवा भवतु रक्षसा सह.
मा ते रसस्य मत्सत द्वयाविनो द्रविणस्वन्त इह सन्त्विन्दवः.. (८)

हे सोम! भलीभांति आप का रस निकाला जाता है. आप को इंद्र के लिए तैयार किया गया है. रोग और राक्षस आप के पास न फटकें. जो पापी लोग झूठा और सच्चा दोनों तरह का व्यवहार करते हैं, उन पर आप की कृपा न हो. आप हमें इस यज्ञ में धन प्रदान कीजिए. (८)

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्.
पुनानो वारमत्येष्यव्यय श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदत्.. (९)

सोमरस प्रकाशमान, शक्तिवर्द्धक और हरा है. वह राजा के समान सुंदर और देखने

योग्य है. गाय का दूध मिलाने और छानने के समय यह आवाज करता है. भेड़ों के बालों से बनी छलनी से छान कर इसे साफ किया जाता है. यह जलमय है. श्येन पक्षी के समान यह घड़े में स्थित रहता है. (९)

प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दवो ऽ सिष्यदन्त गाव आ न धेनवः.
बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः परिस्रुतमुस्रिया निर्णिजं धिरे.. (१०)

सोमरस मीठा है. इसे देवताओं के लिए तैयार किया जाता है. दुधारू गाएं जैसे अपने बछड़ों के पास जाती हैं, वैसे ही सोमरस कलश में जाता है. यज्ञ मंडप में गाएं इंद्र के लिए अपने स्तनों से टपकने वाले दूध में सोमरस धारण करती हैं. (१०)

अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुꣳ रिहन्ति मध्वाभ्यञ्जते.
सिन्धोरुछ्वासे पतयन्तमुक्षणꣳ हिरण्यपावाः पशुमप्सु गृभ्णते.. (११)

यजमान सोमरस में गाय के दूध को एकमेक कर के मिलाते हैं. देवतागण सोमरस का आनंद लेते हैं. यजमान इस सोमरस में गाय का घी और शहद मिलाते हैं. नदी के जल में रहने वाले सोम को सोने से शुद्ध कर के चमकाया जाता है. (११)

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः.
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तः सं तदाशत.. (१२)

हे सोम! आप ज्ञान के स्वामी हैं. आप अपने पवित्र अंगों से सर्वव्यापक व सामर्थ्यवान हैं. आप पीने वाले को बल (स्फूर्ति) देते हैं. जिस ने तप, व्रत आदि से अपने को नहीं तपाया, उस पर आप कृपा नहीं करते. तपाने या परिपक्व होने के बाद ही उपासक यजमान पर आप की कृपा होती है. (१२)

दसवां खंड

इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः. श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः.. (१)

सोमरस बहुत जल्दी तैयार किया गया है. यह ज्ञान की बढ़ोतरी करने वाला और हरा है. यह शीघ्र ही इच्छा पूर्ण करने वाले शक्तिमान इंद्र के पास पहुंचे. (१)

प्र धन्वा सोम जागृविरिन्द्रायेन्दो परि स्रव. द्युमन्तꣳ शुष्ममा भर स्वर्विदम्.. (२)

हे सोम! आप उत्साह और फुर्ती देने वाले हैं. आप इंद्र के पीने के लिए इस कलश में प्रवेश कीजिए. आप हमें प्रकाशवान और ज्ञानवान बनाइए. (२)

सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत. शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये.. (३)

हे यजमानो! आप हमारे मित्र हैं. आप आइए व बैठिए. आप सोम को छानते समय की जाने वाली स्तुति गाइए. जैसे बच्चे को आभूषणों से सजाया जाता है, वैसे ही आप हवि और

यज्ञ के अन्य साधनों से सोम को सजाइए. (३)

तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत. शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः.. (४)

हे मित्र यजमानो! आप प्रसन्नता बढ़ाने के लिए सोम की स्तुति कीजिए. आप छानते हुए सोम की स्तुति कीजिए. आप बालक को सजाने की तरह हवियों से इन्हें सजाइए. (४)

प्राणा शिशुर्महीना ꣳ हिन्वन्नृतस्य दीधितिम्. विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता.. (५)

सोम आदरणीय जल के पुत्र हैं. ये यज्ञ को प्रकाशित और परिपूर्ण करने वाले हैं. इन का रस सभी हवियों में रहता है. ये स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक दोनों में रहते हैं. (५)

पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा. आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः.. (६)

हे सोम! देवताओं के पीने के लिए आप जल्दी से धाराधार हो कर छनिए. आप मदकारी हैं. आप हमारे कलश में विराजिए. (६)

सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं वि धावति. अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत्.. (७)

सोमरस पवित्र और छना हुआ है. छनने में आवाज करता हुआ वह भेड़ के बालों से बनी छलनी से छनता जाता है. (७)

प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उच्यते. भृतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते.. (८)

पवित्र तथा कर्म करने वाले सोम के लिए प्रार्थनाएं की जाती हैं. सेवक की सेवा से जैसे हम प्रसन्न हो जाते हैं, वैसे ही विशेष प्रार्थनाओं से हम उन को प्रसन्न करें. (८)

गोमन्न इन्दो अश्ववत्सुतः सुदक्ष धनिव. शुचिं च वर्णमधि गोषु धारय.. (९)

हे सोम! आप शक्तिमान हैं. रस निचोड़ने के बाद आप हमें गोधन और अश्व धन दीजिए, फिर गाय के दूध में मिल कर आप सफेद रंग वाले हो जाइए. हम सब तरह से आप की स्तुति करते हैं. (९)

अस्मभ्यं त्वा वसुविदमभि वाणीरनूषत. गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि.. (१०)

हे सोम! आप धनदाता हैं. हमें धन दीजिए. हम आप की स्तुति करते हैं. हम आप के रस को गोरस में मिलाते हैं. (१०)

पवते हर्यतो हरिरति ह्वरा ꣳ सि र ꣳ ह्या. अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः.. (११)

हे सोम! आप मनोहर व हरे रंग के हैं. आप छनते जाइए. न छनने वाले भाग को छलनी में रहने दीजिए. आप हम उपासकों को यशस्वी पुत्र दीजिए. (११)

परि कोशं मधुश्चुत ꣳ सोमः पुनानो अर्षति.
अभि वाणीर्ऋषीणा ꣳ सप्ता नूषत.. (१२)

पवित्र सोमरस छनछन कर घड़े में टपकता और अपना मीठा रस द्रोणकलश में पहुंचाता है. सात छंदों (पदों) वाली ऋषियों की वाणी सोम की स्तुति करती है. (१२)

ग्यारहवां खंड

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः. महि द्युक्षतमो मदः.. (१)

हे सोम! आप अत्यंत मधुर हैं. आप यज्ञ के बारे में सब कुछ जानने वाले हैं. आप सर्वोत्तम, प्रकाशमान व तेजस्वी हैं. आप इंद्र को आनंद देने के लिए पवित्र होइए. (१)

अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुम्. वि कोशं मध्यमं युव.. (२)

हे सोम! आप अन्न के स्वामी, प्रकाशमान, स्तुति व देवताओं के पीने (पाने) योग्य हैं. आप हमें यश और बल दीजिए. आप द्रोणकलशों को लबालब भर दीजिए. (२)

आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुर ꣳ रजस्तुरम्. वनप्रक्षमुदप्रुतम्.. (३)

हे यजमानो! सोम घोड़े जैसे वेगवान व स्तुति करने योग्य हैं. वे पानी की तरह प्रवहमान (बहने वाले) हैं तथा प्रकाश की किरणों की तरह कहीं भी शीघ्र पहुंचने वाले हैं. आप सोमरस को निचोड़िए और उसी में जल मिलाइए. उस के बाद उसे गो दूध से सींचिए. (३)

एतमु त्यं मदच्युत ꣳ सहस्रधारं वृषभं दिवोदुहम्. विश्वा वसूनि बिभ्रतम्.. (४)

सोमरस प्रसन्नतादायी है, कई धाराओं से द्रोणकलश में झरता है, शक्ति बढ़ाने वाला है तथा सभी धनों का स्वामी है. विद्वान् यजमान सोमरस निचोड़ते हैं. (४)

स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इडानाम्. सोमो यः सुक्षितीनाम्.. (५)

सोम धन, दूध आदि रस व शक्ति के स्वामी हैं. ये श्रेष्ठ संतान देने वाले हैं. यजमान श्रेष्ठ सोमरस निचोड़ते हैं. (५)

त्वं ह्या ३ ङ्ग दैव्यं पवमान जनिमानि द्युमत्तमः अमृतत्वाय घोषयन्.. (६)

हे सोम! आप पवित्र, पूजनीय व प्रकाशवान हैं. आप देवताओं के बारे में सब कुछ जानते हैं. आप उन की अमरता की घोषणा करते हैं. आप यजमान से उन की स्तुति कराते हैं. (६)

एष स्य धारया सुतो ऽ व्या वारेभिः पवते मदिन्तमः. क्रीळन्नूर्मिरपामिव.. (७)

सोम अत्यंत आनंददायी हैं. ये जल की लहरों की तरह खेलतेकूदते हैं. सोमरस को भेड़ के बालों से बनी छलनी से कलश में धार बना कर छाना जाता है. (७)

य उस्रिया अपि या अन्तरश्मनि निर्गा अकृन्तदोजसा.
अभि व्रजं तत्निषे गव्यमश्व्यं वर्मीव धृष्णवा रुज.. (८)

सोम बादलों में जल को छिन्नभिन्न करते हैं. वे बादल फैलाने वाले और जल को धारण करने वाले हैं. वे राक्षसों द्वारा हरे गए गायों और घोड़ों को घेर लेते हैं. वे शत्रुनाशक हैं. कवचधारी वीर के समान सोम शत्रुओं को मार देते हैं. (८)

आरण्यक पर्व

छठा अध्याय

पहला खंड

इन्द्र ज्येष्ठं न आ भर ओजिष्ठं पुपुरि श्रवः.
यद्दिधृक्षेम वज्रहस्त रोदसी उभे सुशिप्र पप्राः.. (१)

हे इंद्र! आप वज्रपाणि (हाथ में वज्र धारण करने वाले) हैं. आप सुंदर ठुड्डी वाले हैं. आप हमें यश और बलदायी अन्न प्रदान कीजिए. आप हमें स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक दोनों को पुष्ट बनाने वाला धन प्रदान कीजिए. (१)

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधि क्षमा विश्वरूपं यदस्य.
ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद्राध उपस्तुतं चिदर्वाक्.. (२)

इंद्र चराचर व पृथ्वी की सभी वस्तुओं और धनों के स्वामी हैं. वे दानदाता को सब प्रकार का धन देते हैं. अच्छी तरह स्तुति किए जाने पर वे पर्याप्त धन देते हैं. (२)

यस्येदमा रजोयुजस्तुजे जने वन स्वः. इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत्.. (३)

तेजस्वी इंद्र का दान दानियों और स्वर्ग दोनों में प्रशंसनीय है. इंद्र का दान श्रेष्ठ और संतोष देने वाला है. (३)

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यम श्रथाय.
अथादित्य व्रते वयं तवानागसो अदितये स्याम.. (४)

हे वरुण! आप ऊपर और नीचे की ओर के बंधनों को हम से दूर कीजिए. आप हमारे सारे बंधनों को शिथिल कीजिए. जिस से हम आप के विधिविधान के अनुसार चल कर पाप और कष्ट रहित जीवन जी सकें. (४)

त्वया वयं पवमानेन सोम भरे कृतं वि चिनुयाम शश्वत्.
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः.. (५)

हे सोम! आप जग को पवित्र करने वाले हैं. आप की मदद से हम युद्ध में अपना कर्तव्य भलीभांति निबाह सकें. अदिति, मित्र, वरुण, पृथ्वी, सिंधु देवता तथा स्वर्गलोक हमें यशस्वी बनाने की कृपा करें. (५)

इमं वृषणं कृणुतैकमिन्माम्.. (६)

हे देवताओ! आप इस सोम को बलवान बनाइए, ताकि वे हमारी मनोकामनाएं पूरी कर सकें. हमें बलवान बना सकें. (६)

स न इन्द्राय यज्यवे मरुद्भयः वरिवोवित्परिस्रव.. (७)

हे सोम! आप धनदाता व पूजनीय हैं. आप इंद्र, मरुद्गण और वरुण के लिए धारा के रूप में टपकिए. (७)

एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम्. सिषासन्तो वनामहे.. (८)

सोम की कृपा से मनुष्यों के लिए चाहे गए सभी प्रकार के धन हमें प्राप्त हों. हम उन धनों के श्रेष्ठ उपयोग की इच्छा रखते हैं. (८)

अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाम.
यो मा ददाति स इदेवमावदहमन्नमन्नमदन्तमद्मि.. (९)

मैं (अन्न) सभी देवताओं से पहले उत्पन्न हुआ हूं. मैं विनाशरहित हूं. जो व्यक्ति अच्छे पात्र को मेरा दान करता है, वह सब का कल्याण करता है. जो किसी को दान नहीं करता है, अकेला ही अन्न खाता है, उसे मैं समाप्त कर देता हूं. (९)

दूसरा खंड

त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च. परुष्णीषु रुशत्पयः.. (१)

हे इंद्र! काली, लाल और अनेक रंग वाली गायों में (सब में) आप ने एक जैसा चमचमाता सफेद दूध स्थापित किया है. हम आप के इस आश्चर्यजनक सामर्थ्य की प्रशंसा करते हैं. (१)

अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः.
मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमादधुः.. (२)

उषा के संबंधी सूर्य खास हैं. वे स्वयं प्रकाशमान और सब को प्रकाशित करने वाले हैं. वे ही जल बरसाने वाले मेघ का रूप भी हैं. वे ही आकाश में गर्जना करते हैं. बुद्धिमान देवताओं ने बुद्धि से इस जग को रचा. मनुष्यों को देखने वाले पितरों ने माता के पेट (गर्भ) में इसे स्थापित किया. (२)

इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा. इन्द्रो वज्री हिरण्ययः.. (३)

इंद्र के संकेत (इशारे) मात्र से घोड़े एक साथ रथ में जुत जाते हैं. इंद्र वज्रधारी व आभूषणधारी हैं. (३)

इन्द्र वाजेषु नो ऽ व सहस्रप्रधनेषु च. उग्र उग्राभिरूतिभिः.. (४)

हे इंद्र! आप अत्यंत बलवान हैं. आप को कोई नहीं हरा सकता. आप छोटे और बड़े सभी प्रकार के युद्धों में हमारी रक्षा कीजिए. (४)

प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नामानुष्टुभस्य हविषो हविर्यत्.
धातुर्द्युतानात्सवितुश्च विष्णो रथन्तरमा जभारा वसिष्ठः.. (५)

वसिष्ठ के पुत्र प्रथ एवं भरद्वाज के पुत्र सप्रथ के लिए अनुष्टुप् छंद में स्तुति करते हैं. उन के लिए श्रेष्ठ हवि समर्पित करते हैं. वसिष्ठ ऋषि ने रथंतर नामक सोम को धाता और सब को उत्पन्न करने वाले विष्णु से प्राप्त किया. (५)

नियुत्वान्वायवा गह्यय शुक्रो अयामिते. गन्तासि सुन्वतो गृहम्.. (६)

हे वायु! आप अपने वाहन से पधारिए. आप के लिए चमकता हुआ सोमरस तैयार किया गया है. आप विधिविधान से सोमरस तैयार करने वाले यजमान के घर पधारते हैं. आप हमारे यहां पधारिए. (६)

यज्जायथा अपूर्व्य मघवन्वृत्रहयाय. तत्पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्ना उतो दिवम्.. (७)

हे इंद्र! आप अत्यंत वैभवशाली व अपूर्व हैं. वृत्रासुर के नाश के समय आप ने पृथ्वी को दृढ़ और विस्तृत किया. स्वर्गलोक को भी भलीभांति स्थिर किया. आप की सामर्थ्य अद्भुत है. (७)

तीसरा खंड

मयि वर्चो अथो यशो ऽ थो यज्ञस्य यत्पयः.
परमेष्ठी प्रजापतिर्दिवि द्यामिव दृ हतु.. (१)

प्रजाओं का पालन करने वाले प्रजापति स्वर्गलोक में निवास करते हैं. वे हमें आत्मज्ञान व यश देने की कृपा करें. वे हमें यज्ञ से संबंध रखने वाली उत्तम हवि और अन्न सामग्री प्रदान करने की कृपा करें. (१)

सं ते पया सि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः.
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवा स्युत्तमानि धिष्व.. (२)

हे सोम! आप शत्रुनाशक हैं. आप हवि के लिए निर्धारित दुग्ध सामग्री प्राप्त कीजिए. अमरता पाने के लिए आप स्वर्गलोक में श्रेष्ठ अन्न और श्रेष्ठ बल को प्राप्त कीजिए. (२)

त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः.
त्वमातनोरुर्वा ३ न्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ.. (३)

हे सोम! आप ने पृथ्वीलोक में मौजूद सारी ओषधियों को उत्पन्न किया है. आप ने जल

को उत्पन्न किया है. आप ने गायों को उत्पन्न किया है. आप ने आकाश को फैलाया है. आप ने अंधकार को दूर किया है. (३)

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्. होतार ꣳ रत्नधातमम्.. (४)

हम यजमान संसार का कल्याण करने की इच्छा रखते हैं. हम अग्नि की स्तुति करते हैं. वे यज्ञ में देवताओं के दूत हैं. हम यज्ञ में अग्नि प्रज्वलित करते हैं. वे हमें सुख और ऐश्वर्य प्रदान करते हैं. (४)

ते मन्वत प्रथमं नाम गोनां त्रिः सप्त परमं नाम जानन्.
ता जानतीरभ्यनूषत क्षा आविर्भुवत्ररुणीर्यशसा गावः.. (५)

ऋषियों ने सब से पहले यह जाना कि वाणी के शब्द पूजनीय हैं. उस के बाद उन्होंने सात के तिगुने यानी इक्कीस छन्दों में स्तोत्र होते हैं, यह ज्ञान प्राप्त किया. उस के बाद वाणी से उषा की स्तुति की. उस के बाद सूर्य के तेज के साथ ही प्रकाशमान अन्य स्तुतियां (वाणियां) उत्पन्न हुईं. (५)

समन्या यन्त्युपयन्त्यन्याः समानमूर्वं नद्यस्पृणन्ति.
तमू शुचि ꣳ शुचयो दीदिवा ꣳ समपात्रपातमुप यन्त्यापः.. (६)

बरसात का पानी जमीन पर गिर कर जमीन के पानी के साथ मिल जाता है. ये दोनों पानी नदी का रूप धारण कर लेते हैं और समुद्र में मिल जाते हैं. वहां ये पानी समुद्री अग्नि को आनंद देते हैं. इसी प्रकार सोमरस पानी में मिल कर आनंदित करता है. (६)

आ प्रागाद्भद्रा युवतिरह्नः केतून्त्समीर्त्सति.
अभूद्भद्रा निवेशनी विश्वस्य जगतो रात्री.. (७)

सूर्य की किरणों को समेटने वाली रात्रि रूपी स्त्री आ गई है. यह सारे संसार को आराम देने वाली है. यह सारे संसार का कल्याण चाहने वाली है. (७)

प्रक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू महः प्र नो वचो विदथा जातवेदसे.
वैश्वानराय मतिर्नव्यसे शुचिः सोम इव पवते चारुरग्नये.. (८)

अग्नि सर्वत्र व्याप्त व प्रकाशमान हैं. हम उन की स्तुति करते हैं. हम यज्ञ में उन के लिए स्तोत्र गाते हैं. वे सभी मनुष्यों का हित करने वाले हैं. उन के पास स्तोत्र वैसे ही जाते हैं, जैसे यज्ञ में सोम जाते हैं. (८)

विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञमुभे रोदसी अपां नपाच्च मन्म.
मा वो वचा ꣳ सि परिचक्ष्याणि वोच ꣳ सुम्नेष्विद्वो अन्तमा मदेम.. (९)

सभी देवगण हमारे पूजनीय स्तोत्रों को सुनने की कृपा करें. स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक दोनों हमारे स्तोत्रों को सुनने की कृपा करें. अग्नि हमारे स्तोत्र सुनें. हम कभी भी अप्रिय और

त्याज्य वाणी न बोलें. हम देवताओं की कृपा में रहें. उन के द्वारा दिए गए सुख से सुखी रहें. (९)

यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्रबृहस्पती.
यशो भगस्य विन्दतु यशो मा प्रतिमुच्यताम्.
यशसा ३ स्याः स सदो ऽ हं प्रवहिता स्याम्.. (१०)

हम यजमानों को स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक का यश प्राप्त हो. हमें इंद्र और बृहस्पति का यश भी प्राप्त हो. सूर्य का यश मुझे मिले. यह यश कभी हम से मुंह न मोड़े. इस सभा में मुझे यश मिले. इस में मैं विचार व्यक्त करने की अच्छी क्षमता (देवताओं की कृपा से) पा जाऊं. (१०)

इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्रवोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री.
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत्पर्वतानाम्.. (११)

इंद्र वज्रधारी और शक्तिशाली हैं. वे बादलों को भेद कर बरसात करने वाले हैं. उन्होंने नदियों के तट बना कर पर्वतों से जल बहाया. मैं उन के इन अच्छे कामों का बारबार वर्णन करता हूं. (११)

अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन्.
त्रिधातुरर्को रजसो विमानो ऽ जस्रं ज्योतिर्हविरस्मि सर्वम्.. (१२)

मैं (आत्मा) जन्म से ही अग्नि स्वरूप हूं. सब कुछ जानने वाला हूं, प्रकाशमान हूं. मुंह में अमरता देने वाली वाणी है. मैं प्राण, अपान, व्यान इन तीनों प्रकार का प्राण हूं, आकाश को नापने वाला वायु हूं, प्रकाशमान सूर्य हूं, सभी की हवि हूं. (१२)

पात्यग्निर्विपो अग्रं पदं वेः पाति यह्वश्चरण सूर्यस्य.
पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः पाति देवानामुपमादमृष्वः.. (१३)

अग्नि देव सर्वव्यापक हैं. वे पृथ्वी के मुख्य स्थानों की रक्षा करते हैं. वे महान हैं. वे सूर्य के मार्ग व अंतरिक्ष की रक्षा करते हैं. वे अंतरिक्षलोक में मरुद्गणों व देवताओं को प्रिय लगने वाले यज्ञ की रक्षा करते हैं. वे सुंदर तथा दर्शनीय हैं. (१३)

चौथा खंड

भ्राजन्त्यग्ने समिधान दीदिवो जिह्वा चरत्यन्तरासनि.
स त्वं नो अग्ने पयसा वसुविद्रयिं वर्चो दृशे ऽ दाः.. (१)

हे अग्नि! आप चमचमाते हैं. आप का मुख प्रकाशित है. उस मुख में जीभ अग्नि की ज्वाला में डाली गई हवि खाती है. आप धन देने वाले हैं. आप अन्न व रमणीय धन दीजिए. (१)

वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः.
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः.. (२)

वसंत ऋतु लुभावनी है. ग्रीष्म ऋतु लुभावनी है. वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर ऋतुएं भी लुभावनी हैं. (२)

सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्.
स भूमि ꣳ सर्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्.. (३)

पूर्ण पुरुष हजारों सिरों वाला है. वह हजारों आंखों वाला है, हजारों पैरों वाला है. वह सारे ब्रह्मांड को घेर सकने में समर्थ है. फिर भी वह बाकी रहता है. (३)

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादो ऽ स्येहाभवत्पुनः.
तथा विष्वङ् व्यक्रामदशनानशने अभि.. (४)

पूर्ण पुरुष तीन पैरों वाला है. वह ऊंचे स्थान पर वास करता है. इस पूर्ण पुरुष से ही सारा संसार पैदा होता है. चेतन और अचेतन सभी में इसी पूर्ण पुरुष का विस्तार है. यह विविध स्वरूपों वाला है. यह सर्वत्र व्याप्त है. (४)

पुरुष एवेद ꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्.
पादो ऽ स्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि.. (५)

भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों का कर्ता पूर्ण पुरुष ही है. इस के तीन पैर अमर स्वर्गलोक में हैं. इस के शेष चौथे चरण में सारे प्राणी हैं. (५)

तावानस्य महिमा ततो ज्यायाँ श्च पूरुषः. उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति.. (६)

पूर्ण पुरुष जड़चेतन और समस्त पृथ्वी से भी विस्तृत (बड़ा) है. वह अमरता का स्वामी है. अन्न से बढ़ने वाले प्राणियों का भी स्वामी है. (६)

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः.
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः.. (७)

उस पुरुष से विराट् (ब्रह्मांड) पुरुष उत्पन्न हुआ. उस से अन्य पुरुष उत्पन्न हुए. उस के बाद उस ने पशुपक्षियों और अन्य जीवों को उत्पन्न किया. (७)

मन्ये वां द्यावापृथिवी सुभोजसौ ये अप्रथेथाममितमभि योजनम्.
द्यावापृथिवी भवत ꣳ स्योने ते नो मुञ्चतम ꣳ हसः.. (८)

हे स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक! आप हमारे पालनहार हैं. हम आप को इसी रूप में जानते हैं. आप हमारा अपार वैभव बढ़ाइए. हे स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक के देवता! आप हमें सुख दीजिए. आप हमें पापों से दूर कीजिए. (८)

हरी त इन्द्र श्मश्रूण्युतो ते हरितौ हरी.

तं त्वा स्तुवन्ति कवयः परुषासो वनर्गवः.. (९)

हे इंद्र! आप की दाढ़ीमूंछें हरी हैं. आप के घोड़े भी हरे हैं. आप श्रेष्ठ गोपालक हैं. विद्वान् कविजन आप की स्तुति करते हैं. (९)

यद्वर्चो हिरण्यस्य यद्वा वर्चो गवामुत.
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा स सृजामसि.. (१०)

स्वर्ण, गाय और सत्यज्ञान में जो तेजस्विता है, हम उस तेजस्विता को अपने में धारण करना (पाना) चाहते हैं. (१०)

सहस्तन्न इन्द्र दद्ध्योज ईशे ह्यस्य महतो विरप्शिन्.
क्रतुं न नृम्ण स्थविरं च वाजं वृत्रेषु शत्रून्त्सहना कृधी नः.. (११)

हे इंद्र! आप शत्रु का नाश करने वाले हैं. आप हमें बल प्रदान कीजिए क्योंकि आप महान बल के स्वामी हैं. आप हमारे यज्ञ की स्थिति जैसा धन और सामर्थ्य हमें दीजिए. आप हमें ऐसी शक्ति दीजिए, जिस से हम संग्रामों में अपने दुश्मनों को हरा सकें. (११)

सहर्षभाः सहवत्सा उदेत विश्वा रूपाणि बिभ्रतीद्व्यूध्नीः.
उरुः पृथुरयं वो अस्तु लोक इमा आपः सुप्रपाणा इह स्त.. (१२)

कई रंगों वाली, बड़ेबड़े थनों (स्तनों) वाली गौएं, बछड़ों और बैलों के साथ हमें प्राप्त हों. यह पृथ्वीलोक महान व विशाल है. यह आप के निवास योग्य है. आप को यहां सुख से पीने योग्य जल प्राप्त हो. (१२)

पांचवां खंड

अग्न आयू षि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः. आरे बाधस्व दुच्छुनाम्.. (१)

हे अग्नि! आप हमारे अन्नों की आयु बढ़ाने की कृपा कीजिए. आप हमारी आयु बढ़ाइए. हमारे बल की आयु बढ़ाइए. आप दुष्टों को हम से दूर कीजिए. (१)

विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्.
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पिपर्ति बहुधा वि राजति.. (२)

सूर्य बहुत प्रकाशमान हैं. वे खूब सोमरस पीएं. वे यजमानों को निष्कंटक रखें. उन्हें दीर्घायु करें. वायु सूर्य की किरणों को दूरदूर तक पहुंचाते हैं. उन से वे प्रजा का पालन करते हैं. अनेक प्रकार से प्रकाशित होने में समर्थ होते हैं. (२)

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः.
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च.. (३)

सूर्य देवताओं के दिव्य तेज का समूह हैं. वे मित्र, वरुण तथा अग्नि के नेत्र हैं. सूर्य के

उगते ही स्वर्गलोक, पृथ्वीलोक और अंतरिक्षलोक आदि सभी उन के प्रकाश से जगमगा जाते हैं. (३)

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः. पितरं च प्रयन्त्स्वः.. (४)

सूर्य गतिशील व तेजस्वी हैं. वे उदित हो कर ऊपर स्थित हो जाते हैं. सब से पहले वे पृथ्वीलोक (माता), फिर स्वर्गलोक (पिता) फिर अंतरिक्षलोक को प्राप्त होते हैं. (४)

अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती. व्यख्यन्महिषो दिवम्.. (५)

सूर्य का प्रकाश अपनी किरणों से आकाश में घूमता है. सूर्य के उगने पर ये किरणें दिखती हैं और अस्त होने पर गायब हो जाती हैं. सूर्य अंतरिक्षलोक को विशेष रूप से प्रकाशित करते हैं. (५)

त्रि ꣳ शद्धाम वि राजति वाक्पतङ्गाय धीयते. प्रति वस्तोरह द्युभिः.. (६)

दिन की तीस घड़ियों तक सूर्य अपनी किरणों से प्रकाशित होते हैं. इन सूर्य के लिए हर एक मुख वेदवाणी उचारता है (स्तुति करता है). (६)

अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः. सूराय विश्वचक्षसे.. (७)

दिन में जैसे चोर छिप जाते हैं, वैसे ही सूर्य के उगने पर ग्रह, नक्षत्र, तारागण आदि छिप जाते हैं. (७)

अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ अनु. भ्राजन्तो अग्नयो यथा.. (८)

जैसे हम जलती हुई अग्नि की ज्वाला देख सकते हैं, वैसे ही सूर्य की प्रकाशित किरणों को हम देख सकते हैं. वे सब को देख सकती हैं. (८)

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य. विश्वमाभासि रोचनम्.. (९)

हे सूर्य! आप सब को पार लगाने वाले हैं. आप सारे संसार को देख सकते हैं. आप सब को प्रकाशित कर सकते हैं. चंद्रमा, ग्रह, नक्षत्र आदि को आप ही चमकाते हैं. (९)

प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषान्. प्रत्यङ् विश्व ꣳ स्वर्दृशे.. (१०)

हे सूर्य! आप मरुद्गणों के देखते हुए उन के सामने उदित होते हैं. आप मनुष्यों के देखते हुए उदित होते हैं. आप सभी के देखते हुए यानी सब के सामने प्रकट होते हैं. (१०)

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु. त्वं वरुण पश्यसि.. (११)

हे सूर्य! आप सभी को पवित्र व प्रकाशित करने वाले हैं. आप जिस प्रकाश से सब को प्रकाशित करते हैं हम उस की उपासना करते हैं. (११)

उद्द्यामेषि रजः पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः. पश्यञ्जन्मानि सूर्य.. (१२)

हे सूर्य! आप देहधारियों को प्रकाशित करते हैं. आप दिन को रात्रि से नापते हैं. आप स्वर्गलोक और अंतरिक्षलोक को भी अपने प्रकाश से प्रकाशित कर देते हैं. (१२)

अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्र्यः. ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः.. (१३)

सूर्य ने रथ में घोड़े जोत रखे हैं. वे सातों घोड़े शुद्धकारी हैं. किरण रूपी घोड़ों से सूर्य सर्वत्र जाते हैं. (१३)

सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य. शोचिष्केशं विचक्षण.. (१४)

हे सूर्य! आप प्रकाशित करने वाले हैं. सात किरण रूपी घोड़े आप के रथ को ले जाते हैं. ये किरणें शुद्ध करने वाली हैं. (१४)

उत्तरार्चिक

पहला अध्याय

पहला खंड

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे. अभि देवाँ इयक्षते.. (१)

हे यजमानो! आप देवताओं के लिए यज्ञ करना चाहते हैं. आप छान कर साफ किए गए सोमरस की स्तुति कीजिए. (१)

अभि ते मधुना पयो ऽ थर्वाणो अशिश्रयुः. देवं देवाय देवयु.. (२)

सोमरस दिव्य है. यह देवताओं को प्रिय है. इसे देवताओं ने देवताओं के लिए खोजा है. अथर्वा ऋषियों ने गाय का दूध मिला कर इसे यजमान के लिए तैयार किया है. (२)

स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते. श ꣳ राजन्नोषधीभ्यः.. (३)

हे सोम! आप हितकारी हैं. आप हमारी गौओं को सुख दीजिए. आप हमारे पुत्रपौत्रों (आने वाली पीढ़ियों) व घोड़ों को सुख दीजिए. आप ओषधियों को हमारे लिए कल्याणकारी बनाइए. (३)

दविद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा. सोमाः शुक्रा गवाशिरः.. (४)

सोमरस बहुत चमकीला है. इस की धारा सब ओर टपकती हुई आवाज करती है. साफ निथारे हुए सोमरस को गाय के दूध में मिलाया जाता है. (४)

हिन्वानो हेतृभिर्हित आ वाजं वाज्यक्रमीत्. सीदन्तो वनुषो यथा.. (५)

जैसे युद्धों में शूरवीर की प्रशंसा होती है व उसे प्रतिष्ठा मिलती है, वैसे ही यज्ञ में सोमरस की यजमान प्रशंसा करते हैं व यज्ञ भूमि में सोम को प्रतिष्ठा मिलती है. (५)

ऋधक्सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवा कवे. पवस्व सूर्यो दृशे.. (६)

हे सोम! आप बुद्धिमान व परमवीर हैं. आप सूर्य की भांति ऊपर चढ़ दिव्य प्रकाशमय हो कर सब का कल्याण कीजिए. (६)

पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा असृक्षत. अर्वन्तो न श्रवस्यवः.. (७)

हे सोम! आप शक्तिवर्धक हैं. छानते समय आप की धार ऐसी गतिशील होती है, जैसे

अस्तबल से निकलते समय घोड़े गतिशील होते हैं. (७)

अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे अव्यये. अवावशन्त धीतयः.. (८)

मधुर रस से भरे द्रोणकलश में भेड़ के बालों से बनी छलनी से यजमान सोमरस को छानछान कर तैयार करते हैं. यजमान की अंगुलियां बारबार उस सोमरस को शुद्ध करना चाहती हैं. (८)

अच्छा समुद्रमिन्दवो ऽ स्तं गावो न धेनवः. अग्मन्नृतस्य योनिमा.. (९)

मनुष्यों को अपने दूध से तृप्त करने वाली दुधारू गाएं जैसे अपने बाड़े में जाती हैं, वैसे ही छान कर घड़े में भरे हुए सोम यज्ञ स्थल में जाते हैं. (९)

दूसरा खंड

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये. नि होता सत्सि बर्हिषि.. (१)

हे अग्नि! हम आप की स्तुति करते हैं. देवताओं को हवि पहुंचाने के लिए हम आप का आह्वान करते हैं. आप यज्ञ में कुश के आसन पर विराजिए. (१)

तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि. बृहच्छोचा यविष्ठ्य.. (२)

हे अग्नि! आप सुंदर व तरुण (युवा) हैं. हम समिधा और घी से आप को प्रज्वलित करते हैं. आप प्रज्वलित होइए. (२)

स नः पृथु श्रवाय्यमच्छा देव विवाससि. बृहदग्ने सुवीर्यम्.. (३)

हे अग्नि! आप हमें यश और यशदायी क्षमता दोनों ही प्रदान कीजिए. लोग उस यश के बारे में सुनने (जानने) के लिए इच्छुक रहें. (३)

आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्. मध्वा रजा ꣳ सि सुक्रतू.. (४)

हे मित्र और वरुण! आप श्रेष्ठ कर्म करने वाले हैं. आप हमारे गौ स्थानों को घी, दूध से सींचने की कृपा कीजिए. आप हमारे लिए परलोक के निवास स्थानों को भी श्रेष्ठ, मधुर रसों से सींचने की कृपा कीजिए. (४)

उरुश ꣳ सा नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः. द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता.. (५)

हे मित्रावरुण! आप पवित्र कार्य करने वाले हैं. आप अनेक लोगों से प्रशंसित हैं. हवि के अन्न से आप बढ़ते हैं. आप अपनी शक्ति से सुशोभित होते हैं. (५)

गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम्. पात ꣳ सोममृतावृधा.. (६)

हे मित्रावरुण! जमदग्नि ऋषि आप की स्तुति करते हैं. आप यज्ञ स्थान में पधारिए, विराजिए. आप हमारे द्वारा तैयार किए गए सोमरस को ग्रहण कीजिए. आप हमारे यज्ञ के

कर्मफल को बढ़ाने की कृपा कीजिए. (६)

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्. इदं बर्हिः सदो मम.. (७)

हे इंद्र! आप हमारे यज्ञ में पधारिए. हम ने आप के लिए स्वच्छ सोमरस तैयार किया है. आप इस सोमरस को पीजिए. आप इस कुश के आसन पर विराजमान होइए. (७)

आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना. उप ब्रह्माणि नः शृणु.. (८)

हे इंद्र! आप के केश वाले मनोहर घोड़े मंत्र सुनते ही वाहन में जुत जाते हैं. आप के घोड़े आप को यज्ञ में लाने का कष्ट करें. आप हमारे पास यज्ञ में पधार कर भलीभांति हमारी प्रार्थनाओं को सुनने की कृपा कीजिए. (८)

ब्रह्माणस्त्वा युजा वय ꣳ सोमपामिन्द्र सोमिनः. सुतावन्तो हवामहे.. (९)

हे इंद्र! यजमान सोमयज्ञ (कर्ता) करने वाले हैं. सोमरस तैयार करने वाले यजमान ब्राह्मण हैं. हम आप के योग्य प्रार्थनाओं से सोमरस पीने वाले आप को आमंत्रित करते हैं. (९)

इन्द्राग्नी आ गत ꣳ सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्. अस्य पातं धियेषिता.. (१०)

हे अग्नि! हे इंद्र! सोमरस को हम ने अपनी स्तुतियों से पवित्र बनाया है. सोम स्वर्ग से आए हैं. इन्होंने हमारे भक्ति भाव को स्वीकार किया है. आप इस सोमरस को स्वीकार करने की कृपा कीजिए. (१०)

इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः. अया पातमिम ꣳ सुतम्.. (११)

हे अग्नि! हे इंद्र! आप यजमान पर कृपा कीजिए. आप उन की मदद कीजिए. सोमरस चेतनादायी है. उस से हम यज्ञ करते हैं. आप उस सोमरस को ग्रहण करने की कृपा कीजिए. (११)

इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे. ता सोमस्येह तृम्पताम्.. (१२)

हे अग्नि! हे इंद्र! सोम यज्ञ के प्रमुख साधन हैं. हम उन की प्रेरणा से प्रेरित होते हैं. आप दोनों देवता यजमान के लिए उपयुक्त फलदाता हैं. आप सोमरस पी कर तृप्त होइए और हमें यज्ञफल प्रदान करने की कृपा कीजिए. (१२)

तीसरा खंड

उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे. उग्र ꣳ शर्म महि श्रवः.. (१)

हे सोम! स्वर्गलोक में आप ने जन्म पाया है. आप शक्तिवर्द्धक, सुखदायी व यशदायी हैं. यजमान भूमिलोक पर अन्न के रूप में आप को प्राप्त करते हैं. (१)

स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः. वरिवोवित्परि स्रव.. (२)

हे सोम! आप धनदाता हैं. आप इंद्र, वरुण और मरुद्गण के लिए प्रवाहित होने की कृपा कीजिए. (२)

एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम्. सिषासन्तो वनामहे.. (३)

हे सोम! आप की कृपा से हम ने मनुष्य को प्राप्त होने योग्य सब सुख (वैभव) पाया है. फिर भी हम सेवा भावना से आप की स्तुति करते हैं. (३)

पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि.
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः.. (४)

हे सोम! आप सोने की तरह चमकते हैं. आप यज्ञ स्थान में विराजिए. पानी मिला कर छाने जाने पर धारा रूप में आप कलश में पधारते हैं. आप धन देने वाले हैं. (४)

दुहान ऊधर्दिव्यं मधु प्रियं प्रत्न ं३ सधस्थमासदत्.
आपृच्छ्यं धरुणं वाज्यर्षसि नृभिर्धौतो विचक्षणः.. (५)

यजमानों ने सोमरस छाना है. यह मधुर और आनंददायी है. यह अपने प्राचीन स्थान पर पहुंचता है. हे सोम! आप खास निरीक्षण करने वाले हैं. जो यजमान अच्छा यज्ञ करने की भावना रखते हैं, आप उस यजमान पर अपनी कृपा दृष्टि रखते हैं. (५)

प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष.
अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्ता ऽ च्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति.. (६)

हे सोम! आप जल्दी हमारे यज्ञ में पधारिए. आप जल्दी कलश में स्थापित हो जाइए. यजमान आप को छानते हैं. छन कर आप हवि के रूप में हवि अन्न को प्राप्त कीजिए. शक्तिमान घोड़ों को शुद्ध करने की तरह यजमान आप को शुद्ध करते हैं. लगाम पकड़ कर घोड़े को जैसे ले जाया जाता है, वैसे ही अंगुलियों से यजमान आप को यज्ञ स्थान तक ले जाते हैं. (६)

स्वायुधः पवते देव इन्दुशस्तिहा वृजना रक्षमाणः.
पिता देवानां जनिता सुदक्षो विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः.. (७)

हे सोम! आप उत्तम कोटि के अस्त्रशस्त्र वाले शत्रुनाशक, संरक्षक, उपद्रव दूर करने वाले, पालक, संरक्षक, देवताओं को उत्पन्न करने वाले हैं तथा पृथ्वीलोक को धारण करते हैं. आप स्वर्गलोक को विशेष आधार देते हैं. ऐसा दिव्य सोमरस यजमान छानते हैं. (७)

ऋषिर्विप्रः पुर एता जनानामृभुर्धीर उशना काव्येन.
स चिद्विवेद निहितं यदासामपीच्यां ३ गुह्यं नाम गोनाम्.. (८)

उशना ऋषि विद्वान्, परमज्ञानी, वैदिक कर्मकांड में दक्ष, धीर, प्रकाशमान और नेतृत्व

करने वाले हैं. उन्हीं उशना ऋषि ने स्तोत्रों के माध्यम से गायों में गुप्त रूप से रहने वाले सोम रस को मेहनत से प्राप्त किया. (८)

चौथा खंड

अभि त्वा शूर नोनुमो ऽ दुग्धा इव धेनवः.
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः.. (१)

हे इंद्र! आप शक्तिमान, सर्वज्ञाता व जगत् के स्वामी हैं. जैसे बिना दुही हुई गाएं रंभाती हुई अपने बछड़ों की ओर भागती हैं, वैसे ही हम आप के दर्शन और कृपा के लिए लालायित हैं. (१)

न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते.
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे.. (२)

हे इंद्र! आप धनवान हैं. आप जैसा न कोई स्वर्गलोक और न इस पृथ्वीलोक में हुआ है और न होगा. हम गोधन व धनधान्य के लिए आप की स्तुति करते हैं. (२)

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा. कया शचिष्ठया वृता.. (३)

इंद्र सदैव बढ़ने वाले हैं. वे विलक्षण, अत्यंत शक्तिमान व हमारे सखा हैं. हम किस बुद्धि और किन संतुष्टिदायी पदार्थों से आप की उपासना करें? किनकिन शक्तियों से आप हमारे सहयोगी होंगे? (३)

कस्त्वा सत्यो मदानां म हिष्ठो मत्सदन्धसः. दृढा चिदारुजे वसु.. (४)

सोम आदरणीय व सत्यनिष्ठों के लिए आनंददायी हैं. उन्हें आनंद देने में वे सब से आगे हैं. सोम बलवान शत्रुओं के धन को नष्ट करने के लिए इंद्र को उत्साह और सामर्थ्य प्रदान करते हैं. (४)

अभी षु णः सखीनामविता जरितृणाम्. शतं भवास्यूतये.. (५)

हे इंद्र! आप हमारे मित्र व यजमानों के संरक्षक हैं. आप हमारी सैकड़ों प्रकार से रक्षा करने के लिए अच्छी तैयारी कर लीजिए. (५)

तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः.
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे.. (६)

गोशाला में गाएं जैसे बछड़ों के लिए लालायित हो कर रंभाती हैं, वैसे ही हम इंद्र की स्तुति के लिए लालायित हो कर प्रार्थना करते हैं. वे शत्रुओं से रक्षा करते हैं. वे प्रकाशमान व सोमरस से संतुष्ट होने वाले हैं. (६)

द्युक्ष सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरु भोजसम्.

क्षुमन्तं वाज ꣳ शतिन ꣳ सहस्रिणं मक्षू गोमनतमीमहे.. (७)

हे इंद्र! आप स्वर्गलोकवासी हैं. आप उत्तम दान के दाता, बहुत क्षमतावान व पालनहार हैं. हम सैकड़ोंहजारों की संख्या में गोधन आप से चाहते हैं. हम प्रचुर अन्न, धन आप से चाहते हैं. (७)

तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्र ꣳ सबाध ऊतये.
बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम्.. (८)

बच्चे अपनी सहायता के लिए जैसे अपने भरणपोषण करने वालों को पुकारते हैं, वैसे ही हम यजमान अपनी सहायता के लिए इंद्र को पुकारते हैं. इंद्र वेगवान घोड़ों वाले व वैभवशाली हैं. हे याजको! आप सोमयज्ञ में अपनी रक्षा के लिए बृहत्साम का गायन करते हुए उन की उपासना कीजिए. (८)

न यं दुध्रा वरन्ते न स्थिरा मुरो मदेषु शिप्रमन्धसः.
आदृत्या शशमानाय सुन्वते दाता जरित्र उक्थ्यम्.. (९)

इंद्र सुंदर ठुड्डी वाले हैं. शक्तिशाली राक्षस व मरणधर्मा मनुष्य (कितने ही शक्तिशाली हों) भी उन्हें नहीं हरा सकते. वे सोमरस के आनंद में सोम यज्ञ करने वालों को प्रचुर यशदायी धन देते हैं. हम मन से उन की स्तुति करते हैं. (९)

पांचवां खंड

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया. इन्द्राय पातवे सुतः.. (१)

इंद्र के पीने के लिए स्वादिष्ट और मीठा सोमरस तैयार किया गया है. वह सोमरस अपनी पूर्ण मददायी धाराओं से इंद्र के लिए झरे. (१)

रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते. द्रोणे सधस्थमासदत्.. (२)

सोम राक्षसनाशक हैं. जगद्रष्टा हैं. वे सोने के द्रोणकलश में विराजमान हो कर यज्ञस्थल में प्रतिष्ठित हो गए. (२)

वरिवोधातमो भुवो म ꣳ हिष्ठो वृत्रहन्तमः. पर्षि राधो मघोनाम्.. (३)

हे सोम! आप धनदाता हैं. आप शत्रुओं के प्रबल नाशक हैं. आप धनवान शत्रुओं के पास मौजूद रहने वाले धन हमें प्रदान कीजिए. (३)

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः. महि द्युक्षतमो मदः.. (४)

हे सोम! आप अत्यंत मधुर हैं. आप यजमान को कर्मों का फल देते हैं. आप प्रकाशमान व तृप्तिदायी हैं. आप इंद्र के लिए पात्र में छन कर तैयार हो जाइए. (४)

यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायते ऽ स्य पीत्वा स्वर्विदः.
स सुप्रकेतो अभ्यक्रमीदिषो ऽ च्छा वाजं नैतशः.. (५)

हे सोम! आप बहुत शक्तिमान हैं. आप को पी कर इंद्र और शक्तिमान हो जाते हैं. आप को पी कर बुद्धिमान भी प्रसन्न होते हैं. आप के प्रभाव से इंद्र युद्धों में घोड़े की तरह शत्रुओं के धनों को शीघ्र ही अपने अधीन कर लेते हैं. (५)

इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः. श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः.. (६)

सोमरस चमकीला और हरा है. वह बहुत जल्दी छन कर पात्र में पहुंच गया है. वह जल्दी से जल्दी इंद्र को प्राप्त हो. (६)

अयं भराय सानसिरिन्द्राय पवते सुतः. सोमो जैत्रस्य चेतति यथा विदे.. (७)

सभी लोगों को यह पता है कि सोमरस सेवन करने योग्य है. इसे छान कर तैयार किया गया है. इसे इंद्र के लिए मटकों में भरा गया है. सोमरस जीतने की इच्छा रखने वाले इंद्र को युद्धों में बहुत जोश देता है. (७)

अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं गृभ्णाति सानसिम्. वज्रं च वृषणं भरत्समप्सुजित्.. (८)

सेवन करने योग्य सोम को पी कर और प्रसन्न हो कर इंद्र धनुष धारण करते हैं. जल प्रवाह को जीतने वाले इंद्र वज्र को धारण करते हैं. (८)

पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे.
अप श्वान श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्वयम्.. (९)

हे यजमानो! निस्संदेह यह सोमरस जीत दिलाने वाला है. यह आप पूरी तरह मान लीजिए. यह प्रसन्नतादायी है. आप इस की ओर लपकने वाले लंबीलंबी जीभ वाले कुत्तों (राक्षसों) को इस से दूर भगाइए. (९)

यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः. इन्दुरश्वो न कृत्वयः.. (१०)

यज्ञ में सोमरस यजमान का सहायक है. यह पारदर्शी धाराओं से घोड़े की तरह वेगवान हो कर कलश में जाता है. (१०)

तं दुरोषमभी नरः सोमं विश्वाच्या धिया. यज्ञाय सन्त्वद्रयः.. (११)

हे यजमानो! सोम दुष्टों का विनाश करने वाले हैं. आप उन को आमंत्रित कीजिए. आप यज्ञ का आदर करते हुए सब के कल्याण की भावना व्यक्त कीजिए. (११)

अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते.
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वञ्चमरुहद्विचक्षणः.. (१२)

हे सोम! आप कल्याणकारी, अन्न स्वरूप व संसार को तृप्ति देने वाले हैं. आप जल को

सब तरह से पवित्र करने वाले हैं. अंतरिक्षलोक के जल में सोम ज्यादा बढ़ते हैं. सोम सर्वद्रष्टा हैं. ये सूर्य के सब ओर जा सकने में समर्थ रथ पर चढ़ते हैं. (१२)

ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः.
दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यां ३ नाम तृतीयमधि रोचनं दिवः.. (१३)

सोम तो जैसे यज्ञ की जीभ ही हैं. सोमरस छनते समय आवाज करता है. यह मीठा और प्रिय रस वाला है. सोम यज्ञ संबंधी क्रियाकलापों को जानने वाले व निर्भय हैं. वे अपने मातापिता का नाम नहीं जानते. ये यजमान द्वारा तैयार किए जाते हैं. ये स्वर्गलोक को चमचमाने वाले हैं. ये छन कर तैयार हो जाने पर सोमजयी नामक तीसरे नाम को ग्रहण करते हैं. (१३)

अव द्युतानः कलशाँ अचिक्रदन्नृभिर्येमाणः कोश आ हिरण्यये.
अभी ऋतस्य दोहना अनूषताधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजसि.. (१४)

यजमान सोने के कलश में सोमरस को छानते हैं. कलश में जाते समय सोमरस आवाज करता है. इस सोमरस की यजमान उपासना करते हैं. सोमरस सुबह, दोपहर और शाम—इन तीनों सवनों (संध्याओं) में प्रकाशित होता है. (१४)

छठा खंड

यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे.
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न श ꣳ सिषम्.. (१)

हे यजमानो! आप उपासना करने वाले हैं. आप को हर यज्ञ में प्रज्वलित हो कर बढ़ने वाले अग्नि की वाणी से स्तुति करनी चाहिए. अग्नि अमर, ज्ञानी व हमारे मित्र हैं. हम उन की उपासना करते हैं. (१)

ऊर्जो नपात ꣳ स हिनायमस्मयुर्दाशेम हव्यदातये.
भुवद्वाजेष्वविता भुवद्वृध उत त्राता तनूनाम्.. (२)

अग्नि लगातार अन्न और शक्तिदाता हैं. वे हमारा कल्याण चाहते हैं. हम देवताओं तक हवि पहुंचाने के लिए अग्नि देवता को हवि प्रदान करते हैं. वे युद्धों में हमारे रक्षक और हमारे लिए प्रगतिकारी हैं. वे हमारे पुत्रों के भी रक्षक होने की कृपा करें. हम उन की उपासना करते हैं. (२)

एह्यू षु ब्रवाणि ते ऽ ग्न इत्थेतरा गिरः. एभिर्वर्धास इन्दुभिः.. (३)

हे अग्नि! आप आइए. हम आप के लिए विधिविधान से स्तोत्र उचारते हैं. आप हमारी और दूसरों की स्तुतियों को सुनिए. सोमरस आप को बढ़ोतरी प्रदान करें. (३)

यत्र क्व च ते मनो दक्षं दधस उत्तरम्. तत्र योनिं कृणवसे.. (४)

हे अग्नि! आप का मन जहां कहीं भी, जिस पर भी है, आप उसे श्रेष्ठ बल और श्रेष्ठ आवास प्रदान करने की कृपा करें. (४)

न हि ते पूर्तमक्षिपद्वन्नेमानां पते. अथा दुवो वनवसे.. (५)

हे अग्नि! आप नियम आदि की रक्षा करने वाले, उन का पालन करने वाले यजमान की रक्षा करते हो. उन का पालन करते हो. आप हमारी सेवा को स्वीकार कीजिए. आप का तेज हमारी आंखों को किसी भी प्रकार की हानि न पहुंचाए. (५)

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तो ऽ वस्यवः. वज्रिं चित्र हवामहे.. (६)

हे इंद्र! आप अपूर्व, वज्र धारण करने वाले, विलक्षण व सर्वोत्तम हैं. हम आप को सोमरस चढ़ाना चाहते हैं. हम आप से रक्षा का अनुरोध करते हैं. हम आप को उसी तरह पुकारते हैं, जैसे निर्बल व्यक्ति अपनी सहायता के लिए सबल को पुकारता है. (६)

उप त्वा कर्मन्नूतये स नो युवोग्रश्चक्राम यो धृषत्.
त्वामिध्यवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम्.. (७)

हे इंद्र! हम यज्ञ में अपनी रक्षा के लिए आप की शरण लेते हैं. आप शत्रुनाशक व युवा हैं. आप हमारे पास आइए. हमारी मित्रता स्वीकारिए. आप के बारे में प्रसिद्ध है कि आप सेवा करने योग्य हैं. सब की रक्षा करते हैं. (७)

अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे. उदेव ग्मन्त उदभिः.. (८)

हे इंद्र! आप उपासना करने योग्य हैं. हम आप से उसी प्रकार अपनी इच्छा पूर्ति की प्रार्थना करते हैं, जैसे पानी ले जाने वाले मनुष्य उस से अपनी इच्छानुसार खेलते हैं. (८)

वार्ण त्वा यव्याभिर्वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि. वावृध्वा सं चिदद्रिवो दिवेदिवे.. (९)

हे इंद्र! आप वज्रधारी व वीर हैं. नदियां जैसे समुद्र तक पहुंच कर उसे बढ़ाती हैं, उसी प्रकार हमारी स्तुतियां आप तक पहुंच कर आप के यश को और बढ़ाती हैं. (९)

युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथयोरौ रथ उरुयुगे वचोयुजा. इन्द्रवाहा स्वर्विदा.. (१०)

इंद्र गतिशील हैं. उन के घोड़े उन के बड़े जुए वाले बड़े रथ में कहने मात्र से ही जुत जाते हैं. ये घोड़े गंतव्य स्थान को भी स्वयं ही जानने वाले हैं. ये यजमान की स्तुति सुनते ही निर्धारित जगह के लिए चल पड़ते हैं. (१०)

दूसरा अध्याय

पहला खंड

पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत.
विश्वासाह ꣳ शतक्रतुं म ꣳ हिष्ठं चर्षणीनाम्.. (१)

हे यजमानो! आप इंद्र की स्तुति कीजिए. वे आप के द्वारा चढ़ाए गए सोमरूपी अन्न को पीने वाले तथा शत्रुओं का नाश करने वाले हैं. वे सैकड़ों प्रकार के कर्म करने वाले व मनुष्यों को धन देने वाले हैं. (१)

पुरुहूतं पुरुष्टुतं गाथान्या ३ ꣳ सनश्रुतम्. इन्द्र इति ब्रवीतन.. (२)

हे यजमानो! आप इंद्र की उपासना कीजिए. वे बहुत प्रसिद्ध हैं. वे यज्ञ में अनेक लोगों द्वारा बुलाए जाते हैं. अनेक लोगों द्वारा उन की उपासना की जाती है. (२)

इन्द्र इन्नो महोनां दाता वाजानां नृतुः. महाँ अभिज्ञ्वा यमत्.. (३)

हे यजमानो! इंद्र अन्न और धन देने वाले हैं. वे महान देव हैं. वे हमारे सामने प्रकट हो कर हमें अन्नधन आदि देने की कृपा करें. (३)

प्र व इन्द्राय मादन ꣳ हर्यश्वाय गायत. सखायः सोमपाव्ने.. (४)

हे यजमानो! इंद्र हरि नाम के घोड़े वाले हैं. वे सोमरस पीने वाले हैं. आप उन इंद्र के लिए मादक स्तोत्र गाइए. (४)

श ꣳ सेदुक्थ ꣳ सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः. यकृमा सत्यराधसे.. (५)

हे यजमानो! इंद्र श्रेष्ठ धनदाता और सत्यरूपी धन वाले हैं. हम विधिविधान सहित इंद्र की स्तुति करते हैं. आप भी उन की स्तुति कीजिए. (५)

त्वं इन इन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युः शतक्रतो. त्व ꣳ हिरण्ययुर्वसो.. (६)

हे इंद्र! आप सैकड़ों प्रकार के कर्म करने वाले हैं. आप हमें अन्न, गाएं व सोना दीजिए. (६)

वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः. कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते.. (७)

हे इंद्र! हम आप को अपना बनाना चाहते हैं. हम मित्र भाव से आप की उपासना करते

हैं. हम कण्वगोत्र के हैं. हमारी संतान भी आप की स्तुति करती है. (७)

न घेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ. तवेदु स्तोमैश्चिकेत.. (८)

हे इंद्र! आप वज्र धारण करने वाले हैं. यज्ञ अनुष्ठान में आप के स्तोत्र के अलावा हम और कोई स्तोत्र नहीं पढ़ेंगे. हम आप के ही स्तोत्रों से स्तुति करना जानते हैं. (८)

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति. यन्ति प्रमादमतन्द्राः.. (९)

सोमयज्ञ करने वालों पर देवगण की कृपा रहती है. केवल सपने देखने वालों से वे प्रेम नहीं करते हैं. परिश्रम करने वाले ही आनंददायी सोम को प्राप्त कर सकते हैं. (९)

इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः. अर्कमर्चन्तु कारवः.. (१०)

हे यजमानो! आप सराहनीय सोमरस की उपासना कीजिए. वे उपासना के योग्य हैं. इंद्र सोमरस को चाहते हैं. हमारी वाणी को छाने हुए सोमरस की स्तुति करनी चाहिए. (१०)

यस्मिन्विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त स ꣳ सदः. इन्द्र ꣳ सुते हवामहे.. (११)

इंद्र सारी शोभाओं से शोभित हैं. यज्ञ में सात पुरोहित इंद्र को हवि देने के लिए अनेक मंत्र पढ़ते हैं. हम सोमयज्ञ में उन इंद्र को आमंत्रित करते हैं. (११)

त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत. तमिद्वर्धन्तु नो गिरः.. (१२)

यज्ञ उत्साहवर्द्धक है. सभी देव यज्ञ के तीन दिनों में यज्ञ की बढ़ोतरी करते हैं. हमारी स्तुति और वाणियां भी उस यज्ञ की बढ़ोतरी करें. (१२)

दूसरा खंड

अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि. एहीमस्य द्रवा पिब.. (१)

हे इंद्र! हम ने आप के लिए छान कर सोमरस तैयार किया है. यज्ञ की वेदी पर बिछे हुए कुश के आसन पर उसे प्रतिष्ठित किया है. आप जल्दी ही उस के निकट पधारिए. उस सोमरस को पीने की कृपा कीजिए. (१)

शाचिगो शचिपूजनाय ꣳ रणाय ते सुतः. आखण्डल प्र हूयसे.. (२)

हे इंद्र! आप सामर्थ्यवान व प्रकाशमान किरणों वाले हैं. आप शक्तिमान, पूजनीय और शत्रुओं का मानमर्दन करने वाले हैं. हम ने आप की तृप्ति के लिए यह सोमरस तैयार किया है. आप पधारिए. इस सोमरस को ग्रहण कीजिए. (२)

यस्ते शृङ्गवृषो णपात्प्रणपात्कुण्डपाय्यः. न्यस्मिन् दध्र आ मनः.. (३)

हे इंद्र! शृंगवृष ऋषि के पुत्र सूर्य को आप ने धुरी पर स्थापित किया है. कुंडपायी यज्ञ, जिस में कुंडियों से सोमरस पिया जाता है, में मन लगाने की कृपा कीजिए. (३)

आ तू न इन्द्र क्षमन्तं चित्रं ग्राभ ꣳ सं गृभाय. महाहस्ती दक्षिणेन.. (४)

हे इंद्र! आप बड़ेबड़े हाथों वाले हैं. आप दाएं हाथ में हमारे लिए यशस्वी, विलक्षण और उपयुक्त धन धारण कीजिए. आप हमें उस धन को प्रदान करने की कृपा कीजिए. (४)

विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम्. तुविमात्रमवोभिः.. (५)

हे इंद्र! आप बहुत शक्तिमान व बहुत देने योग्य संपत्ति वाले हैं. आप बहुत धनवान व विशाल आकृति वाले हैं. हम जानते हैं कि आप के पास संरक्षण के बहुत सारे साधन हैं. (५)

न हि त्वा शूर देवा न मर्तासो दित्सन्तम्. भीमं न गां वारयन्ते.. (६)

हे इंद्र! आप पराक्रमी हैं. आप दाता हैं. जैसे भारी भरकम भयंकर बैल को कोई नहीं हटा सकता है, वैसे ही क्या देव, क्या मनुष्य कोई भी आप को नहीं डिगा सकता. (६)

अभि त्वा वृषभा सुते सुत ꣳ सृजामि पीतये. तृम्पा व्यश्नुही मदम्.. (७)

हे इंद्र! आप बलशाली हैं. हम आप के पीने के लिए अच्छी तरह छान कर सोमरस तैयार करते हैं. आप उस मदमस्त बना देने वाले सोमरस को पी कर तृप्त होइए. (७)

मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन्. मा कीं ब्रह्मद्विषं वनः.. (८)

हे इंद्र! आप ब्राह्मणों से द्वेष रखने वालों की सेवा स्वीकार मत कीजिए. मूर्ख मनुष्य व दूसरों की हंसी उड़ाने वालों पर अपनी कृपा मत कीजिए. ये लोग आप पर किसी तरह अपना प्रभाव न जमा पाएं. (८)

इह त्वा गोपरीणसं महे मन्दन्तु राधसे. सरो गौरो यथा पिब.. (९)

हे इंद्र! यजमान आप से बहुत धन पाना चाहते हैं. वे गाय के दूध में मिले सोमरस से आप को तृप्त करना चाहते हैं. हिरण जैसे तालाब में जल पीता है, वैसे ही आप इस यज्ञ में (पधार कर) सोमरस पीजिए. (९)

इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम्. अनाभयिन्नरिमा ते.. (१०)

हे इंद्र! आप सर्वव्यापक हैं. आप पेट भर कर इस सोमरस को पीजिए. हम आप जैसे निर्भय को सोमरस समर्पित करते हैं. (१०)

नृभिर्धौतः सुतो अश्नैरव्या वारैः परिपूतः. अश्वो न निक्तो नदीषु.. (११)

हे इंद्र! नदी के पानी में धो कर जैसे घोड़े को साफ करते हैं, वैसे ही पानी में पत्थरों से कूट कर इस सोमरस को साफ किया है. पत्थरों से कूट कर इस का रस निचोड़ा है. भेड़ के बालों की छलनी से छानछान कर इसे साफ किया है. (११)

तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुमकर्म श्रीणन्तः. इन्द्र त्वास्मिन्त्सधमादे.. (१२)

हे इंद्र! जौ से जिस प्रकार पुरोडाश (भोग) बनाया जाता है, उसी प्रकार सोम रस में गाय का दूध मिला कर उसे हम ने तैयार किया है. वह सोमरस स्वादिष्ट है. हम उसी सोमरस को पीने के लिए यज्ञ में आप को आमंत्रित करते हैं. (१२)

तीसरा खंड

इद ह्यन्वोजसा सुत राधानां पते. पिबा त्वा ३ स्य गिर्वणः.. (१)

हे इंद्र! आप धनपति, उपासना के योग्य व बलशाली हैं. आप नियमपूर्वक संस्कार किए गए इस सोमरस को शीघ्र ग्रहण कीजिए. (१)

यस्ते अनु स्वधामसत्सुते नि यच्छ तन्वम्. स त्वा ममत्तु सोम्य.. (२)

हे इंद्र! आप सोम के योग्य हैं. यह सोमरस आप के लिए तृप्तिदायी हो. यह सोमरस अन्न स्वरूप है. आप इस सोमरस में सशरीर पधारिए. (२)

प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः. प्र बाहू शूर राधसा.. (३)

हे इंद्र! आप शक्तिमान हैं. विशुद्ध सोम प्रार्थनाओं से आप के सिर, दोनों भुजाओं व कांखों तक पहुंचे. हम आप से धन चाहते हैं. (३)

आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत. सखाय स्तोमवाहसः.. (४)

हे यजमानो! आप इंद्र को प्रसन्न करने के लिए शीघ्र आइए, बैठिए. उन के लिए प्रार्थना व उपासना कीजिए. (४)

पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम्. इन्द्र सोमे सचा सुते.. (५)

हे यजमानो! आप इकट्ठे होइए. इंद्र शत्रुओं को हराने की सामर्थ्य रखते हैं. वे ऐश्वर्य के स्वामी हैं. आप सभी उन की उपासना कीजिए. (५)

स घा नो योग आ भुवत्स राये स पुरुन्ध्या. गमद्वाजेभिरा स नः.. (६)

हे इंद्र! आप हमें वीर बनाइए और निखारिए. आप हमें समृद्धि प्रदान कीजिए. आप हमें ज्ञान व पोषकता प्रदान कीजिए. आप हमारे समीप पधारने की कृपा कीजिए. (६)

योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे. सखाय इन्द्रमूतये.. (७)

हे यजमानो! हम पर बारबार कामों में अपनी रक्षा के लिए अपने मित्र इंद्र का आह्वान करते हैं. (७)

अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम्. यं ते पूर्वं पिता हुवे.. (८)

इंद्र स्वर्गवासी हैं. वे बहुत लोगों की मदद करते हैं. हमारे पिता (पूर्वजों) ने उन का आह्वान किया था. हम भी उन का आह्वान करते हैं. (८)

आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्रिणीभिरूतिभिः. वाजेभिरुप नो हवम्.. (९)

हे यजमानो! हमें आशा है कि इंद्र हमारी प्रार्थना से प्रसन्न होंगे. वे अपनी रक्षा और वैभव के साथ हमारे पास अवश्य पधारेंगे. (९)

इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीष उक्थ्यम्. विदे वृधस्य रक्षस्य महाँ हि षः.. (१०)

हे इंद्र! आप के पुत्र आप के लिए सोमरस परिष्कृत करते हैं. आप महान हैं. आप उन के यज्ञों तथा उन के स्तोत्रों की बढ़ोतरी करते हैं. (१०)

स प्रथमे व्योमनि देवानाꣳ सदने वृधः. सुपारः सुश्रवस्तमः समप्सुजित्.. (११)

हे यजमानो! इंद्र प्रथम देवता हैं. वे आकाश में देवताओं के आवास में निवास करते हैं. वे भलीभांति हमारी रक्षा करते हैं. वे हमें यश प्रदान करते हैं. वे असुर विजेता हैं. हम उन का आह्वान करते हैं. (११)

तमु हुवे वाजसातय इन्द्रं भराय शुष्मिणम्. भवा नः सुम्ने अन्तम् सखा वृधे.. (१२)

हे इंद्र! हम अन्नप्राप्ति के लिए आप का आह्वान करते हैं. हम अपने भरणपोषण के लिए आप का आह्वान करते हैं. हम सुमन (अच्छे मन वाले) व आप के सखा बनें. आप हमारी बढ़ोतरी में हमारा सहयोग करने की कृपा कीजिए. (१२)

चौथा खंड

एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे.
प्रियं चेतिष्ठमरतिꣳ स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम्.. (१)

हे अग्नि! आप विश्व के दूत हैं. आप अमर, प्रिय व अक्षय हैं. हम अपने यज्ञ में आप का आह्वान करते हैं. (१)

स योजते अरुषा विश्वमोजसा स दुद्रवत्स्वाहुतः.
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देवꣳ राधो जनानाम्.. (२)

अग्नि लोगों के लिए धन स्वरूप, विद्वान्, संयमशील व सब को जोड़ते हैं. आप समस्त विश्व को ओज से पूर्ण करते हैं. हम आप का आह्वान करते हैं. (२)

प्रत्यु अदर्श्यायत्यू ३ च्छन्ती दुहिता दिवः.
अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी.. (३)

उषा स्वर्गलोक की पुत्री व अंधकार को दूर करती हैं. वे अपनी किरणों से सभी को प्रकाशित करती हैं. वे आंख की ज्योति हैं. वे अंधकार में ज्योति हैं. वे उत्तम नारी हैं. (३)

उदुस्रियाः सृजते सूर्यः सचा उद्यन्नक्षत्रमर्चिवत्.

तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि.. (४)

सूर्य, नक्षत्र और ग्रह ये तीनों आकाश को प्रकाशमान करते हैं. सूर्य अपनी किरणों का प्रसार करते हैं और प्रकाश से हम भक्तों तक पहुंचते हैं. (४)

इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना.
अयं वामह्वे ऽ वसे शचीवसू विशंविश ꣳ हि गच्छथः.. (५)

हे अश्विनीकुमारो! आप स्वर्गलोक के वासी हैं. स्वर्ग प्राप्त करने के इच्छुक लोग अपनी इच्छापूर्ति के लिए आप का आह्वान करते हैं. आप स्तुति करने वालों के पास पहुंचते हैं. हम आप का आह्वान करते हैं. (५)

युवं चित्रं ददथुर्भोजनं नरा चोदथा ꣳ सूनृतावते.
अर्वाग्रथ ꣳ समनसा नि यच्छतं पिबत ꣳ सोम्यं मधु.. (६)

हे अश्विनीकुमारो! आप युवा नेता हैं और श्रेष्ठ आहार देने वाले व स्तुति करने वालों को प्रेरित करते हैं. कृपया आप अपना रथ रोकिए. आप अपना मन लगा कर मधुर सोमरस का पान कीजिए. (६)

पांचवां खंड

अस्य प्रत्नामनु द्युत ꣳ शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः. पयः सहस्रसामृषिम्.. (१)

सोमरस चमकीला, ज्ञान बढ़ाने वाला व मनोकामना पूरी करने वाला है. ऋषियों ने इस के सहस्र स्वरूप का स्मरण कर के इसे तैयार किया है. (१)

अय ꣳ सूर्य इवोपदृगय ꣳ सरा ꣳ सि धावति. सप्त प्रवत आ दिवम्.. (२)

सोम सात धाराओं से उसी प्रकार दौड़ते हैं (प्रवाहित होते हैं), जिस तरह सूर्य स्वर्गलोक से सात किरणों से धरती पर आने के लिए दौड़ते हैं. (२)

अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि. सोमो देवो न सूर्यः.. (३)

सोम सभी भुवनों के ऊपर प्रतिष्ठित हैं व समस्त संसार पर राज करते हैं. वे हमारे सूर्य हैं. (३)

एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः. हरिः पवित्रे अर्षति.. (४)

सोमरस दिव्य है. देवता संस्कारपूर्वक उसे परिष्कृत करते हैं. वह हरा है और उसे पवित्र छलनी में परिष्कृत किया जाता है. (४)

एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि. कविर्विप्रेण वावृधे.. (५)

सोम कवि और विद्वानों से प्रशंसा प्राप्त करते हैं. वे सभी देवताओं से ऊपर हैं. उन को

संस्कारपूर्वक अनेक विधियों से परिष्कृत किया जाता है. (५)

दुहानः प्रत्नमित्पयः पवित्रे परि षिच्यसे. क्रन्दं देवाँ अजीजनः.. (६)

सोमरस को छलनी से परिष्कृत किया जाता है और उसे बरतन (पात्र) में निचोड़ा जाता है. सोम आवाज करते हुए पात्र में जाते हैं तो लगता है मानो वे देवताओं का आह्वान कर रहे हों. (६)

उप शिक्षापतस्थुषो भियसमा धेहि शत्रवे. पवमान विदा रयिम्.. (७)

हे सोम! आप अकल्याणकारियों को भयभीत कीजिए. आप हमारा मार्गदर्शन कीजिए. आप हमें धनधान्य से परिपूर्ण करने की कृपा कीजिए. (७)

उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्ग परिष्कृतम्. इन्दुं देवा अयासिषुः.. (८)

सोमरस को निचोड़ा जाता है. तत्पश्चात उस को परिष्कृत किया जाता है. फिर जल में मिलाया जाता है. आप को गाय के दूध में मिलाया जाता है. देवता भी सोम को बुलाते हैं. (८)

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे. अभि देवाँ इयक्षते... (९)

हे यजमानो! आप देवताओं के गुण गाने की अपेक्षा सोम के गुण गाइए. (९)

छठा खंड

प्र सोमासो विपश्चितो ऽ पो नयन्त ऊर्मयः. वनानि महिषा इव.. (१)

सागर की लहरें सागर में जैसे मिल जाती हैं, वैसे सोमरस जल में मिल जाता है. वन में मिले भैंसों की तरह सोमरस जल में एकमेक हो जाता है. (१)

अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया. वाजं गोमन्तमक्षरन्.. (२)

सोमरस चमकीला है. वह अपनी ऋत की धारा से भूरा सोम गाय के दूध में झरता है. वह शक्तिमान है. (२)

सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः. सोमा अर्षन्तु विष्णवे.. (३)

सोम इंद्र, वायु, मरुद्गणों व विष्णु को प्राप्त हों. (३)

प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा.
अ ꣳ शोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम्.. (४)

हे सोम! आप को पानी से भरीपूरी नदियों की तरह पानी में मिलाया जाता है. आप मदिर (आनंददायी) व जाग्रत हैं. मधुरता चुआते हुए सोमरस (पात्र में) इकट्ठा होता है. (४)

आ हर्यतो अर्जुनो अत्के अव्यत प्रियः सूनुर्न मर्ज्यः.
तमी हिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा गभस्त्योः.. (५)

सोमरस को बच्चे की तरह साफसुथरा बना लिया है. प्रिय सोमरस को तेज गति से जल में मिलाया जाता है. वह वैसे ही वेग से पानी में मिलता है, जैसे युद्ध में तेज गति से कोई रथ जाता है. (५)

प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम्. सुता विदथे अक्रमुः.. (६)

सोमरस आनंद बरसाने वाला व यशदाता है. वह यज्ञ में निरंतर पहुंच कर इच्छाओं की पूर्ति करता है. (६)

आदी ह सो यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मतिम्.
अत्यो न गोभिरज्यते.. (७)

सोमरस हंस की गति से जाता है. वह संसार के बुद्धिमानों की बुद्धि तक पहुंच रखता है. (७)

आदीं त्रितस्य योषणे हरि हिन्वन्त्यद्रिभिः. इन्दुमिन्द्राय पीतये.. (८)

सोमरस हरा है. इसे पत्थरों से कूट कर निचोड़ा जाता है. उस को तीन ऋषियों की अंगुलियों से इंद्र के पीने के लिए निचोड़ा जाता है. (८)

अया पवस्व देवयू रेभन्पवित्रं पर्येषि विश्वतः. मधोर्धारा असृक्षत.. (९)

हे सोम! आप देवताओं से मिलने के इच्छुक हैं. आप पवित्र और अविरल मीठी धारा से झरते हैं व आवाज करते हुए प्रवाहित होते हैं. (९)

पवते हर्यतो हरिरति ह्वरा सि र ह्या. अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः.. (१०)

सोमरस पवित्र और हरा है. वह पराक्रमी संतान और यश प्राप्ति के इच्छुक यजमानों के लिए प्रवाहित होता है. (१०)

प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद्वचः.
अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः.. (११)

परिष्कृत किए जाते समय सोमरस आवाज करता है. दुष्ट लोग इस आवाज को न सुनें. भृगुओं ने जैसे मख को दूर किया, उसी तरह पापी और कुत्तों को यज्ञ से दूर किया जाए. (११)

तीसरा अध्याय

पहला खंड

पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरूतिभिः. अभि विश्वानि काव्या.. (१)

हे सोम! आप प्रमुख हैं, आगे की पंक्ति में रहने वाले हैं. आप हमारी स्तुतियों पर ध्यान दीजिए. हमारी सभी स्तुतियों और प्रार्थनाओं को सुनिए. आप पूजनीय व संरक्षणशील हैं. (१)

त्व ं३ समुद्रिया अपो ऽ ग्रियो वाच ईरयन्. पवस्व विश्वचर्षणे.. (२)

हे सोम! आप सभी के कर्मों को ध्यान से देखने वाले हैं. आप अग्रगण्य स्तुतियों के प्रेरक हैं. अंतरिक्ष के जल आप को प्राप्त होते हैं. (२)

तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे. तुभ्यं धावन्ति धेनवः.. (३)

हे सोम! आप के ही लिए ये लोक स्थिर हैं. आप की महानता के कारण ये लोक स्थिर हैं. गाएं आप को दूध देने के लिए दौड़दौड़ कर आप के पास आ रही हैं. (३)

पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने. विश्वा अप द्विषो जहि.. (४)

छाना हुआ आप का रस स्फूर्तिदायी है. आप छनते हुए अपनी धाराओं से पवित्र होइए. हम लोगों को यशस्वी बनाइए. हमारे सभी शत्रुओं का नाश कीजिए. (४)

यस्य ते सख्ये वय ं३ सासह्याम पृतन्यतः. तवेन्दो द्युम्न उत्तमे.. (५)

हे सोम! हम आप के मित्र हैं. हम ने आप से तेजस्विता पाई है. हम सभी शत्रुओं को नष्ट करने की क्षमता वाले हो गए हैं. (५)

या ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे. रक्षा समस्य नो निदः.. (६)

हे सोम! आप के अस्त्रशस्त्र भयंकर हैं. वे शत्रुओं को डरा देने वाले हैं. उन की सहायता से शत्रुओं द्वारा की गई निंदा की पीड़ा से हमारी रक्षा कीजिए. (६)

वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः. वृषा धर्माणि दध्रिषे.. (७)

हे सोम! आप शक्तिमान, प्रकाशमान, इच्छापूरक एवं बल बढ़ाने के लिए संकल्पशील हैं. हे इच्छापूरक! आप देवता और मनुष्य सब के लिए कल्याणकारी कर्म धारण करने वाले

हैं. (७)

वृष्णस्ते वृष्णय ꣳ शवो वृषा वनं वृषा सुतः. स त्वं वृषन्वृषेदसि.. (८)

हे सोम! आप शक्तिशाली, बहुत सामर्थ्यवान हैं. आप की सेवा भी शक्तिवर्द्धक है. आप का रस एवं आप स्वयं भी बलवर्द्धक हैं. (८)

अश्वो न क्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः. वि नो राये दुरो वृधि.. (९)

हे सोम! आप शक्तिमान हैं. आप घोड़े की तरह आवाज करते हैं. आप हमें गोधन और अश्वधन देते हैं. आप हमारे लिए धन के द्वार खोलते हैं. (९)

वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे. पवमान स्वर्दृशम्.. (१०)

हे सोम! आप अवश्य ही शक्तिवर्द्धक हैं. आप पवित्र व प्रकाशमान हैं. हम यज्ञ में आप को बुलाते हैं. (१०)

यदद्भिः परिषिच्यसे मर्मृज्यमान आयुभिः. द्रोणे सधस्थमश्नुषे.. (११)

हे सोम! यजमान आप को शुद्ध बनाते हैं. जल से आप को सींचा जाता है. जल मिलाने के बाद आप को द्रोणकलश में स्थापित किया जाता है. (११)

आ पवस्व सुवीर्यं मन्दमानः स्वायुध. इहो ष्विन्दवा गहि.. (१२)

हे सोम! हमारे यज्ञ में पधार कर आप उस की शोभा बढ़ाइए. आप आनंददायी हैं. आप हमें वीर बनाइए. हमें श्रेष्ठ वीर्य (संतान) प्रदान कीजिए. (१२)

पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः. सखित्वमा वृणीमहे.. (१३)

हे सोम! छलनी में छन कर पवित्र होने वाले आप से हम मित्रता की इच्छा रखते हैं. (१३)

ये ते पवित्रमूर्मयो ऽ भिक्षरन्ति धारया. तेभिर्नः सोम मृडय.. (१४)

हे सोम! अपनी लहरों जैसी झरती हुई पवित्र धाराओं से हमें सुख प्रदान कीजिए. (१४)

स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीमिषम्. ईशानः सोम विश्वतः.. (१५)

हे सोम! आप संसार के ईश्वर व पवित्र हैं. आप हमें धनवान, अन्नवान और वीर पुत्रवान बनाने की कृपा कीजिए. (१५)

दूसरा खंड

अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्. अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्.. (१)

अग्नि सभी धन पास रखने वाले, देवताओं को यज्ञ में बुलाने वाले, यज्ञ को ठीक तरह

कराने वाले व देवों को हवि पहुंचाने वाले हैं. हम आप की उपासना करते हैं. (१)

अग्निमग्नि ꣳ हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम्. हव्यवाहं पुरुप्रियम्.. (२)

हे अग्नि! आप प्रजापालक, हविवाहक, सर्वप्रिय, बुलाने योग्य व अनेक नाम वाले हैं. आप हम सब के नेता हैं. हम मंत्रों से आप का आह्वान करते हैं. (२)

अग्ने देवाँ इहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे. असि होता न ईड्यः.. (३)

हे अग्नि! आप अरणियों से उत्पन्न होने वाले व देवताओं के दूत हैं. आप आसन फैलाने वाले यजमान के लिए देवताओं को बुला लाइए. आप मददगार और उपासना के योग्य हैं. (३)

मित्रं वय ꣳ हवामहे वरुण ꣳ सोमपीतये. या जाता पूतदक्षसा.. (४)

हम शुद्ध, बलवान और यज्ञस्थल में प्रकट होने वाले मित्र और वरुण देवता का सोमरस पीने के लिए यज्ञ में आह्वान करते हैं. (४)

ऋतेन यावृतावृधावृतस्य ज्योतिषस्पती. ता मित्रावरुणा हुवे.. (५)

मित्र और वरुण देवता यजमान पर दयालु हैं. वे सत्यमार्गियों पर कृपालु हैं. उन प्रकाशमान मित्र और वरुण देवताओं का हम आह्वान करते हैं. (५)

वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः. करतां नः सुराधसः.. (६)

मित्र और वरुण देवता अपने सभी रक्षा साधनों से हमारी रक्षा करें. वे हमारे शरणदाता हैं. वे हमें यशस्वी धन प्रदान करने की कृपा करें. (६)

इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः. इन्द्रं वाणीरनूषत.. (७)

साम गाने वाले पुरोहितों ने बृहत्साम गा कर इंद्र की स्तुति की. यजमानों ने भी मंत्र गा कर इंद्र की स्तुति की. शेष बचे हुए लोगों ने भी वाणी से इंद्र की स्तुति की. (७)

इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा. इन्द्रो वज्री हिरण्ययः.. (८)

इंद्र वज्रधारी हैं. वे सोने के आभूषणधारी हैं. उन की वाणी सुनते ही हरि नामक घोड़े रथ में जुत जाते हैं. अब वे अपने उन्हीं घोड़ों को एक साथ रथ में जोतने वाले हैं. (८)

इन्द्र वाजेषु नो ऽ व सहस्रप्रधनेषु च. उग्र उग्राभिरूतिभिः.. (९)

हे इंद्र! आप किसी से नहीं हार सकते. आप हमें अपना प्रबल संरक्षण प्रदान कीजिए. जिन युद्धों में हजारों हाथीघोड़ों का लाभ होता है, उन युद्धों में भी आप हमारी सहायता कीजिए. (९)

इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्य ꣳ रोहयद्दिवि. वि गोभिरद्रिमैरयत्.. (१०)

हे इंद्र! संसार को प्रकाश देने के लिए आप ने स्वर्गलोक में सूर्य की स्थापना की. उसी प्रकार अपनी रश्मियों (किरणों) से बरसात के लिए बादलों को प्रेरित किया. (९०)

इन्द्रे अग्ना नमो बृहत्सुवृक्तिमेरयामहे. धिया धेना अवस्यवः.. (११)

अपने संरक्षण की कामना से हम अग्नि और इंद्र के पास हवि और स्तुति पहुंचाते हैं. हम बुद्धि और मनोयोग से दोनों देवताओं की उपासना करते हैं. (११)

ता हि शश्वन्त ईडत इत्था विप्राय ऊतये. सबाधो वाजसातये.. (१२)

अनेक बुद्धिमान लोग अग्नि और इंद्र की रक्षा के लिए उपासना करते हैं. वे लोग वैसे ही उन की उपासना करते हैं, जैसे अन्न के लिए लड़तेझगड़ते हैं. (१२)

ता वां गीर्भिर्विपन्यवः प्रयस्वन्तो हवामहे. मेधसाता सनिष्यवः.. (१३)

हम स्तुतियों से अग्नि और इंद्र की उपासना करते हैं. उन को आमंत्रित करते हैं. हम धन के इच्छुक हवि के साथ आप दोनों को यज्ञ में आमंत्रित करते हैं. (१३)

तीसरा खंड

वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः. विश्वा दधान ओजसा.. (१)

हे सोम! आप शक्तिवर्द्धक हैं. आप धारा रूप में छनिए. आप द्रोणकलश में पधारिए. आप अपने बल से विश्व को धारण करने वाले मरुतों के मित्र इंद्र को आनंद प्रदान कीजिए. (१)

तं त्वा धर्तारमोण्यो ३: पवमान स्वर्दृशम्. हिन्वे वाजेषु वाजिनम्.. (२)

हे सोम! आप पवित्र, स्वर्गलोक, पृथ्वीलोक को धारण करने वाले व सर्वद्रष्टा हैं. आप को हम युद्धों में जाने के लिए प्रेरित करते हैं. हमें आप अन्न आदि दीजिए. (२)

अया चित्तो विपानया हरिः पवस्य धारया. युजं वाजेषु चोदय.. (३)

हे सोम! आप हरे हैं. आप को अंगुलियों से निचोड़ा गया है. आप द्रोणकलश में धारा रूप में झरते जाइए. आप अपने मित्र इंद्र को युद्धों में जाने के लिए प्रेरित कीजिए. (३)

वृषा शोणो अभिकनिक्रददद्गा नदयन्नेषि पृथिवीमुत द्याम्.
इन्द्रस्येव वग्नुरा शृण्व आजौ प्रचोदयन्नर्षसि वाचमेमाम्.. (४)

हे सोम! हमारी प्रार्थनाओं को सुन कर आप उसी तरह आवाज करते हैं, जैसे गायों को देख कर लाल बैल आवाज करता है. आप स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक पर पधारते हैं. इंद्र के शब्दों के समान हम आप की आवाज सुनते हैं. आप अपना स्वरूप सब को बोध कराते हैं. यजमान की प्रार्थनाओं को सुनने की कृपा करते हैं. (४)

रसाय्यः पयसा पिन्वमान ईरयन्नेषि मधुमन्तम शुम्.
पवमान सन्तनिमेषि कृण्वन्निन्द्राय सोम परिषिच्यमानः.. (५)

स्वादिष्ट और मीठा सोमरस गाय का दूध मिलाने से और स्वादिष्ट और मीठा हो जाता है. पानी मिला कर छानने पर धारा रूप धारण कर के सोम इंद्र को प्राप्त हो जाते हैं. (५)

एवा पवस्व मदिरो मदायोदग्राभस्य नमयन्वधस्नुम्.
परि वर्णं भरमाणो रुशन्तं गव्युर्नो अर्ष परि सोम सिक्तः.. (६)

हे सोम! आप स्फूर्तिदायी हैं. आप वृत्रासुर का वध हो जाने के बाद पानी बहाने वाले मेघों को झुकाइए. उन के जल में मिल कर छनते जाइए. आनंददायी होइए. आप पानी में मिल कर और चमकीले हो जाइए. आप गाय के दूध के रूप में हमारे चारों ओर प्रवाहित होइए. (६)

चौथा खंड

त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः.
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः.. (१)

हे इंद्र! हम यजमान अपने अन्न की बढ़ोतरी की आकांक्षा से आप को आमंत्रित करते हैं. आप पर्वतवासी, सत्पति व वृत्रहंता हैं. श्रेष्ठ जन विपत्ति के समय आप को स्मरण करते हैं. (१)

स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया मह स्तवानो अद्रिवः.
गामश्व रथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे.. (२)

हे इंद्र! आप हाथ में वज्र धारण करते हैं. आप बलधारी व शक्तिधारी हैं. आप यजमानों की प्रार्थना से प्रसन्न होइए. उन्हें अन्नधन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (२)

अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे.
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति.. (३)

हे यजमानो! इंद्र नाना प्रकार के वैभव देने वाले हैं. आप हजारों विधियों से उन्हें प्रसन्न करने की कोशिश करो. (३)

शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे.
गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः.. (४)

दुश्मनों का संहार करते समय इंद्र यजमान की वैसे ही रक्षा करते हैं, जैसे सेनानी शत्रु पर चढ़ाई के समय सेना की. उन का यह संरक्षण यजमानों को झरने के जल की तरह शांति और तृप्ति प्रदान करता है. (४)

त्वामिदा ह्यो नरो ऽ पीप्यन्वज्रिन् भूर्णयः.
स इन्द्र स्तोमवाहस इह श्रुध्युप स्वसरमा गहि.. (५)

हे वज्रधारी इंद्र! यजमान आप को हवि प्रदान करते हैं. वे ही यजमान आप को सोमरस भेंट करते हैं. स्तोता (उपासक) आप के लिए साम गा रहे हैं. आप सुनिए और यज्ञ में पधारिए. (५)

मत्स्वा सुशिप्रिन्हरिवस्तमीमहे त्वया भूषन्ति वेधसः.
तव श्रवा स्युपमान्युक्थ्य सुतेष्विन्द्र गिर्वणः.. (६)

हे सुंदर ठुड्डी वाले इंद्र! आप अस्त्रशस्त्रधारी हैं. आप उपासना के योग्य हैं. हम यजमान अनेक प्रकार की सामग्री से आप की पूजा करते हैं. हम आप को सजाते व सोमरस से छकाते हैं. हम और भी प्रिय पदार्थ आप को भेंट करते हैं. आप अश्वपालक हैं. (६)

पांचवां खंड

यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा. देवावीरघश सहा.. (१)

हे सोम! आप का रस वरेण्य, मददायी व दिव्य हैं. आप परिष्कृत होइए. (१)

जघ्निर्वृत्रममित्रिय सस्निर्वाजं दिवेदिवे. गोषातिरश्वसा असि.. (२)

हे सोम! आप वृत्रासुर अमित्रों (शत्रुओं) के नाशक, दिव्य व संघर्षशील हैं. आप गोधन व अश्वधन प्रदान करते हैं. (२)

सम्मिश्लो अरुषो भुवः सूपस्थाभिर्न धेनुभिः. सीदं च्छ्येनो न योनिमा.. (३)

हे सोम! बाज जैसे घोंसले में सुशोभित होता है, उसी प्रकार आप अपने सदन में सुशोभित होते हैं. आप गायों के दूध में मिलने पर चमचमाते हैं. (३)

अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति.
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे.. (४)

हे सोम! आप विश्वपति व पवित्र हैं. आप पूषा और भग के लिए प्रवाहित होइए. आप पृथ्वीलोक और स्वर्गलोक दोनों को प्रकाशित करते हैं. (४)

समु प्रिया अनूषत गावो मदाय घृष्वयः.
सोमासः कृण्वते पथः पवमानास इन्दवः.. (५)

हे सोम! आप मददायी व प्रिय हैं. आप के लिए की गई स्तुतियां एकदूसरे से होड़ करती हैं. आप सभी का पथप्रदर्शन करते हैं. (५)

य ओजिष्ठस्तमा भर पवनाम श्रवाय्यम्.

यः पञ्च चर्षणीरभि रयिं येन वनामहे.. (६)

सोम ओजवान, अंधकार दूर करने वाले और पवित्र हैं. आप पंचों से प्रशंसा प्राप्त करने योग्य रस हमें प्रदान करने की कृपा कीजिए. (६)

वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः.
प्राणा सिन्धूनां कलशाँ अचिक्रददिन्द्रस्य हार्द्यविशन्मनीषिभिः.. (७)

हे सोम! आप बुद्धि बढ़ाने वाले, विलक्षण, स्वर्गलोक व उषा को जानते हैं. आप दिनरात को प्रकाशित व जाग्रत करते हैं. आप मनीषियों द्वारा इंद्र के लिए परिष्कृत किए जाते हैं. आप आवाज करते हुए पात्र में प्रवाहित होते हैं. (७)

मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि कोशा असिष्यदत्.
त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरन्निन्द्रस्य वायु ꣳ सख्याय वर्धयन्.. (८)

सोम पवित्र, अपूर्व व कवि हैं. मनीषी और मनुष्य आप को परिष्कृत करते हैं. आप तीनों सवनों में इंद्र की प्रसिद्धि फैलाते हैं. सोम इंद्र को तृप्ति देते हैं. सोम वायु की मित्रता की बढ़ोतरी के लिए प्रवाहित होते हैं. (८)

अयं पुनान उषसो अरोचयदय ꣳ सिन्धुभ्यो अभवदु लोककृत्.
अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिर ꣳ सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः.. (९)

सोम पवित्र व चमकने वाले हैं. वे हितकारी और उषा को प्रकाशित करते हैं. सोमरस नदियों में जल की बढ़ोतरी करता है. यह तीन गुणे सात को पोसता हुआ प्रवाहित होता है. यह सब के हृदय में निवास करता है. (९)

छठा खंड

एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः. एवा ते राध्यं मनः.. (१)

हे इंद्र! आप शूरवीर हैं. आप संग्रामों में शूरवीरों को अपनी वीरता दिखाने का अवसर प्रदान करते हैं. आप उन युद्धों में स्थिर रहते हैं. इसीलिए आप का मन आराधना के योग्य है. (१)

एवा रातिस्तुविमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः. अधा चिदिन्द्र नः सचा.. (२)

हे इंद्र! आप सभी ऐश्वर्य धारण करते हैं. आप की कृपा कभी भी समाप्त नहीं होती है. आप हम पर कृपा कीजिए. (२)

मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते. मत्स्वा सुतस्य गोमतः.. (३)

हे इंद्र! आप बलवान, शक्ति के स्वामी एवं ब्रह्मा के समान हैं. आप हमें बुद्धिमान बनाने की कृपा कीजिए. (३)

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः
रथीतम ꣳ रथीनां वाजाना ꣳ सत्पतिं पतिम्.. (४)

हे इंद्र! आप समुद्र जैसे भरेपूरे हैं और विश्व को धारण करते हैं. आप सत्पति, शक्तिपति और दैवी शक्तियों के स्वामी हैं. हम वाणी से आप की उपासना करते हैं. (४)

सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते.
त्वामभि प्र नोनुमो जेतारमपराजितम्.. (५)

हे इंद्र! हम आप के सखा हैं. आप शक्तिमान हैं. आप की छत्रछाया में हम कभी किसी से भयभीत न हों. आप अपराजेय व विजेता हैं. हम आप को नमन करते हैं. (५)

पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो न वि दस्यन्त्यूतयः.
यदा वाजस्य गोमत स्तोतृभ्यो म ꣳ हते मघम्.. (६)

हे इंद्र! आप का दान अपूर्व है. आप हमें (पूर्ण) संरक्षण देते हैं. आप जब उपासकों को अन्नधन दान देते हैं तो वह कभी क्षीण नहीं होता. (६)

चौथा अध्याय

पहला खंड

एते असृग्रमिन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः. विश्वान्यभि सौभगा.. (१)

हे सोम! आप तेजी से छलनी की ओर भाग रहे हैं. यजमान अपने सौभाग्य के लिए आप को परिष्कृत कर रहे हैं. (१)

विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकाय वाजिनः. त्मना कृण्वन्तो अर्वतः.. (२)

हे सोम! आप शक्तिदाता, पापनाशी व हमारी पीढ़ियों को पशु धन देते हैं. आप अपना मार्ग स्वयं निर्मित करते हैं. (२)

कृण्वन्तो वरिवो गवे ऽ भ्यर्षन्ति सुष्टुतिम्. इडामस्मभ्य ꣳ संयतम्.. (३)

हे सोम! आप हमें धन प्रदान करते हैं. आप हमारी गायों के लिए भी श्रेष्ठ धन प्रदान करते हैं. आप पालने वाले हैं. आप हमारी प्रार्थनाओं को स्वीकार कीजिए. (३)

राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि. अन्तरिक्षेण यातवे.. (४)

हे सोम! आप राजा हैं. हम बुद्धि से आप की उपासना करते हैं. आप अंतरिक्ष में भ्रमण करते हैं. आप द्रोणकलश में स्थित रहते हैं. (४)

आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर. सुष्वाणो देववीतये.. (५)

हे सोम! आप को देवीदेवताओं के उपयोग के लिए परिष्कृत किया जाता है. आप हमें भरपूर रूप, वर्चस्व (प्रभाव) व तेज प्रदान कीजिए. (५)

आ न इन्द्रो शातग्विनं गवां पोष ꣳ स्वश्वयम्. वहा भगत्तिमूतये.. (६)

हे सोम! आप हमें सैकड़ों गाएं व घोड़े प्रदान कीजिए. आप उन सब का पालनपोषण करने में सक्षम हैं. आप हमें भाग्यशाली बनाने की कृपा कीजिए. (६)

तं त्वा नृम्णानि बिभ्रत ꣳ सधस्थेषु महो दिवः. चारु ꣳ सुकृत्ययेमहे.. (७)

हे सोम! आप स्वर्गलोक के महान वैभव से संपन्न हैं. आप चारु (सुंदर) हैं. आप को हम अपने सुकर्मों से पाना चाहते हैं. हम आप की उपासना करते हैं. (७)

संवृक्त धृष्णुमुक्थ्यं महामहिव्रतं मदम्. शतं पुरो रुरुक्षणिम्.. (८)

हे सोम! आप महान, महिमाशाली व व्रती हैं. आप शत्रुओं के सैकड़ों नगरों का नाश करने वाले हैं. हम आप से धन चाहते हैं. (८)

अतस्त्वा रयिरभ्ययद्राजान सुक्रतो दिवः. सुपर्णो अव्यथी भरत्.. (९)

हे सोम! आप सुकर्म करने वाले, धन व शक्तिदाता हैं. आप कभी व्यथित नहीं होते हैं. गरुड़ आप को स्वर्गलोक से पृथ्वीलोक पर लाने की कृपा करें. (९)

अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे. अभिष्टिकृद्विचर्षणिः.. (१०)

हे सोम! स्वर्गलोक से पृथ्वीलोक पर आने के बाद आप और ज्ञानदायी (संपन्न), महिमाशाली, आकर्षक व क्षमतावान हो जाते हैं. (१०)

विश्वस्मा इत् स्वर्दृशे साधारण रजस्तुरम्. गोपामृतस्य विर्भरत्.. (११)

हे सोम! आप स्वयं प्रकाशमान हैं. आप यज्ञ के रक्षक व जल के प्रेरक हैं. आप अमृत और दिव्य हैं. (११)

इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः. इन्दो रुचाभि गा इहि.. (१२)

हे सोम! आप ज्ञानवान हैं. मनीषी यजमान आप को परिष्कृत करते हैं. आप पौष्टिक अन्न देने वाले है. आप अपनी धाराओं में प्रवाहित होइए. (१२)

पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं जनाय गिर्वणः. हरे सृजान आशिरम्.. (१३)

हे सोम! आप हरे व उपासना के योग्य हैं. आप जलवान होइए. आप यजमानों को अन्न प्रदान करने की कृपा कीजिए. (१३)

पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम्. द्युतानो वाजिभिर्हितः.. (१४)

हे सोम! आप पवित्र व दिव्य हैं. आप को इंद्र और देवताओं के लिए परिष्कृत किया जाता है. आप हित साधक, द्युतिमान व शक्तिशाली हैं. आप इंद्र तक पहुंचने की कृपा कीजिए. (१४)

दूसरा खंड

अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा. हव्यवाड् जुह्वास्य.. (१)

हे अग्नि! आप कवि, विद्वान्, युवा, हविवाहक व यज्ञ के रक्षक हैं. आप को समिधा से प्रज्वलित किया जाता है. (१)

यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं देव सपर्यति. तस्य स्म प्राविता भव.. (२)

हे अग्नि! आप हविपति तथा देवदूत हैं. आप की जो विधिवत रक्षा करते हैं, आप उन की रक्षा करने की कृपा कीजिए. (२)

यो अग्निं देववीतये हविष्माँ आविवासति. तस्मै पावक मृडय.. (३)

हे अग्नि! आप हविमान हैं. हम देवताओं को हवि पहुंचाने के लिए आप से अनुरोध करते हैं. आप पवित्र हैं. आप हमें सुखी बनाने की कृपा कीजिए. (३)

मित्र हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्. धियं धृताची साधन्ता.. (४)

हे मित्र! आप पवित्र और दक्ष हैं. हे वरुण! आप जल उपजाते हैं. आप दोनों देव हमें बुद्धि प्रदान कीजिए. आप हमें साधिए एवं हमारे शत्रुओं का नाश कीजिए. हम आप दोनों देवों का आह्वान करते हैं. (४)

ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा. क्रतुं बृहन्तमाशाथे.. (५)

हे मित्र! हे वरुण! आप सत्य के रक्षक हैं. आप यज्ञ को सफल बनाते हैं. आप हमें भी पुण्यशाली व सत्य का रक्षक बनाइए. (५)

कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया. दक्षं दधाते अपसम्.. (६)

हे मित्र! हे वरुण! आप दक्ष, जलधारी, कवि व अनेक स्थानों पर वास करते हैं. आप हमें क्षमतावान बनाते हैं. (६)

इन्द्रेण स हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा. मन्दू समानवर्चसा.. (७)

हे मरुद्गण! आप समान वर्चस्व वाले सदैव प्रसन्न रहते हैं. आप तेजोमय, वीर व भयमुक्त हैं. आप इंद्र के साथ सुशोभित होते हैं. (७)

आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे. दधाना नाम यज्ञियम्.. (८)

हे मरुद्गण! आप पूजनीय व नामधारी हैं. आप अपने धाम (नष्ट होने के बाद फिर से उत्पन्न होने वाले अन्न और जल) में गर्भ धारण कर के आकार प्राप्त करते हैं. आप यज्ञ को धारण करते हैं. (८)

वीडु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः. अविन्द उस्रिया अनु.. (९)

हे इंद्र! आप मजबूत से मजबूत किले को भी ढहा सकते हैं. आप गूढ़ से गूढ़ गुफा में भी प्रवेश कर सकते हैं. आग जैसे तेजस्वी मरुद्गण रुकी हुई किरणों को प्रकाश में लाते हैं. (९)

ता हुवे ययोरिदं पप्ने विश्वं पुरा कृतम्. इन्द्राग्नी न मर्धतः.. (१०)

हे इंद्र! हे अग्नि! आप पराक्रमी उपासकों के सारे कष्ट हरने वाले व सनातन हैं. हम आप दोनों देवों का आह्वान करते हैं. (१०)

उग्रा विघनिना मृध इन्द्राग्नी हवामहे. ता नो मृडात ईदृशे.. (११)

हे इंद्र! हे अग्नि! आप उग्र व विघ्ननाशी हैं. हम यज्ञ में आप दोनों देवों का आह्वान करते हैं. आप दोनों देव हमें सुखी बनाने की कृपा कीजिए. (११)

हथो वृत्राण्यार्या हथो दासानि सत्पती. हथो विश्वा अप द्विषः.. (१२)

हे इंद्र! हे अग्नि! आप श्रेष्ठ देव, आर्यों के पालनहार सभी द्वेषों को दूर करने वाले व सत्पति हैं. आप दुश्मनों को दूर करने वाले हैं. (१२)

तीसरा खंड

अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम्.
समुद्रस्याधि विष्टपे मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः.. (१)

हे सोम! आप आनंददायी एवं स्फूर्तिदायी हैं. यजमान आनंद तथा स्फूर्ति पाने के लिए द्रोणकलश के ऊपर रखी हुई छलनी से आप को छानते हैं. (१)

तरत्समुद्रं पवमान ऊर्मिणा राजा देव ऋतं बृहत्.
अर्षा मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा प्र हिन्वान ऋतं बृहत्.. (२)

हे सोम! आप पवित्र, लहरदार, विशाल व राजा हैं. आप को मित्र और वरुण देव के पीने के लिए यज्ञ में स्थापित किया जाता है. (२)

नृभिर्येमाणो हर्यतो विचक्षणो राजा देवः समुद्र्यः.. (३)

हे सोम! आप दिव्य, राजा, मनोहर व विलक्षण हैं. आप समुद्र जैसे हैं. (३)

तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम्.
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः.. (४)

हे सोम! यजमान ऋक्, यजु और साम रूप तीन वाणियों से आप का गुणगान करते हैं. ब्राह्मण और मनीषी उसी प्रकार आप को खोजते (पूछते हुए) आते हैं, जिस प्रकार गाएं बैल के पास जाती हैं. (४)

सोमं गावो धेनवो वावशानाः सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः.
सोमः सुत ऋच्यते पूयमानः सोमे अर्कास्त्रिष्टुभः सं नवन्ते.. (५)

हे सोम! दुधारू गाएं आप को चाहती हैं. ब्राह्मण पूछते हुए सोम को चाहते हैं. सुत (यजमान) पवित्र सोम को चाहते हैं. यजमान त्रिष्टुप् छंद में रची गई प्रार्थनाओं से सोम की उपासना करते हैं. (५)

एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति.
इन्द्रमा विश बृहता मदेन वर्धया वाचं जनया पुरंधिम्.. (६)

हे सोम! आप हमारे हित हेतु परिष्कृत होने की कृपा कीजिए. आप पवित्र होइए. आप हमारा कल्याण कीजिए. आप हमें श्रेष्ठ बुद्धि दीजिए. आप हमारी प्रार्थना स्वीकारिए. आप इंद्र को तृप्त कीजिए. (६)

चौथा खंड

यद्याव इन्द्र ते शत शतं भूमीरुत स्युः.
न त्वा वज्रिन्त्सहस्र सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी.. (१)

हे इंद्र! सैकड़ों भूमि, सैकड़ों सूर्य और सैकड़ों लोक भी आप की महिमा के बराबर नहीं हो सकते. आप जैसा अब तक कोई उत्पन्न नहीं हुआ. भूमंडल और अंतरिक्षमंडल तक में आप की समानता कोई नहीं कर सकता. (१)

आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन्विश्वा शविष्ठ शवसा.
अस्माँ अव मघवन् गोमति व्रजे वज्रिं चित्राभिरूतिभिः.. (२)

हे इंद्र! आप बलवान, सामर्थ्यवान व मनोकामनाएं पूरी करने वाले हैं. आप धनवान, वज्रधारी व श्रेष्ठ मतिवान हैं. आप अपने रक्षा साधनों के साथ पधारिए. आप गायों से भरे हुए बाड़े प्रदान कीजिए. (२)

वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः.
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन्परि स्तोतार आसते.. (३)

हे इंद्र! आप शत्रुनाशी हैं. हम सोमरस को जलप्रवाह की भांति आप के पास प्रवाहित कर के लाते हैं. हम आप को परिष्कृत सोमरस चढ़ाते तथा विराजने के लिए आप को कुश का आसन भेंट करते हैं. (३)

स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः.
कदा सुतं तृषाण ओक आ गमदिन्द्र स्वब्दीव व सगः.. (४)

हे इंद्र! आप सर्वत्र वास करते हैं. आप सब को वास देते हैं. यजमान सोमरस चढ़ा कर आप की उपासना करते हैं. आप बैलों की तरह आवाज करते हुए अपने बेटों के यहां कब पधारने की कृपा करेंगे? (४)

कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद्वाजं दर्षि सहस्रिणम्.
पिशङ्गरूपं मघवन्विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे.. (५)

हे इंद्र! आप धनी, ज्ञानी, शत्रुनाशी व बहुरंगी हैं. आप हजारों तरह के वैभव व हजारों गुनी शक्ति दे सकते हैं. हम कण्ववंशी यजमान आप की उपासना करते हैं. (५)

तरणिरित्सिषासति वाजं पुरंध्या युजा.
आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम्.. (६)

हे इंद्र! हम आप के उपासक हैं. हम भव सागर पार करना चाहते हैं. हम बुद्धि का बल (शारीरिक बल के साथसाथ) भी पाना चाहते हैं. चलता हुआ पहिया जैसे एकदम नीचे आ जाता है, वैसे ही हम प्रार्थना रूपी पहिए से इंद्र के लिए झुक जाते हैं. (६)

न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते न स्रेधन्त रयिर्नशत्.
सुशक्तिरिन्मघवन् तुभ्यं मावते देष्णं यत्पार्ये दिवि.. (७)

हे इंद्र! सोमयाग में सशक्त (उत्तम) उपासकों को आप उचित (उपयुक्त) धन प्रदान करते हैं. जो लोग दानदाता की निंदा करते हैं, जो लोग अच्छा काम करने वालों की निंदा करते हैं, ऐसे लोगों पर आप अपनी कृपा मत कीजिए. (७)

पांचवां खंड

तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः. हरिरेति कनिक्रदत्.. (१)

यजमान तीन वाणियां उचारते हैं. उन वाणियों को सुन कर हरे रंग का सोमरस दुधारू गाय के रंभाने जैसी आवाज करता हुआ प्रवाहित होता है. (१)

अभि ब्रह्मीरनूषत यह्वीर्ऋतस्य मातरः. मर्जयन्तीर्दिवः शिशुम्.. (२)

हम यजमान स्वर्गलोक के शिशु सोम को परिष्कृत करने के लिए मंत्र उचारते हैं. सत्य की माता से सोम उत्पन्न हुए हैं. ब्रह्मज्ञानी सोम की उपासना करते हैं. (२)

रायः समुद्रा श्चतुरोस्मभ्य सोम विश्वतः. आ पवस्व सहस्रिणः.. (३)

हे सोम! आप हमें सभी प्रकार के सुख दीजिए. आप हमें सभी प्रकार के धन दीजिए. आप हमारी हजारों इच्छाओं को पूरा करने के लिए प्रवाहित होने की कृपा कीजिए. (३)

सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः.
पवित्रवन्तो अक्षरं देवान् गच्छन्तु वो मदाः.. (४)

हे सोम! आप मधुमान हैं. हम आप के पुत्र हैं. आप इंद्र को प्रसन्न करने के लिए प्रवाहित होइए. आप पवित्र हैं और कभी क्षरित (नष्ट) नहीं होते. आप देवताओं को आनंद प्रदान करने के लिए उन के पास जाने की कृपा कीजिए. (४)

इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन्.
वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसः.. (५)

हे इंद्र! उपासक आप के लिए सोमरस स्वच्छ करते हैं. आप सब के ईश्वर, ओजस्वी और वाचस्पति हैं. यज्ञ में सोमरस का उपयोग किया जाता है. (५)

सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः.
सोमस्पती रयीणा सखेन्द्रस्य दिवेदिवे.. (६)

हे सोम! आप हजार घर वाले हैं. आप पवित्र व इंद्र के सखा हैं. आप जलवान व धनवान हैं. आप प्रतिदिन द्रोणकलश में प्रवाहित होते हैं. (६)

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः.
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तः सं तदाशत.. (७)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप ब्रह्मज्ञान के स्वामी व देह के मालिक हैं. आप समर्थों पर कृपा करते हैं. यज्ञ करने वाले ही आप तक पहुंच पाते हैं. जिस ने तन नहीं तपाया, वह आप से कुछ (सुखकृपा) नहीं पा सकता. (७)

तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे ऽ र्चन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्.
अवन्त्यस्य पवितारमाशवो दिवः पृष्ठमधि रोहन्ति तेजसा.. (८)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप दुश्मनों को तपाने के लिए स्वर्गलोक में फैले हुए हैं. आप की किरणें चमकीली हैं. ये चमकीली किरणें स्वर्गलोक के पीछे स्थित हैं और यजमानों की रक्षा करती हैं. (८)

अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः.
मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमा दधुः.. (९)

हे सूर्य! आप सभी ग्रहों में सब से प्रमुख हैं. आप प्रकाशित होते हैं. आप सभी लोकों में अपनी किरणें फैलाते हैं तथा सभी भुवनों में अन्न उपजाते हैं. आप की किरणें सब को प्रकाशित करती हैं. ये किरणें अपने गर्भ में जल धारण करती हैं. (९)

छठा खंड

प्र म ं३ हिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे. उपस्तुतासो अग्नये.. (१)

हे यजमानो! आप महान यज्ञ करने वाले हैं. आप अग्नि की उपासना कीजिए. अग्नि महान व तेजस्वी हैं. (१)

आ व ं३ सते मघवा वीरवद्यशः समिद्धो द्युम्न्याहुतः.
कुविन्नो अस्य सुमतिर्भवीयस्यच्छा वाजेभिरागमत्.. (२)

हे अग्नि! आप वीर, यशवान व उत्तम बुद्धि वाले हैं. आप पीढ़ी दर पीढ़ी धन और यश प्रदान करते हैं. आप हम पर कृपा कीजिए. हमें अन्नबल प्रदान कीजिए. (२)

तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृक्षु सासहिम्. उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम्.. (३)

हे इंद्र! आप साहसी, बलशाली एवं इच्छापूरक हैं. आप लोक का भला चाहने वाले व अश्वों से सुशोभित होते हैं. सोमरस पीते ही आप प्रसन्न हो जाते हैं. हम आप के स्वरूप की प्रशंसा करते हैं. (३)

येन ज्योति ष्यायवे मनवे च विवेदिथ. मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि.. (४)

हे इंद्र! आप मनुष्य को दीर्घायु बनाते हैं व मानव के हितकारी हैं. आप ने मनुष्यों के लिए ही कई वस्तुएं प्रकाशित की हैं. आप आइए प्रसन्न होइए. आप कुश के आसन पर विराजने की कृपा कीजिए. (४)

तदद्या चित्त उक्थिनो ऽ नु ष्टुवन्ति पूर्वथा. वृषपत्नीरपो जया दिवेदिवे.. (५)

हे इंद्र! पूर्व से ही आप के यजमान आप की गाथा (यश) गाते हैं. अब भी आप के यश को गाते हैं. आप असुरों पर विजय पाने में हमारी सहायता कीजिए. हम प्रतिदिन आप की स्तुति करते हैं. (५)

श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति.
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि.. (६)

हे इंद्र! आप महान व तिरश्चि ऋषि प्रार्थना करने में लगे हुए हैं. आप उन की प्रार्थना सुनने की कृपा कीजिए. आप हमें श्रेष्ठ वीर्यवान व धनवान बनाइए. (६)

यस्त इन्द्र नवीयसीं गिरं मन्द्रामजीजनत्.
चिकित्विमनसं धियं प्रत्नामृतस्य पिप्युषीम्.. (७)

हे इंद्र! जो यजमान नईनई प्रार्थनाओं से आप की उपासना करते हैं, उन्हें श्रेष्ठ बुद्धि मिलती है. आप उन पर अमृत बरसाते हैं व मन को पवित्र बनाने वाली सोच प्रदान करते हैं. (७)

तमु ष्टवाम यं गिर इन्द्र मुक्थानि वावृधुः.
पुरूण्यस्य पौ स्या सिषासन्तो वनामहे.. (८)

हे इंद्र! बहुत सी प्रार्थनाओं से हम ने आप की उपासना की है और कर रहे हैं. हम स्तोत्रों और मंत्रों से आप का यशगान करते हैं. आप पराक्रमी हैं. हम पूरी निष्ठा के साथ आप की उपासना करते हैं. (८)

पांचवां अध्याय

पहला खंड

प्र त आश्विनीः पवमान धेनवो दिव्या असृग्रन्पयसा धरीमणि.
प्रान्तरिक्षात्स्थाविरीस्ते असृक्षत ये त्वा मृजन्त्यृषिषाण वेधसः.. (१)

हे सोम! आप पवित्र हैं और आप की दुधारू गाएं दिव्य हैं. उन के दूध की धाराएं वेगपूर्वक द्रोणकलश में पहुंचती हैं. ऋषि शुद्ध सोमरस का सेवन करते हैं. अंतरिक्ष से उस की धाराओं को बरतन में पहुंचाते हैं. (१)

उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परि यन्ति केतवः.
यदी पवित्रे अधि मृज्यते हरिः सत्ता नि योनौ कलशेषु सीदति.. (२)

हे सोम! स्थिर स्वभाव वाले आप को जब छाना जाता है तो आप की किरणें चारों ओर फैलती हैं. हरा सोमरस छलनी में छाना जाता है तो वह द्रोणकलश में रहता है. सोम स्थिर रहने के इच्छुक हैं. (२)

विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोष्टे सतः परि यन्ति केतवः.
व्यानशी पवसे सोम धर्मणा पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि.. (३)

हे सोम! आप सर्वद्रष्टा व शक्तिशाली हैं. आप की बड़ीबड़ी किरणें सब ओर व्यापने वाली व प्रकाश फैलाने वाली हैं. आप पवित्र व विश्वपति हैं. आप भुवन में सुशोभित होते हैं. (३)

पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तन्यतुम्. ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत्.. (४)

हे सोम! आप पवित्र हैं. सोम स्वर्गलोक में बिजली जैसा विशाल वैश्वानर नामक तेज उपजाते हैं. (४)

पवमान रसस्तव मदो राजन्नदुच्छुनः. वि वारमव्यमर्षति.. (५)

हे सोम! आप पवित्र व मदकारी हैं. आप का रस राक्षसों के लिए वर्जित है. आप का रस भेड़ के बालों से बनी छलनी में छन कर द्रोणकलश तक पहुंचता है. (५)

पवमानस्य ते रसो दक्षो वि राजति द्युमान्. ज्योतिर्विश्वं स्वर्दृशे.. (६)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप का रस बलवान व चमकीला है. आप सर्वत्र व्याप्त एवं

आप का प्रकाश (ज्योति) सर्वत्र दिखाई देता है. (६)

प्र यद्‌गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः. घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम्.. (७)

हे सोम! आप गायों के समान गतिशील, प्रकाशमान व काली चमड़ी को हटा कर द्रोणकलश में प्रवेश करते हैं. आप की स्तुति की जाती है. (७)

सुवितस्य वनामहे ऽ ति सेतुं दुराय्यम्. साह्याम दस्युमव्रतम्.. (८)

हे सोम! आप सुखद हैं. हम कठिनाई से बंधक बनने वाले राक्षसों के बंधन की प्रार्थना करते हैं. अव्रती (अच्छे काम न करने वाले) के नाश की कामना करते हैं. (८)

शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः. चरन्ति विद्युतो दिवि.. (९)

हे सोम! वर्षा की आवाज के समान शुद्ध किए जाते समय बरतन में गिरती हुई धार से उत्पन्न आप की आवाज सुनाई देती है. आप की शक्तिमान किरणें आकाश में भ्रमण करती हैं. (९)

आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत्. अश्ववत्सोम वीरवत्.. (१०)

हे सोम! आप पवित्र व रसीले हैं. आप हमें गोवान, स्वर्णवान, अश्ववान एवं पुत्रवान बनाइए. आप हमें पौत्रवान बनाइए. (१०)

पवस्व विश्वचर्षण आ मही रोदसी पृण. उषाः सूर्यो न रश्मिभिः.. (११)

हे सोम! आप विश्वद्रष्टा व रसीले हैं. अपने रस से स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को वैसे ही भर दीजिए, जैसे सूर्य अपनी किरणों से सारे संसार को भर देते हैं. (११)

परिणः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः. सरा रसेव विष्टपम्.. (१२)

हे सोम! आप उसी तरह अपनी धाराएं हमारे चारों ओर फैला दीजिए, जिस तरह भूलोक के चारों ओर सुखद जल की धाराएं फैली हुई हैं. (१२)

दूसरा खंड

आशुरर्ष बृहन्मते परि प्रियेण धाम्ना. यत्रा देवा इति ब्रुवन्.. (१)

हे सोम! आप मतिमान (विद्वान्) और देवों के प्रिय हैं. आप अपनी रसधार के साथ शीघ्र आइए. इस यज्ञ में इंद्र आदि देवता हैं. अतः आप इस यज्ञ में अवश्य आइए. (१)

परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः. वृष्टिं दिवः परि स्रव.. (२)

हे सोम! आप अशुद्ध स्थान को शुद्ध करने की कृपा कीजिए. आप यजमान के भरणपोषण हेतु अन्न आदि के लिए वर्षा करने की कृपा कीजिए. (२)

अय ꣳ स यो दिवस्परि रघुयामा पवित्र आ. सिन्धोरूर्मा व्यक्षरत्.. (३)

हे सोम! आप स्वर्गलोक से ऊपर मंथर गति वाले होते हैं. आप को जब छलनी से छाना जाता है तो आप बहुत वेगवान हो कर द्रोणकलश में आ जाते हैं. (३)

सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा. विचक्षाणो विरोचयन्.. (४)

हे सोम! परिष्कृत किए जाते, प्रकाश फैलाते, सब को देखते व ओज धारण करते हुए, आप वेग से छलनी में छन जाते हैं. (४)

आविवासन्परावतो अथो अर्वावतः सुतः. इन्द्राय सिच्यते मधु.. (५)

हे सोम! छानने के बाद आप का रस दूर और पास के देवताओं को भेंट किया जाता है. इंद्र के लिए मधुर सोमरस का सिंचन किया जाता है. (५)

समीचीना अनूषत हरि ꣳ हिन्वन्त्यद्रिभिः. इन्दुमिन्द्राय पीतये.. (६)

उपयुक्त रीति से इकट्ठे हुए उपासक सोम की उपासना करते हैं. इंद्र के पीने के लिए हरे सोम को पत्थरों से कूटा जाता है. (६)

हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम्. महामिन्दुं महीयुवः.. (७)

हे सोम! ये अंगुलियां काम के लिए सब ओर जाने वाली हैं. आपस में बहनों की तरह प्रेम भाव से रहने वाली ये अंगुलियां सोमरस को शुद्ध करती हैं. ये श्रेष्ठ वीर, चेतन व सब के स्वामी सोमरस को निचोड़ती हैं. (७)

पवमान रुचारुचा देव देवेभ्यः सुतः. विश्वा वसून्या विश.. (८)

हे सोम! आप चमकीले व शुद्ध हैं. देवताओं को भेंट करने के लिए आप को छान कर तैयार किया गया है. आप हमें संसार के सारे वैभव दे दीजिए. (८)

आ पवमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः. इषे पवस्व संयतम्.. (९)

हे सोम! आप शुद्ध व प्रशंसा के योग्य हैं. आप अपने रस की वर्षा वैसे ही हम पर करिए, जैसे देवता हमारे लिए अन्न और आशीर्वादों की वर्षा करते हैं. (९)

तीसरा खंड

जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविरग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे.
घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद्वि भाति भरतेभ्यः शुचिः.. (१)

हे अग्नि! आप प्रजा के रक्षक, जाग्रत करने वाले व कुशलता प्रदान करने वाले हैं. आप यजमान को उन्नति के पथ पर अग्रसर करने के लिए प्रकट होते हैं. आप घी की आहुति से प्रज्वलित होते हैं. आप विराट् (असीम) आकाश तक अपनी पहुंच रखते हैं. आप पवित्र व

क्षमतावान हैं. आप स्वर्गलोक को स्पर्श करते हैं तथा यजमानों के कल्याण के लिए प्रकाशित होते हैं. (१)

त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा हितमन्वविन्दञ्छिश्रियाणं वनेवने.
स जायसे मथ्यमानः सहो महत्त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः.. (२)

हे अग्नि! अंगिरस ऋषि ने आप को खोजा. उस से पहले आप छिपे हुए थे. आप वृक्ष और वनस्पति में छिप कर (गुप्त रूप में) रहते हैं. आप को इसीलिए अंगिर (क्षमतावान) कहा जाता है. आप को सामर्थ्य का पुत्र माना जाता है. आप को अरणि मंथन से प्रकट किया जाता है. (२)

यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नरस्त्रिषधस्थे समिन्धते.
इन्द्रेण देवैः सरथ स बर्हिषि सीदन्नि होता यजथाय सुक्रतुः.. (३)

हे अग्नि! आप देवताओं के साथ रथ पर विराजते हैं. आप के रथ पर यज्ञ की पताका फहराती है. यजमान घर, मन और यज्ञ इन तीन स्थानों पर (विशेष रूप से) आप को प्रकट करते हैं. आप श्रेष्ठ कामों में लगे रहते हैं. यज्ञ करने वाले यजमान के लिए आप यज्ञ स्थान में प्रतिष्ठित होते हैं. (३)

अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा. ममेदिह श्रुत हवम्.. (४)

हे मित्र! हे वरुण! आप यज्ञ की बढ़ोतरी करते हैं. विधिवत परिष्कृत किया सोमरस आप दोनों देवों के सेवन के लिए प्रस्तुत है. आप दोनों हमारे इस निवेदन को सुनने की कृपा कीजिए. (४)

राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे. सहस्रस्थूण आशाते.. (५)

हे मित्र! हे वरुण! आप कभी भी परस्पर (आपस में) द्रोह नहीं करते. यज्ञ मंडप हजारों खंभों के सहारे बनाया गया है. वह यज्ञ मंडप स्थिर और सशक्त है. आप दोनों उस यज्ञ मंडप में विराजने की कृपा कीजिए. (५)

ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती. सचेते अनवह्वरम्.. (६)

हे यजमानो! मित्र और वरुण आहुति के रूप में भेंट किए गए घी का ही आहार लेते हैं. दोनों देव सम्राट् हैं, ऐश्वर्य के स्वामी हैं, समान वित्त वाले हैं. वे यजमानों की अनवरत (लगातार) सहायता करते हैं. (६)

इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः. जघान नवतीर्नव.. (७)

इंद्र वैभववान हैं. सभी देवता उन का आदर करते हैं. उन्होंने दधीचि ऋषि द्वारा दान की गई हड्डियों से बने शस्त्र से निन्यानवे शत्रुओं को मारा. (७)

इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम्. तद्विदच्छर्यणावति.. (८)

इंद्र पर्वतपति हैं. बादलों में छिपी अश्वशक्ति को उन्होंने प्रकटाया. आर्यों का विरोध करने वाली शक्तियों को छिन्नविच्छिन्न किया. (८)

अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्. इत्था चन्द्रमसो गृहे.. (९)

हे यजमानो! सूर्य निरंतर गतिमान हैं. वे चंद्रमंडल में भले ही दिखाई न दें परंतु मौजूद रहते हैं. इस प्रकार वे चंद्रमा के घर में रहते हैं. तात्पर्य यह है कि न केवल दिन में बल्कि रात्रि में भी सूर्य की किरणें प्रकाशित रहती हैं. (९)

इयं वामस्य मन्मन इन्द्राग्नी पूर्व्यस्तुतिः. अभ्राद्वृष्टिरिवाजनि.. (१०)

हे अग्नि! हे इंद्र! उत्तम कोटि के विद्वान् आप दोनों देवों की उपासना करते हैं. आप के लिए की गई प्रार्थना वैसे ही सहस्र रूप से (बुद्धि में) उपजती है, जैसे बादलों के भीतर से बरसात उपजती है. (१०)

शृणुतं जरितुर्हवमिन्द्राग्नी वनतं गिरः. ईशाना पिप्यतं धियः.. (११)

हे अग्नि! हे इंद्र! यजमान आप दोनों देवताओं की उपासना व हवि समर्पित करते हैं. आप उसे स्वीकारने की कृपा कीजिए. आप उन की वाणी (पुकार) सुनिए. आप बुद्धि के ईश्वर हैं. आप उन्हें उन की मेहनत का फल प्रदान कीजिए. (११)

मा पापत्वाय नो नरेन्द्राग्नी माभिशस्तये. मा नो रीरधतं निदे.. (१२)

हे अग्नि! हे इंद्र! आप नेता व उन्नतिकारक हैं. आप हमें पाप व मारधाड़ (हिंसा) से बचाइए. आप हमें निंदनीय कार्यों से दूर रखें. (१२)

चौथा खंड

पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे. मरुद्भ्यो वायवे मदः.. (१)

हे सोम! आप दक्ष, साधन संपन्न, उल्लास बढ़ाने वाले व बलवर्द्धक हैं. आप देवताओं के पीने के लिए बढ़ोतरी पाते हैं. आप मरुद्गणों के लिए प्रवाहित होइए. आप वायु के लिए प्रवाहित होइए. (१)

सं देवैः शोभते वृषा कविर्योनावधि प्रियः. पवमानो अदाभ्यः.. (२)

हे सोम! आप कवि, प्रिय, बलवान व देवताओं के बीच शोभायमान होते हैं. आप परिष्कृत हो कर प्रवाहित होइए. (२)

पवमान धिया हितो ३ ऽ भि योनिं कनिक्रदत्. धर्मणा वायुमारुहः.. (३)

हे सोम! बुद्धिपूर्वक आप की प्रतिष्ठा की जाती है. आप हितकारी हैं और आवाज करते हुए द्रोणकलश में प्रवेश करते हैं. आप वायु के साथ कलश में स्थापित होइए. (३)

तवाह सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे.
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधी रति ताँ इहि.. (४)

हे सोम! आप प्रकाशमान हैं. हम प्रतिदिन आप से मित्रता करने के लिए इच्छुक रहते हैं. आप उन सभी का नाश कीजिए, जो हमें सताते हैं. (४)

तवाहं नक्तमुत सोम ते दिवा दुहानो बभ्र ऊधनि.
घृणा तपन्तमति सूर्यं परः शकुना इव पप्तिम.. (५)

हे सोम! आप चमकते हैं. आप उजले हैं. हमें दिनरात आप का साहचर्य प्राप्त हो. दूर से ही चमचमाते सूर्य की तरह आप को भी दूर से देखा जा सकता है. आप पक्षियों की भांति गतिशील हैं. (५)

पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः. शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः.. (६)

हे सोम! ब्राह्मण बुद्धिपूर्वक की गई प्रार्थनाओं से आप की उपासना करते हैं. आप पवित्र, विलक्षण व सर्वद्रष्टा हैं. (६)

आ योनिमरुणो रुहद्गमदिन्द्रो वृषा सुतम्. ध्रुवे सदसि सीदतु.. (७)

सोमरस अरुण (गुलाबी) आभा वाला है. वह इंद्र के लिए द्रोणकलश में स्थापित किया जा रहा है. वह इंद्र को बलवान बनाता है. इंद्र उस सोमरस को पीने के लिए सदन में श्रेष्ठ स्थान पर प्रतिष्ठित हों. (७)

नू नो रयिं महामिन्दो ऽस्मभ्य सोम विश्वतः. आ पवस्व सहस्रिणम्.. (८)

हे सोम! आप तृप्तिकारक हैं. आप हजार धाराओं से झरिए. आप सभी ओर से सब प्रकार का वैभव हमें प्रदान करने की कृपा कीजिए. (८)

पांचवां खंड

पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः.
सोतुर्बाहुभ्या सुयतो नार्वा.. (१)

हे इंद्र! यजमान अपने दोनों हाथों से पत्थरों से कूटकूट कर सोमरस निकालते हैं. आप उस सोमरस को पी कर आनंदित हों. आप इसे पीजिए. आप अश्वों के स्वामी हैं. आप हमें भी अश्व जैसा बल प्रदान कीजिए. (१)

यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व ह सि.
स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु.. (२)

हे इंद्र! आप अश्वों के स्वामी व ऐश्वर्यशाली हैं. आप सोमरस पी कर प्रसन्न होइए. आप अपने सुंदर घोड़ों को रथ में जोतिए. आप प्रसन्न हो कर हमारे शत्रुओं का नाश कीजिए. हे

इंद्र! आप हमें भी मदमस्त व प्रभावशाली बनाइए. (२)

बोधा सु मे मघवन्वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम्.
इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व.. (३)

हे इंद्र! आप धन के स्वामी हैं. आप यजमान की इस वाणी को सुनिए. वसिष्ठ ऋषि प्रशस्ति गान कर के आप की अर्चना कर रहे हैं. आप उन की प्रार्थना, ब्रह्मवाणी और हवि को स्वीकारिए. (३)

विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरः सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे.
क्रत्वे वरे स्थेमन्यामुरीमुतोग्रमोजिष्ठं तरसं तरस्विनम्.. (४)

हे इंद्र! सभी आप का महत्त्व स्वीकारते हैं. सब आप की उपासना करते हैं. आप ने अपने बल से दुश्मनों का नाश किया. आप ने अपने श्रेष्ठ कर्मों से उच्चा पदवी पाई. आप की महिमा गाने वाले की सामर्थ्य शक्ति बढ़ती है. आप बहुत जल्दी कार्य करते हैं. आप जल्दी हमारी इच्छा पूरी करिए. (४)

नेमिं नमन्ति चक्षसा मेषं विप्रा अभिस्वरे.
सुदीतयो वो अद्रुहो ऽ पि कर्णे तरस्विनः समृक्वभिः.. (५)

हे इंद्र! आप पराक्रमी हैं. ब्राह्मण विनम्र स्वर में आप की प्रार्थना कर रहे हैं. आप के उपासक विनम्र हैं. हम आंख बंद कर व झुक कर आप को नमन करते हैं. हे उपासको! आप किसी से ईर्ष्याद्रोह मत कीजिए. आप कानों को सुहावनी लगने वाली प्रार्थनाएं इंद्र के लिए गाइए. (५)

समु रेभासो अस्वरन्निन्द्र ꣳ सोमस्य पीतये.
स्वः पतिर्यदी वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः.. (६)

हे इंद्र! आप संकल्पशील, सोमरस पीने वाले, बलवान, ऐश्वर्यशाली हैं. आप यजमान को भी महिमावान बनाने के इच्छुक हैं. यजमान इंद्र की विधिवत उपासना करते हैं. (६)

यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः.
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठं यो वृत्रहा गृणे.. (७)

इंद्र राजा हैं. वे अपने रथ से तेज गति से प्रस्थान करते हैं. वे वृत्रहंता हैं. वे यजमानों के विश्वास की रक्षा करते हैं, वे ज्येष्ठ हैं. हम उन का गुणगान करते हैं. (७)

इन्द्रं त ꣳ सि शुम्भ पुरुहन्मन्नवसे यस्य द्विता विधर्त्तरि.
हस्तेन वज्रः प्रति धायि दर्शतो महाँ देवो न सूर्यः.. (८)

हे यजमानो! इंद्र वज्रधारी, देखने में सुंदर व सूर्य जैसे तेजस्वी हैं. उन में द्विधा (दोहरी) शक्ति है. वे देवों की रक्षा, राक्षसों का नाश व हमें संरक्षण प्रदान करते हैं. हम सभी को उन

की उपासना करनी चाहिए. (८)

छठा खंड

परि प्रिया दिवः कविर्वया सि नप्त्योर्हितः. स्वानैर्याति कविक्रतुः.. (१)

हे सोम! आप प्रिय, कवि, हितकारी हैं और लकड़ी की वेदी पर प्रतिष्ठित हैं. आप दीर्घायु दाता हैं. यज्ञ में आप का दिव्य रस अध्वर्यु (पुरोहित) की कृपा से प्राप्त होता है. (१)

स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत्. महान्मही ऋतावृधा.. (२)

हे सोम! आप सुपुत्र हैं. पृथ्वी आप की माता व अंतरिक्ष आप के पिता हैं. आप अपने मातापिता को सुशोभित करते हैं और ऋत् (सत्य) से बढ़ोतरी पाते हैं. (२)

प्रप्र क्षयाय पन्यसे जनाय जुष्टो अद्रुहः. वीत्यर्ष पनिष्टये.. (३)

हे सोम! आप उपासना के योग्य हैं. यजमान आप की स्थिरता का प्रयास करते हैं. जो मनुष्य द्वेष रहित हैं और जो आप का गुणगान करते हैं, उन को आप पोषक आहार के रूप में प्राप्त होते हैं. (३)

त्व ह्मा ३ ङ्ग दैव्य पवमान जनिमानि द्युमत्तमः. अमृतत्वाय घोषयन्.. (४)

हे सोम! आप दिव्य, पवित्र और उत्तम हैं. आप की अमरता की घोषणा करते हुए यजमान उपासना करते हैं. (४)

येना नवग्वा दध्यङ्ङपोर्णुते येन विप्रास आपिरे.
देवाना सुम्ने अमृतस्य चारुणो येन श्रवा स्याशत.. (५)

हे सूर्य! आप की किरणें नई हैं. सोमरस भी नए कामों में लगाते हैं, जिस से (सोम से) ब्राह्मणगण प्रचुर धन पाते हैं, जिस से यजमानों को अन्न मिलता है. सोम अच्छे मन वाले हैं. सुंदर सोम से देवों को भी अमृत प्राप्त होता है. (५)

सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं वि धावति. अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत्.. (६)

हे सोम! आप पवित्र, लहरदार व अग्रगामी हैं. यजमान वाणी से आप को और पवित्र बनाते हैं. आप दौड़ते और आवाज करते हुए द्रोणकलश में जाते हैं. (६)

धीभिर्मृजन्ति वाजिनं वने क्रीडन्तमत्यविम्. अभि त्रिपृष्ठं मतयः समस्वरन्.. (७)

यजमान बलवान सोमरस को बुद्धिपूर्वक परिष्कृत करते हैं. सोम वन में क्रीड़ा करते हैं. समान स्वर में (एक साथ) बुद्धिपूर्वक प्रार्थना गा कर यजमान तीन बरतनों में रखे सोमरस की उपासना करते हैं. (७)

असर्जि कलशाँ अभि मीढ्वांत्सप्तिर्न वाजयुः. पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत्.. (८)

हे सोम! आप पोषक हैं और जल में मिल कर रहते हैं. युद्ध में जाते हुए घोड़े जैसे आवाज करते हैं, वैसे ही सोम आवाज करते हुए तेजी से द्रोणकलश में जाते हैं. (८)

सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः.
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः.. (९)

सोम स्वर्गलोक, पृथ्वीलोक, अग्नि, सूर्य, इंद्र व विष्णु के जनक हैं. सोम को परिष्कृत किया जा रहा है. (१)

ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्.
श्येनो गृध्राणा ꣳ स्वधितिर्वनाना ꣳ सोमः पवित्रमत्येति रेभन्.. (१०)

सोम ब्रह्मज्ञानी, देवताओं, कवियों, ऋषियों, पशुओं, मृगों, बाज, गृध्रों व वनस्पतियों में व्याप्त हैं. सोम आवाज करता हुआ द्रोणकलश में जाता है. (१०)

प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं न सिन्धुर्गिर स्तोमान्पवमानो मनीषाः.
अन्तः पश्यन्वृजनेमावराण्या तिष्ठति वृषभो गोषु जानन्.. (११)

हे सोम! आप की आवाज समुद्र की लहरों की भांति कर्णप्रिय है. आप अंतर्यामी व अंतर्दृष्टि वाले हैं. आप की क्षमता असीम है तथा वह कभी समाप्त नहीं होती है. बैल जैसे गायों के पास जाता है, वैसे ही आप द्रोणकलश में जाते हैं. (११)

सातवां खंड

अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्. अच्छा नप्त्रे सहस्वते.. (१)

हे यजमानो! अग्नि अकूत शक्ति के भंडार हैं. वह बढ़ोतरी करने वाले व श्रेष्ठतम हैं. आप सभी अग्नि के निकट पहुंचिए. (१)

अयं यथा न आभुवत्त्वष्टा रूपेव तक्ष्या. अस्य क्रत्वा यशस्वतः.. (२)

हे यजमानो! त्वष्टा (बढ़ई) जैसे लकड़ी को रूप (आकार) प्रदान करते हैं, तदवत (उसी प्रकार) अग्नि हमें यश और स्वरूप प्रदान करते हैं. (२)

अयं विश्वा अभिश्रियो ऽ ग्निर्देवेषु पत्यते. आ वाजैरुप नो गमत्.. (३)

हे अग्नि! आप सभी सुख व देवताओं को भी संरक्षण प्रदान करते हैं. आप अन्नबल के साथ हमारे समीप पधारने की कृपा कीजिए. (३)

इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम्. शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन्धारा ऋतस्य सादने.. (४)

हे इंद्र! यज्ञ में सोमरस की मददायी बड़ीबड़ी चमकीली धाराएं झर रही हैं. आप यज्ञ सदन में पधारिए और सोमरस को पीजिए. (४)

न किष्ट्वद्रथीतरो हरी यदिन्द्र यच्छसे.
न किष्ट्वानु मज्मना न किः स्वश्व आनशे.. (५)

हे इंद्र! आप जैसा कोई अन्य वीर है ही नहीं, न ही आप जैसा कोई घोड़ों का पालनहार, न ही घोड़ों का स्वामी, न ही आप जैसा कोई बलवान है. आप घोड़ों से चलने वाले रथ में विराजते हैं. (५)

इन्द्राय नूनमर्चतोक्थानि च ब्रवीतन. सुता अमत्सुरिन्दवो ज्येष्ठं नमस्यता सहः.. (६)

हे यजमानो! आप निश्चित रूप से इंद्र की ही पूजा कीजिए. आप उन के लिए प्रार्थना गाइए. इंद्र देवों में ज्येष्ठ (बड़े) हैं. आप अपने पुत्रों सहित उन्हें नमन कीजिए. (६)

इन्द्र जुषस्व प्र वहा याहि शूर हरिह.
पिबा सुतस्य मतिर्न मधोश्चकानश्चारुर्मदाय.. (७)

हे इंद्र! आप शूरवीर व घोड़ों के स्वामी हैं. आप आइए. आप के पुत्र (यजमान) आप को प्रसन्न करने के लिए सोमरस भेंट कर रहे हैं. आप उस मधुर सोमरस को पीने की कृपा कीजिए. (७)

इन्द्र जठरं नव्यं न पृणस्व मधोर्दिवो न.
अस्य सुतस्य स्वा ३ र्नोप त्वा मदाः सुवाचो अस्थुः.. (८)

हे इंद्र! आप जैसे अपने दिव्यलोक में अपने पुत्रों की प्रार्थनाओं को सुन कर प्रसन्न होते हैं, वैसे ही आप मधुर दिव्य सोमरस को पी कर प्रसन्न होने की कृपा कीजिए. (८)

इन्द्रस्तुराषाण्मित्रो न जघान वृत्रं यतिर्न.
बिभेद वलं भृगुर्न ससाहे शत्रून्मदे सोमस्य.. (९)

हे इंद्र! आप दुश्मनों के नाशक व शत्रुजित् हैं. भृगु ऋषि ने जिस प्रकार वल राक्षस को मार गिराया, उसी प्रकार सोमरस पान से ऊर्जस्वी हो कर आप भी हमारे शत्रुओं को मार गिराएं. (९)

छठा अध्याय

पहला खंड

गोवित्पवस्व वसुविद्धिरण्यविद्रेतोधा इन्दो भुवनेष्वर्पितः.
त्व सुवीरो असि सोम विश्ववित्तं त्वा नर उप गिरेम आसते.. (१)

हे सोम! आप गौ दूध मिश्रित, पवित्र, सर्वज्ञाता, श्रेष्ठ पथ पर जाने वाले व सभी लोकों में व्याप्त हैं. सभी उपासक आप की उपासना करते हैं. (१)

त्वं नृचक्षा असि सोम विश्वतः पवमान वृषभ ता वि धावसि.
स नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवद्वय स्याम भुवनेषु जीवसे.. (२)

हे सोम! आप पवित्र, स्फूर्तिदायी, सर्वव्यापक व सर्वज्ञाता हैं. आप दौड़ते हुए हमारे पास पधारिए. आप हमें धनवान बनाइए. आप की कृपा से हम सभी लोकों में श्रेष्ठ जीवन जीएं. (२)

ईशान इमा भुवनानि ईयसे युजान इन्दो हरितः सुपर्ण्यः.
तास्ते क्षरन्तु मधुमद्घृतं पयस्तव व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः.. (३)

हे सोम! आप सभी लोकों के ईश्वर, हरे, सर्वत्र व्याप्त एवं मधुरता युक्त हैं. आप के रस की धार निरंतर झरे. आप की कृपा से यजमान अपने व्रत (संकल्पों) को पूरा करने में लगे रहें. (३)

पवमानस्य विश्ववित्प्र ते सर्गा असृक्षत. सूर्यस्येव न रश्मयः.. (४)

हे सोम! आप पवित्र व सर्वज्ञाता हैं. सूर्य की तरह आप की किरणें (रश्मियां) स्वर्ग से फैल रही हैं. (४)

केतुं कृण्वन्दिवस्परि विश्वा रूपाभ्यर्षसि. समुद्रः सोम पिन्वसे.. (५)

हे सोम! आप सर्वव्यापक और स्वर्गलोक के ऊपर किरणों के रूप में व्याप्त हैं. आप बरसात के रूप में पानी बरसा कर हमें संपन्नता देते हैं. (५)

जज्ञानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि. क्रन्दन्देवो न सूर्यः.. (६)

हे सोम! आप सूर्य जैसे दीप्तिमान हैं. आप वाणी से पवित्रता को प्राप्त होते हैं. आप आवाज करते हुए द्रोणकलश में जाते हैं. (६)

प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः. श्रीणाना अप्सु वृञ्जते.. (७)

हे सोम! आप पवित्र व शीतल हैं. आप जल के साथ द्रोणकलश में परस्पर मिश्रित हो रहे हैं. (७)

अभि गावो अधन्विषुरापो न प्रवता यतीः. पुनाना इन्द्रमाशत.. (८)

हे इंद्र! आप के भक्षण (पीने) के लिए सोमरस नीचे बरतन में शुद्ध हो कर पहुंच रहा है. (८)

प्र पवमान धन्वसि सोमेन्द्राय मादनः. नृभिर्यतो वि नीयसे.. (९)

हे सोम! आप पवित्र व इंद्र के लिए आनंददायी हैं. यजमान द्वारा आप निर्धारित स्थान तक ले जाए जा रहे हैं. (९)

इन्दो यदद्रिभिः सुतः पवित्रं परिदीयसे. अरमिन्द्रस्य धाम्ने.. (१०)

हे इंद्र! सोमरस आप के पीने योग्य हो गया है. इसे पत्थरों से कूट कर निचोड़ा गया एवं छलनी (भेड़ों के बालों से बनी) से छाना गया है. (१०)

तव ꣳ सोम नृमादनः पवस्व चर्षणीधृतिः. सस्निर्यो अनुमाद्यः.. (११)

हे सोम! आप पवित्र व मनुष्यों के लिए मददायी हैं. आप परिष्कृति (शुद्धता) के बाद यजमान द्वारा (देवों को चढ़ाने के लिए) धारण किए जाते हैं. (११)

पवस्व वृत्रहतम उक्थेभिरनुमाद्यः. शुचिः पावको अद्भुतः.. (१२)

हे सोम! आप पवित्र व विलक्षण हैं. आप वृत्रहंता के लिए स्तुतियों से शुद्धता और पवित्रता को प्राप्त होते हैं. (१२)

शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतः स मधुमान्. देवावीरघश ꣳ सहा.. (१३)

हे सोम! आप पवित्र, शुद्ध व मधुरता से युक्त हैं. आप देवों को आनंदित करने वाले हैं. आप को देवों का पुत्र कहा गया है. (१३)

दूसरा खंड

प्र कविर्देववीतये ऽ व्या वारेभिरव्यत. साह्वान्विश्वा अभि स्पृधः.. (१)

हे सोम! आप कवि हैं. आप को देवताओं के लिए परिष्कृत किया जाता है. आप सभी शत्रुओं से स्पर्धा करने वाले हैं. (१)

स हि ष्मा जरितृभ्य आ वाजं गोमन्तमिन्वति. पवमानः सहस्रिणम्.. (२)

हे सोम! आप सहस्रों पवित्र धाराओं से झरते हैं. आप उपासकों को गोवान और

धनवान बनाते हैं. (२)

परि विश्वानि चेतसा मृज्यसे पवसे मती. स नः सोम श्रवो विदः.. (३)

हे सोम! आप सर्वज्ञाता हैं. आप विश्व को चेतनामय बनाते हैं. आप को बुद्धिपूर्वक परिष्कृत किया जाता है. आप हमारी स्तुतियों को सुनने की कृपा कीजिए. (३)

अभ्यर्ष बृहद्यशो मघवद्भ्यो ध्रुव रयिम्. इष स्तोतृभ्य आ भर.. (४)

हे सोम! आप विशाल व यशस्वी हैं. आप स्तोताओं को अन्नवान और धनवान बनाने की कृपा कीजिए. (४)

त्व राजेव सुव्रतो गिरः सोमा विवेशिथ. पुनानो वह्ने अद्भुत.. (५)

हे सोम! आप राजा के समान, अच्छे व्रत संकल्प वाले, विलक्षण व पवित्र मन वाले हैं. यजमान की वाणी को आप सुनने और स्वीकारने की कृपा कीजिए. (५)

स वह्निरप्सु दुष्टरो मृज्यमानो गभस्त्योः. सोमश्चमूषु सीदति.. (६)

हे सोम! आप जलमय व तेजस्वी हैं. आप परिष्कृत किए जाते हुए द्रोणकलश में जा कर बैठ जाते हैं. (६)

क्रीडुर्मखो न म हयुः पवित्रं सोम गच्छसि. दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम्.. (७)

हे सोम! आप पवित्र व महान हैं. आप यज्ञ की तरह दूसरों का हित करने वाले हैं. आप यजमान के लिए श्रेष्ठ वीर्य धारण करते हैं. आप उपासकों की उपासना तक पहुंचते हैं. (७)

यवंयवं नो अन्धसा पुष्टंपुष्टं परि स्रव. विश्वा च सोम सौभगा.. (८)

हे सोम! आप हमें बारबार पुष्टातिपुष्ट (अधिक पुष्ट) बनाने के लिए झरिए. आप हमें सारे वैभवों से सौभाग्यवान बनाने की कृपा कीजिए. (८)

इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः. नि बर्हिषि प्रिये सदः.. (९)

हे सोम! यजमान जिस भावना से आप की स्तुति करते हैं, आप भी उसी प्रिय भावना से यज्ञ में कुश के आसन पर विराजने की कृपा कीजिए. (९)

उत नो गोविदश्ववित्पवस्व सोमान्धसा. मक्षूतमेभिरहभिः.. (१०)

हे सोम! आप हमें गोवान व अश्ववान बनाइए. आप हमें अकूत वैभव प्रदान कीजिए. (१०)

यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्य. स पवस्व सहस्रजित्.. (११)

हे सोम! आप से डर कर शत्रु नष्ट हो जाते हैं. आप हजारों शत्रुओं को जीतने वाले हैं. हम पवित्र सोम की स्तुति करते हैं. (११)

यास्ते धारा मधुश्चुतो ऽ सृग्रमिन्द ऊतये. ताभिः पवित्रमासदः.. (१२)

हे सोम! आप की वे पवित्र धाराएं हमें संरक्षण प्रदान करने वाली हैं. आप उन के साथ यहां पधारिए. (१२)

सो अर्षेन्द्राय पीतये तिरो वाराण्यव्यया. सीदन्नृतस्य योनिमा.. (१३)

हे सोम! आप को इंद्र की तृप्ति के लिए छलनी से छान कर तैयार किया जाता है. आप यज्ञ में अपने स्थान पर विराजने की कृपा कीजिए. (१३)

त्व ꣳ सोम परि स्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः. वरिवोविद्धृतं पयः.. (१४)

हे सोम! आप स्वादिष्ट हैं. आप अंगिरा आदि ऋषियों के लिए पौष्टिक पदार्थ प्रदान करने की कृपा कीजिए. (१४)

तीसरा खंड

तव श्रियो वर्ष्यस्येव विद्युतो ऽ ग्नेश्चिकित्र उषसामिवेतयः.
यदोषधीरभिसृष्टो वनानि च परि स्वयं चिनुषे अन्नमासनि.. (१)

हे अग्नि! जब हम अन्न और वनस्पतियों को आप के मुंह में डालते हैं, उस समय आप की लपटें वर्षा के समय चमकने वाली बिजली और उषा के प्रकाश की तरह दृष्टिगोचर होती हैं. (१)

वातोपजूत इषितो वशाँ अनु तृषु यदन्ना वेविषद्वितिष्ठसे.
आ ते यतन्ते रथ्यो ३ यथा पृथक् शर्धा ꣳ स्यग्ने अजरस्य धक्षतः.. (२)

हे अग्नि! हवा से हिलने पर आप वनस्पतियों के पीछे जा कर उसे चारों ओर से आवृत्त कर (घेर) लेते हैं, उस समय आप को बढ़ते हुए देख कर ऐसा लगता है—मानो रथ पर चढ़ कर कोई शूरवीर सब कुछ नष्ट (शत्रुओं का) करने के लिए आगे बढ़ रहा हो. (२)

मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनमग्नि ꣳ होतारं परिभूतरं मतिम्.
त्वामर्भस्य हविषः समानमित्त्वां महो वृणते नान्यं त्वत्.. (३)

हे अग्नि! आप बुद्धि को बढ़ाते हैं. आप यज्ञ के प्रसाधन (शृंगार) हैं. आप विशाल आकार के हैं. हम होता हवि स्वीकार करने के लिए एक स्वर से आप के अलावा किसी और का आह्वान नहीं कर रहे हैं. (३)

पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो नूनं वां वरुण. मित्र व ꣳ सि वा ꣳ सुमतिम्.. (४)

हे सूर्य! हे वरुण! आप पर्याप्त साधनों वाले हैं. आप अपनी सुमति हमें प्राप्त कराने की कृपा कीजिए. हम आप के मित्र हो जाएं. (४)

ता वा ं३ सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धाम च. वयं वां मित्रा स्याम.. (५)

हे सूर्य! हे वरुण! आप दोनों देव अद्वेषी हैं. हम आप की सम्यक् रूप से उपासना करते हैं. हम आप दोनों के मित्र हो जाएं. (५)

पातं नो मित्रा पायुभिरुत त्रायेथा ं३ सुत्रात्रा. साह्याम दस्यून् तनूभिः.. (६)

हे मित्र! हे वरुण! आप अपने रक्षासाधनों से हमारी रक्षा कीजिए. आप की कृपा से हम अपने शरीर द्वारा शत्रुओं को नष्ट कर सकें. (६)

उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वा शिप्रे अवेपयः. सोममिन्द्र चमू सुतम्.. (७)

हे इंद्र! आप ओज के साथ उठिए. आप अपनी ठोड़ी को ऊपर उठाइए. आप युद्ध में स्फूर्ति दिखाने के लिए इस सोमरस को पीजिए. (७)

अनु त्वा रोदसी उभे स्पर्धमान मदेताम्. इन्द्र यद्दस्युहाभवः.. (८)

हे इंद्र! आप स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक दोनों के लिए आनंददायी हैं. आप दस्युओं के प्रति प्रतिस्पर्धा रखते हैं. आप दस्युओं का नाश करते हैं. (८)

वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतावृधम्. इन्द्रात्परितन्वं ममे.. (९)

हे इंद्र! अमृत की बढ़ोतरी करने वाली नई कल्पनाओं से परिपूर्ण, आठ पदों वाली स्तुति स्वीकार करने की कृपा कीजिए. (९)

इन्द्राग्नी युवामिमे ३ ऽ भि स्तोमा अनूषत. पिबत ं३ शम्भुवा सुतम्.. (१०)

हे इंद्र! हे अग्नि! हम यजमान आप दोनों देवताओं की उपासना करते हैं. आप दोनों सोमरस पीजिए. (१०)

या वा ं३ सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषेः नरा. इन्द्राग्नी ताभिरा गतम्.. (११)

हे इंद्र! हे अग्नि! यजमान की आप के प्रति स्पृहा (चाहना) है. आप शीघ्र ही हवि पाने के लिए अपने गतिशील साधनों से हमारे पास पधारने की कृपा कीजिए और दान देने वालों की सहायता कीजिए. (११)

ताभिरा गच्छतं नरोपेद ं३ सवन ं३ सुतम्. इन्द्राग्नी सोमपीतये.. (१२)

हे इंद्र! हे अग्नि! आप अपने उन गतिशील साधनों से मनुष्यों के पास पधारने की कृपा कीजिए. आप दोनों सोमरस पीने के लिए पधारिए. (१२)

चौथा खंड

अर्षा सोम द्युमत्तमो ऽ भि द्रोणानि रोरुवत्. सीदन्योनौ वनेष्वा.. (१)

हे सोम! आप वन में विराजमान रहते हैं. आप द्युतिमान हैं. आप आवाज करते हुए द्रोणकलश में जाते हैं. (१)

अप्सा इन्द्राय वायसे वरुणाय वरुद्भ्यः. सोमा अर्षन्तु विष्णवे.. (२)

हे सोम! आप इंद्र, वायु, वरुण, मरुद्गणों, विष्णु के लिए जल में मिश्रित होने की कृपा कीजिए. (२)

इषं तोकाय नो दधदस्मभ्य सोम विश्वतः. आ पवस्व सहस्रिणम्.. (३)

हे सोम! आप हमारे लिए सभी प्रकार के वैभव सभी ओर से प्रदान कीजिए. आप हजारों धाराओं से झरने की कृपा कीजिए. (३)

सोम उ ष्वाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम्.
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया.. (४)

हे सोम! यजमान आप को निचोड़ कर परिष्कृत करते हैं. आप घोड़े की तरह गतिशील धारा से द्रोणकलश में जाते हैं. आप मंद गति से द्रोणकलश में जाते हैं. (४)

अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः.
समुद्रं न संवरणान्यग्मन्मन्दी मदाय तोशते.. (५)

हे सोम! नदियां जैसे समुद्र का वरण कर के स्थिर होती हैं, उसी प्रकार सोमरस द्रोणकलश में पहुंच कर स्थिर हो रहा है. सोमरस अनुपम, गो से युक्त, आनंददायी व पोषक है. (५)

यत्सोम चित्रमुक्थ्यं दिव्यं पार्थिवं वसु. तन्नः पुनान आ भर.. (६)

हे सोम! आप दिव्य व अद्भुत हैं. पृथ्वी पर जो भी ऐश्वर्य है, वह सब आप हमें प्राप्त कराने की कृपा कीजिए. (६)

वृषा पुनान आयु षि स्तनयन्नधि बर्हिषि. हरिः सन्योनिमासदः.. (७)

हे सोम! आप हरे व पवित्र हैं. आप आवाज करते हुए श्रेष्ठ योनि (स्थान) में कुश के आसन पर विराजमान होइए. (७)

युव हि स्थः स्वःपती इन्द्रश्च सोम गोपती. ईशाना पिप्यतं धियः.. (८)

हे इंद्र! हे सोम! आप देव वैभव के स्वामी हैं. आप गोपति (स्वामी) व बुद्धि के रक्षक हैं. आप हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ कर्मों में (राहों में) लगाने की कृपा कीजिए. (८)

पांचवां खंड

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः.

तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नो ऽ विषत्.. (१)

हे इंद्र! आप मददाता व वृत्रनाशक हैं. आप अपने रक्षा साधनों से हमें बलवान बना सकते हैं. हम आप से उन रक्षा साधनों सहित युद्धों में अपनी रक्षा करने का अनुरोध करते हैं. आप हमारी रक्षा करने की कृपा कीजिए. (१)

असि हि वीर सेन्यो ऽ सि भूरि पराददिः.
असि दभ्रस्य चिद्वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वसु.. (२)

हे इंद्र! आप वीर सैनिक हैं. आप शत्रुओं की समृद्धि (वैभव) का नाश कीजिए. आप धनदाता हैं. आप यजमानों को वैभव प्रदान करने की कृपा कीजिए. (२)

यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम्.
युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कꣳ हनः कं वसौ दधो ऽ स्माँ इन्द्र वसौ दधः.. (३)

हे इंद्र! आप की कृपा से अपार समृद्धि मिलती है. आप अपने रथ में घोड़े जोत कर, किस को मारना है और किस को नहीं, यह सोचते हुए हमें धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (३)

स्वादोरित्था विषूवतो मधोः पिबन्ति गौर्यः.
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभथा वस्वीरनु स्वराज्यम्.. (४)

हे इंद्र! सूर्य की किरणें सुस्वादु और मीठे सोमरस को पीती हैं. सूर्य की ये किरणें आप के पास सुशोभित होती हैं अर्थात् अपने ही राज्य में निवास करती हैं. (४)

ता अस्य पृशनायुवः सोमꣳ श्रीणन्ति पृश्नयः.
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रꣳ हिन्वन्ति सायकं वस्वीरनु स्वराज्यम्.. (५)

हे इंद्र! सूर्य की बहुरंगी किरणें आप को छूती हैं. ये किरणें आप को प्रिय हैं और ये आप के वज्र को प्रेरित करती हैं. ये इंद्र की गायों को भी प्रिय हैं. ये स्वराज्य में ही स्थित रहती हैं. (५)

ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः.
व्रतान्यस्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम्.. (६)

हे इंद्र! सूर्य की किरणें ज्ञानमय हैं. ये आप को नमन करती हैं. ये जाग्रत करने वाली हैं. ये इंद्र को उन के पहले (किए गए) के कार्यों को याद दिलाती हैं. ये किरणें स्वराज्य में ही स्थित रहती हैं. (६)

छठा खंड

असाव्यꣳ शुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः. श्येनो न योनिमासदत्.. (१)

हे सोम! आप दक्ष, पर्वतवासी व प्रचुर (अधिक) वैभवदाता हैं. आप जल में मिश्रित हो जाते हैं. आप बाज पक्षी की भांति वेग से बरतन में प्रवेश करते हैं. (१)

शुभ्रमन्धो देववातमप्सु धौतं नृभिः सुतम्. स्वदन्ति गावः पयोभिः.. (२)

हे सोम! आप शुभ्र हैं और यजमानों द्वारा निचोड़े जाते हैं. आप को श्रेष्ठ जल में मिलाया जाता है. गाएं अपने दूध को सोमरस में मिलाती हैं. अपने दूध से वे गाएं इस को और अधिक स्वादमय बना देती हैं. (२)

आदीमश्वं न हेतारमशूशुभन्नमृताय. मधो रस सधमादे.. (३)

हे सोम! घोड़े जैसे फुर्तीले आप को यजमान (होता) यज्ञस्थल पर प्रतिष्ठापित करते हैं. यजमान आप से अमरता की चाह रखते हैं. (३)

अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुम्. वि कोशं मध्यमं युव.. (४)

हे सोम! आप वन की उपज (वनस्पति) के स्वामी हैं. आप हमें ऐसा वैभव प्रदान करने की कृपा कीजिए, जिसे पाने के लिए देवगण भी इच्छुक हों. आप यज्ञशाला के बीचोबीच श्रेष्ठ स्थान पर प्रतिष्ठित होने की कृपा कीजिए. (४)

आ वच्यस्व सुदक्ष चम्वोः सुतो विशां वह्निर्न विशपतिः.
वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपो जिन्वन् गविष्टये धियः.. (५)

हे सोम! आप बुद्धिमान हैं. आप यजमान को भी ऐसी बुद्धि देते हैं, जिस से वे उपयुक्त मार्ग पर जा सकें. आप राजा की भांति सब का भरणपोषण करते हैं. आप स्वर्गलोक से होने वाली वर्षा की तरह बरसिए (प्रवाहित होइए). आप द्रोणकलश में स्थापित होने की कृपा कीजिए. (५)

प्राणा शिशुर्महीना हिन्वन्नृतस्य दीधितिम्. विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता.. (६)

हे सोम! आप दिव्य जल से पैदा होते हैं. आप यज्ञ को प्रकाशित करते हैं. आप अपने रस को प्रेरित करने की कृपा कीजिए. सब आप को चाहते हैं. आप हवि को ग्रहण करने की कृपा कीजिए. आप पृथ्वीलोक व स्वर्गलोक (अंतरिक्षलोक) को प्रकाशित कीजिए. (६)

उप त्रितस्य पाष्यो ३ रभक्त यद्गु पदम्. यज्ञस्य सप्त धामभिरध प्रियम्.. (७)

हे सोम! आप त्रित (महान ऋषि) की गुफा के समीप प्राप्त होते हैं. आप चट्टान की भांति कठोर दो फलकों के बीच से प्राप्त होते हैं. यजमान गायत्री छंद में मंत्र रच कर आप की उपासना करते हैं. (७)

त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वैरयद्रयिम्. मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः.. (८)

हे सोम! आप तीनों भुवनों व तीनों सवनों में व्याप्त हैं. आप अपनी धारा से इंद्र को प्रेरित कीजिए. श्रेष्ठकर्मा (कर्म वाले) यजमान श्रेष्ठ स्तोत्रों से आप की उपासना और गुणगान

करते हैं. (८)

पवस्य वाजसातये पवित्रे धारया सुतः.
इन्द्राय सोम विष्णवे देवेभ्यो मधुमत्तरः.. (९)

हे सोम! आप रसीले हैं. आप अपनी मधुर धारा से इंद्र, विष्णु व सभी देवों को तृप्त कीजिए. आप द्रोणकलश में प्रवाहित होने की कृपा कीजिए. (९)

त्वा ईं रिहन्ति धीतयो हरिं पवित्रे अद्रुहः.
वत्सं जातं न मातरः पवमान विधर्मणि.. (१०)

हे सोम! आप हरी कांति वाले हैं. यजमान की अंगुलियां आपस में द्वेष नहीं रखती हैं. वे आपस में सहयोग कर के आप का रस निचोड़ती हैं. आप को उसी तरह साफ करती हैं, जैसे गाय नवजात (तुरंत उत्पन्न हुए) बछड़े को चाट कर साफ करती है. (१०)

त्वं द्यां च महिव्रत पृथिवीं चाति जभ्रिषे.
प्रति द्रापिममुञ्चथाः पवमान महित्वना.. (११)

हे सोम! आप पवित्र व महान व्रत वाले हैं. आप अंतरिक्षलोक व पृथ्वीलोक को धारण करते हैं. आप अपनी पवित्र महिमा के अनुकूल कवचधारी हैं. (११)

इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय.
हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं वरिवस्कृण्वन्वृजनस्य राजा.. (१२)

हे सोम! आप पवित्र व शक्तिशाली हैं. आप अपनी पवित्र और शक्तिशाली धारा से झरते हैं. आप पराक्रमी, आनंददायी व शक्ति के राजा हैं. आप यजमानों की रक्षा करते हैं, आप यजमानों को धन प्रदान करते हैं. (१२)

अध धारया मध्वा पृचानस्तिरो रोम पवते अद्रिदुग्धः.
इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणो देवो देवस्य मत्सरो मदाय.. (१३)

हे सोम! पत्थरों से कूट कर आप का रस निकाला जाता है. आप की धारा तेज से युक्त सुख देने वाली, मधुर और इंद्र की मित्रता चाहने वाली है. वह देवों के लिए आनंददायी, स्फूर्तिदायी व तृप्तिदायी है. (१३)

अभि व्रतानि पवते पुनानो देवो देवान्त्स्वेन रसेन पृञ्चन्.
इन्दुर्धर्माण्यृतुथा वसानो दश क्षिपो अव्यत सानो अव्ये.. (१४)

हे सोम! आप संकल्पशील व प्रकाशमान हैं. आप की धाराएं देवों को प्रसन्न करती हैं. इस समय आप को अंगुलियों से निचोड़ा जा रहा है. आप पवित्र हो कर झर रहे हैं. आप द्रोणकलश में प्रतिष्ठित होने की कृपा कीजिए. (१४)

सातवां खंड

आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम्.
यद्ध स्या ते पनीयसी समिद्दीदयति द्यवीष ꣳ स्तोतृभ्य आ भर.. (१)

हे अग्नि! आप अजर हैं. हम समिधाओं से आप को प्रदीप्त करते हैं. आप के प्रकाश से स्वर्गलोक द्युतिमान होता है. आप यजमानों को भरपूर धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (१)

आ ते अग्न ऋचा हविः शुक्रस्य ज्योतिषस्पते.
सुश्चन्द्र दस्म विश्पते हव्यवाट् तुभ्य ꣳ हूयत इष ꣳ स्तोतृभ्य आ भर.. (२)

हे अग्नि! आप विश्वपालक, शत्रुनाशक, प्रकाशक, हविवाहक व आनंदवर्द्धक हैं. यजमान स्तुतियां पढ़ते हुए आप को आहुति प्रदान करते हैं. आप यजमानों को भरपूर धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (२)

ओभे सुश्चन्द्र विश्पते दर्वी श्रीणीष आसनि.
उतो न उत्पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पत इष ꣳ स्तोतृभ्य आ भर.. (३)

हे अग्नि! आप प्रजापालक, शक्तिमान और प्रकाशित हैं. आहुति देते समय मुख्य पात्र आप के मुख तक पहुंच जाते हैं. उपासक हवि भेंट कर के आप को प्रसन्न करना चाहते हैं. आप यजमानों को भरपूर वैभव प्रदान करने की कृपा कीजिए. (३)

इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्. ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे.. (४)

हे साम गायक ब्राह्मणो! इंद्र प्रशंसा के योग्य हैं. आप उन के लिए विस्तृत साममंत्र गाइए. इंद्र ज्ञानसाधक व उस के विस्तारक हैं. (४)

त्वमिन्द्राभिभूरसि त्व ꣳ सूर्यमरोचयः. विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि.. (५)

हे इंद्र! आप विश्व (संपूर्ण संसार के देव) और विश्वकर्मा (विश्व के संपूर्ण कार्य करने वाले) हैं. आप सूर्य को चमकाते हैं. आप की भूरिभूरि प्रशंसा की जाती है. (५)

विभ्राजं ज्योतिषा स्व ३ रगच्छो रोचनं दिवः. देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे.. (६)

हे इंद्र! आप प्रकाश से चमकते हुए सुशोभित होते हैं. आप स्वर्गलोक को भी प्रकाशित करते हैं. सभी देवगण आप के सखा होना चाहते हैं. कृपया आप पधारिए. (६)

असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि.
आत्वा पृणक्त्विन्द्रिय ꣳ रजः सूर्यो न रश्मिभिः.. (७)

हे इंद्र! आप शत्रुओं को हराते हैं. आप सामर्थ्यवान हैं. आप पधारने की कृपा कीजिए. आप के लिए सोमरस भेंट किया गया है. आप हमारे यज्ञ को पधार कर उसी प्रकार प्रकाशित

कीजिए, जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों से अंतरिक्षलोक को प्रकाशित करते हैं. (७)

आ तिष्ठ वृत्रहन्रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी.
अर्वाचीन सु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना.. (८)

हे इंद्र! आप वृत्रहंता हैं. आप के रथ में घोड़े (मंत्रों द्वारा) जोड़ दिए गए हैं. आप उस रथ में विराजिए, आइए और बैठिए. सोम को कूटते हुए पत्थरों की आवाजें आप के मन को आकर्षित करने में समर्थ हो सकें. (८)

इन्द्रमिद्धरी वहतो ऽ प्रतिधृष्टशवसम्.
ऋषीणा सुष्टुतीरुप यज्ञं च मानुषाणाम्.. (९)

हे इंद्र! आप अपराजित हैं और सदैव शत्रुओं को हराते हैं. आप के घोड़े आप को यज्ञ स्थान तक पहुंचाने की कृपा करें. मनुष्यों के इस यज्ञ में ऋषि लोग स्तुतियां गा रहे हैं. (९)

सातवां अध्याय

पहला खंड

ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानां जनिता विभूवसुः.
दधाति रत्न ꣳ स्वधर्योरपीच्यं मदिन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः.. (१)

हे सोम! आप पवित्र, मधुर, देवताओं को प्रिय, पालक एवं धन प्रदान करने वाले हैं. आप स्फूर्तिदायी हैं. आप इंद्र को मदमस्त बना देते हैं. आप यह की ज्योति हैं. आप यजमान के लिए रत्न धारण करते हैं. (१)

अभिक्रन्दन्कलशं वाज्यर्षति पतिर्दिवः शतधारो विचक्षणः.
हरिर्मित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मृजानो ऽ विभिः सिन्धुभिर्वृषा.. (२)

हे सोम! आप स्वर्गलोक के स्वामी, सैकड़ों धारा वाले, विलक्षण, स्फूर्तिदायी, ऊर्जा वर्द्धक व हरी आभा वाले हैं. आप आवाज करते हुए द्रोणकलश में जाते हैं. आप जल में मिल कर तैयार होते हैं. आप मित्र के घर में रहने की तरह कलश में रहते हैं. (२)

अग्रे सिन्धूनां पवमानो अर्षस्यग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छसि.
अग्रे वाजस्य भजसे महद्धन ꣳ स्वायुधः सोतृभिः सोम सूयसे.. (३)

हे सोम! आप को हम स्तुतियों से आमंत्रित करते हैं. हम आप को शोधित और जलमय करने के समय भी स्तुति गाते हैं. आप अस्त्रशस्त्रमय हो कर आते हैं, गौ की रक्षा करते हुए आते हैं. आप प्रचुर धन देने के लिए भजे जाते हैं. (३)

असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया. शुक्रासो वीरयाशवः.. (४)

हे सोम! आप प्रकाशमान, वेगवान व वीर हैं. यजमान गाएं, घोड़े और संतान पाने के लिए आप को परिष्कृत करते हैं. (४)

शुम्भमाना ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्योः. पवन्ते वारे अव्यये.. (५)

हे सोम! यजमानों के हाथों से तैयार, परिष्कृत व जल मिला कर तैयार किया गया सोमरस सुशोभित हो रहा है. (५)

ते विश्वादाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा. पवन्तामान्तरिक्ष्या.. (६)

हे सोम! आप यजमान को पृथ्वीलोक, अंतरिक्षलोक और स्वर्गलोक के सभी वैभव

प्रदान करने की कृपा कीजिए. (६)

पवस्व देववीरति पवित्र सोम र ह्या. इन्द्रमिन्दो वृषा विश.. (७)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप देवशक्तियों के निकट हैं. आप वेग से शोधित होने की कृपा कीजिए. आप इंद्र के लिए प्रतिस्थापित होने की कृपा कीजिए. (७)

आ वच्यस्व महि प्सरो वृषेन्दो द्युम्नवत्तमः.. आ योनिं धर्णसिः सदः.. (८)

हे सोम! आप वीर व प्रकाशमान हैं. आप हमें उत्तम गुण प्रदान करने एवं यज्ञ में अपने निर्धारित स्थान पर पधारने की कृपा कीजिए. (८)

अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः. अपो वसिष्ट सुक्रतुः.. (९)

शोधित सोमरस धाराओं से पात्र में इकट्ठा होता है. वसिष्ठ ऋषि सोमरस को जल में मिलाते हैं. (९)

महान्तं त्वा महीरन्वापो अर्षन्ति सिन्धवः. यद्गोभिर्वासयिष्यसे.. (१०)

हे सोम! आप महान हैं. आप को महान नदियों के जल व गायों के दूध में मिलाया जाता है. (१०)

समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणों दिवः. सोमः पवित्रे अस्मयुः.. (११)

हे सोम! आप देवलोक को धारण करते हैं. आप जलमय व आकांक्षी हैं. आप को बारबार भेड़ के बालों से बनी छलनी में छाना जाता है. (११)

अचिक्रदद्वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः. स सूर्येण दिद्युते.. (१२)

सोमरस शक्तिदायी, हरी कांति वाला, महान, मित्र की तरह दर्शनीय और सूर्य की तरह द्युतिमान (प्रकाशित) है. (१२)

गिरस्त इन्द ओजसा मर्मृज्यन्ते अपस्युवः. याभिर्मदाय शुम्भसे.. (१३)

हे सोम! आप के ओज से यजमान स्तुति गाते हैं तथा प्रसन्नता के लिए आप सुशोभित होते हैं. (१३)

तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नुमीमहे. तवे प्रशस्तये महे.. (१४)

हे सोम! आप लोक कल्याण के लिए शत्रुनाशक हैं. हम महान स्तोत्रों से आप की प्रशंसा करते हैं. (१४)

गोषा इन्दो नृषा अस्यश्वसा वाजसा उत. आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः.. (१५)

हे सोम! आप यज्ञ के मुख्याधार व यज्ञ की आत्मा हैं. आप गोधन, अश्वधन और संतानधन के दाता हैं. (१५)

अस्मभ्यमिन्दविन्द्रियं मधोः पवस्व धारया. पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव.. (१६)

हे सोम! बादलों से होने वाली बरसात के समान आप अपनी पवित्र मधुर धाराओं से हमारे लिए अमृत बरसाने की कृपा कीजिए. (१६)

दूसरा खंड

सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः. अथा नो वस्यसस्कृधि.. (१)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप बहुत उपासना के योग्य हैं. आप देवताओं के पास जाइए. आप शत्रुओं को जीतने के बाद हमें यशस्वी बनाने की कृपा कीजिए. (१)

सना ज्योतिः सना स्व ३ र्विश्वा च सोम सौभगा. अथा नो वस्यसस्कृधि.. (२)

हे सोम! आप हमें ज्योतिर्मय बनाइए. आप हमें स्वर्गिक सुख दीजिए. आप हमें सौभाग्यवान एवं शत्रुविजय के बाद यशस्वी बनाइए. (२)

सना दक्षमुत क्रतुमप सोम मृधो जहि अथा नो वस्यसस्कृधि.. (३)

हे सोम! आप हमें बलवान व कर्तव्यपरायण बनाइए. शत्रुनाश कर के आप हमें सुखी बनाइए. (३)

पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे. अथा नो वस्यसस्कृधि.. (४)

हे यजमानो! आप सोम को पवित्र करने वाले हैं. आप इंद्र के पीने के लिए सोमरस पवित्र कीजिए और हमारा कल्याण करने की कृपा कीजिए. (४)

त्व ं३ सूर्ये न आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः. अथा नो वस्यसस्कृधि.. (५)

हे सोम! आप अपने रक्षा साधनों से हमें सूर्य को भजने के लिए प्रेरित कीजिए. आप हमारा हित साधने की कृपा कीजिए. (५)

तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक्पश्येम सूर्यम्. अथा नो वस्यसस्कृधि.. (६)

हे सोम! आप के रक्षा साधनों और ज्ञान से हम दीर्घ काल तक सूर्य के दर्शन करने में समर्थ हो सकें. आप हमें दीर्घायु प्रदान करने की कृपा कीजिए. (६)

अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हस ं३ रयिम्. अथा नो वस्यसस्कृधि.. (७)

हे सोम! आप आयुधधारी हैं. आप हमें इहलौकिक और पारलौकिक धन व सुख देने की कृपा कीजिए. (७)

अभ्य ३ र्षानपच्युतो वाजिन्त्समत्सु सासहिः. अथा नो वस्यसस्कृधि.. (८)

हे सोम! आप युद्ध क्षेत्र में विजयी होते हैं. आप शत्रुओं को हराने वाले हैं. आप

द्रोणकलश में चूने (टपकने) और हमारा कल्याण करने की कृपा कीजिए. (८)

त्वां यज्ञैरवीवृधन्पवमान विधर्मणि. अथा नो वस्यसस्कृधि.. (९)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप यज्ञ में फलदाता हैं. यजमान स्तुतियों से आप की बढ़ोतरी करते हैं. आप हमारी बढ़ोतरी करने की कृपा कीजिए. (९)

रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर. अथा नो वस्यसस्कृधि.. (१०)

हे सोम! आप हमें अद्‌भुत घोड़े देने व सब के लिए कल्याणकारी धन देने की कृपा कीजिए. हमें सुख दीजिए. (१०)

तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः. तरत्स मन्दी धावति.. (११)

हे सोम! आप मददायी व पोषक हैं. आप की धारा छलनी में छनती है. आप की धाराएं वेग से बहती हैं. (११)

उस्रा वेद वसूनां मर्तस्य देव्यवसः. तरत्स मन्दी धावति.. (१२)

हे सोम! आप सभी वैभवों के स्वामी व दिव्य हैं. आप मनुष्यों (यजमानों) के संरक्षक हैं. आप के रस की धाराएं वेग से बहती हैं. (१२)

ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा सहस्राणि दद्महे. तरत्स मन्दी धावति.. (१३)

हे सोम! आप ध्वस्र और पुरुषंति नाम के दुष्ट राजाओं का वैभव हमें देने की कृपा कीजिए. आप की धाराएं वेग से बहती हैं. (१३)

आ ययोस्त्रि ꣳ शतं तना सहस्राणि च दद्महे. तरत्स मन्दी धावति.. (१४)

हे सोम! आप ध्वस्र और पुरुषंति के तीन सौ और तीन हजार वस्त्र हमें देने की कृपा कीजिए. आप की धाराएं वेग से बहती हैं. (१४)

एते सोमा असृक्षत गृणानाः शवसे महे. मदिन्तमस्य धारया.. (१५)

सोमरस की मददायी धाराओं के साथ ये सोम द्रोणकलश में छन रहे हैं. ये महान और कल्याणकारी हैं. (१५)

अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि. सनद्वाजः परि स्रव.. (१६)

हे सोम! आप मनुष्यों को सुख देते हैं. देवता आप का सेवन करते हैं. इसीलिए आप को गौ दूध में मिलाया जाता है. आप अन्न प्रदान करते हुए कलश में स्रवित होते (झरते) हैं. (१६)

उत नो गोमतीरिषो विश्वाअर्ष परिष्टुभः. गृणानो जमदग्निना.. (१७)

हे सोम! आप की जमदग्नि (ऋषि) ने स्तुति की. आप गौओं के साथ ही हमें श्रेष्ठ बुद्धि

और श्रेष्ठ अन्न प्रदान करने की कृपा कीजिए. (१७)

तीसरा खंड

इम ꣳ स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया.
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य स ꣳ सद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव.. (१)

हे अग्नि! आप स्तुति के योग्य, सर्वज्ञाता व सर्वद्रष्टा हैं. हम अपनी श्रद्धा आप तक पहुंचाने के लिए अपनी प्रार्थनाओं को रथ की तरह प्रयोग में लाते हैं. आप की उपासना से हमारी बुद्धि तीव्र होती है. आप की मित्रता हमें कष्ट से मुक्ति दिलाने में समर्थ है. (१)

भरामेध्मं कृणवामा हवी ꣳ षि ते चितयन्तः पर्वणापर्वणा वयम्.
जीवातवे प्रतरा ꣳ साधया धियो ऽ ग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव.. (२)

हे अग्नि! हम पवित्र पर्व पर आप को समिधाओं से प्रदीप्त करते हैं. हवि प्रदान करते हैं. आप का चिंतन करते हैं. आप हमारी बुद्धि तीव्र करिए. हम आप की कृपा से अपना यज्ञ सफल बनाएं और कष्टों से मुक्त रहें. (२)

शकेम त्वा समिध ꣳ साध्या धियस्त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम्.
त्वमादित्याँ आ वह तान्ह्यू ३ श्मस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव.. (३)

हे अग्नि! हम समिधाओं से आप को प्रज्वलित करते हैं. हम देवताओं को हवि प्रदान करते हैं. आप उस हवि को ग्रहण करने के लिए देवताओं को बुलाने की कृपा कीजिए. हम उन्हें आमंत्रित करने के इच्छुक हैं. आप अपनी मित्रता से हमारे सारे कष्टों को दूर करने की कृपा कीजिए. (३)

प्रति वा ꣳ सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम्. अर्यमण ꣳ रिशादसम्.. (४)

हे मित्र! हे वरुण! हम सूर्योदय के अवसर पर आप दोनों देवों और दूसरे सभी देवताओं की उपासना करते हैं. आप शत्रुनाशक हैं. (४)

राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे. इयं विप्रा मेधसातये.. (५)

हे मित्र! हे वरुण! ये ब्राह्मण यजमान श्रेष्ठ बुद्धि के लिए आप की उपासना करते हैं. हम आप से स्वर्ण चाहते हैं. हम कल्याण की कामना से आप की उपासना करते हैं. (५)

ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह. इष ꣳ स्वश्च धीमहि.. (६)

हे मित्र! हे वरुण! हम विद्वानों (ऋत्विजों) के साथ संपत्तिवान हों. आप की कृपा से हम अन्न और स्वर्ण पा कर ऐश्वर्य युक्त हों. (६)

भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः. वसु स्पार्ह तदा भर.. (७)

हे इंद्र! आप सभी दुष्टों का नाश करिए. आप हमारे उत्तम कार्यों में बाधक शत्रुओं का नाश कीजिए. आप हमें मनोवांछित धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (७)

यस्य ते विश्वमानुषग्भूरेर्दत्तस्य वेदति. वसु स्पार्हं तदा भर.. (८)

हे इंद्र! आप प्रचुर धन देते हैं. यह हम जानते हैं. आप हमें भरपूर धन देने की कृपा कीजिए. (८)

यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्. वसु स्पार्हं तदा भर.. (९)

हे इंद्र! आप हमें वह सारा धन देने की कृपा कीजिए, जिसे आप ने शत्रुओं से जीता है तथा जिसे आप सब से छिपा कर (दूसरों को दिए बिना ही) सुरक्षित और अभेद्य जगह पर रखे हुए हैं. (९)

यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु. इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्.. (१०)

हे इंद्र! हे अग्नि! आप यज्ञ के ऋत्विज् हैं. यज्ञ के कामों में आप की पवित्रता बनी रहती है. आप हमारी प्रार्थनाओं पर ध्यान देने की कृपा कीजिए. (१०)

तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता. इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्.. (११)

हे इंद्र! हे अग्नि! आप दुश्मनों से अपराजित, रथ से यात्रा करने वाले व दुष्टों के नाशक हैं. आप हमारी स्तुतियों पर ध्यान देने की कृपा कीजिए. (११)

इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नर. इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्.. (१२)

हे इंद्र! हे अग्नि! यजमानों ने आप के लिए मददायी मधुर सोमरस तैयार किया है. आप हमारी स्तुतियों पर ध्यान देने की कृपा कीजिए. (१२)

चौथा खंड

इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः. अर्कस्य योनिमासदम्.. (१)

हे सोम! आप मददायी, मधुरतम और पवित्र हैं. आप मरुद्गणों के साथ आने वाले इंद्र के लिए झरने की कृपा कीजिए. (१)

तं त्वा विप्रा वचोविदः परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम्. सं त्वा मृजन्त्यायवः.. (२)

हे सोम! आप संसार के धारक व वाणी के ज्ञाता हैं. याजक आप को भलीभांति परिष्कृत कर रहे हैं. (२)

रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्तु वरुणः कवे. पवमानस्य मरुतः.. (३)

हे सोम! आप विद्वान् हैं. मित्र, वरुण, अर्यमा और मरुद्गण आप के रस को पीने की कृपा करें. (३)

मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि.
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि.. (४)

हे सोम! अच्छे हाथों से परिष्कृत किया जाता हुआ सोमरस आवाज करते हुए द्रोणकलश में जाता है. आप का रंग सुनहरा है. आप अनेक लोगों द्वारा चाहे जाते हैं. आप हमें इच्छित धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (४)

पुनानो वारे पवमानो अव्यये वृषो अचिक्रदद्वने.
देवाना ꣳ सोम पवमान निष्कृतं गोभिरञ्जानो अर्षसि.. (५)

हे सोम! आप पवित्र व स्फूर्तिदायी हैं. यजमानों द्वारा परिष्कृत किया गया सोमरस जल में बहुत जल्दी घुल जाता है. आप को देवताओं के लिए पवित्र किया जाता है. देवों के ही लिए सोमरस में गाय का दूध मिलाया जाता है. आप को (उन्हीं के लिए) पवित्र कलश में प्रतिष्ठित किया जाता है. (५)

एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम्. समादित्येभिरख्यत.. (६)

हे सोम! समुद्र आप की माता है. दसों अंगुलियों से परिष्कृत किया हुआ सोमरस देवताओं को चढ़ाया जाता है. (६)

समिन्द्रेणोत वायुना सुत एति पवित्र आ. स ꣳ सूर्यस्य रश्मिभिः.. (७)

हे सोम! आप सूर्य की किरणों द्वारा चमकाए जाते हैं. आप पवित्र एवं सुपात्र में रखे जाते हैं. आप इंद्र और वायु को भेंट किए जाते हैं. (७)

स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान्. चारुर्मित्रे वरुणे च.. (८)

हे सोम! आप पवित्र, मधुर व सुंदर हैं. आप को भग, वायु, पूषा, मित्र और वरुण के लिए परिष्कृत किया जाता है. (८)

पांचवां खंड

रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः. क्षुमन्तो याभिर्मदेम.. (१)

हे इंद्र! गौओं को अपने साथ रखने से हम सुख पाते हैं. आप की कृपा से हमारी गाएं स्वस्थ और पुष्ट हों, पर्याप्त घी व दूध दें. (१)

आ घ त्वावान् त्मना युक्तः स्तोतृभ्यो धृष्णवीयानः. ऋणोरक्षं न चक्र्योः.. (२)

हे इंद्र! आप धीर हैं. आप बुद्धिपूर्वक स्तुतिकर्ताओं को मनोवांछित पदार्थ प्रदान करने की कृपा कीजिए. आप इस के लिए वैसे ही सहायक हैं, जैसे रथ के लिए उस के पहिए सहायक होते हैं. (२)

आ यद् दुवः शतक्रतवा कामं जरितृणाम्. ऋणोरक्षं न शचीभिः.. (३)

हे इंद्र! आप सैकड़ों यज्ञों वाले हैं. आप उपासकों की मनोकामना पूरी करने की कृपा कीजिए. रथ को जैसे उस के पहियों से गति मिलती है, वैसे ही आप की कृपा से उपासकों को धन मिलता है. (३)

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे. जुहूमसि द्यविद्यवि.. (४)

हे इंद्र! आप का स्वरूप सुंदर है. गाय दुहने के समय जैसे ग्वाले गायों को पुकारते हैं, उसी प्रकार हम अपनी रक्षा के लिए आप को पुकारते हैं, आमंत्रित करते हैं. (४)

उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब. गोदा इद्रेवतो मदः.. (५)

हे इंद्र! आप सोमपान करने वाले हैं. आप सोमरस पीने के लिए हमारे सवन (यज्ञ संध्या) में पधारने की कृपा कीजिए. आप सोमरस पी कर प्रसन्न होइए. आप यजमानों को गोधन, वैभव, ऐश्वर्य और आनंद प्रदान करने की कृपा कीजिए. (५)

अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम्. मा नो अति ख्य आ गहि.. (६)

हे इंद्र! सोमरस पीने के बाद हमें अपनी सुमतियों का दर्शन कराइए. आप हम से विमुख मत होइए. आप दुष्टों को यह ज्ञान देने की कृपा मत कीजिए. आप से यही हमारा अनुरोध है. (६)

उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव.
महान्तं त्वा महीना सम्राजं चर्षणीनाम्.
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत्.. (७)

हे इंद्र! आप भी उषा की भांति स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को अपने प्रकाश से भरने की कृपा कीजिए. आप महान, महिमाशाली, पृथ्वी के राजा व अदिति आप की जननी है. (७)

दीर्घ ह्यङ्कुशं यथा शक्तिं बिभर्षि मन्तुमः.
पूर्वेण मघवन्पदा वयामजो यथा यमः.
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत्.. (८)

हे इंद्र! आप ज्ञान के भंडार, शक्ति व सामर्थ्य धारक हैं. आप को देवताओं की माता ने जना है. आप को कल्याणकारिणी जननी ने जना है. बकरा जैसे आगे के पैरों से अपने भोज्य पदार्थों को नियंत्रित करता है, उसी तरह आप दुष्टों को वश में करते हैं. (८)

अव स्म दुर्हृणायतो मर्त्तस्य तनुहि स्थिरम्.
अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्माँ अभिदासति.
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत्.. (९)

हे इंद्र! आप को देवताओं की माता ने जना है. आप को कल्याणकारिणी माता ने जना

है. आप हमें अधीन (पराधीन) बनाने वाले दुष्ट शत्रुओं का नाश करने की कृपा कीजिए. (९)

छठा खंड

परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत् मदेषु सर्वधा असि.. (१)

हे सोम! आप पर्वतवासी, पवित्र, प्रसन्नतादायी और प्रसन्नतादायकों में सर्वश्रेष्ठ हैं. आप का रस धारा रूप में झर रहा है. (१)

त्व विप्रस्त्वं कविर्मधु प्र जातमन्धसः मदेषु सर्वधा असि.. (२)

हे सोम! आप ब्राह्मण, कवि (विद्वान्) व आप अन्न से पैदा होने वाले पोषक तत्त्वों को देते हैं. आप प्रसन्नता देने वालों में सर्वश्रेष्ठ हैं. (२)

त्वे विश्वे सजोषसो देवासः: पीतिमाशत. मदेषु सर्वधा असि.. (३)

हे सोम! सभी देवता आप को पीने के इच्छुक रहते हैं. प्रसन्नता देने वालों में आप सर्वश्रेष्ठ हैं. (३)

स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इडानाम्. सोमो यः सुक्षितीनाम्.. (४)

हे सोम! आप हमें अच्छी संतान, गाएं और ऐश्वर्य देते हैं. आप सुंदर पृथ्वी पर सुशोभित हैं. (४)

यस्य त इन्द्रः पिबाद्यस्य मरुतो यस्य वार्यमणा भगः.
आ येन मित्रावरुणा करामह एन्द्रमवसे महे.. (५)

हे सोम! आप के दिव्य रस को मरुत्, इंद्र अर्यमा, भग आदि पीते हैं. आप सुरक्षा हेतु जैसे मित्र और वरुण को बुलाते हैं, उसी प्रकार हम इंद्र को बुलाते हैं. (५)

तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत. शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः.. (६)

हे यजमानो! आप मद के लिए पिए जाने वाले सोमरस के गुण गाइए. वे हमारे सखा हैं. मां जैसे बच्चे की शोभा बढ़ाती है, वैसे ही आप हवि और स्तोत्र से सोम की शोभा बढ़ाइए. (६)

सं वत्स इव मातृभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते. देवावीर्मदो मतिभिः परिष्कृतः.. (७)

हे सोम! आप दिव्य व मददायी हैं. आप को बुद्धि द्वारा परिष्कृत किया गया है. माता जैसे पुत्र को जल से परिष्कृत करती है, उसी तरह जल से आप को परिष्कृत किया गया है. (७)

अयं दक्षाय साधनो ऽ य २३ शर्धाय वीतये. अयं देवेभ्यो मधुमत्तरः सुतः.. (८)

हे सोम! आप मधुर हैं. आप को देवताओं के लिए विधिवत परिष्कृत किया गया है.

शक्तिदायी साधन के रूप में आप को पिया जाता है. (८)

सोमाः पवन्त इन्दवो ऽ स्मभ्यं गातुवित्तमाः.
मित्रा स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः.. (९)

हे सोम! आप पवित्र व मित्र की तरह हैं. आप हमें श्रेष्ठ उद्देश्यों की ओर प्रेरित करते हैं. आप आत्मज्ञाता और प्रकाशमान हैं. आप उपासना के योग्य हैं. (९)

ते पूतासो विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः.
सूरासो न दर्शतासो जिगत्नवो ध्रुवा घृते.. (१०)

हे सोम! आप पवित्र हैं, सूर्य जैसे प्रकाशमान हैं. आप विलक्षण व दही मिश्रित हैं. आप ध्रुव (स्थिर) हैं. आप जल धारा से मिश्रित हो कर शुद्ध होते हैं. (१०)

सुष्वाणासो व्यद्रिभिश्चिताना गोरधि त्वचि.
इषमस्मभ्यमभितः समस्वरन्वसुविदः.. (११)

हे सोम! आप धनदाता हैं. आप हमें श्रेष्ठ धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. आप पृथ्वी के ऊपर निवास करते हैं. अनेक पत्थरों से कूट कर आप का रस निचोड़ा जाता है. (११)

अया पवा पवस्वैना वसूनि मा ं३ श्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व.
ब्रध्नश्चिद्यस्य वातो न जूर्ति पुरुमेधाश्चित्तकवे नरं धात्.. (१२)

हे सोम! आप हमें पवित्र धाराओं से सराबोर करिए. आप हमें धन से परिपूर्ण कीजिए. आप के रस के सेवन से सूर्य भी वायु की तरह हलके और गतिशील हो जाते हैं. इंद्र सोमरस पी कर हमें नेतृत्व शक्ति प्रदान करते हैं, अच्छी संतान प्रदान करते हैं. (१२)

उत न एना पवया पवस्वाधि श्रुते श्रवाय्यस्य तीर्थे.
षष्टि ं३ सहस्रा नैगुतो वसूनि वृक्षं न पक्वं धूनवद्रणाय.. (१३)

हे सोम! आप उपासना के योग्य हैं. आप हमारे यज्ञतीर्थ में पवित्र धाराओं से झरिए. पेड़ों से जैसे पके फल मिलते हैं, वैसे ही शत्रुनाश हेतु आप हमें सहस्रगुना धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (१३)

महीमे अस्य वृष नाम शूषे मा ं३ श्चत्वे वा पृशने वा वधत्रे.
अस्वापयन्निगुतः स्नेहयच्चाषामित्राँ अपाचितो अचेतः.. (१४)

हे सोम! आप महिमाशाली हैं और सुख बरसाते हैं. आप दुष्टों को हराते व शत्रु को हम से दूर करते हैं. आप उन सभी शत्रुओं को बलहीन बनाते हैं, नष्ट करते हैं, जो युद्ध में हमें हानि पहुंचाने वाले हैं. (१४)

सातवां खंड

अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः.. (१)

हे अग्नि! आप हमारे समीप रहिए. आप हमारा त्राण (रक्षा) कीजिए. आप हमारे लिए कल्याणकारी होने की कृपा कीजिए. (१)

वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमो रयिं दाः.. (२)

हे अग्नि! आप सब से धनी और सब के शरणदाता हैं. आप आसानी से हमारे पास पधारिए. आप द्युमान (तेजस्वी) होइए व हमें धन दीजिए. (२)

तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः.. (३)

हे अग्नि! आप दिव्य और प्रकाशमान हैं. हम मित्रों के कल्याण के लिए अच्छे मन से निश्चित रूप से आप की उपासना करते हैं. (३)

इमा नु कं भुवना सीषधेमेन्द्रश्च विश्वे च देवाः.. (४)

हे इंद्र! सभी देव तथा सभी भुवन (लोक) हमारे लिए सुखदायी (कल्याणदायी) हों. (४)

यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह सीषधातु.. (५)

हे इंद्र! आप आदित्यों समेत हम पर कृपा कीजिए. आप हमारा यज्ञ सफल बनाइए. आप हमारे शरीर को स्वस्थ बनाइए. आप हमारी संतति को सफल बनाइए. (५)

आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्मभ्यं भेषजा करत्.. (६)

आदित्यों, मरुद्गणों एवं अन्य सहयोगियों के साथ इंद्र हमारे वास्ते भेषज (रोग चिकित्सा) तैयार करने की कृपा करें. (६)

प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायत यं जुजोषते.. (७)

हे उपासको! इंद्र वृत्रहंता, विद्वान् और ब्राह्मण हैं. आप उन के लिए स्तुतियां गाइए. वे उन स्तुतियों को सुन कर प्रसन्न होते हैं. (७)

अर्चन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः.. (८)

साधक सम्माननीय व प्रशंसा के योग्य इंद्र को भजते हैं. बलिष्ठ एवं प्रसिद्ध इंद्र उन को अपना संरक्षण प्रदान करते हैं. (८)

उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र.. (९)

हे इंद्र! आप के संरक्षण में रहने वाले हम याजक बलिष्ठ हों और धान्य से युक्त हों. (९)

आठवां अध्याय

पहला खंड

प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति.
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन्.. (१)

उपासक उशना के समान श्रेष्ठ वाणी वाले हैं. वे देवताओं की जीवनी को अच्छी तरह प्रस्तुत करते हैं. सोम पवित्र, प्रकाशित व पोषक हैं. आप परिष्कृत होते समय शब्द करते हुए द्रोणकलश में जाते हैं. (१)

प्र ह ꣳ सासस्तृपला वग्नुमच्छामादस्तं वृषगणा अयासुः.
अङ्गोषिणं पवमानं ꣳ सखायो दुर्मर्षं वाणं प्र वदन्ति साकम्.. (२)

शत्रुओं की शक्ति से बुद्धिमान यजमान भी घबरा जाते हैं. वे शीघ्र वहां पहुंचे, जहां सोम तैयार किया जा रहा था. वे वहां पवित्र सोम के लिए वाद्ययंत्र बजाने लगे, जिस से मधुर ध्वनि होने लगी. सोम की कृपा से असहनीय शत्रु को भी दबाया जा सकता है. (२)

स योजत उरुगायस्य जूतिं वृथा क्रीडन्तं मिमते न गावः.
परीणसं कृणुते तिग्मशृङ्गो दिवा हरिर्ददृशे नक्तमृज्रः.. (३)

हे सोम! सहज रूप से खेलते हुए आप प्रशंसित गति पाते हैं, उस गति को किसी के द्वारा नापा नहीं जा सकता. आप दिन में हरी और रात्रि में सफेद (उज्ज्वल) आभा वाले होते हैं. (३)

प्र स्वानासो रथा इवार्वन्तो न श्रवस्यवः. सोमासो राये अक्रमुः.. (४)

हे सोम! घोड़े और रथ की तरह (वेग से) आवाज करता हुआ सोमरस पवित्र हो रहा है. यह हमें अपार वैभव प्रदान करने की कृपा करे. (४)

हिन्वानासो रथा इव दधन्विरे गभस्त्योः. भरासः कारिणामिव.. (५)

हे सोम! आप का रस यजमान वैसे ही धारण करते हैं, जैसे भारवाही दोनों हाथों से बोझा उठाता है. रथ जैसे युद्ध में जाते हैं, वैसे ही सोमरस यज्ञ में ले जाया जा रहा है. (५)

राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिरञ्जते. यज्ञो न सप्त धातृभिः.. (६)

राजाओं की प्रशंसा और सात यजमानों से यज्ञ स्थापित किया जाता है. गाय के घी

आदि से सोमरस को परिष्कृत किया जाता है. (६)

परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा. मधो अर्षन्ति धारया.. (७)

श्रेष्ठ प्रार्थनाओं से सोमरस की स्तुति की जाती है. इंद्र को मदमस्त बनाने के लिए सोमरस मधुर धाराओं से पात्र में गिरता है. (७)

आपानासो विवस्वतो जिन्वन्त उषसो भगम्. सूरा अण्वं वि तन्वते.. (८)

सोमरस उषा को तेजस्विनी बनाता है. इंद्र के पीने के लिए सोमरस को परिष्कृत किया जा रहा है. (८)

अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः वृष्णो हरस आयवः.. (९)

हे सोम! आप पुरातन हैं. यजमान आप का आह्वान करते हैं. यजमान आप के लिए स्तुति कर रहे हैं. वे आप के लिए यज्ञ द्वारों को उद्घाटित कर रहे हैं (खोलते हैं). (९)

समीचीनास आशत होतारः सप्तजानयः पदमेकस्य पिप्रतः.. (१०)

हे सोम! सोमयज्ञ को पूर्णता देने के लिए उपयुक्त जाति के सात याज्ञिक यज्ञ अनुष्ठान को पूरा करने के लिए उपस्थित होते हैं. (१०)

नाभा नाभिं न आ ददे चक्षुषा सूर्यं दृशे. कवेरपत्यमा दुहे.. (११)

सोम विद्वान् हैं. उन्हें हम अपने और अपनी संतान के कल्याण के लिए अपनी नाभि के पास स्थापित करते हैं. सोम यज्ञ की नाभि जैसे हैं. नेत्रों से जैसे हम सूर्य के दर्शन करते हैं, वैसे ही हम इन के (सोम के) दर्शन करें. (११)

अभि प्रियं दिवस्पदमध्वर्युभिर्गुहा हितम्. सूरः पश्यति चक्षसा.. (१२)

शूरवीर इंद्र अपने नेत्रों से सोम को देखते हैं. सोम स्वर्गलोक में प्रिय हैं. अध्वर्यु उन्हें (सब के) हृदय में स्थापित करते हैं. (१२)

दूसरा खंड

असृग्रमिन्दवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः. विदाना अस्य योजना.. (१)

हे सोम! आप ऋत् (सत्य) व श्रेष्ठ मार्ग पर चलते हैं. आप यज्ञ व यजमान को भलीभांति जानते हैं. (१)

प्र धारा मधो अग्रियो महीरपो वि गाहते. हविर्हविःषु वन्द्य.. (२)

सोम हवियों में श्रेष्ठ हवि व वंदनीय हैं. आप की धारा उत्कृष्ट, मधुर एवं अग्रणी है. आप की धारा जल में अवगाहन करती है. (२)

प्र युजा वाचो अग्रियो वृषो अचिक्रदद्वने. सद्माभि सत्यो अध्वरः.. (३)

हे सोम! आप का मार्ग सत्यता का है. आप शक्तिमान, अग्रणी व वाणी को जोड़ने वाले हैं. सोम जल के साथ यज्ञशाला के भीतर प्रवेश करते हैं. (३)

परि यत्काव्या कविर्नृम्णा पुनानो अर्षति. स्वर्वाजी सिषासति.. (४)

सोम कवि हैं. कवि सोम जैसे ही मनुष्य की स्तुति स्वीकारते हैं, वैसे ही इंद्र यज्ञ स्थान पर अपनी शक्ति सहित आने के लिए तैयार हो जाते हैं. (४)

पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति. यदीमृण्वन्ति वेधसः.. (५)

सोम पवित्र हैं. वे राजा के समान सुशोभित होते हैं. वे प्रजा के संरक्षण हेतु शत्रुओं का नाश करने के लिए तैयार रहते हैं. (५)

अव्या वारे परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति. रेभो वनुष्यते मती.. (६)

सोमरस जल से ओतप्रोत और हरी आभा वाला है. सोम यजमान की प्रार्थनाओं को स्वीकार रहे हैं. वे आवाज करते हुए द्रोणकलश में स्थान ग्रहण कर रहे हैं. (६)

स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति. रणा यो अस्य धर्मणा.. (७)

जो यजमान धर्मपूर्वक सोमरस को निचोड़ते हैं, वे वायु, इंद्र और अश्विनीकुमारों के साथ आनंद प्राप्त करते हैं. (७)

आ मित्रे वरुणे भगे मधोः पवन्त ऊर्मयः. विदाना अस्य शक्मभिः.. (८)

हे सोम! यजमान आप को (आप की सामर्थ्य को) जान सकें. मित्र, वरुण व भग के लिए आप की मधुर एवं पवित्र लहरें उमड़ती हैं. (८)

अस्मभ्य ꣳ रोदसी रयिं मध्वो वाजस्य सातये. श्रवो वसूनि सञ्जितम्.. (९)

हे सोम! आप स्वर्गलोक तथा पृथ्वीलोक के स्वामी हैं. हमें आप शक्ति और अपार वैभव प्रदान करने की कृपा कीजिए. हम आप से संचित वैभव पाना चाहते हैं. (९)

आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे. पान्तमा पुरुस्पृहम्.. (१०)

हे सोम! आप दक्ष व वह्निमान (प्रकाशमान) हैं. आप को बहुत लोग चाहते हैं. हम आप के बल और शक्ति को प्राप्त करना चाहते हैं. (१०)

आ मन्द्रमा वरेण्यमा विप्रमा मनीषिणम्. पान्तमा पुरुस्पृहम्.. (११)

हे सोम! आप को बहुत लोग चाहते हैं. आप वरेण्य, ब्राह्मण, मनीषी व संरक्षणशील हैं. हम आप की उपासना करते हैं. (११)

आ रयिमा सुचेतुनमा सुक्रतो तनूष्वा. पान्तमा पुरुस्पृहम्.. (१२)

हे सोम! आप को बहुत लोग चाहते हैं. आप श्रेष्ठ यज्ञ वाले और उत्तम कार्य करने वाले हैं. आप हमें धन, बल और संतान प्रदान करने की कृपा कीजिए. (१२)

तीसरा खंड

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्.
कवि ꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्नः पात्रं जनयन्त देवाः.. (१)

हे अग्नि! आप स्वर्गलोक में मूर्धन्य हैं. आप यज्ञ में प्रकट होते हैं. आप पृथ्वी पर भ्रमणशील हैं. आप कवि, सम्राट् व अतिथि हैं. आप लोगों के निकटवर्ती हैं. आप देवताओं को प्रकट करते हैं. (१)

त्वां विश्वे अमृतं जायमान ꣳ शिशुं न देवा अभि सं नवन्ते.
तव क्रतुभिरमृतत्वमायन् वैश्वानर यत्पित्रोरदीदेः.. (२)

हे अग्नि! आप विश्व रूप व अमृत स्वरूप हैं. आप संसार के स्वामी (नायक) हैं. आप यज्ञों द्वारा अमरता पाते हैं. आप की कृपा से यजमान दिव्यता प्राप्त करते हैं. (२)

नाभिं यज्ञाना ꣳ सदन ꣳ रयीणां महामाहावमभि सं नवन्त.
वैश्वानर ꣳ रथ्यमध्वराणां यज्ञस्य केतुं जनयन्त देवाः.. (३)

हे अग्नि! आप यज्ञ की नाभि धन के भंडार, महिमावान, यज्ञ के संचालक व यज्ञ की पताका हैं. आप को अरणि मंथन से उत्पन्न किया जाता है. हम आप का आह्वान करते हैं. (३)

प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा. महिक्षत्रावृतं बृहत्.. (४)

हे यजमानो! मित्र और वरुण महान, क्षात्रवान व विशाल हैं. आप इन देवों के लिए ऊंचे स्वर से स्तोत्र गाइए. दोनों देव उन स्तोत्रों को सुनने के लिए यज्ञ स्थान पर पधारने की कृपा करें. (४)

सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च. देवा देवेषु प्रशस्ता.. (५)

हे यजमानो! मित्र और वरुण ये दोनों देव देवताओं में प्रशंसित हैं. दोनों देव सम्राट् हैं. दोनों देव प्रकाश उत्पन्न करते हैं. (५)

ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य. महि वां क्षत्रं देवेषु.. (६)

हे मित्र! हे वरुण! आप महान एवं देवताओं के बीच सराहनीय हैं. आप पृथ्वीलोक और स्वर्गलोक का वैभव हमें प्राप्त कराने की कृपा कीजिए. (६)

इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः. अण्वीभिस्तना पूतासः.. (७)

हे इंद्र! आप अद्भुत व चित्रभानु हैं. आप के लिए अंगुलियों से सोमरस निचोड़ा जाता है. आप को पवित्र सोमरस चढ़ाया जाता है. आप यज्ञ में पधारिए और सोमरस पीने की कृपा कीजिए. (७)

इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः. उप ब्रह्माणि वाघतः.. (८)

हे इंद्र! बुद्धि से आप तक पहुंचा जा सकता है. आप को ब्राह्मण बुलाते हैं. आप ब्रह्मवचनों को सुनने के लिए यज्ञ में पधारने की कृपा कीजिए. (८)

इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः. सूते दधिष्व नश्चनः.. (९)

हे इंद्र! आप अश्वों के पालनहार हैं. आप हमारी ब्रह्मस्तुतियों को सुनने के लिए यज्ञ में पधारने की कृपा कीजिए. आप हमारी भेंट की हुई हवि धारण कीजिए. (९)

तमीडिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत्. कृष्णा कृणोति जिह्वया.. (१०)

हे अग्नि! आप अपनी जिह्वा से सारे वनों को काला कर देते हैं. हमें उन बलशाली अग्नि की अर्चना करनी चाहिए. (१०)

य इद्ध आविवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः. द्युम्नाय सुतरा अपः.. (११)

हे इंद्र! जो मनुष्य अच्छे मन से आप की उपासना करते हैं. आप उन के लिए स्वर्गलोक से जल बरसाने की कृपा कीजिए. (११)

ता नो वाजवतीरिष आशून् पिपृतमर्वतः एन्द्रमग्निं च वोढवे.. (१२)

हे इंद्र! हे अग्नि! आप हमें बलदायी अन्न और वेगवान घोड़े प्रदान कीजिए ताकि हम उन्नतिशील हो जाएं. (१२)

चौथा खंड

प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृत ं२ सखा सख्युर्न प्र मिनाति सङ्गिरम्.
मर्य इव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयामना पथा.. (१)

कई विधियों से परिष्कृत शुद्ध सोमरस इंद्र के पेट में पहुंच रहा है. यह सोमरस इंद्र के पेट में अच्छी तरह पच जाता है. जैसे युवा स्त्रियों के साथ रमण करता है, वैसे ही सोमरस सैकड़ों मार्गों से कलश में प्रतिष्ठित होता है. (१)

प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः संवरणेष्वक्रमुः.
हरिं क्रीडन्तमभ्यनूषत स्तुभो ऽ भि धेनवः पयसेदशिश्रयुः.. (२)

हे सोम! जो यजमान बुद्धिपूर्वक आप को परिष्कृत करते हैं, वे आनंदपूर्वक अपनी इच्छापूर्ति का लाभ पाते हैं. गौएं अपने दूध से सोमरस को सींचती हैं. वह खेलता (लहराता)

हुआ घड़े में पहुंचता है. (२)

आ नः सोम संयतं पिप्युषीमिषमिन्दो पवस्व पवमान ऊर्मिणा.
या नो दोहते त्रिरहन्नसश्चुषी क्षुमद्वाजवन्मधुमत्सुवीर्यम्.. (३)

हे सोम! आप पवित्र हैं और लहरों से लहराते हुए प्रवाहित होइए. सोमरस का तीनों संध्याओं (सवनों) में प्रयोग में किया जाता है. वह अन्नमय व श्रेष्ठ वीर्य वाला है. (३)

न किष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम्.
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा.. (४)

हे इंद्र! आप सदैव बढ़ोतरी करने वाले, शत्रुओं को हराने वाले व अपराजित हैं. जो यजमान आप की उपासना करते हैं, उन के कर्मों को कोई नष्ट नहीं कर सकता. (४)

अषाढमुग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन्महीरुरुज्रयः.
सं धेनवो जायमाने अनोनवुर्द्यावः क्षामीरनोनवुः.. (५)

जब इंद्र प्रकट होते हैं तो वेगवती गौएं उन्हें नमस्कार करती हैं. स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक झुक कर उन का अभिवादन करते हैं. हम भी उन की अभ्यर्थना करते हैं. (५)

पांचवां खंड

सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्रगायत. शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये.. (१)

हे यजमान मित्रो! आप आइए, बैठिए और सोम के लिए प्रार्थनाएं गाइए. आप शिशु को सजाने की भांति यज्ञ सजाइए. (१)

समी वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम्. देवाव्यं ३ मदमभि द्विशवसम्.. (२)

हे यजमानो! सोमरस यज्ञ का प्रमुख साधन व मददायी है. दोनों ही तरह अर्थात् दिव्यता और भौतिकता दोनों दृष्टिकोणों से वह शक्तिदायी है. आप सोमरस को वैसे ही जल में मिलाइए, जैसे माता के साथ बच्चे घुलमिल जाते हैं. (२)

पुनाता दक्षसाधनं यथा शर्धाय वीतये. यथा मित्राय वरुणाय शन्तमम्.. (३)

हे यजमानो! आप मित्र व वरुण के निमित्त सोम को परिष्कृत करें. आप बल व कुशलता की प्राप्ति और देवताओं को भेंट करने के लिए सोमरस को परिष्कृत कीजिए. (३)

प्र वाज्यक्षाः सहस्रधारस्तिरः पवित्रं वि वारमव्यम्.. (४)

हे सोम! आप अत्यंत बलशाली हैं, हजारों धारों वाले और पवित्र हैं. आप का रस भेड़ के बालों से बनी छलनी में छनता है. (४)

स वाज्यक्षाः सहस्ररेता अद्भिर्मृजानो गोभिः श्रीणानः.. (५)

हे सोम! आप अत्यंत बलशाली हैं. आप हजारों गुना बलशाली हैं. आप जल से ओतप्रोत हैं. भेड़ के बालों से बनी छलनी से छनते हुए आप द्रोणकलश में जाते हैं. (५)

प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा नृभिर्येमानो अद्रिभिः सुतः.. (६)

पत्थरों से कूट कर निकाले हुए सोमरस को यजमानों ने स्तुतियों से परिष्कृत कर दिया है. वह सोमरस इंद्र के पेट में पहुंचने की कृपा करे. (६)

ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे. ये वादः शर्यणावति.. (७)

हे सोम! आप शर्यणावत् (सायण के अनुसार 'शर्यणावत्' कुरुक्षेत्र के शर्यणा नामक मंडल (कमिश्नरी) की एक झील का नाम है.) तालाब के निकट उत्पन्न होते हैं. बाद में आप को परिष्कृत किया जाता है. (७)

य आर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानाम्. ये वा जनेषु पंचसु.. (८)

सोमरस आर्जीक, (हिलेब्रांट के अनुसार कश्मीर में एक स्थान) कमेरों (काम करने वालों) के देश नदी के किनारे व पंचजनों के बीच में पैदा होता है. पैदा होने के बाद उसे परिष्कृत किया जाता है. (८)

ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम्. स्वाना देवास इन्दवः.. (९)

सोमरस को निचोड़ा और परिष्कृत किया जाता है. वह स्वर्गलोक से श्रेष्ठ वीर्य की वर्षा करता है. सोमरस पोषण प्रदान करता है. (९)

छठा खंड

आ ते वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात्. अग्ने त्वां कामये गिरा.. (१)

हे अग्नि! हम वाणी से और वत्स ऋषि मन से आप की उपासना करते हैं. आप उस परम स्थान से भी हमारे पास पधारने की कृपा कीजिए. (१)

पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि दिशो विश्वा अनु प्रभुः. समत्सु त्वा हवामहे.. (२)

हे अग्नि! आप सर्वद्रष्टा, दिशापति और हमारे प्रभु हैं. हम युद्ध में आप का आह्वान करते हैं. (२)

समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे. वाजेषु चित्रराधसम्.. (३)

हे अग्नि! आप क्षमतावान व अद्भुत हैं. हम युद्ध हेतु बल प्राप्ति के लिए आप का आह्वान करते हैं. (३)

त्वं न इन्द्रा भर ओजो नृम्ण [illegible] शतक्रतो विचर्षणे. आ वीरं पृतनासहम्.. (४)

हे इंद्र! आप ओजस्वी, विलक्षण और सैकड़ों कर्म करने वाले हैं. आप पधारिए और हमें

वीरपुत्र प्रदान करने की कृपा कीजिए. (४)

त्व ꣳ हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ. अथा ते सुम्नमीमहे.. (५)

हे इंद्र! आप ही हमारे पिता और माता हैं. हम आप के पुत्र अच्छे मन से आप से अच्छे सुख चाहते हैं. आप शतकर्मा हैं. (५)

त्वा शुष्मिन्पुरुहूत वाजयन्तमुप ब्रुवे सहस्कृत. स नो रास्व सुवीर्यम्.. (६)

हे इंद्र! आप सहस्रकर्मा (हजार काम करने वाले) हैं. आप शक्तिमान हैं. आप आह्वान के योग्य हैं. आप हमें श्रेष्ठ वीर्यवान बनाने की कृपा कीजिए. (६)

यदिन्द्र चित्र म इह नास्ति त्वादामद्रिवः. राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर.. (७)

हे इंद्र! आप अद्भुत हैं. आप जैसी आर्थिक सामर्थ्य हमारी नहीं है. आप दोनों हाथों से हमें भरपूर धन प्रदान (हाथ भरभर कर) कीजिए. (७)

यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र द्युक्षं तदा भर. विद्याम तस्य ते वयमकूपारस्य दावनः.. (८)

हे इंद्र! आप वरेण्य व तेजस्वी हैं. आप हमें भरपूर समृद्धि (ऐश्वर्य) प्रदान कीजिए. उस धन को पा कर हम भी दानदाता की सामर्थ्य वाले हो जाएं. (८)

यत्ते दिक्षु प्रराध्यं मनो अस्ति श्रुतं बृहत्.
तेन दृढा चिदद्रिव आ वाजं दर्षि सातये.. (९)

हे इंद्र! आप आराधना के योग्य, यशशाली और बहुत विशाल हैं. आप हमें ऐसा धन दीजिए, जिस से हम दृढ़ चित्त वाले हो जाएं. आप हमें सामर्थ्यशाली बनाएं. (९)

नौवां अध्याय

पहला खंड

शिशुं जज्ञान हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति विप्रं मरुतो गणेन.
कविर्गीर्भिः काव्येन कविः सन्त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन्.. (१)

हे सोम! आप ब्राह्मण हैं. आप बच्चे की तरह सब के मन को खिला देते हैं. मरुद्गण आप को परिमार्जित करते हैं. कवि काव्यों से आप की स्तुति करते हैं. आप आवाज करते हुए पवित्र हो जाते हैं. (१)

ऋषिमना य ऋषिकृत्स्वर्षाः सहस्रनीथः पदवीः कवीनाम्.
तृतीयं धाम महिषः सिषान्सन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप्.. (२)

हे सोम! आप ऋषियों जैसे मन वाले और उन जैसा गुण प्रदान करने वाले हैं. आप तीसरे धाम के राजा इंद्र को और तेजस्वी बनाने वाले हैं. आप कवियों की पदवी और सहस्रकर्मा हैं. (२)

चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत्.
अपामूर्मि सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति.. (३)

हे सोम! आप अस्त्रशस्त्रधारी हैं व गायों के दूध में मिलाए जाते हैं. आप की लहरें समुद्र की लहरों के समान और राजा हैं. आप तुरीय धाम (मोक्ष धाम) में विराजते व सुशोभित होते हैं. (३)

एते सोमा अभि प्रियमिन्द्रस्य काममक्षरन्. वर्धन्तो अस्य वीर्यम्.. (४)

ये सोम इंद्र को प्रिय हैं. सोम कामनाओं की वर्षा करते हैं. ये उन के (इंद्र के) वीर्य को बढ़ाने वाले हैं. (४)

पुनानासश्चमूषदो गच्छन्तो वायुमश्विना. ते नो धत्त सुवीर्यम्.. (५)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप वायु और अश्विनीकुमारों के साथ जाइए, जिस से हम श्रेष्ठ वीर्य धारण कर सकें. (५)

इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय. देवानां योनिमासदम्.. (६)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप इंद्र की आराधना हेतु हमें हार्दिक प्रेरणा देने की कृपा

कीजिए. हम देव योनि के अनुकूल कार्य (यज्ञ) कर सकें. (६)

मृजन्ति त्वा दश क्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः. अनु विप्रा अमादिषुः.. (७)

हे सोम! यजमान की दसों अंगुलियां आप को परिमार्जित करती हैं. सात पुरोहित आप को तृप्ति प्रदान करते हैं. हम ब्राह्मण आप का अनुगमन करते हैं. (७)

देवेभ्यस्त्वा मदाय क सृजानमति मेष्यः. सं गोभिर्वासयामसि.. (८)

हे सोम! आप मददायी, सुखदायी व सुख सिरजने (पैदा करने) वाले हैं. देवताओं को भेंट करने के लिए हम आप को गाय के दूध में मिलाते हैं. (८)

पुनानः कलशेष्वा वस्त्राण्यरुषो हरिः. परि गव्यान्यव्यत.. (९)

हे सोम! आप हरी कांति वाले हैं. आप पवित्र हैं. आप कलश में रहते हैं. आप को चारों ओर से गाय का दूध घेर लेता है. (९)

मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः. इन्दो सखायमा विश.. (१०)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप हमें धनवान बनाइए. आप द्वेषियों का नाश कीजिए. इंद्र आप के सखा हैं. आप उन के साथ एकाकार हो जाइए. (१०)

नृचक्षसं त्वा वयमिन्द्रपीत स्वर्विदम्. भक्षीमहि प्रजामिषम्.. (११)

हे सोम! आप आत्मज्ञाता व मनुष्यों के चक्षु हैं. इंद्र आप को पीते हैं. आप हमें संतान और ज्ञान प्रदान करने की कृपा कीजिए. (११)

वृष्टिं दिवः परि स्रव द्युम्नं पृथिव्या अधि. सहो नः सोम पृत्सु धाः.. (१२)

हे सोम! आप स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक पर दिव्यता की वर्षा करने की कृपा कीजिए. आप अन्नधन दीजिए. हम शत्रुओं को सह न सकें, ऐसी क्षमता दीजिए. (१२)

दूसरा खंड

सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः. वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम्.. (१)

वायु और इंद्र के लिए सोमरस निचोड़ा गया है. सोमरस पवित्र व सहस्र धारा वाला है. भेड़ के बालों की छलनी से छान कर उसे तैयार किया गया है. (१)

पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत. सुष्वाणं देववीतये.. (२)

हे ब्राह्मणो! सोम आप को पवित्र करने वाले हैं. आप देवताओं से अपने संरक्षण की कामना कीजिए. आप इन के लिए स्तुतियां गाइए. (२)

पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः. गृणाना देववीतये.. (३)

हे सोम! आप अन्न प्रदान करने के लिए अपनी सहस्र धाराओं से झरिए. देवताओं को भेंट करने के लिए आप को परिष्कृत किया जाता है. (३)

उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः. द्युमदिन्दो सुवीर्यम्.. (४)

हे सोम! आप पवित्र व विशाल हैं. आप हमें श्रेष्ठ वीर्यवान बनाने की कृपा कीजिए. (४)

अत्या हियाना न हेतृभिरसृग्रं वाजसातये. वि वारमव्यमाशवः.. (५)

हे सोम! आप अग्रगण्य हैं. यजमान आप को अन्न प्राप्ति के लिए गतिपूर्वक परिष्कृत करते हैं. (५)

ते नः सहस्रिणꣳ रयिं पवन्तामा सुवीर्यम्. स्वाना देवास इन्दवः.. (६)

हे सोम! आप सहस्र धार वाले, पवित्र और धनवान हैं. हमें देवत्व प्रदान करें. (६)

वाश्रा अर्षन्तीन्दवो ऽ भि वत्सं न मातरः. दधन्विरे गभस्त्योः.. (७)

हे सोम! आप वैसे ही आवाज करते हुए कलश में जाते हैं, हाथों में लिए जाते हैं जैसे मां प्रेम वचन बोलती हुई अपने बच्चों की ओर जाती है और बच्चों को हाथ में ले लेती है. (७)

जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमानः कनिक्रदत्. विश्वा अप द्विषो जहि.. (८)

हे सोम! आप इंद्र को तृप्ति देते हैं. आप पवित्र हैं. आप क्रंदन (आवाज) करते हुए सभी शत्रुओं का विनाश करने की कृपा कीजिए. (८)

अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः. योनावृतस्य सीदत.. (९)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप स्वार्थियों का विनाश कीजिए. आप यज्ञ स्थल पर विराजने की कृपा कीजिए. (९)

तीसरा खंड

सोमा असृग्रमिन्दवः सुता ऋतस्य धारया. इन्द्राय मधुमत्तमाः.. (१)

हे सोम! आप अग्रगामी व मधुरतम हैं. आप को ऋत् की धारा के साथ इंद्र के लिए प्रस्तुत किया जाता है. (१)

अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न धेनवः. इन्द्रꣳ सोमस्य पीतये.. (२)

हे यजमानो! आप सोमरस पीने के लिए इंद्र से स्तुतियों के साथ अनुरोध कीजिए. उन्हें सोम पिलाने के लिए आप उतने ही व्याकुल हो जाइए, जितनी व्याकुल गाएं अपने बछड़ों को दूध पिलाने के लिए हो जाती हैं. (२)

मदच्युत्क्षेति सादने सिन्धोरूर्मा विपश्चित्. सोमो गौरी अधि श्रितः.. (३)

हे सोम! आप मद चुआते हैं. आप यज्ञ गृह में स्थापित किए गए हैं. आप सिंधु स्वरूप हैं. आप सिंधु की लहरों की तरह वाणी को लहरा देते हैं. (३)

दिवो नाभा विचक्षणो ऽ व्या वारे महीयते. सोमो यः सुक्रतुः कविः.. (४)

हे सोम! आप श्रेष्ठ कर्मों वाले, कवि, स्वर्गलोक की नाभि, विलक्षण और महान हैं. आप जल में मिल कर महिमाशाली होते हैं. (४)

यः सोमः कलशेष्वा अन्तः पवित्र आहितः. तमिन्दुः परि षस्वजे.. (५)

सोमरस पवित्र है. जो सोमरस कलश में रखा हुआ है, उस में चंद्रमा के श्रेष्ठ गुणों का वास है. (५)

प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि. जिन्वन्कोशं मधुश्चुतम्.. (६)

सोमरस मधु चुआता है. यह आवाज करता हुआ कलश को समुद्र की तरह लबालब भर देता है. (६)

नित्यस्तोत्रो वनस्पतिर्धेनामन्तः सबर्दुघाम्. हिन्वानो मानुषा युजा.. (७)

हे सोम! आप के लिए प्रतिदिन स्तोत्र गाए जाते हैं. आप मनुष्यों को आपस में जोड़ने की कृपा कीजिए. आप वन के स्वामी हैं. आप हमारी अंतरतम से गाई गई स्तुतियों को स्वीकार करने की कृपा कीजिए. (७)

आ पवमान धारया रयि ꣳ सहस्रवर्चसम्. अस्मे इन्दो स्वाभुवम्.. (८)

हे सोम! आप पवित्र व सहस्र गुणों से संपन्न हैं. आप हमारे लिए धन धारण कीजिए. आप हमें अपने भवन का अधिकारी बनाने की कृपा कीजिए. (८)

अभि प्रिया दिवः कविर्विप्रः स धारया सुतः. सोमो हिन्वे परावति.. (९)

हे सोम! आप स्वर्गलोक वासी, कवि और ब्राह्मण हैं. आप हमारे प्रिय स्थान (यज्ञ स्थान) की ओर अपनी प्रिय प्रेरणाओं का संचार करते हैं. (९)

चौथा खंड

उत्ते शुष्मास ईरते सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः. वाणस्य चोदया पविम्.. (१)

हे सोम! आप की आवाज समुद्र की तरंगों जैसी है. आप समुद्र की तरह ही गति से बहते हैं. आप पवित्र वाणी को प्रेरित करने की कृपा कीजिए. (१)

प्रसवे त उदीरते तिस्रो वाचो मखस्युवः. यदव्य एषि सानवि.. (२)

हे सोम! आप के प्रसव (उत्पन्न) होने के बाद यजमान के मुख से तीन वाणियां (ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद के मंत्रों की) उच्चरित होती हैं. तत्पश्चात आप को ऊंचे स्थान

पर बैठा कर परिष्कृत किया जाता है. (२)

अव्या वारैः परिप्रिय हरि हिन्वन्त्यद्रिभिः. पवमानं मधुश्चुतम्.. (३)

हे सोम! आप पवित्र हैं व मधु चुआते हैं. यजमान आप को पत्थर से कूट कर रस निकालते हैं. आप को जल से निमग्न कर देते हैं. आप को भेड़ के बालों से बनी छलनी से छान कर परिष्कृत किया जाता है. (३)

आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे. अर्कस्य योनिमासदम्.. (४)

हे सोम! आप आइए और आप इंद्र को आनंद देने हेतु धाराओं से (पवित्र) छलनी में छनने की कृपा कीजिए. (४)

स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः. एन्द्रस्य जठरं विश.. (५)

हे सोम! आप मददायी व गाय के दूध के साथ मिले हुए हैं. आप पवित्र धारा से छनिए. आप इंद्र के पेट में प्रविष्ट होने की कृपा कीजिए. (५)

पांचवां खंड

अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा. अवाहन्नवतीर्नव.. (१)

हे सोम! आप इंद्र के लिए परिष्कृत होइए. आप इंद्र को आनंद प्रदान कीजिए. आप नएनए कष्टों को दूर करने की कृपा कीजिए. (१)

पुरः सद्य इत्थाधिये दिवोदासाय शंबरम्. अध त्यं तुर्वशं यदुम्.. (२)

हे सोम! आप का रस पीने के बाद ही इंद्र ने शंबरासुर, तुर्वश और यदु को मारा. इन तीनों का नाश इंद्र ने यज्ञ करने वाले दिवोदास के लिए किया. (२)

परि णो अश्वमश्वविद्गमदिन्दो हिरण्यवत्. क्षरा सहस्रिणीरिषः.. (३)

हे सोम! आप हमें अश्वों का ज्ञाता बनाइए. आप हमें अश्ववान, गोवान व स्वर्णवान बनाइए. आप सहस्र धाराओं से झरने की कृपा कीजिए. (३)

अपघ्नन्पवते मृधो ऽ प सोमो अराव्णः. गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्.. (४)

सोमरस इंद्र के पवित्र स्थान तक (पवित्र हो कर) पहुंचता है. वह मधुर और जल मिश्रित है. उस के विकारों को दूर कर के उसे स्वच्छ कर दिया गया है. (४)

महो नो राय आ भर पवमान जही मृधः. रास्वेन्दो वीरवद्यशः.. (५)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप हमें धनवान तथा वीरों की भांति यशस्वी बनाने की कृपा कीजिए. (५)

न त्वा शतं च न ह्रुतो राधो दित्सन्तमा मिनन्. यत्पुनानो मखस्यसे.. (६)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप को अपने यज्ञकर्ताओं को धन देने से कोई नहीं रोक सकता, यहां तक कि सैकड़ों शत्रु भी. (६)

अया पवस्य धारया यया सूर्यमरोचयः. हिन्वानो मानुषीरपः.. (७)

हे सोम! आप अपनी (चमकने वाली) पवित्र धाराओं से सूर्य को चमकाइए. सूर्य मनुष्यों के लिए जल बरसाने वाले हैं. (७)

अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि. अन्तरिक्षेण यातवे.. (८)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप यजमानों की मनोकामना पूरी करने के लिए अंतरिक्ष जैसा विस्तार प्रदान करने की कृपा कीजिए. (८)

उत त्या हरितो रथे सूरो अयुक्त यातवे. इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन्.. (९)

इंद्र सोम का नाम बोलते हुए अपने रथ में अपने घोड़ों को जुतने का संकेत करते हैं. (९)

छठा खंड

अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे कृणुध्वम्.
यो मर्त्येषु निध्रुविर्ऋतावा तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः.. (१)

हे देवगण! अग्नि सर्वत्र पूज्य हैं. आप यज्ञ में उन को दूत बना कर भेजने की कृपा कीजिए. वे मनुष्यों के मित्र और पवित्र हैं. घृत (घी) उन का अन्न है. वे तेजस्वी हैं. (१)

प्रोथदश्वो न यवसे ऽ विष्यन्यदा महः संवरणाद्व्यस्थात्.
आदस्य वातो अनु वाति शोचिरध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति.. (२)

घोड़े जैसे घास चर जाते हैं, उसी तरह अग्नि (दावाग्नि) वृक्षों को चट कर जाते हैं. वे हवा के मार्ग का अनुकरण करते हैं. उन का मार्ग पवित्र और काले धुएं वाला है. (२)

उद्यस्य ते नवजातस्य वृष्णो ऽ ग्ने चरन्त्यजरा इधानाः.
अच्छा द्यामरुषो धूम एषि सं दूतो अग्न ईयसे हि देवान्.. (३)

हे अग्नि! आप की शीघ्र उत्पन्न ज्वालाएं वर्षा करने के लिए तैयार हैं. आप अजर, समिधा युक्त व देवताओं के दूत हैं. आप की लपटों का धुआं स्वर्गलोक में देवताओं तक (हवि सहित) पहुंच जाता है. (३)

तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे. स वृषा वृषभो भुवत्.. (४)

इंद्र शक्तिमान हैं. वे और अधिक शक्तिशाली होने की कृपा करें. हम दुश्मनों के नाश के

लिए इंद्र को और ज्यादा बलवान बनाना चाहते हैं. (४)

इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स बले हितः. द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः.. (५)

इंद्र बलिष्ठ, हितकारी व दान (देने) का कार्य करते हैं. वे स्वर्गलोक के वासी हैं. वे श्लोकों (मंत्रों) से स्तुत्य व सोमरस पीने योग्य हैं. (५)

गिरा वज्रो न सम्भृतः सबलो अनपच्युतः. ववक्ष उग्रो अस्तृतः.. (६)

हे इंद्र! आप के हाथों में वज्र सुशोभित है. वाणी से आप की प्रशंसा की जाती है. आप सबल, उग्र व विस्तृत हैं. आप को कोई नहीं हरा सकता. (६)

सातवां खंड

अध्वर्यो अद्रिभिः सुत ꣳ सोमं पवित्र आ नय. पुनाहीन्द्राय पातवे.. (१)

हे पुरोहितो! सोमरस पवित्र है. पाषाणों से कूट कर इस का रस निकाला गया है. उस को छन्ने में छान कर परिष्कृत किया गया है ताकि इंद्र उसे पी सकें. (१)

तव त्य इन्दो अन्धसो देवा मधोर्व्याशत. पवमानस्य मरुतः.. (२)

हे सोम! आप पवित्र व मधुमय हैं. इंद्र और मरुद्गण आप के इस सोमरस को पीते हैं. (२)

दिवः पीयूषमुत्तम ꣳ सोममिन्द्राय वज्रिणे. सुनोता मधुमत्तमम्.. (३)

हे यजमानो! सोमरस स्वर्गलोक का अमृत और सर्वश्रेष्ठ है. वज्रधारी इंद्र उस का पान करते हैं. अतः उन के लिए उस को परिष्कृत कीजिए. (३)

धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः.
हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजा ꣳ सि कृणुषे नदीष्वा.. (४)

सोमरस मधुर और देवताओं का बल बढ़ाने वाला है, यजमान इस की प्रशंसा करते हैं. अंतरिक्ष में शुद्ध होता हुआ यह हरा सोमरस वेगवान घोड़ों की तरह धारा के रूप में अपनी सामर्थ्य प्रकट करता है. (४)

शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः स्व ३: सिषासन्नथिरो गविष्टिषु.
इन्द्रस्य शुष्ममीरयन्नपस्युभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते मनीषिभिः.. (५)

सोम हाथों में शस्त्र धारण करते हैं और वीरों की भांति रथारूढ़ हैं. वे गोरक्षक, वीरों व इंद्र के बलवर्द्धक, यजमान के प्रेरक और दिव्य हैं. सोमरस को गोदुग्ध में मिलाया जाता है. (५)

इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणा तविष्यमाणो जठरेष्वा विश.

प्र नः पिन्व विद्युदभ्रेव रोदसी धिया नो वाजां उप माहि शश्वतः.. (६)

हे सोम! आप पवित्र व लहरदार हैं. आप और अधिक क्षमताशाली बन कर इंद्र के पेट में प्रवेश करने की कृपा कीजिए. बिजली जैसे बादलों को बरसात के लिए प्रेरित करती है, उसी तरह आप पृथ्वीलोक पर धन बरसाइए. आप हमें बुद्धिमान, धनवान व अन्नवान बनाइए. (६)

यदिन्द्र प्रागपागुदङ्न्यग्वा हूयसे नृभिः.
सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवे ऽ सि प्रशर्ध तुर्वशे.. (७)

हे इंद्र! मनुष्यों द्वारा आप को सब ओर आमंत्रित किया जाता है. हम पुरु और तुर्वश के नाश के लिए आप की उपासना करते रहे हैं. आप (हमारे सभी) शत्रुओं को नष्ट करने की कृपा कीजिए. (७)

यद्वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा.
कण्वासस्त्वा स्तोमेभिर्ब्रह्मवाहस इन्द्रा यच्छन्त्या गहि.. (८)

हे इंद्र! आप रुम (इंद्र का विशेष कृपा पात्र), रुशम (इंद्र का सहयोगी), श्यावक (एक ऋषि) और कृप (इंद्र का विशेष कृपा पात्र) पर कृपालु हैं. कण्व (एक याज्ञिक) आप की विभिन्न स्तोत्रों से स्तुति करते हैं. आप (यजमान के अनुरोध पर) यज्ञ में पधारने की कृपा कीजिए. (८)

उभय ꣳ शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः.
सत्राच्यः मघवान्त्सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत्.. (९)

हे इंद्र! आप हमारे यज्ञ में पधार कर हमारी दोनों प्रकार की वाणियों को सुनने की कृपा कीजिए. आप बलिष्ठ व संपन्न हैं. आप हमारी उपासना से प्रसन्न होइए. आप सोमपान करने के लिए हमारे यज्ञ में पधारिए. (९)

त ꣳ हि स्वराजं वृषभं तमोजसा धिषणे निष्टतक्षतुः.
उतोपमानां प्रथमो निषीदसि सोमकाम ꣳ हि ते मनः.. (१०)

आकाश और पृथ्वी समर्थ व तेजोमय इंद्र को अपनी सामर्थ्य से प्रकट करते हैं. इंद्र अनुपम हैं. (सभी उपमानों में सर्वोत्तम हैं). हे इंद्र! आप सोम (पान की) की कामना से यज्ञवेदी पर अधिष्ठित होने की कृपा कीजिए. (१०)

आठवां खंड

पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः. वायुमा रोह धर्मणा.. (१)

हे सोम! आप का रस मददायी हो कर इंद्र तक जाए. आप का रस शक्तिमान हो कर वायु तक पहुंचने की कृपा करे. आप पवित्र हैं. आप यजमान को आयुष्मान बनाने की कृपा

कीजिए. (१)

पवमान नि तोशसे रयि ꣳ सोम श्रवाय्यम्. इन्दो समुद्रमा विश.. (२)

हे सोम! आप पवित्र व संतुष्टिदायक हैं. आप दुष्टों को दंड देने की कृपा कीजिए. हम आप का आह्वान करते हैं. (२)

अपघ्नन्पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः. नुदस्वादेवयुं जनम्.. (३)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप यज्ञ की क्रियाविधि जानने वाले हैं. आप ईर्ष्यालुओं और नास्तिकों को दूर करने की कृपा कीजिए. आप का प्रभाव देवताओं जैसा (दिव्य) है. (३)

अभी नो वाजसातमं रयिमर्ष शतस्पृहम्.
इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभासहम्.. (४)

हे सोम! आप तेजस्वी हैं. आप हमें सैकड़ों लोगों द्वारा चाहा गया धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. आप द्वारा दिए गए धन से हम हजारों लोगों का भरणपोषण करने में समर्थ हो सकें. आप हमें तेजस्वी और यशस्वी बनाने की कृपा कीजिए. (४)

वयं ते अस्य राधसो वसोर्वसो पुरुस्पृहः.
नि नेदिष्ठतमा इषः स्याम सुम्ने ते अध्रिगो.. (५)

हे सोम! हम आप का आश्रय चाहते हैं. आप सभी के द्वारा चाहे जाते हैं. आप हमें जो अन्नधन प्रदान करते हैं, उस से हम सुखी बनें. आप सूर्य के साथ वास करने वाले हैं. (५)

परि स्य स्वानो अक्षरदिन्दुरव्ये मदच्युतः.
धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे भ्राजा न याति गव्ययुः.. (६)

सोमरस श्रेष्ठ व तेजस्वी है. यज्ञ में उस की धाराओं का प्रयोग किया जाता है. चमकने वाले सोमरस की ऊर्ध्व धारा गतिमान के रूप में यज्ञ में काम आती है. सोमरस को स्वाभाविक रूप से परिशुद्ध किया जाता है. (६)

पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता देवानां विश्वाभि धाम.. (७)

हे सोम! आप पवित्र, रसीले व पालक हैं. देवताओं के सभी धामों को अपने दिव्य रस से परिपूर्ण करने की कृपा कीजिए. (७)

शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम दिवे पृथिव्यै शं च प्रजाभ्यः.. (८)

हे सोम! आप चमकीले हैं. आप देवताओं के लिए बहिए. सोमरस स्वर्गलोक, पृथ्वीलोक और समस्त प्रजा के लिए सुखकारी होने की कृपा करें. (८)

दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः सत्ये विधर्मन्वाजी पवस्व.. (९)

हे सोम! आप बलवान, चमकीले, अमृत के समान व स्वर्गलोक के धर्ता (धारण कर्ता)

हैं. आप सत्य रूपी यज्ञ में प्रवाहित होने की कृपा कीजिए. (९)

नौवां खंड

प्रेष्ठं वो अतिथ ꣳ स्तुषे मित्रमिव प्रियम्. अग्ने रथं न वेद्यम्.. (१)

हे अग्नि! आप बहुत अधिक प्रिय व हमारे मेहमान हैं. आप हमें मित्र जैसे प्रिय और सर्वज्ञाता हैं. आप हविवाहक हैं. हम आप की स्तुति करते हैं. (१)

कविमिव प्रश ꣳ स्वं यं देवास इति द्विता. नि मर्त्येष्वादधुः.. (२)

देवताओं ने कवि की भांति दो रूपों (गार्हपत्य और आहवनीय) में मनुष्यों में अग्नि को प्रतिष्ठित किया. (२)

त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँः पाहि शृणुही गिरः. रक्षा तोकमुत त्मना.. (३)

हे इंद्र! आप हमारी वाणी सुनिए. आप हमें अपनी शरण में लीजिए. आप अपने यजमानों की स्तुति पर ध्यान दीजिए. आप उन की रक्षा के लिए सचेष्ट रहने की कृपा कीजिए. (३)

एन्द्र नो गधि प्रिय सत्राजिदगोह्य. गिरिर्न विश्वतः पृथुः पतिर्दिवः.. (४)

हे इंद्र! आप विश्वपालक, पर्वत की भांति विशाल एवं स्वर्गलोक के स्वामी हैं. आप कृपया हमारे यज्ञ (पास) में पधारिए. (४)

अभि हि सत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी. इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः.. (५)

हे इंद्र! आप सोमरस पीने वाले व सच का पालन करने वाले हैं. आप आकाश और पृथ्वी दोनों ही लोकों में अपनी सामर्थ्य रखते हैं. आप स्वर्गलोक के पति हैं. आप सोमयज्ञ करने वालों की बढ़ोतरी करने वाले हैं. (५)

त्व ꣳ हि शश्वतीनामिन्द्र धर्ता पुरामसि. हन्ता दस्योर्मनोर्वृधः पतिर्दिवः.. (६)

हे इंद्र! आप स्वर्गलोक के पति एवं शाश्वत हैं. आप नगरों को धारण करने वाले, दस्युओं का नाश करने वाले व मनोबल की बढ़ोतरी करने वाले हैं. (६)

पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत.
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः.. (७)

हे इंद्र! आप (शत्रुओं के) नगरों के भेदक, कवि, युवा, वज्र वाले, विश्व के कर्मों के धारक व पराक्रमी हैं. आप की कई जगह प्रशंसा होती है. आप अपने इसी स्वरूप के साथ प्रकट हुए हैं. (७)

त्वं वलस्य गोमतो ऽ पावरद्रिवो बिलम्.

त्वां देवा अबिभ्युषस्तुज्यमानास आविषुः.. (८)

हे इंद्र! आप ने अपने बल से गायों को चुराने वाले राक्षसों के जत्थे को नष्ट किया. राक्षसों के नाश के बाद सारे देवता इकट्ठे हुए. फिर वे सभी देवता तब आप के साथ संगठित हुए. (८)

इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमैरनूषत. सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः.. (९)

इंद्र हजारों दान देने वाले, बहुत ओजस्वी व बहुत क्षमतावान हैं. उन की सर्वत्र भूरिभूरि प्रशंसा होती है. हम सभी को इंद्र की स्तुति करनी चाहिए. (९)

दसवां अध्याय

पहला खंड

अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मन् जनयन्प्रजा भुवनस्य गोपाः.
वृषा पवित्र अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः.. (१)

सोम पानी बरसाने वाले, सब की रक्षा करने वाले व दिव्य हैं. सब से पहले आकाश में उन्होंने प्रजा को उत्पन्न कर के प्रतिष्ठा प्राप्त की, फिर पृथ्वी के ऊपर प्राकृतिक छलनी से छन कर के बढ़ोतरी प्राप्त की. (१)

मत्सि वायुमिष्टये राधसे नो मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः.
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान्मत्सि द्यावापृथिवी देव सोम.. (२)

छाना गया सोमरस मित्र, वरुण तथा मरुद्गण की सामर्थ्य बढ़ा देने वाला हो. वह इंद्र के भी बल को बढ़ाए. वह हमें अन्न, धन दिलाने के लिए वायु को प्रसन्न करे. सोमरस अनुपम (दिव्य) है. वह स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक दोनों ही लोकों के लिए प्रसन्नता बढ़ाने वाला हो. (२)

महत्तत्सोमो महिषश्चकारापां यद्गर्भो ऽ वृणीत देवान्.
अदधादिन्द्रे पवमान ओजो ऽ जनयत्सूर्ये ज्योतिरिन्दुः.. (३)

सोम ने सूर्य में प्रकाश उत्पन्न किया. इंद्र में ओज स्थापित किया. ये जल के गर्भ स्वरूप और महानतम हैं. सोम ने बहुत से कार्य किए हैं. (३)

एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयते. अभि द्रोणान्यासदम्.. (४)

सोम अमर हैं. ये पक्षी के उड़ने की तरह वेग से द्रोणकलश में प्रवेश करते हैं. (४)

एष विप्रैरभिष्टुतो ऽ पो देवो वि गाहते. दधद्रत्नानि दाशुषे.. (५)

सोम दिव्य और ब्राह्मणों द्वारा प्रशंसित हैं. ये जल में मिलते हैं. सोम यजमानों के लिए धन धारण करते हैं. (५)

एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः. पवमानः सिषासति.. (६)

शूरवीर जैसे बल प्रयोग करता है, वैसे ही सोम अपना धन देते हैं. ये बलशाली, सामर्थ्यवान और ऐश्वर्यशाली हैं. (६)

एष देवो रथर्यति पवमानो दिशस्यति. आविष्कृणोति वग्वनुम्.. (७)

सोम पवित्र हैं. ये यजमानों की इच्छा पूर्ति के लिए यज्ञ स्थान तक जाना चाहते हैं. ये आवाज करते हुए यज्ञ स्थान में जाने के लिए रथ चाहते हैं. (७)

एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः. हरिर्वाजाय मृज्यते.. (८)

सोम पवित्र हैं. पुरोहित सोम को साफ कर के प्रार्थनाओं से उसी तरह सजाते हैं, जैसे युद्ध में ले जाने के लिए घोड़ों को सजाया जाता है. (८)

एष देवो विपा कृतो ऽ ति ह्वरा ꣳ सि धावति. पवमानो अदाभ्यः.. (९)

सोम पवित्र हैं और स्वयं किसी से नहीं दबते, पर ये स्वयं शत्रुओं को दबा देते हैं. (९)

एष दिवं वि धावति तिरो रजा ꣳ सि धारया. पवमानः कनिक्रदत्.. (१०)

सोम पवित्र हैं. वे छन कर धारा का रूप धर कर आवाज करते हुए शत्रुलोक को जीतते हैं. वे यज्ञ के प्रभाव से स्वर्गलोक की ओर दौड़ते हैं. (१०)

एष दिवं व्यासरत्तिरो रजा ꣳ स्यस्तृतः. पवमानः स्वध्वरः.. (११)

सोम पवित्र हैं. वे अपने यज्ञ स्थान से स्वर्गलोक के लिए प्रस्थान करते हैं. वे यज्ञ के श्रेष्ठ साधन हैं और शत्रुओं को हरा सकने की सामर्थ्य रखते हैं. (११)

एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः. हरिः पवित्रे अर्षति.. (१२)

सोम पवित्र और हरित कांति वाले हैं. देवताओं और उन की पीढ़ियों द्वारा जन्म से ही पवित्रतापूर्वक उपयोग में लाए जाते हैं. (१२)

एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः. धारया पवते सुतः.. (१३)

सोम पुष्टतादायी आहार को पैदा करते हैं. वे स्फूर्तिदायी कार्य क्षमता उत्पन्न करने वाले हैं. वे अपनी धाराओं से झरते हुए स्वतः ही स्वच्छ (पवित्र) हो जाते हैं. (१३)

दूसरा खंड

एष धिया यात्यण्व्या शूरो रथेभिराशुभिः. गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्.. (१)

सोम शूरवीर हैं. अंगुलियों से इन्हें निचोड़ा जाता है. ये जल्दी चलने वाले रथ से बुद्धिपूर्वक इंद्र के पास जाते हैं. (१)

एष पुरू धियायते बृहते देवतातये. यत्रामृतास आशत.. (२)

यज्ञ स्थान में बहुत से देवता प्रतिष्ठित हैं. ये उस यज्ञ स्थल में बुद्धिपूर्वक अगणित कार्य करने की इच्छा रखते हैं. (२)

एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप द्रोणेष्वायवः. प्रचक्राणं महीरिषः.. (३)

यजमान सोमरस को परिष्कृत कर के द्रोणकलश में भरते हैं. यह रसीला व अन्नों को उत्पन्न करने वाला है. (३)

एष हितो वि नीयते ऽ न्तः शुन्ध्यावता पथा. यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः.. (४)

सोम को यज्ञ स्थान पर ले जाया जाता है. वहां पर पुरोहित उसे शुद्ध करते हैं, पवित्र बनाते हैं, तब देवताओं के हवि के रूप में इस का प्रयोग किया जाता है. (४)

एष रुक्मिभिरीयते वाजी शुभ्रेभिर शुभिः. पतिः सिन्धूनां भवन्.. (५)

सोम रसों के राजा और पवित्र सफेद किरणों वाले हैं. वे घोड़े की तरह जल्दी से याजकों के पास जाते हैं. (५)

एष शृङ्गाणि दोधुवच्छिशीते यूथ्यो ३ वृषा. नृम्णा दधान ओजसा.. (६)

शक्तिशाली बैल जैसे पशुओं के झुंड में अपना बल दिखाता है, वैसे ही सोम अपनी शक्ति प्रकट करते हैं. सोम वैभव व बलशाली हैं. (६)

एष वसूनि पिब्दनः परुषा ययिवाँ अति. अव शादेषु गच्छति.. (७)

सोम हिंसकों का नाश कर देते हैं. वे पीड़ा पहुंचाने के लिए भी सताते हैं. वे उन्हें सीमा में रखते हैं. वे बहुत शक्तिशाली और क्षमतावान हैं. (७)

एतमुत्यं दश क्षिपो हरि हिन्वन्ति यातवे. स्यायुधं मदिन्तमम्.. (८)

सोम मदकारी, आयुध वाले, हरित कांति वाले व भीतर की शक्ति (अंतःकरण की) धरते हैं. दसों अंगुलियों से मसल कर इन्हें निचोड़ा जाता है. इन्हें देवताओं को चढ़ाया जाता है. (८)

तीसरा खंड

एष उ स्य वृषा रथो ऽ व्या वारेभिरव्यत. गच्छन्वाज सहस्रिणम्.. (१)

सोम हजारों घोड़ों की तरह गतिपूर्वक जाते हैं. ये रथ की तरह गतिमान हैं. इन्हें द्रोणकलश में छलनी से छाना जाता है. ये अन्नदाता हैं. (१)

एतं त्रितस्य योषणो हरि हिन्वन्त्यद्रिभिः. इन्दुमिन्द्राय पीतये.. (२)

इंद्र के पीने के लिए हरित कांति वाला सोमरस पत्थरों से त्रित (तीन प्रकार से स्तुतियों के साथ पवित्र किया जाता हुआ) कूटा जा रहा है. (२)

एष स्य मानुषीष्वा श्येनो न विक्षु सीदति. गच्छं जारो न योषितम्.. (३)

यह सोमरस मनुष्यों में उसी प्रकार जल्दी पहुंच रहा है, जैसे बाज पक्षी अपने शिकार के पास पहुंचता है व प्रेमी अपनी प्रेमिका के पास जाता है. (३)

एष स्य मद्यो रसो ऽ व चष्टे दिवः शिशुः. य इन्दुर्वारमाविशत्.. (४)

सोम स्वर्गलोक के शिशु (बच्चे), मददायी और सर्वद्रष्टा हैं. ये छलनी से शुद्ध होते हैं. (४)

एष स्य पीतये सुतो हरिरर्षति धर्णसिः. क्रन्दन्योनिमभि प्रियम्.. (५)

सोम आवाज करते हुए अपने अभीष्ट (प्रिय) स्थान (द्रोणकलश) में जाते हैं. इन्हें देवताओं के पीने के लिए तैयार किया जाता है. ये हरित कांति वाले हैं. ये सब को धारण करते हैं. (५)

एतं त्य ꣳ हरितो दश मर्मृज्यन्ते अपस्युवः. याभिर्मदाय शुम्भते.. (६)

इंद्र को प्रसन्न करने के लिए सोमयाग किया जाता है. दसों अंगुलियां मसलमसल कर सोमरस को शुद्ध करती हैं. (६)

चौथा खंड

एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन्मनसस्पतिः. अव्यं वारं वि धावति.. (१)

सोम मन के राजा, संसार को जानने वाले और घोड़े के समान तेजी से दौड़ कर द्रोणकलश में जाते हैं. (१)

एष पवित्रे अक्षरत्सोमो देवेभ्यः सुतः. विश्वा धामान्याविशन्.. (२)

सोमरस अमर व पवित्र है. वह देवताओं और उन की पीढ़ियों के लिए झरता है. यह छन कर उन में (देवताओं में) व्याप्त हो जाता है. (२)

एष देवः शुभायते ऽ धि योनावमर्त्यः. वृत्रहा देववीतमः.. (३)

सोम देवताओं को बहुत अधिक भाते हैं. वे देवताओं की दिव्यता (दैवीभाव) को और अधिक बढ़ा देते हैं. वे अमर और शत्रुनाशी हैं. यज्ञ के कलश में सोमरस बहुत अधिक शोभित होता है. (३)

एष वृषा कनिक्रदद्दशभिर्जामिभिर्यतः. अभि द्रोणानि धावति.. (४)

दसों अंगुलियां मसलमसल कर सोमरस को निचोड़ती हैं. यह शक्तिशाली है. यह आवाज करता व दौड़ता हुआ द्रोणकलश में पहुंचता है. (४)

एष सूर्यमरोचयत्पवमानो अधि द्यवि. पवित्रे मत्सरो मदः.. (५)

स्वर्गलोक पवित्रकारी है. सोमरस स्वर्गलोक में आनंद देने वाला है. पवित्र और छाना

हुआ सोमरस सूर्य को प्रकाशित करने की सामर्थ्य रखता है. (५)

एष सूर्येण हासते संवसानो विवस्वता. पतिर्वाचो अदाभ्यः.. (६)

सोम बंधनमुक्त, उपासना योग्य व तेजस्वी हैं. सूर्य देव जल, वायु आदि पांच तत्त्वों में मिलने के लिए इसे छोड़ते हैं. (६)

पांचवां खंड

एष कविरभिष्टुतः पवित्रे अधि तोशते. पुनानो घ्नन्नप द्विषः.. (१)

कवि और ज्ञानी सोमरस की उपासना करते हैं. यह पाप (रोग) नाशक, स्फूर्तिदायी और तृप्तिदायी है. इस का रस कूट कर निकाला जाता है. (१)

एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित्परि षिच्यते. पवित्रे दक्षसाधनः.. (२)

सोम इंद्र और वायु के लिए छन कर नीचे भूलोक पर पधारते हैं. वे पवित्र और स्वर्गिक सुखदाता हैं. (२)

एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः. सोमो वनेषु विश्ववित्.. (३)

सोम सर्वज्ञाता, शक्तिशाली और सर्वश्रेष्ठ हैं. मनुष्य (यजमान) इन्हें वन में वन की उपयोगी वस्तुओं और ओषध के रूप में पाते हैं. (३)

एष गव्युरचिक्रदत्पवमानो हिरण्ययुः. इन्दुः सत्राजिदस्तृतः.. (४)

सोम का स्वरूप रसीला व स्फूर्तिदायी हैं. वे सर्वज्ञाता हैं. मनुष्य लकड़ी के बने बरतनों से इन्हें यज्ञ में ले जाते हैं. (४)

एष शुष्म्यसिष्यददन्तरिक्षे वृषा हरिः. पुनान इन्दुरिन्द्रमा.. (५)

सोम अंतरिक्ष में शोभित होते हैं. ये घोड़े की तरह बलवान और हरे हैं. ये छलनी में छनते हैं. ये सादर इंद्र के पास जाते हैं. (५)

एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः पुनानो अर्षति. देवावीरघश ꣳ सहा.. (६)

सोम देवताओं के रक्षक, पापियों के संहारक, अविनाशी और दिव्य और वे कलश में विराजते हैं. (६)

छठा खंड

स सुतः पीतये वृषा सोमः पवित्रे अर्षति. विघ्नन्रक्षा ꣳ सि देवयुः.. (१)

सोम विघ्नों को नष्ट करने वाले व दिव्य गुणों से भरपूर हैं. इन्हें इंद्र आदि देवों के लिए

छलनी से छान कर तैयार किया गया है. (१)

स पवित्रे विचक्षणो हरिरर्षति धर्णसिः. अभि योनिं कनिक्रदत्.. (२)

सोमरस पवित्र, विलक्षण, हरा व सब को धारण करने वाला है. वह छलनी से छनते समय आवाज करता है. (२)

स वाजी रोचनं दिवः पवमानो वि धावति. रक्षोहा वारमव्ययम्.. (३)

सोमरस शक्तिमान है. स्वर्गलोक को चमकाता है और दुष्टों का नाश करता है. वह दिव्य है और छनता हुआ लगातार प्रवाहित होता रहता है. (३)

स त्रितस्याधि सानवि पवमानो अरोचयत्. जामिभिः सूर्य ꣳ सह.. (४)

सोम अपने तेज से सूर्य के साथ प्रकाशित होते हैं. त्रितयज्ञ (प्रकृति, प्राणी और आकाश के बीच आदानप्रदान पूर्ण यज्ञ) में विधिविधान से सुशोभित होते हैं. (४)

स वृत्रहा वृषा सुतो वरिवोविददाभ्यः. सोमो वाजमिवासरत्.. (५)

सोम शत्रुनाशक, शक्तिवर्द्धक व धनदाता हैं. निचोड़ कर निकाले जाते समय ये घोड़े के समान वेगवान हो कर घड़े में प्रवेश करते हैं. (५)

स देवः कविनेषितो ३ ऽ भि द्रोणानि धावति. इन्दुरिन्द्राय म ꣳ हयन्.. (६)

सोम इंद्र और अन्य देवों का महत्त्व बढ़ाते हैं. सोमयज्ञ करने वाले यजमान उन्हें वेग से कलश में प्रवाहित करते हैं और स्वर्गलोक में प्रकाशित होते हैं. (६)

सातवां खंड

यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः संभृत ꣳ रसम्.
सर्व ꣳ स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना.. (१)

जो यजमान ऋषियों द्वारा संकलित जीवन की उपयोगी बातों में ध्यान लगाता है, पवित्रकारी सूक्तों (मंत्रों, स्तुतियों) का पाठ करता है वह यजमान पवित्र और पोषक अन्नादि रसों का आनंद लेता है. (१)

पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृत ꣳ रसम्.
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीर ꣳ सर्पिर्मधूदकम्.. (२)

ऋषियों ने वेद मंत्रों की रचना की है. जो यजमान उन का अध्ययनमनन करता है, उस का ज्ञान बढ़ाने के लिए सरस्वती सहायता करती हैं. उस यजमान के लिए शहद, दूध, घी आदि पोषक स्वयं प्रदान करती हैं. (२)

पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्चुतः.

ऋषिभिः संभृतो रसो ब्राह्मणेष्वमृत हितम्.. (३)

ऋषियों ने जो मंत्र रचे हैं, वे मंत्र ब्राह्मणों के लिए अमृत सरीखे कल्याणकारी, हितकारी व घी से चुए हुए हैं. वे स्नेह की धाराओं से सने हुए और श्रेष्ठ फलदायी हैं. (३)

पावमानीर्दधन्तु न इमं लोकमथो अमुम्.
कामान्त्समर्धयन्तु नो देवीर्देवैः समाहृताः.. (४)

देवी और देवताओं ने मंत्र संकलित किए हैं. वे मंत्र न केवल इस लोक में बल्कि परलोक में भी हमारे लिए कल्याणकारक हों. वे हमारी सारी इच्छाएं पूरी करने वाले हों. (४)

येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा. तेन सहस्रधारेण पावमानीः पुनन्तु नः.. (५)

देवतागण जिन से सदा अपने को निर्मल (पवित्र) बनाते हैं, वैसी ही हजारों धाराओं से वेदों के मंत्र हमें पवित्र बनाने की कृपा करें. (५)

पावमानीः स्वस्त्ययनीस्ताभिर्गच्छति नान्दनम्.
पुण्याँ श्च भक्षान्भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति.. (६)

जो यजमान पवित्रतादायी मंत्रों से प्रेरणा लेता है, जो यजमान हितकारी मंत्रों में रुझान रखता है, वह परमानंद का भागी होता है. वह पुण्य अर्जित कराने वाले अन्न को खाता है और अमरता का भागीदार होता है. (६)

आठवां खंड

अगन्म महा नमसा यविष्ठं यो दीदाय समिद्धः स्वे दुरोणे.
चित्रभानु रोदसी अन्तरुर्वी स्वाहुतं विश्वतः प्रत्यञ्चम्.. (१)

हे अग्नि! कौन सी ऐसी जगह है, जहां आप नहीं जा सकते? आप स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक में भलीभांति प्रज्वलित (प्रकाशित) होते हैं. आप खूब प्रकाशवान, अच्छी आहुतियों वाले व युवा हैं. हम आप को नमस्कार करते हैं और आप की शरण में हैं. (१)

स मह्ना विश्वा दुरितानि साह्वानग्नि ष्टवे दम आ जातवेदाः.
स नो रक्षिषद्दुरितादवद्यादस्मान्गृणत उत नो मघोनः.. (२)

हे अग्नि! आप का प्रकाश ज्ञान वाला है. आप उस प्रकाश को फैलाते रहते हैं. आप तेजस्वी हैं और संसार के सभी पापों का नाश करने में समर्थ हैं. आप दुष्कर्म करने से हमें रोकते हैं और हमारी रक्षा करते हैं. आप हमारी आहुतियों को ग्रहण करते हैं. आप हमारे प्रति कल्याण की भावना धारण करते हैं. (२)

त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मतिभिर्वसिष्ठाः.
त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः.. (३)

हे अग्नि! वसिष्ठ ऋषि विशेष बुद्धिपूर्वक आप की स्तुति करते हैं. आप वरुण व मित्र स्वरूप हैं. आप के धन कल्याणकारी हों. आप अपनी मंगलकारी भावनाओं से हमारी रक्षा कीजिए. (३)

महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव. स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे.. (४)

इंद्र महान व प्रकाशमान हैं. वे अपने प्रिय भक्तों की स्तुतियों से बढ़ोतरी पाते हैं. वे बरसने वाले बादलों की भांति हैं. उपासक उन के पुत्र की तरह हैं. (४)

कण्वा इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम्. जामि ब्रुवत आयुधा.. (५)

हे इंद्र! ऐसा कहा जाता है कि उस समय यज्ञ की निगरानी या रक्षा के लिए किसी भी साधन की जरूरत नहीं रह जाती, जब कण्व जैसे ऋषि अपनी स्तुतियों से आप को यज्ञ का रक्षक बना लेते हैं. (५)

प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद्भरन्त वह्नयः. विप्रा ऋतस्य वाहसा.. (६)

दिव्य अग्नियां आकाश में भर जाती हैं. वे तीव्र गति से इंद्र को यज्ञ स्थान पर पहुंचा देती हैं. तब ब्राह्मणगण उन की स्तुति करते हैं. (६)

नौवां खंड

पवमानस्य जिघ्नतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत. जीरा अजिरशोचिषः.. (१)

हे सोम! आप हरे हैं. आप के रस की धारा प्रसन्नतादायक है. वह छन कर और साफ हो कर झरती है. आप शत्रुनाशक हैं और सब जगह जा सकते हैं. (१)

पवमानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः. हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः.. (२)

हे सोम! आप पवित्र, उच्चतम स्थान पर शोभित, उज्ज्वलतर से उज्ज्वलतम, हरित शोभा वाले व सब को प्रसन्नता देने वाले हैं. आप को पुष्ट बनाने में मरुद्गण भी आप की सहायता करते हैं. (२)

पवमान व्यश्नुहि रश्मिभिर्वाजसातमः. दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम्.. (३)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप घोड़े की तरह अपनी किरणों से सर्वत्र पहुंच जाते हैं. आप यजमानों को अच्छा वीर्य (श्रेष्ठ संतान) प्रदान करते हैं. (३)

परीतो षिञ्चता सुत ꣳ सोमो य उत्तम ꣳ हविः.
दधन्वाँ यो नर्यो अप्स्व ३ ऽ न्तरा सुषाव सोममद्रिभिः.. (४)

यजमान जल में सोम को मिलाते हैं. वे पत्थरों से कूट कर सोमरस निकालते हैं. वह देवताओं के लिए श्रेष्ठ है. यजमान उस से सब ओर सींचें. (४)

नूनं पुनानो ऽ विभिः परि स्रवादब्धः सुरभिंतरः.
सुते चित्वाप्सु मदामो अंधसा श्रीणन्तो गोभिरुत्तरम्.. (५)

हे सोम! छान कर, शुद्ध बना कर आप को गायों के दूध के साथ मिला लिया जाता है. इतना हो जाने पर आप को जल में मिलाया जाता है. तब आप अच्छी तरह सेवन योग्य हो जाते हैं. आप अमर और बहुत सुगंध वाले हैं. (५)

परि स्वानश्चक्षसे देवमादनः क्रतुरिन्दुर्विचक्षणः.. (६)

सोमरस विलक्षण है और देवताओं के लिए आनंददायी है, यज्ञ का प्रमुख साधन है. सब को देखने के लिए सोम कलश में स्थित रहने की कृपा करें. (६)

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्.
पुनानो वारमत्येष्यव्यय ं३ श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदत्.. (७)

सोम हरे रंग के, शक्तिवर्द्धक, प्रकाशित व राजा के समान दर्शनीय हैं. इन के रस को भेड़ के बालों से बनी छलनी में छाना जाता है. गाय के दूध में मिल कर सोमरस और अधिक पवित्र हो जाता है. वह जल से भरे हुए कलशों में वैसे ही प्रवेश करता है, जैसे वेग से उड़ता हुआ पक्षी उतरता है. (७)

पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे.
स्वसार आपो अभि गा उदासरन्त्सं ग्रावभिर्वसते वीते अध्वरे.. (८)

सोम पर्वत पर निवास करते हैं. वे पर्वत पृथ्वी की नाभि पर स्थित हैं और उन के पत्ते खूब बड़ेबड़े होते हैं. बरसने वाले बादल उन के पिता हैं. वे गाय के दूध, पानी और स्तुतियों से यज्ञ स्थल पर पधार वहां प्रतिष्ठित होते हैं. (८)

कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि.
अपसेधन् दुरिता सोम नो मृड घृता वसानः परि यासि निर्णिजम्.. (९)

हे सोम! आप विद्वानों द्वारा जाने जाते हैं और जलमय हैं. आप छलनी में छन कर वैसे ही द्रोणकलश में वेग से जा कर स्थित रहते हैं, जैसे संग्राम स्थल पर जाने वाले घोड़े वेग से वहां जा कर स्थित रहते हैं. आप हमें बुरी बातों और आदतों से दूर रखिए. हमें सब सुख प्रदान कीजिए. (९)

दसवां खंड

श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत.
वसूनि जातो जनिमान्योजसा प्रति भागं न दीधिमः.. (१)

हे यजमानो! इंद्र उसी तरह प्रचुर वैभव को बांटते हैं, जैसे सूर्य किरणों को (अपने में) बांटते हैं. हम उन की कृपा से वैसे ही धन पाते हैं, जैसे पिता की कृपा से हम उन से संपत्ति

का हिस्सा पाते हैं. (१)

अलर्षिरातिं वसुदामुप स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातयः.
यो अस्य कामं विधतो न रोषति मनो दानाय चोदयन्.. (२)

इंद्र सज्जनों (भद्र) को धन प्रदान करते हैं. उन के दान बहुत कल्याणकारी हैं. यजमान जब उन से कुछ चाहते हैं तो उन का मन उन्हें उस दान के लिए प्रेरित करता है. अतः हे यजमानो! आप सब उन की स्तुति करो. (२)

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि.
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये वि द्विषो वि मृधो जहि.. (३)

हे इंद्र! आप हमें उन सब से अभय प्रदान कीजिए, जिन से हमें भय लगता है. आप हम से विद्वेष रखने वालों को नष्ट कीजिए. आप हिंसकों का नाश कीजिए. आप हमारी रक्षा कीजिए. आप सामर्थ्यवान हैं. (३)

त्व ꣳ हि राधसस्पते राधसो महः क्षयस्यासि विधर्ता.
तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे.. (४)

हे इंद्र! आप धनपति, बहुत धनधारी एवं उपास्य हैं. हम यजमान शुद्ध और पवित्र सोमरस का आनंद लेने के लिए आप को आमंत्रित करते हैं. (४)

ग्यारहवां खंड

त्व ꣳ सोमासि धारयुर्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे. पवस्य म ꣳ हयद्रयिः.. (१)

हे सोम! आप बलिष्ठ व पवित्र हैं. आप यज्ञ में धारा से वैभवयुक्त मार्ग बनाते हैं. आप धनदाता व शक्तिदाता हैं. आप शुद्ध हो कर कलश में विराजिए. (१)

त्व ꣳ सुतो मदिन्तमो दधन्वान्मत्सरिन्तमः. इन्दुः सत्राजिदस्तृतः.. (२)

हे सोम! आप मददायी, बलधारी, यज्ञ के मूलाधार, प्रकाशित, स्फूर्तिदायी और शत्रुओं को जीतने वाले हैं. आप को जीता नहीं जा सकता. (२)

त्व ꣳ सुष्वाणो अद्रिभिरभ्यर्ष कनिक्रदत्. द्युमन्त ꣳ शुष्ममा भर.. (३)

हे सोम! पत्थरों से कूटकूट कर आप का रस निकाला व निचोड़ा जाता है. आप हमें ओज और सामर्थ्य प्रदान करने की कृपा करें. आप आवाज करते हुए कलश में प्रवेश करने की कृपा कीजिए. (३)

पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा. आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः.. (४)

हे सोम! आप मधुरतायुक्त हैं. आप देवताओं की तृप्ति के लिए अपनी ओजयुक्त

धाराओं से सदैव हमारे कलशों में आइए. (४)

तव द्रप्सा उदप्रुत इन्द्रं मदाय वावृधुः. त्वां देवासो अमृताय कं पपुः.. (५)

हे सोम! आप का रस जल से ओतप्रोत है. आप को इंद्र का यश और आनंद बढ़ाने के लिए उन्हें पिलाया जाता है. देवगण अमरता के लिए आप को पीते हैं. (५)

आ नः सुतास इन्दवः पुनाना धावता रयिम्. वृष्टिद्यावो रीत्यापः स्वर्विदः.. (६)

हे सोम! आप आत्मज्ञाता, रसीले और यजमान के लिए बादलों से पानी बरसाने की भांति धन बरसाने वाले हैं. आप हमारे लिए वैभव प्रदान करने की कृपा कीजिए. (६)

परि त्य ꣳ हर्यत ꣳ हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण.
यो देवान्विश्वाँ इत्परि मदेन सह गच्छति.. (७)

सोमरस आनंद के साथ सभी देवताओं तक पहुंचता है. हरे सोमरस को छलनी से छान कर साफ किया जाता है. सोम पापों से रोकते हैं और मन को हरने वाले (मनोहर) हैं. (७)

द्विर्यं पञ्च स्वयशस ꣳ सखायो अद्रिस ꣳ हतम्.
प्रियमिन्द्रस्य काम्यं प्रस्नापयन्त ऊर्मयः.. (८)

सोमरस पत्थरों से कूट कर निकाला जाता है. इन्हें दोनों हाथों की दस अंगुलियां साफ करती हैं और जलमय बनाती हैं. ये तरंगों की तरह लहराते हैं. ये सभी को प्रिय, सभी के मित्र और इंद्र के काम्य (चाहे गए) हैं. (८)

इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे. नरे च दक्षिणावते वीराय सदनासदे.. (९)

हे सोम! आप वृत्रनाशक इंद्र के लिए द्रोणकलश में स्थित रहिए. आप यज्ञ में दक्षिणा देने वाले और यज्ञकर्ता यजमान के लिए मटके में बने रहिए व स्थिर रहिए. (९)

पवस्व सोम महे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय.. (१०)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप शत्रुनाशक हैं. आप धन और बल के लिए पात्र में पधारिए. आप घोड़े जैसे वेगवान और बलवान हैं. (१०)

प्र ते सोतारो रसं मदाय पुनन्ति सोमं महे द्युम्नाय.. (११)

हे सोम! पृथ्वी पर यजमान आनंद पाने के लिए आप के रस को साफ कर के छानते हैं. (११)

शिशुं जज्ञान ꣳ हरिं मृजन्ति पवित्रे सोमं देवेभ्य इन्दुम्.. (१२)

हे सोम! तुरंत पैदा हुए बच्चे को नहला कर जैसे साफ किया जाता है, वैसे ही यजमान आप को साफ करते हैं. आप को देवों के लिए छलनी में छाना जाता है. (१२)

उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्. इन्दुं देवा अयासिषुः.. (१३)

हे सोम! देवगण आप का रस पीते हैं. उसे गाय के दूध और जल में मिला कर परिष्कृत किया गया है. वह चमकीला है. (१३)

तमिद्वर्धन्तु नो गिरो वत्सꣳ सꣳ शिश्वरीरिव. य इन्द्रस्य हृदꣳ सनिः.. (१४)

माता जैसे शिशु के शरीर को अपने दूध से बढ़ाती है, वैसे ही हमारी स्तुतियां सोम की बढ़ोतरी करें. वे इंद्र के हृदय में निवास करते हैं. (१४)

अर्षा नः सोम शं गवे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम्. वर्धा समुद्रमुक्थ्य.. (१५)

हे सोम! आप उपास्य हैं और समुद्र की तरह उमड़ कर श्रेष्ठ पात्र में विराजिए. हमारे घर धनधान्य से भरे रहें. आप की कृपा से हमारा गोधन भी सुखी रहे. (१५)

बारहवां खंड

आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्. येषामिन्द्रो युवा सखा.. (१)

इंद्र जवान व यजमान के मित्र हैं. यजमान अग्नि को प्रज्वलित करते हैं. यजमान देवताओं के लिए कुश के आसन बिछाते हैं. (१)

बृहन्निदिध्म एषां भूरि शस्त्रं पृथुः स्वरुः. येषामिन्द्रो युवा सखा.. (२)

यजमान के पास देवताओं के लिए भरपूर समिधाएं, प्रचुर शस्त्र, अगणित प्रार्थनाएं हैं. इंद्र इन यजमानों के मित्र हैं और वे सदा जवान हैं. (२)

अयुद्ध इद्युधा वृतꣳ शूर आजति सत्वभिः. येषामिन्द्रो युवा सखा.. (३)

युवा इंद्र जिन यजमानों के मित्र हैं वे युद्ध में रुचि नहीं रखते हैं, फिर भी शक्तिशाली सैन्य बल वाले शत्रु को हरा सकते हैं. (३)

य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे. ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग.. (४)

इंद्र संसार के ईश्वर और यजमानों को भरपूर वैभव देने वाले हैं. वे अकेले ही शत्रुओं को हराने के लिए पर्याप्त हैं. (४)

यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावाँ आविवासति. उग्रं तत्पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग.. (५)

हे इंद्र! लाखों में से जो कोई यजमान सोमयज्ञ से आप को भजता है, आप उसे जल्दी ही ओजस्वी बना देते हैं. (५)

कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत्. कदा नः शुश्रवद्गिर इन्द्रो अङ्ग.. (६)

हे इंद्र! आप स्तुति न करने वालों को मामूली पौधों की तरह कब हटाएंगे? कब आप

आराधना करने वाले हम लोगों की स्तुति सुनेंगे? (६)

गायन्ति त्वा गायत्रिणो ऽ र्चत्यर्कमर्किणः.
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्व शमिव येमिरे.. (७)

हे इंद्र! आप सैकड़ों कार्य करने वाले हैं. हम यजमान मंत्रों से आप के लिए यज्ञ करते हैं. हम आप की महिमा का गुणगान करते हैं. आप ब्रह्मविद हैं. बांस की तरह आप को ऊंची पदवी प्रदान करते हैं. (७)

यत्सानोः सान्वारुहो भूर्यस्पष्ट कर्त्वम्.
तदिन्द्रो अर्थं चेतति यूथेन वृष्णिरेजति.. (८)

यजमान सोमवल्ली आदि समिधा लाने के लिए पर्वत के शिखर पर जाते हैं. वे अनेक कर्म वाले यज्ञ करते हैं. इंद्र यजन करने वाले यजमान के मन के उद्देश्य को जान जाते हैं. तब वे यजमान की इच्छा पूरी करने के लिए अन्य देवताओं के साथ यज्ञ में जाने के लिए तैयार होते हैं. (८)

युंक्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा. अथा न इन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुतिं चर.. (९)

हे इंद्र! आप सोमरस पीने वाले हैं. आप के घोड़े गरदन पर अच्छे बाल वाले व मजबूत अंगों वाले हैं. आप उन घोड़ों को रथ में जोतिए और हमारी स्तुति सुनने के लिए यज्ञ में पधारिए. (९)

ग्यारहवां अध्याय

पहला खंड

सुषमिद्धो न आ वह देवाँ अग्ने हविष्मते. होतः पावक यक्षि च.. (१)

हे अग्नि! आप पवित्र करने वाले हैं. आप यजमान के कल्याण हेतु देवताओं का आह्वान करिए. देवताओं को हवि पहुंचाने के लिए हवि स्वीकार कीजिए. आप यज्ञ को सफल बनाने की कृपा कीजिए. (१)

मधुमन्तं तनूनपाद्यज्ञं देवेषु नः कवे. अद्या कृणुह्यूतये.. (२)

हे अग्नि! आप विद्वान् व ऊपर की ओर जाने वाले हैं. आप हमारे कल्याण के लिए तनमन के निमित्त पोषक मधुरता से भरी हवियों को देवताओं के लिए स्वीकार कीजिए. उन हवियों को स्वीकारने के बाद देवताओं तक पहुंचाने की कृपा भी कीजिए. (२)

नराश समिह प्रियमस्मिन्यज्ञ उप ह्वये. मधुजिह्व हविष्कृतम्.. (३)

हे अग्नि! आप देवताओं को प्रिय, उन के लिए प्रसन्नतादायी, मीठी जिह्वा वाले व पूजनीय हैं. हम इस यज्ञ में अपनी हवियों को देवों तक पहुंचाने का अनुरोध करते हैं. (३)

अग्ने सुखतमे रथे देवाँ ईडित आ वह. असि होता मनुर्हितः.. (४)

हे अग्नि! आप देवताओं को साथ ले कर अपने सुखदायी रथ में यज्ञ स्थान तक पधारिए. आप देवताओं को बुलाने वाले व मनुष्यों का हित साधने वाले हैं. (४)

यदद्य सूर उदिते ऽ नागा मित्रो अर्यमा. सुवाति सविता भगः.. (५)

सूर्य के उदित होने पर पवित्र मित्र, अर्यमा, सविता व भग हमें मनचाहा धन प्राप्त कराने की कृपा करें. (५)

सुप्रावीरस्तु स क्षयः प्र नु यामन्त्सुदानवः. ये नो अ हो ऽ तिपिप्रति.. (६)

हे देवताओ! आप उत्कृष्ट कल्याण करने वाले, हमारे श्रेष्ठ रक्षक व यज्ञ स्थान के वासी हैं. आप अहम्, दंभ आदि राक्षसों (बुरी प्रवृत्तियों) से हमारी रक्षा करने की कृपा करें. (६)

उत स्वराजो अदितिरदब्धस्य व्रतस्य ये. महो राजान ईशते.. (७)

देवताओं की माता अदिति समेत सभी देवतागण हमारे व्रत सिद्ध करें. वे इन्हें सिद्ध

करने की सामर्थ्य रखते हैं. वे महान, राजा व ईश्वर हैं. (७)

उ त्वा मदन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः. अव ब्रह्मद्विषो जहि.. (८)

हे इंद्र! आप सामर्थ्यवान हैं. सोमरस आप को मदमस्त बना दे. आप हमें वैभव प्रदान करें. आप ब्रह्मज्ञान के द्वेषियों का नाश करें. (८)

पदा पणीनराधसो नि बाधस्व महाँ असि. न हि त्वा कश्च न प्रति.. (९)

हे इंद्र! आप महान व बहुत क्षमतावान हैं. आप किसी के भी प्रति कृपा में कमी नहीं रखते हैं. आप दान न देने वालों को बाधा पहुंचाइए. (९)

त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम्. त्व ꣳ राजा जनानाम्.. (१०)

हे इंद्र! आप सब लोगों के राजा हैं. आप पुत्रों के और अपुत्रों के भी स्वामी हैं. (१०)

दूसरा खंड

आ जागृविर्विप्र ऋतं मतीना ꣳ सोमः पुनानो असदच्चमूषु.
सपन्ति यं मिथुनासो निकामा अध्वर्यवो रथिरासः सुहस्ताः.. (१)

सोम जाग्रत हैं, स्तुतियों को जानने वाले हैं. वे छनछन कर द्रोणकलश में झरते हैं. धनवान अच्छे हाथों वाले संपत्ति पाने के इच्छुक पुरोहित इसे इकट्ठा कर के संभाल कर रखते हैं. (१)

स पुनान उप सूरे दधान ओभे अप्रा रोदसी वी ष आवः.
प्रिया चिद्यस्य प्रियसास ऊती सतो धनं कारिणे न प्र य ꣳ सत्.. (२)

सोम पवित्र हैं, स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को अपनी आभा से पूर्ण करते हैं. इन की रसधार बहुत प्रिय लगने वाली है. वह हमारी रक्षा और हमें वैभव प्रदान करती है. यह सोमरस इंद्र के पास पहुंचता है. (२)

स वर्धिता वर्धनः पूयमानः सोमो मीढ्वां अभि नो ज्योतिषावित्.
यत्र नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः स्वर्विदो अभि गा अद्रिमिष्णन्.. (३)

सोम बढ़ोतरी पाने वाले, देवताओं की बढ़ोतरी करने वाले और अभीष्ट साधने वाले हैं. छना हुआ सोमरस सब प्रकार से हमारी रक्षा करे. आत्म तत्त्व ज्ञाता हमारे पूर्व पितर अपनी यज्ञीय गायों को सोम से भरे हुए पहाड़ों के पास ले जाया करते थे. (३)

मा चिदन्यद्वि श ꣳ सत सखायो मा रिषण्यत.
इन्द्रमित्स्तोता वृषण ꣳ सचा सुते मुहुरुक्था च श ꣳ सत.. (४)

हे मित्र यजमानो! इंद्र बलवान हैं. आप सोमरस परिष्कृत कर के इंद्र की ही स्तुति

कीजिए, किसी दूसरे देवता की नहीं. आप बारबार और देवताओं की स्तुति में समय और क्षमता नष्ट मत कीजिए. आप सामूहिक रूप से इंद्र की उपासना कीजिए. (४)

अवक्रक्षिणं वृषभं यथा जुवं गां न चर्षणीसहम्.
विद्वेषण संवननमुभयङ्करं म हिष्ठमुभयाविनम्.. (५)

इंद्र महान हैं. वे भौतिक और पारलौकिक दोनों वैभव देने वाले, यजमानों के आराध्य देव, शत्रुओं से द्वेष रखने वाले, शत्रुओं के नाशक, शीघ्र जाने वाले और बैल की तरह बलपूर्वक संघर्ष करने वाले हैं. आप उन्हीं इंद्र की स्तुति कीजिए. (५)

उदु त्ये मधुमत्तमा गिरः स्तोमास ईरते.
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव.. (६)

हे इंद्र! आप वैभवदाता व निरंतर रक्षक हैं. मधुर वाणी वाली स्तुतियां घोड़े वाले रथ के समान हैं, युद्ध में प्रिय लगने वाले अस्त्रशस्त्र (उपकरणों) के समान हैं. (६)

कण्वा इव भृगवः सूर्या इव विश्वमिद्धीतमाशत.
इन्द्र स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन्.. (७)

कण्व ऋषि की तरह भृगुओं ने भी इंद्र का साक्षात्कार किया. वे सूर्य की तरह अखिल विश्व में व्याप्त हैं. भृगु इंद्र की महिमा वैसे ही बखान करने लगे, जैसे यजमान (इंद्र की) महिमा का बखान करते हैं. (७)

पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः. द्विषस्तरध्या ऋणया न ईरसे.. (८)

हे सोम! आप की कृपा से कर्जा खत्म हो जाता है. आप दुश्मनों के नाश के लिए उसी प्रकार प्रेरित होने की कृपा कीजिए, जिस प्रकार पराक्रमी इंद्र वृत्रासुर का नाश करने के लिए प्रेरित हुए थे. आप हमें अच्छे पोषक अन्न प्रदान करें. (८)

अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शक्मना पयः.
गोजीरया र हमाणः पुरन्ध्या.. (९)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप सूर्य को उत्पन्न करने की और सूर्य जल धारण करने की सामर्थ्य रखते हैं. सूर्य पृथ्वीलोक में जीवन को गतिशील बनाने में समर्थ हैं. (९)

अनु हि त्वा सुत सोम मदामसि महे समर्यराज्ये.
वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे.. (१०)

हे सोम! हम आप के अनुगामी, आप के पुत्र और आप की कृपा से सुखपूर्वक निवास करते हैं. हम आप की कृपा और क्षमता से ही कोई कार्य कर पाते हैं. (१०)

परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय.. (११)

हे सोम! आप स्वादिष्ट हैं. आप मित्र, पूषा, भग और धन्वेंद्र (गोस्वामी इंद्र) के लिए

प्रवाहित होइए. (११)

एवामृताय महे क्षयाय स शुक्रो अर्ष दिव्यः पीयूषः.. (१२)

हे सोम! आप चमकीले, दिव्य, अमृतमय और अमरता के लिए पृथ्वी पर क्षरित (प्रवाहित) होने की कृपा कीजिए. (१२)

इन्द्रस्ते सोम सुतस्य पेयात्क्रत्वे दक्षाय विश्वे च देवाः.. (१३)

हे सोम! आप अपने पुत्रों की प्रार्थना सुन लीजिए. यज्ञ में इंद्र व सभी देवता आप के रस को पीने की कृपा करें. (१३)

तीसरा खंड

सूर्यस्येव रश्मयो द्रावयित्नवो मत्सरासः प्रसुतः साकमीरते.
तन्तुं ततं परि सर्गास आशवो नेन्द्रादृते पवते धाम किंचन.. (१)

सोम की धाराएं द्रवित होती हुई पात्र में सूर्य की किरणों की तरह फैल रही हैं. इंद्र के अलावा वे किसी अन्य को नहीं मिलतीं. (१)

उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु मन्द्राजनी चोदते अन्तरा सनि.
पवमानः सन्तनिः सुन्वतामिव मधुमान् द्रप्सः परि वारमर्षति.. (२)

सोम मधुर व बुद्धिवर्द्धक हैं. सोमरस इंद्र को प्रेरित करने वाला है. यजमान सोमरस निचोड़ते व उसे जल में मिलाते हैं, उस को और परिष्कृत करते हैं. (२)

उक्षा मिमेति प्रति यन्ति धेनवो देवस्य देवीरुप यन्ति निष्कृतम्.
अत्यक्रमीदर्जुनं वारमव्ययमत्कं न निक्तं परि सोमो अव्यत.. (३)

निचोड़ा जाता हुआ सोमरस आवाज करता है व दिव्य रूप को प्राप्त करता है. गायों के दूध से उस को शुद्ध बनाया जाता है. वह दिव्य, प्रकाशमान व अव्यय है. (३)

अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम्.
दूरेदृशं गृहपतिमथव्युम्.. (४)

हे नरो! अग्नि पूजनीय हैं. वे हमारा भरणपोषण करते हैं. वे गृहपति, अच्युत और दूर से ही दर्शनीय हैं. आप सभी अरणि मंथन से अग्नि को प्रकट करने की कृपा कीजिए. (४)

तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन्त्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश्चित्.
दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः.. (५)

हे अग्नि! आप ज्वलनशील प्रकाशमान हैं. आप को हम घर में प्रज्वलित करते हैं. आप सुंदर (दर्शनीय) स्वरूप वाले हैं. यजमान अपनी रक्षा के लिए आप को यज्ञ में प्रतिष्ठित करते

हैं. (५)

प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नो ऽ जस्रया सूर्म्या यविष्ठ.
त्वा शश्वन्त उप यन्ति वाजाः.. (६)

हे अग्नि! आप शाश्वत, शक्तिशाली और अजस्र हैं. आप भलीभांति प्रज्वलित होइए. आप ज्वालाओं से प्रज्वलित होने की कृपा कीजिए. हम आप को जौ मिश्रित हवि भेंट करते हैं. (६)

आयंगौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः. पितरं च प्रयन्त्स्वः.. (७)

हे अग्नि! आप बहुरंगी, गतिशील व (सूर्य रूप में) पूर्व दिशा में उदित होते हैं. आप पितृलोक (अंतरिक्षलोक) में प्रतिष्ठित होते हैं. (७)

अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती. व्यख्यन्महिषो दिवम्.. (८)

हे सूर्य! आप स्वर्गलोक को प्रकाश और तेज से भर देते हैं. आप का तेज आकाश और पृथ्वी के बीच चमकता रहता है. (८)

त्रि शद्धाम वि राजति वाक्यपतङ्गाय धीयते. प्रति वस्तोरह द्युभिः.. (९)

तीस घड़ियों (१२ घंटे) तक अग्नि (सूर्य रूप में) अपनी तेजोमयता से प्रकाशमान रहते हैं. उस समय स्वर्गलोक द्वारा आप को यजमानों की बुद्धिपूर्वक की गई स्तुतियां प्राप्त होती हैं. (९)

बारहवां अध्याय

पहला खंड

उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये. आरे अस्मे च शृण्वते.. (१)

अग्नि उत्तम यज्ञ करने वाले यजमान की प्रार्थना सुनने के लिए तैयार हैं. हम उन की उपासना करते हैं. (१)

यः स्नीहितीषु पूर्व्यः संजग्मानासु कृष्टिषु. अरक्षद्दाशुषे गयम्.. (२)

अग्नि हमेशा प्रकाशित रहते हैं. यजमान जब प्रेम भाव से मिल कर रहते हैं तो वे उन के वैभव की रक्षा करते हैं. (२)

स नो वेदो अमात्यमग्नी रक्षतु शन्तमः. उतास्मान्पात्व हसः.. (३)

अग्नि बहुत कल्याणकारी हैं. वे हमें पापों (बुरी प्रवृत्तियों) से दूर करने व हमारे वैभव की रक्षा करने में हमारी सहायता करने की कृपा करें. (३)

उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि. धनञ्जयो रणेरणे.. (४)

अग्नि युद्धों में दुश्मनों को हराते हैं व उन का धन जीतते हैं. वे प्रकट हो गए हैं. मंत्र गायक पुरोहित को उन की स्तुति करनी चाहिए. (४)

अग्ने युंक्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः. अरं वहन्त्याशवः.. (५)

हे अग्नि! आप के घोड़े शीघ्र जाने वाले हैं. आप के घोड़े भी सामर्थ्यवान हैं. आप उन को रथ में जोतिए. (५)

अच्छा नो याह्या वहाभि प्रया सि वीतये. आ देवान्त्सोमपीतये.. (६)

हे अग्नि! आप सोमपान व देवताओं को हमारी ओर उन्मुख करने की कृपा कीजिए. (६)

उदग्ने भारत द्युमदजस्रेण दविद्युतत्. शोचा वि भाह्यजर.. (७)

हे अग्नि! आप जग के पालक व अक्षुण्ण (कभी क्षीण न हो सकने वाले) हैं. आप भी प्रकाशित होइए और जग को भी प्रकाशित कीजिए. आप प्रज्वलित हो कर उत्तरोत्तर बढ़ोतरी प्राप्त कीजिए. (७)

प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद्वचः.
अप श्वानमराधस हता मखं न भृगवः.. (८)

सोमरस रसीला व सेवन के योग्य है. सोम के लिए की गई प्रार्थनाओं को लालची कुत्ते न सुन सकें. भृगु ऋषि ने जैसे मख नामक राक्षस को मारा था, वैसे ही आप उन कुत्तों को अपराधी की तरह ही दंडित कीजिए. (८)

आ जामिरत्के अव्यत भुजे न पुत्र ओण्योः.
सरज्जारो न योषणां वरो न योनिमासदम्.. (९)

सोम भाई जैसे प्रिय हैं, मातापिता की भुजाओं में संरक्षित बेटे जैसे हैं व कामी आदमी जैसे स्त्री की ओर और वर कन्या की ओर आकर्षित होता है, वैसे ही सोम द्रोणकलश की ओर जा रहे हैं. (९)

स वीरो दक्षसाधनो वि यस्तस्तम्भ रोदसी.
हरिः पवित्रे अव्यत वेधा न योनिमासदम्.. (१०)

सोम पवित्र, हरे, पोषक, वीर व उत्तम रसायनों से भरे हैं. वे स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को अपने प्रकाश से भर देते हैं. द्रोणकलश में यजमान के घर जाने की तरह प्रवेश करते हैं. (१०)

दूसरा खंड

अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि. युधेदापित्वमिच्छसे.. (१)

हे इंद्र! आप का कोई शत्रु नहीं जन्मा और समस्त उपासकों को ही अपना बंधु स्वीकारते हैं. आप दुश्मनों के प्रति बंधु भाव से रहित और शत्रुओं के नाश की इच्छा रखते हैं. आप सब के नियंत्रक हैं. (१)

न की रेवन्त सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः.
यदा कृणोषि नदनु समूहस्यादित्पितेव हूयसे.. (२)

हे इंद्र! आप शक्तिशाली हैं. धन का गर्व करने वाले के आप सखा नहीं होते. जो सुरा पी कर आप को पीड़ित करते हैं, उन के भी आप सखा नहीं होते. जो ज्ञान, गुण संपन्नों के साथ मिल कर चलते हैं, उन को आप पिता के समान प्रेम करते हैं. (२)

आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये.
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये.. (३)

हे इंद्र! आप का रथ सुनहरा है. आप के घोड़े संकेत मात्र से रथ में जुत जाते हैं. आप के वे घोड़े आप को सोमरस पिलाने के लिए रथ में बैठा कर यज्ञ स्थान में लाने की कृपा करें. (३)

आ त्वा रथे हिरण्यये हरी मयूरशेप्या.
शितिपृष्ठा वहतां मध्वो अन्धसो विवक्षणस्य पीतये.. (४)

हे इंद्र! आप के घोड़े मोर जैसे रंग और सफेद पीठ वाले हैं. वे आप को यज्ञ स्थान पर लाने की कृपा करें, ताकि आप मीठा अमृत जैसा सोमरस पी सकें. (४)

पिबा त्व ३ स्य गिर्वणः सुतस्य पूर्वपा इव.
परिष्कृतस्य रसिन इयमासुतिश्चारुर्मदाय पत्यते.. (५)

हे इंद्र! आप पूजनीय हैं. सोमरस मददायी, आनंदवर्द्धक व गुणमय है. आप सब से पहले इस साफ छने हुए सोमरस को पीने की कृपा करें. (५)

आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुर २३ रजस्तुरम्. वनप्रक्षमुदप्रुतम्.. (६)

हे यजमानो! सोमरस घोड़े की तरह वेगवान, जलमय व प्रकाश का विस्तारक है. आप सोमरस छान कर, जल में मिला कर तैयार कीजिए. (६)

सहस्रधारं वृषभं पयोदुहं प्रियं देवाय जन्मने.
ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे राजा देव ऋतं बृहत्.. (७)

सोमरस दिव्य गुण वाला, सुख बढ़ाने वाला, प्रिय और जल में मिल कर बढ़ोतरी पाता है. हे यजमानो! आप दूध मिला हुआ सोमरस देवताओं के लिए तैयार कीजिए. आप परिष्कृत सोमरस देवताओं के लिए तैयार कीजिए. (७)

तीसरा खंड

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद्द्रविणस्युर्विपन्यया. समिद्धः शुक्र आहुतः.. (१)

हे अग्नि! आप भलीभांति प्रदीप्त, आप प्रकाशमान, धनदाता हैं. आप हवि से पोषण पाते हैं. आप शत्रुओं का नाश करने की कृपा कीजिए. (१)

गर्भे मातुः पितुः पिता विदिद्युतानो अक्षरे. सीदन्नृतस्य योनिमा.. (२)

हे अग्नि! आप पृथ्वी माता के गर्भ में विशेष रूप से प्रकाशित हैं व अंतरिक्ष में पिता की भूमिका में विराजमान हैं. अग्नि यज्ञ में वेदी पर प्रतिष्ठित हैं. (२)

ब्रह्म प्रजावदा भर जातवेदो विचर्षणे. अग्ने यद्दीदयद्दिवि.. (३)

हे अग्नि! जोजो सुख स्वर्गलोक में उपलब्ध हैं, आप उन सुखों को हमें प्राप्त कराने की कृपा कीजिए. आप सर्वद्रष्टा व विलक्षण हैं. आप हमें ब्रह्मज्ञान व संतान प्रदान कीजिए. (३)

अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम्.
सुतः पवित्रं पर्येति रेभन्मितेव सद्म पशुमन्ति होता.. (४)

यजमान के पशु आदि वाले घर में प्रवेश करने के समान कूट व छान कर तैयार किया हुआ सोमरस द्रोणकलश में प्रवेश करता है. प्रकाशमान सोमरस स्वर्ण के समान कांतिमान है और प्रकाशमान वह देवताओं से मिलता है. (४)

भद्रा वस्त्रा समन्या ३ वसानो महान्कविर्निवचनानि श ꣳ सन्.
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ.. (५)

हे सोम! आप जाग्रत, विलक्षण, महान, कवि, अनिवर्चनीय, प्रशंसित एवं कल्याणकारी हैं. आप वीरता से समन्वित (युक्त) हैं. आप पवित्र बरतनों में प्रवेश कीजिए. (५)

समु प्रियो मृज्यते सानो अव्ये यशस्तरो यशमां क्षैतो अस्मे.
अभि स्वर धन्वा पूयमानो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः.. (६)

हे सोम! क्षिति (पृथ्वी) पर प्रकट हों आप यशस्वियों में यशवान, छका देने वाले और पवित्र हैं. हे यजमानो! आप सब स्वस्ति वचनों से सदैव उच्च स्वर से प्रार्थनाएं करते हुए सोम की स्तुति कीजिए. (६)

एतो न्विन्द्र ꣳ स्तवाम शुद्ध ꣳ शुद्धेन साम्ना.
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वा ꣳ स ꣳ शुद्धैराशीर्वान्ममत्तु.. (७)

हे इंद्र! हम शुद्ध सामगायन से आप की स्तुति व शुद्ध मदमस्त बनाने वाला सोमरस आप को भेंट करते हैं. हम शुद्ध वचनों वाली स्तुतियों से आप की बढ़ोतरी की कामना करते हैं. (७)

इन्द्र शुद्धो न आ गहि शुद्धः शुद्धाभिरूतिभिः.
शुद्धो रयिं नि धारय शुद्धो ममद्धि सोम्य.. (८)

हे इंद्र! आप शुद्ध हैं. हम शुद्ध वाणी से आप की स्तुति करते हैं. आप हमें भी शुद्ध बनाइए. आप मेरे द्वारा भेंट किए गए इस शुद्ध सोमरस को स्वीकारिए. आप हमारे लिए शुद्ध धन धारण करिए. (८)

इन्द्र शुद्धो हि नो रयि ꣳ शुद्धो रत्नानि दाशुषे.
शुद्धो वृत्राणि जिघ्नसे शुद्धो वाज ꣳ सिषाससि.. (९)

हे इंद्र! आप शुद्ध हैं. आप हमें शुद्ध बल दीजिए. आप शुद्ध होइए और विघ्न बाधाओं को दूर कीजिए. हमारे दुश्मनों को मारिए. आप हमें शुद्ध धन और रत्न व ऐश्वर्य आदि दीजिए. (९)

चौथा खंड

अग्ने स्तोमं मनामहे सिद्धमद्य दिविस्पृशः. देवस्य द्रविणस्यवः.. (१)

हे अग्नि! आप स्वर्गलोक का स्पर्श करते हैं. हम आप से वैभव चाहते हैं. हम कल्याणदायी स्तोत्रों से आप की स्तुति करते हैं, आप को मनाते हैं. (१)

अग्निर्जुषत नो गिरो होता यो मानुषेष्वा. स यक्षद्दैव्यं जनम्.. (२)

हे अग्नि! आप मनुष्य को दिव्यता प्रदान कीजिए. आप यज्ञ के प्रमुख और मनुष्यों के लिए होता (पुरोहित की तरह) हैं. आप हमारी वाणी सुनने की कृपा कीजिए. (२)

त्वमग्ने सप्रथा असि जुष्टो होता वरेण्यः. त्वया यज्ञं वि तन्वते.. (३)

हे अग्नि! आप वरेण्य (सर्वश्रेष्ठ वरण करने योग्य), होता व यज्ञ में प्रमुख हैं. हम आप के द्वारा यज्ञ का विस्तार करते हैं. (३)

अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामङ्गोषिणमवावशंत वाणीः.
वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा दयते वार्याणि.. (४)

हे सोम! आप अन्नदाता, धनदाता और रत्नदाता हैं. आप की ओर हमारी वाणियां दौड़ती हैं. आप स्वयं भी वाणीमय (आवाज करने वाले), वनवासी, जलमय एवं तीनों कालों में बरसने वाले हैं. (४)

शूरग्रामः सर्ववीरः सहावान् जेता पवस्व सनिता धनानि.
तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्स्वषाढः साह्वान्पृतनासु शत्रून्.. (५)

हे सोम! आप सब से शूरवीर, सहनशील, विजेता, धनदाता, पवित्र, शीघ्र गति वाले, तीक्ष्ण अस्त्रशस्त्र वाले व शत्रुओं को हराने वाले हैं. आप द्रोणकलश में बरसिए. (५)

उरुगव्यूतिरभयानि कृण्वन्त्समीचीने आ पवस्वा पुरन्धी.
अपः सिषासन्नुषसः स्व ऽ ३ र्गाः सं चिक्रदो महो अस्मभ्यं वाजान्.. (६)

हे सोम! आप विस्तृत पथवान, निर्भय, स्वर्ग और पृथ्वी के योजक (जोड़ने वाले, मिलाने वाले) हैं. आप उषा और सूर्य की किरणों से पोषण पाते हैं. आप आवाज करते हुए छन कर पवित्र होइए. आप हमारे लिए धन दीजिए. (६)

त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः.
त्वं वृत्राणि ह ꣳ स्यप्रतीन्येक इत्पुर्वनुत्तश्चर्षणीधृतिः.. (७)

हे इंद्र! आप यशस्वी, धैर्यवान, दुश्मनों को मारने वाले व शक्ति के स्वामी हैं. आप जैसे देवता के बारे में हम ने पहले नहीं सुना. (७)

तमुत्वा नूनमसुर प्रचेतस ꣳ राधो भागमिवेमहे.
महीव कृत्तिः शरणा त इन्द्र प्र ते सुम्ना नो अश्नवन्.. (८)

हे इंद्र! बेटा जैसे पिता से धनभाग चाहता है, वैसे ही हम पिता तुल्य आप से धन चाहते हैं. आप धनवान, ज्ञानवान व शरणदाता हैं. हमें श्रेष्ठ सुख प्रदान करने की कृपा कीजिए. (८)

यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम्. अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्.. (९)

हे अग्नि! आप इस यज्ञ में श्रेष्ठ कार्य करने वाले हैं. आप भजनीय (भजन करने योग्य) हैं. देवताओं में हम आप का वरण करते हैं. आप अमर व देवताओं में सर्वाधिक दिव्य देव हैं. (९)

अपां नपात ꣳ सुभग ꣳ सुदीदितिमग्निमु श्रेष्ठशोचिषम्.
स नो मित्रस्य वरुणस्य सो अपामा सुम्नं यक्षते दिवि.. (१०)

हे अग्नि! आप सुभग (श्रेष्ठ धन वाले), सुदीप्त (अच्छी तरह प्रकाशित), श्रेष्ठ ज्वालाओं वाले व आकाश के जल को धारते हैं. आप हमें मित्र और वरुण देवता से प्राप्त होने वाला सुख तथा दिव्यलोक का जल प्राप्त कराइए. (१०)

पांचवां खंड

यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः. स यन्ता शश्वतीरिषः.. (१)

हे अग्नि! आप युद्ध में जिन लोगों को लगाते हैं, उन्हें अन्न व बल प्रदान करते हैं और मृत्यु से उन की रक्षा करते हैं. (१)

न किरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य चित्. वाजो अस्ति श्रवाय्यः.. (२)

हे अग्नि! आप ने जिस को बल दिया है, उस बलवान वीर को कोई भी नहीं हरा सकता है. (२)

स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्भिरस्तु तस्ता. विप्रेभिरस्तु सनिता.. (३)

हे अग्नि! ब्राह्मणों द्वारा आप की प्रशंसा की जाती है. आप संसार के द्रष्टा हैं. आप घोड़ों के द्वारा हमें युद्ध जिताएं. आप कल्याणकारी हैं. (३)

साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः.
हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी.. (४)

सोमरस दिव्य, पवित्र और हरित आभा वाला है. सूर्य की किरणों से शुद्ध हो कर वह द्रोणकलश में जाता है. वह घोड़े की तरह वेगवान हो कर कलश में जाता है. दस अंगुलियां उस को मसलमसल कर शुद्ध बनाती हैं. (४)

सं मातृभिर्न शिशुर्वावशानो वृषा दधन्वे पुरुवारो अद्भिः.
मर्यो न योषामभि निष्कृतं यन्त्सं गच्छते कलश उस्रियाभिः.. (५)

सोमरस सर्वश्रेष्ठ, देवताओं को प्रिय व बलवान है. वह दूध व जल में ऐसे एकमेक हो जाता है, जैसे पुरुष और स्त्री तथा मां और बच्चा एकदूसरे में एकमेक हो जाते हैं. (५)

उत प्र पिप्य ऊधरघ्न्याया इन्दुर्धाराभिः सचते सुमेधाः.
मूर्धानं गावः पयसा चमूष्वभि श्रीणन्ति वसुभिर्न निक्तैः.. (६)

सोम बुद्धिशाली हैं. वे गायों को दूध से भरपूर करते हैं. गायों के दूध को सोमरस में मिलाया जाता है. लोग जैसे वस्त्रों से अपने को ढकते हैं, वैसे ही गाएं सोमपात्र को (दूध देने के लिए) ढक लेती हैं. (६)

पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः.
आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधे ३ ऽ स्मां अवन्तु ते धियः.. (७)

हे इंद्र! आप के पुत्रों ने रसीला सोमरस तैयार किया है. आप उस को पी कर मस्त होइए. आप उस से अपनी और हमारी बढ़ोतरी कीजिए. आप हमें गोमति (सुबुद्धिवान) बनाइए. आप अपनी बुद्धियों से हमारी बुद्धि की रक्षा कीजिए. (७)

भूयाम ते सुमतौ वाजिनो वयं मा न स्तरभिमातये.
अस्माञ्चित्राभिरवतादभिष्टिभिरा नः सुम्नेषु यामय.. (८)

हे इंद्र! हम आप की सुमति से मतिवान व आप के बल से बलवान हों. आप अपने अभीष्ट साधनों से हमारी रक्षा करें. आप हमें सुखी व समृद्ध बनाएं. हमें आप की कृपा प्राप्त हो. (८)

त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रिरे सत्यामाशिरं परमे व्योमनि.
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारुणि चक्रे यदृतैरवर्धत.. (९)

हे सोम! परम व्योम में सात से तीन गुनी अर्थात् इक्कीस गाएं श्रेष्ठ दूध देती हैं. चार अन्य लोकों के सुंदर जल से सोम की बढ़ोतरी होती है. सोमरस कल्याणकारी चक्र से (क्रम से) प्रवाहित होता है. (९)

स भक्षमाणो अमृतस्य चारुण उभे द्यावा काव्येना वि शश्रथे.
तेजिष्ठा अपो म ꣳ हना परि व्यत यदी देवस्य श्रवसा सदो विदुः.. (१०)

सोमरस अमृत भक्षण करता है. वह स्वर्ग और पृथ्वी दोनों लोकों को अमृत जैसे जल से भर देता है. जब यजमान देवस्थान को हविमय बनाते हैं तो सोम जल को अपने महत्त्व से तेजोमय बना देते हैं. (१०)

ते अस्य सन्तु केतवो ऽ मृत्यवो ऽ दाभ्यासो जनुषी उभे अनु.
येभिर्नृम्णा च देव्या च पुनत आदिद्राजानं मनना अगृभ्णत.. (११)

सोम मनुष्यों में अमर, अदम्य व दोपायों और चौपायों के संरक्षक हैं. वे मनुष्यों और देवों में राजा हैं. हम उन सोम की उपासना करते हैं. (११)

छठा खंड

अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानो ३ ऽ भि मित्रावरुणां पूयमानः.
अभी नरं धीजवन रथेष्ठामभीन्द्रं वृषणं वज्रबाहुम्.. (१)

हे सोम! आप स्तुति के बाद वायु, मित्र और वरुण को प्राप्त होने की कृपा कीजिए. आप नेतृत्ववान, बुद्धिदाता और रथ पर सवार अश्विनीकुमारों की ओर पहुंचें. आप वज्रबाहु इंद्र को प्राप्त होइए. (१)

अभि वस्रा सुवसनान्यर्षाभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः.
अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्याभ्यश्वान्रथिनो देव सोम.. (२)

हे सोम! आप हमें उत्तम वस्त्र, अच्छे दूध वाली गाएं, सुनहरा सोना व धन दीजिए. आप हमें रथ के लिए उत्तम घोड़े दीजिए. (२)

अभी नो अर्ष दिव्या वसून्यभिः विश्वा पार्थिवा पूयमानः.
अभि येन द्रविणमश्नवामाभ्यार्षेयं जमदग्निवन्नः.. (३)

हे सोम! आप हमें दिव्य धन पृथ्वीलोक के सारे वैभव दीजिए. हमें श्रेष्ठ धन को श्रेष्ठ कार्यों में लगाने की क्षमता प्राप्त हो. हमें जमदग्नि आदि ऋषियों जैसी क्षमता प्रदान करने की कृपा कीजिए. (३)

यज्जायथा अपूर्व्य मघवन्वृत्रहत्याय.
तत्पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्ना उतो दिवम्.. (४)

हे इंद्र! शत्रु नाश हेतु आप प्रकट हों. आप के कारण स्वर्गलोक को स्थिरता व पृथ्वीलोक को दृढ़ता मिली. (४)

तत्ते यज्ञो अजायत तदर्क उत हस्कृतिः.
तद्विश्वमभिभूरसि यज्जातं यच्च जन्त्वम्.. (५)

हे इंद्र! आप के प्रकट होने पर सूर्य स्थापित हुए व उत्पन्न हुए. उस के बाद प्राणी उत्पन्न होने शुरू हुए. आप सभी प्राणियों में व्याप्त हो गए. आप ने श्रेष्ठ यज्ञ कर्मों को उपजाया. (५)

आमासु पक्वमैरय आ सूर्यं रोहयो दिवि.
घर्मं न सामन्तपता सुवृक्तिभिर्जुष्टं गिर्वणसे बृहत्.. (६)

हे इंद्र! आप ने स्वर्गलोक में सूर्य को स्थापित किया. यजमान जैसे अग्नि प्रकट करते हैं, वैसे ही हे यजमानो! आप बृहत्साम गा कर इंद्र में प्रसन्नता प्रकट कराइए. इंद्र ने शिशु की उत्पत्ति से पहले ही पुष्टिकारी तत्त्व (दूध) उत्पन्न कर दिए. (६)

मत्स्यपायि ते महः पात्रस्येव हरिवो मत्सरो मदः.
वृषा ते वृष्ण इन्दुर्वाजी सहस्रसातमः.. (७)

हे इंद्र! आप हरे घोड़ों वाले, विशाल पात्र की भांति, शक्तिमान, हर्षदायी व बलदायी हैं.

सोमरस अनगिनत दानदाता है. आप उसे पीजिए और अपना आनंद बढ़ाइए. (७)

आ नस्ते गन्तु मत्सरो वृषा मदो वरेण्यः
सहावाँ इन्द्र सानसिः पृतनाषाडमर्त्यः.. (८)

हे इंद्र! सोमरस बलदायी, हर्षदायी, उत्तम, अमर, शत्रु विजेता और मददायी हैं. आप इस सोमरस को पीने की कृपा कीजिए. (८)

त्व ꣳ हि शूरः सनिता चोदयो मनुषो रथम्.
सहावान्दस्युमव्रतमोषः पात्रं न शोचिषा.. (९)

हे इंद्र! आप शूरवीर व दानशील हैं और मनुष्यों को सन्मार्ग पर प्रेरित करते हैं. अग्नि की ज्वाला जैसे तपाती है, वैसे ही आप शत्रुओं को तपाते हैं. (९)

तेरहवां अध्याय

पहला खंड

पवस्व वृष्टिमा सुनो ऽ पामूर्मिं दिवस्परि. अयक्ष्मा बृहतीरिषः.. (१)

हे सोम! आप पवित्र व दिव्य, जल को लहराएं. आप अक्षय स्वास्थ्य प्रदान करने की कृपा कीजिए. (१)

तया पवस्व धारया यया गाव इहागमन्. जन्यास उप नो गृहम्.. (२)

हे सोम! आप उन दिव्य जलधाराओं से पवित्र होइए, जिन से दुधारू गाएं हमारे यहां आ सकें, धनधान्य हमारे घर पहुंच सकें. (२)

घृतं पवस्व धारया यज्ञेषु देववीतमः. अस्मभ्यं वृष्टिमा पव.. (३)

हे सोम! आप देवताओं द्वारा चाहे गए घृत की पवित्र धाराएं चुआइए. आप हमारे लिए मूसलाधार बरसात कीजिए. (३)

स न ऊर्जे व्य ३ व्ययं पवित्रं धाव धारया. देवासः शृणवन् हि कम्.. (४)

हे सोम! आप हमें ऊर्जा प्रदान कीजिए. आप अव्यय व पवित्र धारावान हैं. आप धाराओं से दौड़ कर कलश में प्रवेश कीजिए. आप की आवाज सुन कर देवतागण आनंदित हों. (४)

पवमानो असिष्यदद्रक्षा ꣳ स्यपजङ्घनत्. प्रत्नवद्रोचयन्रुचः.. (५)

पवित्र, शत्रुनाशक, प्रकाशमान और छना हुआ सोमरस द्रोणकलश में झरता है. (५)

प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर. अरङ्गमाय जग्मये ऽ पश्चादध्वने नरः.. (६)

हे यजमानो! इंद्र यज्ञ के संचालक, विश्व के ज्ञाता, अग्रणी, प्रगतिशील व सोमरस पान के इच्छुक हैं. आप इंद्र के लिए सोमरस को द्रोणकलश में भर दीजिए. (६)

एमेनं प्रत्येतन सोमेभिः सोमपातमम्.
अमत्रेभिर्ऋजीषिणमिन्द्र ꣳ सुतेभिरिन्दुभिः.. (७)

हे यजमानो! सोमरस रसीला है. आप उसे परिष्कृत कीजिए. इंद्र बहुत अधिक सोमरस पीने वाले हैं. वे बहुरुचि से सोमरस पीते हैं. आप इंद्र के पास जा कर प्रार्थना कीजिए. (७)

यदी सुतेभिरिन्दुभिः सोमेभिः प्रतिभूषथ. वेदा विश्वस्य मेधिरो धृषत्ततमिदेषते.. (८)

हे यजमानो! आप चमकीला, रसीला सोमरस ले कर इंद्र के पास जाइए. वे शरणागत की मनोकामना जान लेते हैं. वे उन की इच्छा पूरी करते हैं. वे विघ्न, क्लेश दूर करते हैं. (८)

अस्माअस्मा इदन्धसो ऽ ध्वर्यो प्र भरा सुतम्.
कुवित्समस्य जेन्यस्य शर्धतो ऽ भिशस्तेरवस्वरत्.. (९)

हे पुरोहितो! सोमरस इंद्र के लिए प्राणभूत है. आप उन्हें खूब सोमरस भेंट कीजिए. वे जीतने योग्य शत्रुओं को नष्ट करेंगे. वे आप की रक्षा करेंगे. (९)

दूसरा खंड

बभ्रवे नु स्वतवसे ऽ रुणाय दिविस्पृशे. सोमाय गाथमर्चत.. (१)

हे यजमानो! सोम ललाई वाले भूरे और शक्तिमान हैं. वे स्वर्गलोक को स्पर्श करते हैं. आप उन दिव्य सोम की उपासना कीजिए. (१)

हस्तच्युतेभिरद्रिभिःसुत ꣳ सोमं पुनीतन. मधावा धावता मधु.. (२)

हे यजमानो! पत्थरों से कूट कर सोमरस निकाला गया है. स्वच्छ कर के छाना गया है. आप उस सोमरस में गाय का दूध मिलाइए. (२)

नमसेदुप सीदत दध्नेदभि श्रीणीतन. इन्दुमिन्द्रे दधातन.. (३)

हे यजमान! आप सोमरस में दही मिलाइए. इस सोमरस को नमस्कारपूर्वक पवित्र बनाइए. उस के बाद आप यह सोमरस इंद्र को पीने के लिए भेंट कीजिए. (३)

अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे. देवेभ्यो अनुकामकृत्.. (४)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप सब कुछ देखने वाले हैं. आप देवताओं के लिए उन की इच्छानुसार काम करने वाले हैं. आप शत्रुहंता हैं. आप हमारी गायों के लिए सुखशांति प्रदान कीजिए. (४)

इन्द्राय सोम पातवे मदाय परि षिच्यसे. मश्चिन्मनसस्पतिः.. (५)

इंद्र मन के मालिक हैं. वे मन में रमते हैं. ऐसे इंद्र के पीने के लिए, मद देने के लिए सोमरस परिष्कृत होता है. (५)

पवमान सुवीर्य ꣳ रयि ꣳ सोम रिरीहि णः. इन्दविन्द्रेण नो युजा.. (६)

हे सोम! आप पवित्र व अच्छे वीर्यवान हैं. आप हमें इंद्र से जोड़िए. आप हमें उन से चाहा गया धन प्राप्त कराने की कृपा कीजिए. (६)

उद्घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्. अस्तारमेषि सूर्य.. (७)

हे इंद्र! आप सूर्य के समान प्रकाशमान हैं. आप धनवान, शक्तिमान, यशस्वी व हितैषी हैं. आप दानशील मनुष्यों के पास पहुंचते हैं. (७)

नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा. अहिं च वृत्रहावधीत्.. (८)

हे इंद्र! आप अपनी भुजाओं के ओज से दुश्मनों के निन्यानवे ठिकाने नष्ट करने वाले हैं. आप वृत्रासुर के नाशक हैं. आप हमें मनपसंद वैभव प्रदान करने की कृपा कीजिए. (८)

स न इन्द्रः शिवः सखाश्वावद्गोमद्यवमत्. उरुधारेव दोहते.. (९)

हे इंद्र! आप हमारा कल्याण कीजिए. गाएं हमारी मित्र हैं. वे हमारे लिए जैसे अगणित धाराओं से दूध बरसाती हैं, वैसे ही आप भी हमारे लिए धन बरसाइए. (९)

तीसरा खंड

विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्.
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पिपर्ति बहुधा वि राजति.. (१)

सूर्य प्रकाशमान हैं. वे प्रजा का पालन करते हैं, यजमान को निरोग बनाते हैं, लंबी आयु देते हैं, हवा बहाते हैं व सब के रक्षक हैं. इंद्र कई रूपों में सुशोभित हो रहे हैं. वे भरपूर सोमपान करें. (१)

विभ्राड् बृहत्सुभृतं वाजसातमं धर्मं दिवो धरुणे सत्यमर्पितम्.
अमित्रहा वृत्रहा दस्युहन्तमं ज्योतिर्जज्ञे असुरहा सपत्नहा.. (२)

सूर्य बहुत प्रकाशमान व अन्न और बलदाता हैं. वे धर्म से स्वर्गलोक को धारण करते हैं, अमित्रों के नाशक हैं, वृत्रहंता हैं. वे शत्रुओं, राक्षसों व दुष्टों के नाशक हैं. वे सर्वत्र अपना प्रकाश फैलाते हैं. (२)

इदꣳ श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमं विश्वजिद्धनजिदुच्यते बृहत्.
विश्वभ्राड् भ्राजो महि सूर्यो दृश उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम्.. (३)

सूर्य ज्योतिमान और क्षमतावान हैं. वे पूरी पृथ्वी को प्रकाशित करते हैं. वे अच्युत हैं. वे बल के साथ रहते हैं. वे धन जीतने वाले हैं. उन की ज्योति विशाल, ज्योतियों में सर्वश्रेष्ठ एवं विश्व को जीतने वाली है. (३)

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा.
शिक्षा णो अस्मिन्पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि.. (४)

हे इंद्र! पिता जैसे पुत्रों का लालनपालन करता है, वैसे ही आप हमारा पोषण कीजिए. आप हमें यज्ञ के श्रेष्ठ फल प्रदान कीजिए. हम जीवों को आप दिव्य ज्योति दीजिए. हम और अनेक लोग सहायता के लिए आप को पुकारते रहते हैं. (४)

मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्यो ३ माशिवासो ऽ व क्रमुः.
त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपो ऽ ति शूर तरामसि.. (५)

हे इंद्र! जिन का आनाजाना अज्ञात हो, जो पापाचारी हों, जो दुर्बुद्धि हों वे हमारा कुछ न बिगाड़ सकें. आप हमारी रक्षा कीजिए. अपने संरक्षण में हमें अनेक विघ्न रूपी प्रवाहों से पार पहुंचाइए. (५)

अद्याद्या श्वःश्व इन्द्र त्रास्व परे च नः.
विश्वा च नो जरितॄन्त्सत्पते अहा दिवा नक्तं च रक्षिषः.. (६)

हमें आज भी व कल भी इंद्र संरक्षित करें. वे दिनरात हमारी रक्षा करें. वे विश्वपति और सज्जनों के पालनहार हैं. (६)

प्रभङ्गी शूरो मघवा तुवीमघः सम्मिश्लो वीर्याय कम्.
उभा ते बाहू वृषणा शतक्रतो नि या वज्रं मिमिक्षतुः.. (७)

हे इंद्र! आप क्षमतावान हैं. आप सैकड़ों काम करते हैं. आप की भुजाएं वज्र धारण करती हैं. आप शत्रुनाशक, सर्वव्यापक व ऐश्वर्यशाली हैं. (७)

चौथा खंड

जनीयन्तो न्वग्रवः पुत्रीयन्तः सुदानवः. सरस्वन्त ꣳ हवामहे.. (१)

हे सरस्वती! आप श्रेष्ठ कार्यों में अग्रगण्या हैं. हम अच्छी संतान व दान के आकांक्षी हैं. हम आप को आमंत्रित करते हैं. (१)

उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा. सरस्वती स्तोम्या भूत्.. (२)

हे सरस्वती! आप हमें प्रिय हैं. आप की सात बहनें हैं. आप हमें उन से जोड़िए. हम आप की स्तुति करते हैं. (२)

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि. धियो यो नः प्रचोदयात्.. (३)

हम उन सविता देवता का वरेण्य तेज धारण करना चाहते हैं, जो हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ पथ की ओर उन्मुख एवं प्रेरित करते हैं. (३)

सोमानां स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते. कक्षीवन्तं य औशिजः.. (४)

हे ब्रह्मणस्पति! आप ने जैसे उशिज से उत्पन्न पुत्र कक्षीवान को ज्ञानी, यशस्वी बनाया, उसी तरह हम सोमयागियों को भी बनाने की कृपा कीजिए. (४)

अग्न आयू ꣳ षि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः. आरे बाधस्व दुच्छुनाम्.. (५)

हे अग्नि! आप दुष्टों को हम से दूर भगाइए. आप हमें दीर्घायु बनाएं. हमें बल व

पुष्टिवर्द्धक अन्न दीजिए. (५)

ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य. महि वां क्षत्रं देवेषु.. (६)

हे वरुण! आप हमें अपनी शक्ति दीजिए. आप हमें धरती और आकाश में फैला हुआ समस्त धन और क्षात्र तेज प्रदान करने की कृपा कीजिए. (६)

ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते. अद्रुहा देवौ वर्धेते.. (७)

वरुण द्रोह न करने वालों की बढ़ोतरी करते हैं. वे सत्य से सत्य के पालक हैं. वे अभीष्ट बलदायी हैं. (७)

वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती दानुमत्याः. बृहन्तं गर्तमाशाते.. (८)

हे मित्र! आप उत्तम स्थान पर विराजित हैं. हम वर्षा के लिए उन की उपासना करते हैं. वे पृथ्वी पर सब कुछ नियम से उपलब्ध कराते हैं, दानशील व अन्न के स्वामी हैं. (८)

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः. रोचन्ते रोचना दिवि.. (९)

सूर्य गतिशील दिखाई देते हैं, पर स्थिर हैं. वे अग्निस्वरूप हैं. हम उन की उपासना करते हैं. उन की किरणें समस्त स्वर्गलोक को प्रकाशित कर सुशोभित होती हैं. (९)

युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे. शोणा धृष्णू नृवाहसा.. (१०)

हे इंद्र! आप मनुष्यों के रक्त और बुद्धि को सन्मार्ग पर ले जाने के लिए अपने मनचाहे लाल और प्रौढ़ घोड़ों को रथ में जोतने की कृपा कीजिए. (१०)

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे. समुषद्भिरजायथाः.. (११)

हे सूर्य! आप असुंदर को सुंदर बना देने की सामर्थ्य रखते हैं. आप उषाकाल में उदित होते हैं. (११)

पांचवां खंड

अय सोम इन्द्र तुभ्य सुन्वे तुभ्यं पवते त्वमस्य पाहि.
त्व ह यं चकृषे त्वं ववृष इन्दुं मदाय युज्याय सोमम्.. (१)

हे इंद्र! आप के लिए सोमरस तैयार किया जाता है. आप इस को पीजिए. आप ही उस को बरसाते हैं, उपजाते हैं. आप आनंद हेतु इसे ग्रहण कीजिए. आप हमें इस से मिलाइए. हम आप की शरण में हैं. (१)

स ई रथो न भुरिषाडयोजि महः पुरूणि सातये वसूनि.
आदीं विश्वा नहुष्याणि जाता स्वर्षाता वन ऊर्ध्वा नवन्त.. (२)

में जैसे ज्यादा वजन हो

जाता है, वैसे ही आप हमें धन दीजिए. आप हमें धन देते हैं. (२)

शुष्मी शर्धो न मारुतं पवस्वानभिशस्ता दिव्या यथा विट्.
आपो न मक्षू सुमतिर्भवा नः सहस्राप्साः पृतनाषाण्न यज्ञः.. (३)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप हमें मरुद्गणों जैसा बल प्राप्त कराइए. आप यज्ञवत पवित्र और अनेक प्रकार से सुशोभित होते हैं. आप शत्रुओं को जीतने वाले और जल जैसे पवित्र हैं. हमें वैसी ही पवित्र बुद्धि दीजिए. जैसे पवित्र प्रजा ईर्ष्या, द्वेष से दूर रहती है, वैसे ही हम भी दुष्प्रवृत्तियों से दूर रहें. (३)

त्वमग्ने यज्ञाना ं३ होता विश्वेष ं३ हितः. देवेभिर्मानुषे जने.. (४)

हे अग्नि! आप को देवताओं ने मनुष्य के कल्याण हेतु नियुक्त किया है. आप यज्ञों के होता (पुरोहित) हैं. (४)

स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा महः. आ देवान्वक्षि यक्षि च.. (५)

हे अग्नि! आप हमारे यज्ञ में अपनी जिह्वाओं (लपटों) से देवताओं का यजन कीजिए. आप देवताओं को आमंत्रित कीजिए और देवताओं तक तृप्तिकारी हवि पहुंचाने की कृपा कीजिए. (५)

वेत्था हि वेधो अध्वनः पथश्च देवाञ्जसा. अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो.. (६)

हे अग्नि! आप यज्ञों में पथप्रदर्शक हैं. आप दूर या पास सभी पथों को जानते हैं. आप सर्वज्ञाता हैं. (६)

होता देवो अमर्त्यः पुरस्तादेति मायया. विदथानि प्रचोदयन्.. (७)

हे अग्नि! आप अमर व होता हैं. आप माया से सम्मुख प्रकट होते हैं. आप प्रेरक हैं. (७)

वाजी वाजेषु धीयते ऽ ध्वरेषु प्र णीयते. विप्रो यज्ञस्य साधनः.. (८)

अग्नि बलवान हैं. युद्धों में शत्रुनाश हेतु उन्हें स्थापित किया जाता है. ब्राह्मण यज्ञ के प्रमुख साधन हैं. उन से यज्ञ फलीभूत होते हैं. (८)

धिया चक्रे वरेण्यो भूतानां गर्भमा दधे. दक्षस्य पितरं तना.. (९)

अग्नि वरेण्य (सर्वश्रेष्ठ), सर्वव्यापक व विश्वपालक हैं. यज्ञ के लिए अग्नि को दक्ष की पुत्री (वेदी) ने धारण किया. (९)

छठा खंड

आ सुते सिञ्चत श्रिय ं३ रोदस्योरभिश्रियम्. रसा दधीत वृषभम्.. (१)

हे देवताओ! सोमरस चमकीला और दूधिया है. आप आकाश और पृथ्वी पर उस सोमरस को मिलाइए. वह दूधियापन सोमरस को अपने में मिला लेता है. (१)

ते जानत स्वमोक्यं ३ सं वत्सासो न मातृभिः मिथो नसन्त जामिभिः.. (२)

भीड़ में भी जैसे बछड़े अपनी मां गायों के पास चले जाते हैं, वैसे ही सोम आश्रयदाताओं के पास चले जाते हैं. गाएं जैसे अपने बाड़ों को जानती हैं, वैसे ही ये अपने जाने योग्य स्थान को जानते हैं. (२)

उप स्रक्वेषु बप्सतः कृण्वते धरुणं दिवि. इन्द्रे अग्ना नमः स्वः.. (३)

इंद्र और अग्नि अपनी ज्वाला से हवि को स्वर्गलोक तक पहुंचा देते हैं. उस के बाद सभी इंद्र और अग्नि को पोषक बनाते हैं. (३)

तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः.
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रूननु यं विश्वे मदन्त्यूमाः.. (४)

सभी भुवनों में वे ब्रह्म सब से बड़े कहलाए, सर्वत्र उन की दीप्ति व्याप्त हुई. उन के बल से सूर्य प्रकट हुए, जिन के प्रकट होने से शत्रु समाप्त हो जाते हैं. सभी प्राणी उन्हें देखते ही खुश हो जाते हैं. (४)

वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दासाय भियसं दधाति.
अव्यनच्च व्यनच्च सस्नि सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु.. (५)

हे इंद्र! आप ने अपनी क्षमता से बढ़ोतरी पाई. आप शक्तिमान, दुष्टों के दुश्मन हैं और उन्हें व्यय देते हैं. आप चराचर के संचालक हैं. हम उन्हें (इंद्र) एक साथ नमन एवं उन की उपासना करते हैं. हम उन्हें प्रसन्नता देते हैं और स्वयं भी प्रसन्न होते हैं. (५)

त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति विश्वे द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः.
स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः.. (६)

यजमान इंद्र के लिए यज्ञ करते हैं. हम जब दो और दो से तीन होते हैं तो हमारी प्रिय संतानों को आप प्रिय ऐश्वर्य प्रदान करने व उन के बाद आने वाली पीढ़ी को भी मधुरता से युक्त करने की कृपा कीजिए. (६)

त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृम्पत् सोममपिबद्विष्णुना सुतं यथावशम्.
स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरुꣳ सैनꣳ सश्चद्देवो देवꣳ सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम्.. (७)

सोम सर्वव्यापक प्रकाशमान इंद्र को आनंद देते हैं, जिस से वे और भी अधिक महान काम कर सकें. वे सत्यवान और देव स्वरूप हैं. तीन स्रुक (पात्र) में निकाले गए जौ के साथ मिले हुए सोमरस को इंद्र विष्णु के साथ पीते हैं. (७)

साकं जातः क्रतुना साकमोजसा ववक्षिथ साकं वृद्धो वीर्यैः सासहिर्मृधो विचर्षणिः.
दाता राध स्तुवते काम्यं वसु प्रचेतन सैन सश्चद्देवो देव सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम्..
(८)

हे इंद्र! आप अपने तेज से संसार को उठा सकते हैं. आप यज्ञ के साथ प्रकट हुए हैं. आप वृद्धों को वीर्यवान बना सकते हैं. आप विशेष ज्ञानी, उपासकों के लिए धनदाता और चेतन हैं. सत्य स्वरूप प्रकाशित सोमरस आप तक पहुंचता है. (८)

अध त्विषीमाँ अभ्योजसा कृविं युधाभवदा रोदसी अपृणदस्य मज्मना प्र वावृधे.
अधत्तान्यं जठरे प्रेमरिच्यत प्र चेतय सैन सश्चद्देवो देव सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम्..
(९)

हे इंद्र! अपनी शक्ति से आप ने कृवि राक्षस को हराया. आप ने स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक के तेज में बढ़ोतरी की. आप ने सोमरस का एक भाग पेट में पहुंचाया, दूसरा शेष भाग देवताओं के लिए बचाया. आप अन्य देवताओं को सोमपान हेतु प्रेरणा दीजिए. सत्य स्वरूप प्रकाशित सोमरस इंद्र तक पहुंचता है. (९)

चौदहवां अध्याय

पहला खंड

अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे. सूनु सत्यस्य सत्पतिम्.. (१)

हे यजमानो! इंद्र सत्यपति, सत्य के स्वामी, गोपति व पर्वतपति हैं. वे यथाशक्ति आराधकों का संरक्षण करते हैं. आप इंद्र की अर्चना कीजिए. (१)

आ हरयः ससृज्रिरे ऽ रुषीरधि बर्हिषि. यत्राभि संनवामहे.. (२)

इंद्र के घोड़े उन को घास के उन आसनों पर प्रतिष्ठापित करें, जिन पर हम यज्ञ में उन्हें स्थापित कर के उन की उपासना करते हैं. (२)

इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु. यत्सीमुपह्वरे विदत्.. (३)

पास ही यज्ञ में जब इंद्र मधुर सोमरस का पान करते हैं, उस समय वज्रपाणि इंद्र के लिए गाएं मीठा दूध देती हैं. (३)

आ नो विश्वासु हव्यमिन्द्र समत्सु भूषत.
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम.. (४)

हे इंद्र! हमारे यज्ञ आप की शोभा बढ़ाते हैं. आप के लिए गाई गई हमारी प्रार्थनाएं आप की शोभा बढ़ाती हैं. हम युद्धों में अपनी सहायता के लिए आप को याद करते हैं. आप वृत्रनाशक हैं. आप हमें मनपसंद धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (४)

त्वं दाता प्रथमो राधसामस्यसि सत्य ईशानकृत्.
तुविद्युम्नस्य युज्या वृणीमहे पुत्रस्य शवसो महः.. (५)

हे इंद्र! आप पहले दाता हैं. आप धनदाता और सत्य के स्वामी हैं. हम आप की प्रकाशशीलता से जुड़ने एवं आप से बलवान और उत्तम संतान की कामना करते हैं. (५)

प्रत्नं पीयूषं पूर्व्यं यदुक्थ्यं महो गाहाद्दिव आ निरधुक्षत.
इन्द्रमभि जायमान समस्वरन्.. (६)

अमृत तुल्य सोमरस अपूर्व और सर्वश्रेष्ठ है. यह स्वर्गलोक से प्रकट हुआ. इंद्र के सामने यजमान मंत्र गागा कर सोम की स्तुति करते हैं. (६)

आदीं के चित्पश्यमानास आप्यं वसुरुचो दिव्या अभ्यनूषत.
दिवो न वार सविता व्यूर्णुते.. (७)

तत्पश्चात वसुरुच देवगण सोम का दर्शन करते हैं. अंधेरे को दूर करने वाले सूर्य के उगने से पहले पूजनीय सोम की स्तुति की जाती है. यह स्तुति ऐसे की जाती है, जैसे आदरणीय भाई की की जाती है. (७)

अध यदिमे पवमान रोदसी इमा च विश्वा भुवनाभि मज्मना.
यूथे न निष्ठा वृषभो वि राजसि.. (८)

हे सोम! आप परिष्कृत व पवित्र हैं. गायों के झुंड में बैल के समान आप स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक के बीच सुशोभित होते हैं. (८)

इममू षु त्वमस्माक ꣳ सनिं गायत्रं नव्या ꣳ सम्. अग्ने देवेषु प्र वोचः.. (९)

हे अग्नि! हमारे साम मंत्र गायक (पुरोहित) भलीभांति और भाव भरे साम मंत्र गाते हैं. आप हमारी उन प्रार्थनाओं को निर्धारित देवताओं के पास पहुंचाने की कृपा कीजिए. (९)

विभक्तासि चित्रभानो सिन्धोरूर्मा उपाक आ. सद्यो दाशुषे क्षरसि.. (१०)

हे अग्नि! आप समुद्र की लहरों की तरह हवि देने वाले को उत्तम फल देते हैं. आप धनदाता और लपटों से सुशोभित हैं. (१०)

आ नो भज परमेष्वा वाजेषु मध्यमेषु. शिक्षा वस्वो अन्तमस्य.. (११)

आप हमें ज्येष्ठ, मध्यम, कनिष्ठ आदि सभी प्रकार की धनसंपत्ति व शिक्षा धन दीजिए. हम आप को आमंत्रित करते हुए भजते हैं. (११)

अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह. अह ꣳ सूर्य इवाजनि.. (१२)

हे इंद्र! हम जब पिता जैसे आप की श्रेष्ठ बुद्धि पाते हैं, तो हमें ऐसा लगता है मानो हम सूर्य जैसे हो गए हों. (१२)

अहं प्रत्नेन जन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत्. येनेन्द्रः शुष्ममिद्दधे.. (१३)

हम कण्व ऋषि की भांति प्रयत्नपूर्वक रचे गए पुरातन वेदवाणी से मंत्रपाठ कर के इंद्र की छवि बढ़ाते हैं. उन्हीं के प्रभाव से वे हम पर कृपालु होते हैं. (१३)

ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुर्ऋषयो ये च तुष्टुवुः. ममेद्वर्धस्व सुष्टुतः.. (१४)

हे इंद्र! आप को प्रसन्न करने वाले और संतुष्ट ऋषियों में हमारी प्रार्थनाओं की प्रशंसा होती है. उन के प्रभाव से आप संतुष्ट होइए, बढ़ोतरी पाइए. (१४)

दूसरा खंड

अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्जोषि ब्रह्म सहस्कृत.
ये देवत्रा य आयुषु तेभिर्नो महया गिरः.. (१)

हे अग्नि! आप सभी अग्नियों के साथ हमारी प्रार्थनाओं को सुनिए व प्रार्थनाओं की महिमा बढ़ाइए. जो अग्नि स्वरूप हैं, जो मनुष्यों में हैं उन सब से हमारा अनुरोध है. (१)

प्र स विश्वेभिरग्निभिरग्निः स यस्य वाजिनः.
तनये तोके अस्मदा सम्यङ्वाजैः परीवृतः.. (२)

यज्ञ की अग्नि शक्तिशाली है. उस में सभी हवि भेंट करते हैं. वे अग्नि अन्य सभी अग्नियों सहित शक्ति से घिर कर हमारे कल्याण हेतु पधारने व हमारे सज्जनों (पुत्रों) का भी कल्याण करने की कृपा करें. (२)

त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय.
त्वं नो देवतातये रायो दानाय चोदय.. (३)

हे अग्नि! आप अन्य देवताओं को हमें धनदान करने के लिए प्रेरित करने की कृपा कीजिए. आप अन्य अग्नियों सहित हमारे आत्म ज्ञान व यज्ञ की भी बढ़ोतरी करने की कृपा कीजिए. (३)

त्वे सोम प्रथमा वृक्तबर्हिषो महे वाजाय श्रवसे धियं दधुः.
स त्वं नो वीर वीर्याय चोदय.. (४)

हे सोम! प्रमुख यजमान अन्न बल के बारे में आप के लिए श्रेष्ठ बुद्धि धारण करते हैं. आप हम वीरों को (और अधिक) वीरता के लिए प्रोत्साहित करने की कृपा कीजिए. (४)

अभ्यभि हि श्रवसा ततर्दिथोत्सं न कं चिज्जनपानमक्षितम्.
शर्याभिर्न भरमाणो गभस्त्योः.. (५)

हे सोम! आप का रस छनछन कर छलनी से टपकता हुआ द्रोणकलश को उसी तरह लबालब भर देता है, पीने वाले जल को चुल्लू से डालडाल कर जैसे पानी के हौज को पूरा भर देते हैं. (५)

अजीजनो अमृत मर्त्याय कमृतत्य धर्मन्नमृतस्य चारुणः.
सदासरो वाजमच्छा सनिष्यदत्.. (६)

हे सोम! आप अमृतमय हैं. आप मनुष्यों के लिए सत्य और मंगलकारी तत्त्व धारण करते हैं. आप ने सूर्य को प्रकट किया, देवगण की सेवा की और सदैव यजमानों को अन्न, धन देने हेतु लालायित रहते हैं. (६)

एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु. प्र राधा ꣳ सि चोदयते महित्वना.. (७)

हे यजमानो! आप इंद्र को सोमरस से सींचिए. वे मधुर सोम रस को पीते हैं. वे अपने महत्त्व से धनों को आप लोगों (के पास आने) के लिए प्रेरित करते हैं. (७)

उपो हरीणां पतिं राधः पृञ्चन्तमब्रवम्. नून ꣳ श्रुधि स्तुवतो अश्व्यस्य.. (८)

हे इंद्र! आप अश्वपति व धनपति हैं. हम आप के लिए प्रार्थनाएं बोलते हैं. आप स्तुति करते हुए अश्व्य ऋषि की स्तुति अवश्य ही सुनने की कृपा कीजिए. (८)

न ह्यं ३ ग पुरा च न जज्ञे वीरतरस्त्वत्. न की राया नैवथा न भन्दना.. (९)

हे इंद्र! आप से वीरतर कोई देव व धनदाता पहले नहीं हुआ है. आप से पहले न ही कोई आप जैसा उपासना योग्य देव हुआ है. (९)

नदं व ओदतीनां नदं योयुवतीनाम्. पतिं वो अघ्न्यानां धेनूनामिषुध्यसि.. (१०)

हे यजमानो! इंद्र युवती उषा को उपजाने वाले हैं, चंद्र किरणों को उत्पन्न करने वाले और गोपालक हैं. वे गाय के दूध को पोषक अन्न के रूप में प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं. इंद्र सब कुछ करने में समर्थ हैं. (१०)

तीसरा खंड

देवो वो द्रविणोदाः. पूर्णां विवष्ट्वासिचम्.
उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते.. (१)

हे यजमानो! धनदाता अग्नि को घी और सोमरस से सींचिए. उन्हें पूरी हवि दीजिए. वे आप का पालनपोषण करने वाले हैं. (१)

त ꣳ होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत.
दधाति रत्नं विधते सुवीर्यमग्निर्जनाय दाशुषे.. (२)

देवताओं ने श्रेष्ठ बुद्धिमान अग्नि को अपना होता बनाया है. वे हवि से हवन करते हैं, यजमान के लिए रत्न धारते हैं, अच्छी संतान देते हैं, दानदाता यजमान को शक्ति प्रदान करते हैं. (२)

अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन्व्रतान्यादधुः.
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्तु नो गिरः.. (३)

अग्नि में यजमान व्रत धारण करते हैं. अग्नि श्रेष्ठ पथप्रदर्शक हैं. वे श्रेष्ठ पथ दिखाते हैं. अग्नि आर्यों की बढ़ोतरी चाहते हैं. अग्नि को हमारी वाणी प्राप्त हो. (३)

यस्माद्रेजन्त कृष्टयश्चर्कृत्यानि कृण्वतः.
सहस्रसां मेधसाताविव त्मनाग्निं धीभिर्नमस्यत.. (४)

हे यजमानो! आप बुद्धिपूर्वक अग्नि को नमन कीजिए. आप हजारों बुद्धिपूर्वक कार्यों से उन की उपासना कीजिए, जिस से अग्नि कर्तव्यपरायण यजमानों के लिए शत्रुपक्ष को बहुत पीड़ित कर सकें. (४)

प्र दैवोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना.

अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि.. (५)

अग्नि उत्कृष्ट स्वर्गलोक में निवास करते हैं. वे इंद्र जैसी सामर्थ्य वाले हैं. वे पृथ्वी माता पर श्रेष्ठ यज्ञ कार्य पूर्ण कराते हैं. वे स्वर्गिक सुख प्रदान करते हैं. (५)

अग्न आयू षि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः. आरे बाधस्व दुच्छुनाम्.. (६)

हे अग्नि! आप हमें दीर्घायु बनाइए. आप हमें श्रेष्ठ अन्न, बल दीजिए. आप दुष्टों को बाधित कीजिए. (६)

अग्निर्ऋषि पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः. तमीमहे महागयम्.. (७)

अग्नि ऋषि हैं. वे पवित्र, पुरोहित, पंच व सर्वद्रष्टा हैं. हम उन के गुण गाते हैं. (७)

अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्. दधद्रयिं मयि पोषम्.. (८)

हे अग्नि! आप पोषक अन्न व धन धारण करिए. आप हमें शक्ति व श्रेष्ठ संतान दीजिए और पवित्र बनाइए. (८)

अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया. आ देवान्वक्षि यक्षि च.. (९)

हे अग्नि! आप पवित्र एवं देवताओं को खुश रखने वाले हैं. आप अपनी जिह्वाओं (लपटों) से देवताओं को बुलाइए और देवताओं के लिए यज्ञ कराइए. (९)

तं त्वा घृतस्नवीमहे चित्रभानो स्वर्दृशम्. देवाँ आ वीतये वह.. (१०)

हे अग्नि! आप सर्वद्रष्टा हैं. हम आप को घी से सींचते हैं. आप अद्‌भुत हैं. हम आप से देवताओं का आह्वान करने के लिए निवेदन करते हैं. (१०)

वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्त समिधीमहि. अग्ने बृहन्तमध्वरे.. (११)

हे अग्नि! आप बुद्धिमान, यज्ञप्रेमी हैं और द्युतिमान हैं. हम विशाल यज्ञ में आप को समिधाओं से प्रज्वलित करते हैं. (११)

चौथा खंड

अवा नो अग्न ऊतिभिर्गायत्रस्य प्रभर्मणि. विश्वासु धीषु वन्द्य.. (१)

हे अग्नि! आप की सभी यज्ञों में बुद्धिपूर्वक वंदना की जाती है. आप गायत्री छंद में स्तुति गाने पर प्रसन्न होते हैं. आप अपने रक्षा साधनों से हमारी रक्षा करने की कृपा कीजिए. (१)

आ नो अग्ने रयिं भर सत्रासाहं वरेण्यम्. विश्वासु पृत्सु दुष्टरम्.. (२)

हे अग्नि! आप भरपूर धन दीजिए. आप शत्रुनाशक श्रेष्ठ सामर्थ्य दीजिए. आप सभी

दुष्टों को दूर कीजिए. आप सभी वैभव हमें प्रदान कीजिए. (२)

आ नो अग्ने सुचेतुना रयिं विश्वायुपोषसम्. मार्डीकं धेहि जीवसे.. (३)

हे अग्नि! आप सुचेतना संपन्न, संपूर्ण पोषण (आयु पर्यंत) दाता व सुखदाता हैं. आप हमें पूरे जीवन के लिए धन दीजिए. (३)

अग्नि ꣳ हिन्वन्तु नो धियः सप्तिमाशुमिवाजिषु. तेन जेष्म धनंधनम्.. (४)

हे अग्नि! हमारी बुद्धियां आप को प्रेरित करें. युद्ध में घोड़े को प्रेरित करने की भांति हम आप को प्रेरित करते हैं, जिस से हम जीवन संग्राम में सारे वैभव जीत सकें. (४)

यया गा आकरामहै सेनयाग्ने तवोत्या. तां नो हिन्व मघत्तये.. (५)

हे अग्नि! संरक्षण शक्ति से हमें रक्षित कीजिए. दिव्य ज्ञान हेतु हम आप को आमंत्रित करते हैं. आप हमें उत्तम कोटि का धन प्रदान कीजिए. (५)

आग्ने स्यूर ꣳ रयिं भर पृथुं गोमन्तमश्विनम्. अङ्धि खं वर्तया पविम्.. (६)

हे अग्नि! आप हमें गोवान व अश्ववान बनाइए. आप हमें प्रचुर धन दीजिए. आकाश आप के तेज से पवित्र हैं. आप दुर्गुणों को दूर भगाइए. (६)

अग्ने नक्षत्रमजरमा सूर्य ꣳ रोहयो दिवि. दधज्ज्योतिर्जनेभ्यः.. (७)

हे अग्नि! आप लोगों के लिए ज्योति धारण कीजिए. आप स्वर्गलोक में सूर्य को स्थापित कीजिए. जर्जर न होने वाले सूर्य सर्वत्र प्रकाशदाता हैं. (७)

अग्ने केतुर्विशामसि प्रेष्ठः श्रेष्ठ उपस्थसत्. बोधा स्तोत्रे वया दधत्.. (८)

हे अग्नि! आप प्रिय, सर्वोत्तम व ज्ञानदाता हैं. आप हमारे स्तोत्र जगाइए. आप हमारे लिए आयु धारण करिए. (८)

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्. अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति.. (९)

हे अग्नि! आप मूर्धन्य, स्वर्गलोकवासी व पृथ्वी के पालनहार हैं. आप जलों को अपने में समाहित किए रहते हैं. (९)

ईशिषे वार्यस्य हि दात्रस्याग्ने स्वः पतिः. स्तोता स्यां तव शर्मणि.. (१०)

हे अग्नि! आप वरणीय हैं. आप स्वर्ग के ईश्वर हैं. आप दाता व अधिष्ठाता हैं. हम आप के सुख भोगें, सदैव आप के पूजक बने रहें. (१०)

उदग्ने शुचयस्तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते. तव ज्योती ꣳ ष्यर्चयः.. (११)

हे अग्नि! हम ज्योतिपूर्वक आप की अर्चना करते हैं. हम आप को पवित्र, चमकदार प्रकाशित ज्योति से भजते हैं. (११)

पंद्रहवां अध्याय

पहला खंड

कस्ते जामिर्जनानामग्ने को दाश्वध्वरः. को ह कस्मिन्नसि श्रितः.. (१)

हे अग्नि! मनुष्यों में कौन आप का सगा, पथ प्रदर्शक, यज्ञकर्त्ता व आप के स्वरूप का ज्ञाता है? आप का आश्रय कहां है? (१)

त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रो असि प्रियः. सखा सखिभ्य ईड्यः.. (२)

हे अग्नि! मनुष्यों में कौन आप का मित्र है, प्रिय है? सखा सखियों में कौन आप को सर्वाधिक प्रिय है? (२)

यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाँ ऋतं बृहत्. अग्ने यक्षि स्वं दमम्.. (३)

हे अग्नि! आप हमारे लिए मित्र और वरुण की पूजा करने की कृपा कीजिए. आप बहुत से देवताओं की पूजा करने की कृपा कीजिए. आप यज्ञ की पूजा कीजिए. (३)

ईडेन्यो नमस्यस्तिरस्तमाꣳसि दर्शतः. समग्निरिध्यते वृषा.. (४)

हे अग्नि! आप पूजनीय, नमन के योग्य, तमहारी व दर्शनीय हैं. आप को समिधाओं से भलीभांति प्रज्वलित किया जाता है. (४)

वृषो अग्निः समिध्यते ऽ श्वो न देववाहनः. तꣳ हविष्मन्त ईडते.. (५)

हे अग्नि! आप शक्तिशाली हैं. घोड़े जैसे वाहन को ले जाते हैं, वैसे ही आप देवताओं के वाहन को ले जाते हैं. हे हविमान! आप हमारी प्रार्थनाएं स्वीकारिए. (५)

वृषणं त्वा वयं वृषन्वृषणः समिधीमहि. अग्ने दीद्यतं बृहत्.. (६)

हे अग्नि! आप शक्तिमान हैं. हम शक्तिमान आप को प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं. हम समिधाओं से आप को प्रज्वलित करते हैं. आप दीप्तिमान व विशाल हैं. (६)

उत्ते बृहन्तो अर्चयः समिधानस्य दीदिवः. अग्ने शुक्रास ईरते.. (७)

हे अग्नि! हम समिधाओं से आप को प्रज्वलित करते हैं. हमारी अधिक अर्चना से आप ज्वालाओं से बढ़ोतरी प्राप्त करते हैं. (७)

उप त्वा जुह्वो ३ मम घृताचीर्यन्तु हर्यत. अग्ने हव्या जुषस्व नः.. (८)

हे अग्नि! हमारी घी से भरी हुई हवि आप का मन हरे. वह आप तक पहुंचे. हे अग्नि! आप हमारी उपासना को स्वीकार करने की कृपा कीजिए. (८)

मन्द्र होतारमृत्विजं चित्रभानुं विभावसुम्. अग्निमीळे स उ श्रवत्.. (९)

हे अग्नि! आप देवताओं के होता, आनंददाता, अद्भुत, वैभववान व प्रकाशमान हैं. आप हमारी स्तुतियां सुनने की कृपा कीजिए. (९)

पाहि नो अग्न एकया पाह्यु ३ त द्वितीयया.
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो.. (१०)

हे अग्नि! आप एक स्तुति सुन कर हमारी रक्षा कीजिए. आप दूसरी स्तुति सुन कर हमारी रक्षा कीजिए. आप तीसरी स्तुति सुन कर हमारी रक्षा कीजिए. आप चौथी स्तुति सुन कर हमारी रक्षा कीजिए. (१०)

पाहि विश्वस्माद्रक्षसो अराव्णःप्र स्म वाजेषु नो ऽ व.
तवामिद्धि नेदिष्ठं देवतातय आपिं नक्षामहे वृधे.. (११)

हे अग्नि! आप सारी राक्षसी व स्वार्थी प्रवृत्तियों से हमारी रक्षा कीजिए. आप हमारे हितैषी हैं. आप हमारे अभीष्ट देव हैं. हम आप की शरण में हैं. (११)

दूसरा खंड

इनो राजन्नरतिः समिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमाँ अदर्शि.
चिकिद्विभाति भासा बृहतासिक्नीमेति रुशतीमपाजन्.. (१)

हे अग्नि! आप राजा और शत्रुओं के लिए भयानक हैं. आप यजमानों की मनोकामना पूरी करते हैं. आप चकित करने वाले आप भास्कर (प्रकाशमान) व विशाल हैं. आप रात्रि में हवन के लिए चमकते हैं. (१)

कृष्णां यदेनीमभि वर्पसाभूज्जनयन्योषां बृहतः पितुर्जाम्.
ऊर्ध्वं भानु सूर्यस्य स्तभायन् दिवो वसुभिररतिर्वि भाति.. (२)

हे अग्नि! आप पिता (सूर्य) के जाए हैं. आप स्त्री रूप को प्रकट करते हैं. अंधेरी रात को अपनी ज्वालाओं से हटाते हैं (परास्त करते हैं). आप अपने दिव्य तेज से सूर्य का तेज ऊपर स्वर्गलोक में ही रोक लेते हैं. आप अपने ही तेज से तेजस्वी होते हैं. (२)

भद्रो भद्रया सचमान आगात्स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात्.
सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन्रुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात्.. (३)

कल्याणकारी अग्नि की कल्याणकारिणी उषा सेवा करती हैं. अग्नि शत्रुनाशक हैं. वे अपनी प्रिय बहन उषा के पास पहुंचते हैं. वे अंधेरे का नाश करते हैं. वे सर्वत्र गमनशील हैं. वे

अपनी लपटों से सर्वत्र प्रकाशित हो रहे हैं. (३)

कया ते अग्ने अङ्गिर ऊर्जो नपादुपस्तुतिम्. वराय देव मन्यवे.. (४)

हे अग्नि! आप अंगों को प्रकाशित करते हैं. आप ऊर्जा बढ़ाते हैं. सब आप को अंगीकार करते हैं. हम आप के अलावा और किस को श्रेष्ठ देव मानें? (४)

दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो. कदु वोच इदं नमः.. (५)

हे अग्नि! हम किस मन से आप का भजन करें? हम कब आप को नमन करें? कब हमारी वाणियां आप को प्राप्त करें? (५)

अधा त्व ꣳ हि नस्करो विश्वा अस्मभ्य ꣳ सुक्षितीः. वाजद्रविणसो गिरः.. (६)

हे अग्नि! आप हम पर सब कृपा कीजिए. हम अपनी प्रार्थनाओं से आप को अपने प्रति कृपालु बनाएं. आप हमें धनधान्यमय बनाइए. (६)

अग्न आ याह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे.
आ त्वामनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे.. (७)

हे अग्नि! आप देवों को आमंत्रित करने वाले हैं. आप हमारी स्तुतियां सुनिए. आप अन्य अग्नियों के साथ हमारे यज्ञस्थान पर पधारिए, कुश का आसन ग्रहण कीजिए. हमारी हवि से युक्त आहुतियां स्वीकार करने की कृपा कीजिए. (७)

अच्छा हि त्वा सहसः सूनो अङ्गिरः स्रुचश्चरन्त्यध्वरे.
ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहे ऽ ग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम्.. (८)

हे अग्नि! आप सर्वत्र भ्रमणशील और बलवर्द्धक हैं. आप के यजमान पुत्र आप के पास हवि पहुंचाने के लिए आतुर हैं. आप उन की आहुतियां अंगीकार कीजिए. आप ऊर्जा का नाश रोकते हैं. हम आप की यज्ञ में सर्वप्रथम आराधना करते हैं. आप घी से बढ़ते हैं. (८)

अच्छा नः शीरशोचिषं गिरो यन्तु दर्शतम्.
अच्छा यज्ञासो नमसा पुरूवसुं पुरुप्रशस्तमूतये.. (९)

हे अग्नि! आप दर्शनीय व लपटों वाले हैं. हमारी वाणियां शीघ्र आप तक पहुंचें. आप यज्ञ में हमारा मार्ग प्रशस्त कीजिए. हम यज्ञ में आप को नमन करते हैं. आप बहुत प्रशंसनीय हैं. आप भलीभांति प्रज्वलित हैं. (९)

अग्नि ꣳ सूनु ꣳ सहसो जातवेदसं दानाय वार्याणाम्.
द्विता यो भूदमृतो मर्त्येष्वा होता मन्द्रतमो विशि.. (१०)

हे अग्नि! आप अमर हैं. आप पृथ्वी पर अमृत स्वरूप हैं. आप यज्ञ को सफल बना कर आनंददायक हैं. आप को दान देने के लिए हम बारबार बुलाते हैं. (१०)

तीसरा खंड

अदाभ्यः पुरुरएता विशामग्निर्मानुषीणाम्. तूर्णी रथः सदा नवः.. (१)

हे अग्नि! आप मनुष्यों के पथप्रदर्शक, आगे चलने वाले, रथ के समान वेगवान व युवा हैं. आप को कोई नहीं दबा सकता है. (१)

अभि प्रया सि वाहसा दाश्वाँ अश्नोति मर्त्यः. क्षयं पावकशोचिषः.. (२)

हे अग्नि! आप पवित्र, प्रकाशमान व हविवाहक हैं. हम हविदाता मनुष्य आप से अच्छा घर मांगते हैं. (२)

साह्वान्विश्वा अभियुजः क्रतुर्देवानाममृक्तः. अग्निस्तुविश्रवस्तमः.. (३)

हे अग्नि! आप शत्रुओं की सेना को हराने वाले, दिव्यगुणदाता व भरपूर अन्नदाता हैं. हम आप को सभी अग्नियों सहित आमंत्रित करते हैं. (३)

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः. भद्रा उत प्रशस्तयः.. (४)

हे अग्नि! हम आप को आहुति देते हैं. आप हमारा कल्याण कीजिए. आप सौभाग्यशाली हैं. आप की कृपा हमें प्राप्त हो. हम कल्याणकारी स्तुतियां गा रहे हैं. आप हमारा कल्याण कीजिए. (४)

भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये येना समत्सु सासहिः.
अव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धतां वनेमा ते अभिष्टये.. (५)

हे अग्नि! आप हमारा मन कल्याणकारी बनाइए, पापमय विचारों व बुरी प्रवृत्तियों को दूर कीजिए. हम कल्याण के लिए आप की स्तुति करते हैं. आप हमें स्थिर बनाइए और हमें बहुत सा धन दीजिए. (५)

अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो. अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः.. (६)

हे अग्नि! आप बलवान, ईश्वर व गायों के स्वामी हैं. आप सब कुछ जानते हैं. आप हमें भरपूर वैभव प्रदान करने की कृपा कीजिए. (६)

स इधानो वसुष्कविरग्निरीडेन्यो गिरा. रेवदस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि.. (७)

हे अग्नि! आप सब के लिए आवासदाता हैं. ज्ञान से भरी स्तुति से आप की उपासना की जाती है. आप प्रकाशमान हैं. आप हमें प्रकाशमान संपदा दीजिए. (७)

क्षपो राजन्नुत त्मनाग्ने वस्तोरुतोषसः. स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति.. (८)

हे अग्नि! आप प्रकाशमान हैं. आप दिनरात (हर समय) दुष्टों को पीड़ा पहुंचाइए. आप तेजस्वी हैं. आप राक्षसों को जला कर भस्म कर दीजिए. (८)

चौथा खंड

विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम्.
अग्निं वो दुर्यं वच स्तुषे शूषस्य मन्मभिः.. (१)

हे अग्नि! आप मेहमान की तरह सत्कार के योग्य एवं सभी को प्रिय हैं. आप को सभी हवि प्रदान करते हैं. हम मन से और यज्ञवेदी में आप को स्थापित कर के आप की बारबार स्तुति करते हैं. (१)

यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिरासुतिम्. प्रश ꣳ सन्ति प्रशस्तिभिः.. (२)

हे अग्नि! हम हविदाता आप के मित्र हैं. आप बहुत पूजनीय हैं. हम वैदिक प्रशस्तियों से आप की प्रशंसा करते हैं. (२)

पन्या ꣳ सं जातवेदसं यो देवतात्युद्यता. हव्यान्यैरयद्दिवि.. (३)

हे अग्नि! आप सारे ज्ञानों से परिपूर्ण हैं. आप हवि को स्वर्गलोक में पहुंचाते हैं. हम आप की स्तुति करते हैं. (३)

समिद्धमग्निं समिधा गिरा गृणे शुचिं पावकं पुरो अध्वरे ध्रुवम्.
विप्र ꣳ होतारं पुरुवारमद्रुहं कवि ꣳ सुम्नैरीमहे जातवेदसम्.. (४)

हे अग्नि! आप पवित्र हैं. आप समिधाओं से प्रकट होते हैं. आप स्थिर व यज्ञ में अग्रस्थानी हैं. ब्राह्मण, होता, सर्वज्ञाता, विद्वान् आदि सभी को आप धन देते हैं. हम बहुत अच्छे मन से आप की उपासना करते हैं. (४)

त्वां दूतमग्ने अमृतं युगेयुगे हव्यवाहं दधिरे पायुमीड्यम्.
देवासश्च मर्तासश्च जागृविं विभुं विश्पतिं नमसा नि षेदिरे.. (५)

हे अग्नि! आप अमर हैं. हम युगों से आप को अपना दूत मानते हैं. आप हविवाहक हैं. आप देवताओं और मनुष्यों दोनों को जाग्रत करते हैं. आप संसार व धन के स्वामी हैं. हम आप को नमन एवं आप की स्तुति करते हैं. (५)

विभूषन्नग्न उभयाँ अनु व्रता दूतो देवाना ꣳ रजसी समीयसे.
यत्ते धीति ꣳ सुमति मावृणीमहे ऽ ध स्म नस्त्रिवरूथः शिवो भव.. (६)

हे अग्नि! आप देव और मनुष्य दोनों की शोभा बढ़ाते हैं. आप व्रतप्रिय, देवों के दूत, हविवाहक व तीनों लोकों में भ्रमणशील हैं. हम आप की स्तुति करते हैं. हम आप से सुख चाहते हैं. आप कल्याणकारी होइए. (६)

उपत्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः. वायोरनीके अस्थिरन्.. (७)

हे अग्नि! हमारी स्तुतियां बहनों के समान आप का गुण गाती हैं. हम वायु की सहायता

से आप को प्रज्वलित करते हैं. हम यज्ञ स्थान में आप की स्थापना करते हैं. (७)

यस्य त्रिधात्ववृतं बर्हिस्तस्थावसन्दिनम्. आपश्चिन्नि दधा पदम्.. (८)

हे अग्नि! आप में जल भी विद्यमान हैं. आप के चारों ओर यज्ञकुंड के पास कुश के आसन बिछे हैं. हम आप की उपासना करते हैं. (८)

पदं देवस्य मीढुषो ऽ नाधृष्टाभिरूतिभिः. भद्रा सूर्य इवोषदृक्.. (९)

हे अग्नि! आप प्रकाशवान, सराहनीय, शत्रुहीन और धैर्यशाली हैं. आप का दर्शन करना सूर्य के दर्शन के समान कल्याणकारी है. (९)

सोलहवां अध्याय

पहला खंड

अभि त्वा पूर्वपीतये इन्द्र स्तोमेभिरायवः.
समीचीनास ऋभवः समस्वरन्रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम्.. (१)

हे इंद्र! यजमान चाहते हैं कि आप सब से पहले सोमरस पीजिए. यजमान वैदिक मंत्रों से आप की स्तुति कर रहे हैं. आप उचित दृष्टि वाले हैं. रुद्र और ऋभुगण आप की गणना सर्वप्रथम करते हैं. वे भी आप ही की स्तुति करते हैं. (१)

अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्य ꣳ शवो मदे सुतस्य विष्णवि.
अद्या तमस्य महिमानमायवो ऽ नु ष्टुवन्ति पूर्वथा.. (२)

हे इंद्र! आप सोमरस पी कर प्रसन्न होते हैं. आप यजमान का वीर्य और शक्ति दोनों बढ़ाते हैं. आप महिमावान हैं. यजमान आप की उसी महिमा का बखान करते हैं. (२)

प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः. इन्द्राग्नी इष आ वृणे.. (३)

हे इंद्र! हे अग्नि! यजमान आप की अर्चना करते हैं. सामगायक आप के गुण गा रहे हैं. अन्न धन हेतु हम भी आप को आमंत्रित करते हैं. (३)

इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम्. साकमेकेन कर्मणा.. (४)

हे इंद्र! हे अग्नि! आप ने एक ही बार एक साथ नब्बे नगरों को कंपकंपा दिया. (४)

इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः. ऋतस्य पथ्या ३ अनु.. (५)

हे इंद्र! हे अग्नि! यज्ञ के होता आदि पुरोहित सत्य के मार्ग से हमारे यज्ञ के पास उपस्थित होते हैं. (५)

इन्द्राग्नी तविषाणि वा ꣳ सधस्थानि प्रया ꣳ सि च. युवोरप्तूर्य ꣳ हितम्.. (६)

हे इंद्र! हे अग्नि! आप हित साधने वाले हैं. आप के प्रयास सदैव शुभ कार्यों की ओर लगे रहते हैं. (६)

शग्ध्यू ३ षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः.
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि.. (७)

हे इंद्र! आप शचीपति, शक्तिमान, धनवान, सौभाग्यवान और यशस्वी हैं. हम आप का अनुगमन करते हैं. (७)

पौरो अश्वस्य पुरुकृद्गवामस्युत्सो देव हिरण्ययः.
न किर्हि दानं परि मर्धिषत्वे यद्यद्यामि तदा भर.. (८)

हे इंद्र! आप अश्व, गौ आदि पशुओं का पालन करते हैं. स्वर्णमयी मुद्रा से जैसे प्रसन्नता होती है, वैसे ही आप को देख कर प्रसन्नता होती है. कोई भी आप के दान को भूल नहीं सकता. आप हमें भरपूर धन दीजिए. (८)

त्व ं३ ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये.
उद्वावृषस्व मघवन्गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये.. (९)

हे इंद्र! आप हमें धन देने के लिए पधारिए. आप सन्मार्ग पर चलने वाले को सौभाग्यवान बनाइए. आप हमारी गौ संबंधी इच्छाओं को पूरा कीजिए. (९)

त्वं पुरू सहस्राणि शतानि च यूथा दानाय म ं३ हसे.
आ पुरंदरं चकृम विप्रवचस इन्द्रं गायन्तो ऽ वसे.. (१०)

हे इंद्र! आप सैकड़ोंहजारों गायों के झुंड देने व शत्रु नगरियों को नष्ट करने की सामर्थ्य रखते हैं. यजमान अपनी रक्षा के लिए साम मंत्र गा रहे हैं. इंद्र ब्राह्मणों के वचनों से युक्त हैं. हम उन को आमंत्रित करते हैं. (१०)

यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम्.
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्वग्नये.. (११)

हे अग्नि! आप धनदाता, होता व आनंददाता हैं. सोमरस से भरे पात्र आप तक पहुंचें. सर्वप्रथम हम आप की स्तुति करते हैं. वे स्तुतियां भी आप तक पहुंचें. (११)

अश्वं न गीर्भी रथ्य ं३ सुदानवो मर्मृज्यन्ते देवयवः.
उभे तोके तनये दस्म विश्पते पर्षि राधो मघोनाम्.. (१२)

हे अग्नि! सारथी जैसे रथ में जोते गए घोड़ों को जोश दिलाने के लिए बोलता रहता है, वैसे ही यजमान आप के लिए स्तुतियां बोलते हैं. आप राक्षसों से धन छीन कर अपने उपासकों को देने की कृपा कीजिए. आप उत्तम कोटि के दानदाता हैं. (१२)

दूसरा खंड

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय. त्वामवस्युरा चके.. (१)

हे वरुण! आप हमारी इन स्तुतियों पर कान (ध्यान) दीजिए. आप हमें सुख दीजिए. हम आप से अपनी रक्षा की प्रार्थना करते हैं. (१)

कया त्वं न ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्. कया स्तोतृभ्य आ भर.. (२)

हे इंद्र! आप किन साधनों से हमारी रक्षा करते हैं? आप हमें किस प्रकार बहुत प्रसन्नता देते हैं? आप कैसे यजमानों (स्तोताओं) की इच्छापूर्ति करते हैं? (२)

इन्द्रमिद्देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे.
इन्द्र समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये.. (३)

हे इंद्र! हम यज्ञ में व वीर भक्तगण संग्राम में आप को आमंत्रित करते हैं. हम धन हेतु आप का आह्वान करते हैं. (३)

इन्द्रो मह्ना रोदसी पप्रथच्छव इन्द्रः सूर्यमरोचयत्.
इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिरे इन्द्रे स्वानास इन्दवः.. (४)

हे इंद्र! आप महान हैं. आप ने स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक का फैलाव किया. आप ने सूर्य को प्रकाश से चमकाया. आप ने सकल भुवनों को शरण दी. हम आप के लिए सोमरस भेंट करते हैं. (४)

विश्वकर्मन्हविषा वावृधानः स्वयं यजस्व तन्व ३ स्वा हि ते.
मुह्यन्त्वन्ये अभितो जनास इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु.. (५)

हे इंद्र! आप हवि से बढ़ोतरी पाते हैं. आप सभी कर्म साधते हैं. हम संसार के कल्याण के लिए अपने को न्योछावर करते हैं. यज्ञ से विरोध रखने वाले लोगों का मनोबल टूटे. इंद्र हमारे हो जाएं. बुद्धिजीवी लोग हमारे हो जाएं. (५)

अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषा सि तरति सयुग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः
धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः.
विश्वा यद्रूपा परियास्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः.. (६)

हे सोम! आप का रस रुचिपूर्ण है व हरित आभा वाला है. आप उस से द्वेषियों का वैसे ही संहार करते हैं, जैसे सूर्य अपनी किरणों से अंधेरे का संहार करते हैं. आप का रस प्रकाशमान है. छलनी पर आप की धारा प्रकाशमान है. आगेपीछे सब ओर आप की धारा शोभित होती है. आप अपने सात मुखों से निकलने वाली सात किरणों से कहीं ज्यादा प्रकाशमान व उत्तम हैं. (६)

प्राचीमनु प्रदिशं याति चेकितत्स रश्मिभिर्यतते दर्शतो रथो दैव्यो दर्शतो रथः.
अग्मन्नुक्थानि पौ स्येन्द्रं जैत्राय हर्षयन्.
वज्रश्च यद्भवथो अनपच्युता समत्स्वनपच्युता.. (७)

हे सोम! आप पूर्व दिशा में प्रस्थान करते हैं. तब आप का रथ बहुत चमकता है. आप का रथ दिव्य व दर्शनीय है. यजमान मंत्र गागा कर अपनी स्तुतियां आप और इंद्र तक पहुंचाते हैं. यजमान विजय पाने की इच्छा से आप को प्रसन्न करते हैं. वे आप से वज्र प्राप्त

करते हैं. आप दोनों मिल कर किसी भी युद्ध में यजमान को हारने नहीं देते हैं. (७)

त्व ं३ ह त्यत्पणीनां विदो वसु सं मातृभिर्मर्जयसि स्व आ दम ऋतस्य धीतिभिर्दमे.
परावतो न साम तद्यत्रा रणन्ति धीतयः.
त्रिधातुभिररुषीभिर्वयो दधे रोचमानो वयो दधे.. (८)

हे सोम! आप ने व्यापारियों से धन पाया. आप मातृ जल से पवित्र किए जाते हैं. आप के लिए गाए जाने वाले सामगान यज्ञ स्थान से बहुत दूर दूर तक गूंजते हैं. आप स्वर्गलोक, अंतरिक्षलोक एवं पृथ्वीलोक तीनों ही जगह सुशोभित होते हैं. आप हमें दीर्घायु कीजिए. (८)

तीसरा खंड

उत नो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत. नृवत्कृणुह्यूतये.. (१)

हे पूषा! आप हमारी बुद्धि की रक्षा कीजिए. हमारी बुद्धि हमें गोधन, अश्वधन व धन प्राप्त कराती है. (१)

शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवसः. विदाकामस्य वेनतः.. (२)

हे मरुद्गण! सत्य हमारा बल है. हम यज्ञ करते हुए पसीने से तर हो गए हैं. आप ऐसे उपासकों की मनोकामनाएं पूरी करने की कृपा कीजिए. (२)

उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये. सुमृडीका भवन्तु नः.. (३)

हे मरुद्गण! आप प्रजापति के पुत्र हैं. आप अमर हैं. आप हमें सुखी बनाने की कृपा कीजिए. आप स्तुतियां सुनने की कृपा कीजिए. (३)

प्र वां महि द्यवी अभ्युपस्तुतिं भरामहे. शुची उप प्रशस्तये.. (४)

हे स्वर्गलोक! हे पृथ्वीलोक! हम स्तुतियों से आप के समीप पहुंचते हैं. हम आप दोनों लोकों के लिए भरपूर स्तुतियां उचारते हैं. (४)

पुनाने तन्वा मिथः स्वेन दक्षेण राजथः. ऊह्याथे सनादृतम्.. (५)

हे देवी! आप स्वर्गलोक व पृथ्वीलोक को पवित्र करती हैं. आप प्रकाशवती हैं. आप यज्ञ की परिपाटियों का निर्वाह करती हैं. (५)

मही मित्रस्य साधथस्तरन्ती पिप्रती ऋतम्. परिं यज्ञं निषेदथुः.. (६)

हे देवियो! हे अंतरिक्षलोक! यजमान आप के सखा हैं. आप यजमान की मनोकामनाएं पूरी करते हैं. आप यज्ञ को पूर्ण कराते हैं. आप यज्ञ को पूरा सहयोग देते हैं. (६)

अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम्. वचस्तच्चिन्न ओहसे.. (७)

हे इंद्र! हमारी स्तुतियां स्नेह से आप के पास उसी तरह पहुंचती हैं, जैसे कबूतर प्रेम से

कबूतरी के पास पहुंचता है. (७)

स्तोत्र राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्य ते. विभूतिरस्तु सूनृता.. (८)

हे इंद्र! आप धनों के स्वामी व वीर हैं. आप वाणी से स्तुति योग्य, अच्छे ऋत (सत्य) वाले और वैभववान हैं. (८)

ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये ऽ स्मिन् वाजे शतक्रतो. समन्येषु ब्रवावहै.. (९)

हे इंद्र! आप सैकड़ों कार्य करने वाले हैं. आप हमारे संरक्षण के लिए प्रयास कीजिए. आप उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित हैं. हम आप से कुछ अन्य बातों के बारे में भी परामर्श (निवेदन) करते रहें. (९)

गाव उप वदावटे मही यज्ञस्य रप्सुदा. उभा कर्णा हिरण्यया.. (१०)

हे गौओ! यज्ञ स्थान के पास आप को बुलाया जा रहा है. आप रंभा कर आवाज कीजिए. आप यज्ञ फल देने वाली हैं. आप के दोनों ही कान सोने के हैं. (१०)

अभ्यारमिदद्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु. अवटस्य विसर्जने.. (११)

हम पत्थर से कूट कर निकाला गया, बचा हुआ सोमरस परम वीर इंद्र के विसर्जन पर भेंट करने के लिए द्रोणकलश में स्थापित करते हैं. (११)

सिञ्चन्ति नमसावटमुच्चाचक्रं परिज्मानम्. नीचीनबारमक्षितम्.. (१२)

हम यजमान उस परम शक्ति को नमस्कार करते हैं, नमनपूर्वक यज्ञ विधान करते हैं. उस परम शक्ति का चक्र ऊपर (लोक) स्थित है, नीचे का द्वार चारों ओर झुका हुआ है. वह द्वार अक्षत है. (१२)

चौथा खंड

मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य सख्ये तव.
महत्ते वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम्.. (१)

हे इंद्र! हम आप के मित्र हैं, इस कारण हम कभी भी श्रम से थके नहीं, कभी भी किसी से डरे नहीं. आप महान हैं. आप की कृपा सराहनीय है. तुर्वश और यदु दोनों ही प्रसन्न दिखाई देते हैं. (१)

सव्यामनु स्फिग्यं वावसे वृषा न दानो अस्य रोषति.
मध्वा संपृक्ताः सारघेण धेनवस्तूयमेहि द्रवा पिब.. (२)

हे इंद्र! आप क्षमतावान हैं. आप बाएं हाथ से ही (आसानी से) सब को शरण दे देते हैं. अत्यंत क्रूर भी आप का कुछ बिगाड़ नहीं सकते. मीठे दूध वाली गायों के समान सुखदायी

आप की स्तुति हम करते हैं. आप उन्हीं के समान सुखद हैं. आप जितनी जल्दी हो सके हमारे यज्ञ स्थान पर पधारिए व सोमपान करिए. (२)

इमा उत्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम.
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितो ऽ भि स्तोमैरनूषत.. (३)

हे इंद्र! हमारी स्तुतियां आप का यशवर्धन करें. हमारी स्तुतियां श्रेष्ठ ज्ञानमय हैं. ज्ञानी और तेजस्वी यजमान आप की स्तुति करते हैं. (३)

अय सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे.
सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये.. (४)

हे इंद्र! आप समुद्र की भांति विस्तृत हैं. आप हजारों ऋषियों जैसे बलवान हैं. आप सत्यवान व शक्तिमान हैं. ब्रह्मज्ञानी लोगों के निर्देशन में आप की स्तुतियां गाई जाती हैं. (४)

यस्यायं विश्व आर्यो दासः शेवाधिपा अरिः.
तिरश्चिदर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत्यो अज्यते रयिः.. (५)

हे इंद्र! यह सारा विश्व आप का है. आर्य दास की भांति आप की सेवा करते हैं. आप शत्रुओं के अधीश हैं. रुश्म और पवि शक्तिमान हो कर भी आप की पूजा करते हैं. (५)

तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्चुतं विप्रासो अर्कमानृचुः.
अस्मे रयिः पप्रथे वृष्ण्य शवो ऽ स्मे स्वानास इन्दवः.. (६)

हे इंद्र! हम आप की अर्चना करते हैं. यजमान ब्राह्मण यज्ञ करते हैं. वे यज्ञ में शहद और घी से भरी हुई आहुतियां व हम हवि रूपी धन देते हैं. सोम प्रसिद्धि प्राप्त करें. (६)

गोमन्न इन्दो अश्ववत्सुतः सुदक्ष धनिव. शुचिं च वर्णमधि गोषु धारय.. (७)

हे सोम! आप हमें गोवान व अश्ववान बनाइए. आप गाय के दूध में मिल कर पवित्र सफेद रंग प्राप्त करते हैं. (७)

स नो हरीणां पत इन्दो देवप्सरस्तमः. सखेव सख्ये नर्यो रुचे भव.. (८)

हे सोम! आप हरे हैं. आप देवताओं द्वारा ईप्सिततम (सब से ज्यादा चाहे गए) हैं. आप उसी तरह हम में रुचि लेते हैं, जैसे एक मित्र दूसरे मित्र का सहयोग करने के लिए रुचि लेता है. (८)

सनेमि त्वमस्मदा अदेवं कं चिदत्रिणम्. साह्वाँ इन्दो परि बाधो अप द्वयुम्.. (९)

हे इंद्र! आप प्राचीन काल से चले आ रहे सुख हमें दीजिए. आप सुख में बाधा पैदा करने वाले शत्रुओं, दोगले व्यवहार वालों व स्वार्थियों का भी नाश कीजिए. (९)

अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतु रिहन्ति मध्वाभ्यञ्जते.

सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षण हिरण्यपावाः पशुमप्सु गृभ्णते.. (१०)

हे सोम! सोमरस में यजमान गाय का दूध मिलाते हैं. उसे पी कर प्रसन्न होते हैं, अनेक प्रकार से उसे अनेक रूपों में तैयार करते हैं. उसे मीठे दूध व सोने जैसे चमकते हुए जल में मिलाते हैं. सोम ऊंचे स्थान से, जल के ऊंचे भाग से गिरते हैं. वे सर्वद्रष्टा हैं. (१०)

विपश्चिते पवमानाय गायत मही न धारात्यन्धो अर्षति.
अहिर्न जूर्णामति सर्पति त्वचमत्यो न क्रीडन्नसरद्वृषा हरिः.. (११)

हे यजमानो! आप सोम के गुण गाइए. सोम ज्ञानी व हरे हैं. वे विशाल धाराएं धारण करते हैं. सांप के केंचुली बदलने की तरह वे अपनी पुरानी छाल बदल देते हैं. वे घोड़े जैसे खेलते हुए द्रोणकलश में जाते हैं. (११)

अग्रेगो राजाप्यस्तविष्यते विमानो अह्नां भुवनेष्वर्पितः.
हरिर्घृतस्नुः सुदृशीको अर्णवो ज्योतीरथः पवते राय ओक्यः.. (१२)

सोम अग्रगामी हैं, राजा हैं, जल में मिलते हैं और प्रशंसा प्राप्त करते हैं. वे लोकों में दिन के (समय के) मापक, सुंदर व हरे हैं. वे जलवासी, ज्योतिर्मय रथ वाले व धन का भंडार हैं. (१२)

सत्रहवां अध्याय

पहला खंड

विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं यज्ञमिदं वचः. चनो धाः सहसो यहो.. (१)

हे अग्नि! आप समस्त अग्नियों के साथ यज्ञ में पधारिए. आप इस यज्ञ में हमारे वचन सुनिए. आप हमें अन्न प्रदान करने की कृपा कीजिए. (१)

यच्चिद्धि शश्वता तना देवं देवं यजामहे. त्वे इद्धूयते हविः.. (२)

हे अग्नि! हम इंद्र, वरुण और अन्य देवताओं को हवि दे कर भजन करते हैं. वह सब आप तक पहुंचता है. (२)

प्रियो नो अस्तु विश्पतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः. प्रियाः स्वग्नयो वयम्.. (३)

अग्नि हमें प्रिय हैं. वे विश्वपति, होता और वरेण्य हैं. उन्हें हम सब प्रिय हों. (३)

इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः. अस्माकमस्तु केवलः.. (४)

हे यजमानो! इंद्र सभी लोकों से ऊपर हैं. लोगों के कल्याण के लिए हम उन का आह्वान करते हैं. आप की कृपा से हम सब का कल्याण हो. (४)

स नो वृषन्नमुं चरु ꣳ सत्रादावन्नपा वृधि. अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः.. (५)

हे इंद्र! हमारे द्वारा समर्पित हवि ग्रहण कीजिए. हमारी इच्छाओं को खाली न लौटाएं. आप जल्दी से जल्दी फल देने वाले हैं. (५)

वृषा यूथेव व ꣳ सगः कृष्टीरियर्त्योजसा. ईशानो अप्रतिष्कुतः.. (६)

हे इंद्र! आप बलवान हैं. आप उसी तरह उपासकों की इच्छा पूरी करने जाते हैं, जैसे गायों के झुंड में बैल जाता है. आप ईश्वर हैं. आप हमारे विरोधी नहीं हो सकते. (६)

त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधा ꣳ सि चोदय.
अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः.. (७)

हे अग्नि! आप हमें संरक्षण दीजिए. आप जो धन अपने रथ से ले जाते हैं, वह हमें दीजिए. आप विलक्षण हैं. हमारी पीढ़ियां भी यशस्वी हों. (७)

पर्षि तोकं तनयं पर्तृभिष्ट्वमदब्धैरप्रयुत्वभिः

अग्ने हेडा सि दैव्या युयोधि नो ऽ देवानि ह्वरा सि च.. (८)

हे अग्नि! आप सहयोगी व स्वतंत्र हैं. आप अपने रक्षा साधनों से हमारी व पीढ़ियों की रक्षा कीजिए. आप प्राकृतिक प्रकोपों और दुष्ट प्रवृत्तियों से हमें बचाइए. (८)

किमित्ते विष्णो परिचक्षि नाम प्र यद्ववक्षे शिपिविष्टो अस्मि.
मा वर्पो अस्मदप गूह एतद्यदन्यरूपः समिथे बभूथ.. (९)

हे विष्णु! आप सर्वत्र व्याप्त हैं. आप अपना यह विराट् और व्यापक स्वरूप हम से छिपा कर (गुप्त) न रखिए. आप कितने ही रूप क्यों न धारण कर लें फिर भी आप हमारी रक्षा अवश्य करते हैं. (९)

प्र तत्ते अद्य शिपिविष्ट हव्यमर्यः श सामि वयुनानि विद्वान्.
तं त्वा गृणामि तवसमतव्यान्क्षयन्त मस्य रजसः पराके.. (१०)

हे विष्णु! आप रश्मिवान व आदरणीय हैं. मैं व विद्वान् भी आप की प्रशंसा करते हैं. हम आप के विष्णुलोक से दूर हैं, फिर भी हम अपने लोक से आप की वैसे ही प्रशंसा करते हैं, जैसे कोई छोटा भाई करता है. (१०)

वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम्.
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः.. (११)

हे विष्णु! वषट्कार से हम आप को आमंत्रित करते हैं. आप रश्मिवान हैं. आप हमारी हवि को स्वीकारिए. हमारी अच्छी स्तुतियां आप की बढ़ोतरी करें. आप मंगलकारी आशीर्वादों से हमारा कल्याण करने की कृपा कीजिए. (११)

दूसरा खंड

वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु.
आ याहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता.. (१)

हे वायु! हम यज्ञ में सब से पहले आप को सोमरस चढ़ाते हैं. आप आदरणीय हैं. हे देव! आप नियुत नामक घोड़े के साथ सोमपान के लिए आ जाइए. (१)

इन्द्रश्च वायवेषा सोमानां पीतिमर्हथः.
युवा हि यन्तीन्दवो निम्नमापो न सध्र्यक्.. (२)

हे इंद्र! हे वायु! आप सोमपान के योग्य हैं. जलधार जैसे नीचे की ओर जाती है, वैसे ही आप दोनों के लिए सोमरस की धारा पहुंचती है. (२)

वायविन्द्रश्च शुष्मिणा सरथ शवसस्पती.
नियुत्वन्ता न ऊतय आ यात सोमपीतये.. (३)

हे इंद्र! हे वायु! आप बलवान व क्षमतावान हैं. आप नियुत घोड़े को रथ में जोत कर सोमपान हेतु आइए. (३)

अध क्षपा परिष्कृतो वाजाँ अभि प्र गाहसे.
यदी विवस्वतो धियो हरि ꣳ हिन्वन्ति यातवे.. (४)

हे सोम! आप पौष्टिक अन्न देते हैं. आधी रात के बीत जाने पर छने हुए सोम में जल मिलाया जाता है. यजमान की बुद्धि हरित सोमरस को कलश की ओर उन्मुख करती है. (४)

तमस्य मर्जयामसि मदो य इन्द्रपातमः.
यं गाव आसभिर्दधुः पुरा नूनं च सूरयः.. (५)

सोमरस मददायी है. यह इंद्र के पीने योग्य है. इसे आज भी पीया जाता है. यह पहले भी पीया जाता था. सोम को गाएं भी खुशीखुशी खाती हैं. (५)

तं गाथया पुराण्या पुनानमभ्यनूषत.
उतो कृपन्त धीतयो देवानां नाम बिभ्रतीः.. (६)

यजमान पुरानी गाथाओं से सोमरस की उपासना करते हैं. यज्ञ कर्म हेतु चमकता हुआ सोम देवताओं को आहुति के रूप में भी दिया जाता है. (६)

अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः. सम्राजन्तमध्वराणाम्.. (७)

हे अग्नि! आप यज्ञ के सम्राट् हैं. घुड़सवार जैसे घोड़े से प्रेम करता है, उसी तरह हम आप से प्रेम व आप को नमस्कार करते हैं. (७)

स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः. मीढ्वाँ अस्माकं बभूयात्.. (८)

हे अग्नि! हम आप के पुत्र हैं. हम विधिविधान से आप की उपासना करते हैं. आप बहुत शीघ्रगामी हैं. आप हमारे लिए सुखदायी हों. (८)

स नो दूराच्चासाच्च नि मर्त्यादघायोः. पाहि सदमिद्विश्वायुः.. (९)

हे अग्नि! आप मनुष्यों का भला चाहते हैं. आप दूर और पास दोनों दृष्टियों से शत्रुओं से हमारी रक्षा करने की कृपा कीजिए. (९)

त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः.
अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः.. (१०)

हे इंद्र! आप युद्धों में स्पर्धा करने वाले सभी शत्रुओं को दूर करते हैं. आप विघ्नहारी हैं. (१०)

अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा.
विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि.. (११)

हे इंद्र! अंतरिक्षलोक और पृथ्वीलोक आप के बल का वैसे ही अनुसरण करते हैं, जैसे मातापिता बच्चे के पीछे चलचल कर उस की रक्षा करते हैं. जब आप वृत्रासुर से युद्ध करते हैं तो आप के सामने युद्ध के लिए तैयार शत्रु के भी हौसले पस्त हो जाते हैं. (११)

तीसरा खंड

यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्यद्भूमिं व्यवर्तयत्. चक्राण ओपशं दिवि.. (१)

यज्ञ इंद्र की बढ़ोतरी व भूमि को विस्तृत करते हैं. वे स्वर्गलोक से मेघों को वर्षा के लिए प्रेरित करते हैं. (१)

व्य ३ न्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना. इन्द्रो यदभिनद्वलम्.. (२)

इंद्र मेघों को भेदते व अंतरिक्ष में विशेष शोभा बढ़ाते हैं. वे सोमरस से प्रसन्न होते हैं. (२)

उद्गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः. अर्वाञ्चं नुनुदे वलम्.. (३)

सूर्य ने गुफा की किरणों को बाहर निकाल कर उसे अंगिराओं (अंगधारियों) तक पहुंचाया. उन किरणों को छिपा कर रखने वाला राक्षस भाग गया. (३)

त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम्. आ च्यावयस्यूतये.. (४)

हे इंद्र! आप शत्रुओं को एक साथ मारते हैं. हम अपनी रक्षा के लिए स्तुतियों से आप को आमंत्रित करते हैं. (४)

युध्म ꣳ सन्तमनर्वाण ꣳ सोमपामनपच्युतम्. नरमवार्यक्रतुम्.. (५)

हे इंद्र! आप युद्ध करते हुए कभी नहीं हारते. सोमपान के लिए आप का मन दृढ़ निश्चय वाला है. हम यज्ञ में आप का सहयोग चाहते हैं. (५)

शिक्षा ण इन्द्र राय आ पुरु विद्वां ऋचीषम. अवा नः पार्ये धने.. (६)

हे इंद्र! आप सर्वज्ञाता व दर्शनीय हैं. आप हमारे लिए धन दीजिए. शत्रुओं से भी आप को जो धन मिले, वह हमें दीजिए. (६)

तव त्यदिन्द्रियं बृहत्तव दक्षमुत क्रतुम्. वज्र ꣳ शिशाति धिषणा वरेण्यम्.. (७)

हे इंद्र! आप अपनी विशालता, दक्षता और श्रेष्ठ बुद्धि से यज्ञ और वज्र को तीक्ष्ण बनाते हैं. (७)

तव द्यौरिन्द्र पौ ꣳ स्यं पृथिवी वर्धति श्रवः. त्वामापः पर्वतासश्च हिन्विरे.. (८)

हे इंद्र! स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक से आप के स्वरूप का विस्तार होता है. जल और पर्वत आप को अपना स्वामी मानते हैं. (८)

त्वां विष्णुर्बृहन्क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः. त्वा शर्द्धो मदत्यनु मारुतम्.. (९)

हे इंद्र! आप विशाल व आश्रयदाता हैं. विष्णु, मित्र और वरुण आप की स्तुति गाते हैं. मरुद्गण आप को प्रसन्न करते हैं. (९)

चौथा खंड

नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः. अमैरमित्रमर्दय.. (१)

हे अग्नि! हम बल प्राप्ति के लिए आप को आमंत्रित करते हैं. आप अमित्रों का मर्दन करने की कृपा कीजिए. (१)

कुवित्सु नो गविष्टये ऽ ग्ने संवेषिषो रयिम्. उरुकृदुरु णस्कृधि.. (२)

हे अग्नि! आप महान हैं. आप से हम महानता चाहते हैं. आप हम गौ इच्छुकों को प्रचुर गोधन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (२)

मा नो अग्ने महाधने परा वर्ग्भारभृद्यथा. संवर्ग स रयिं जय.. (३)

हे अग्नि! आप हम से विमुख मत होइए. भारवाही जैसे बोझा ढोता है, वैसे ही आप शत्रु समूह से जीते हुए धन को हमारे लिए ढोइए. (३)

समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः. समुद्रायेव सिन्धवः.. (४)

नदियां जैसे समुद्र की ओर जाती हैं, वैसे ही सारे लोग आप के क्रोध के सामने नत हो जाते हैं. (४)

वि चिद्वृत्रस्य दोधतः शिरो बिभेद वृष्णिना. व्रज्रेण शतपर्वणा.. (५)

इंद्र ने अपनी शक्ति से सैकड़ों धार वाले वज्र से वृत्रासुर का सिर काट डाला. वृत्रासुर ने संसार को भयभीत कर रखा था. (५)

ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत्समवर्तयत्. इन्द्रश्चेर्मेव रोदसी.. (६)

इंद्र ने अपने ओज से स्वर्गलोक और भूलोक को चमड़ी की तरह धारण कर रखा है. (६)

सुमन्मा वस्वी रन्ती सूनरी.. (७)

हे इंद्र! आप अच्छे मन वाले, वैभवशाली व रमणीय हैं. (७)

सरूप वृषन्ना गहीमौ भद्रौ धुर्यावभि. ताविमा उप सर्पतः.. (८)

हे इंद्र! कल्याणकारी सुंदर घोड़ों वाले रथ को धुरी पर चढ़ा कर हमारे पास पहुंचिए. (८)

नीव शीर्षाणि मृढ्वं मध्य आपस्य तिष्ठति. शृङ्गेभिर्दशभिर्दिशन्.. (९)

हे यजमानो! अभीष्ट फलदायी इंद्र हमारे यज्ञ के मध्य उपस्थित हैं. हम सिर झुका कर उन दर्शनीय इंद्र का दर्शन करें. (९)

अठारहवां अध्याय

पहला खंड

पन्यंपन्यमित्सोतार आ धावत मद्याय. सोमं वीराय शूराय.. (१)

हे यजमानो! आप सोमरस तैयार करने में लगे हुए हो. आप शूरवीर इंद्र को सोमरस भेंट कीजिए. सोमरस मददायी है. आप जल्दीजल्दी दौड़ कर वह सोमरस इंद्र को भेंट कीजिए. (१)

एह हरी ब्रह्मयुजा शग्मा वक्षतः सखायम्. इन्द्रं गीर्भिर्गिर्वणसम्.. (२)

इंद्र के घोड़े वाणी के संकेत से ही रथ में जुत जाते हैं. इंद्र हमारे सखा व वाणी से उपास्य हैं. इंद्र के घोड़े उन्हें ले कर यज्ञ में आने की कृपा करें. (२)

पाता वृत्रहा सुतमा घा गमन्नारे अस्मत्. नि यमते शतमूतिः.. (३)

हे इंद्र! आप वृत्रासुर हंता व सोमपायी हैं. आप दुश्मनों को दूर भगाने व हमारे यज्ञ में अवश्य पधारने की कृपा कीजिए. (३)

आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः. न त्वामिन्द्राति रिच्यते.. (४)

हे इंद्र! आप के अतिरिक्त और कोई देव श्रेष्ठ नहीं हैं. आप को सोमरस वैसे ही प्राप्त हो, जैसे समुद्र को नदियां प्राप्त होती हैं. (४)

विव्यक्थ महिना वृषन्भक्ष ꣳ सोमस्य जागृवे. य इन्द्र जठरेषु ते.. (५)

हे इंद्र! आप जाग्रत व शक्तिमान हैं. सोम के कारण आप की ख्याति बहुत व्यापक है. आप के जठर (पेट) में पहुंचा हुआ सोम भी प्रशंसा प्राप्त करता है. (५)

अरं त इन्द्र कुक्षये सोमो भवतु वृत्रहन्. अरं धामभ्य इन्दवः.. (६)

हे इंद्र! आप ने वृत्रासुर का हनन किया. हम ने आप को जो सोमरस भेंट किया, वह आप के लिए भरपूर हो. वह सोमरस अन्य देवताओं के लिए भी भरपूर हो. (६)

जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय. स्तोम ꣳ रुद्राय दृशीकम्.. (७)

हे अग्नि! आप को प्रार्थनाओं से प्रज्वलित किया जाता है. आप बारबार यजमानों के कल्याण के लिए यज्ञ मंडप में प्रकट होने की कृपा कीजिए. यजमान रुद्र के लिए अच्छे स्तोत्र

बोले. (७)

स नो महाँ अनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः. धिये वाजाय हिन्वतु.. (८)

हे अग्नि! आप की ध्वजा बहुत ही धूम्रमय (धुएं वाली) है. आप महान व आनंददायी हैं. आप हमें बौद्धिक वैभव प्रदान करने की कृपा कीजिए. (८)

स रेवाँ इव विशपतिर्दैव्यः केतुः शृणोतु नः. उक्थैरग्निबृहद्भानुः.. (९)

हे अग्नि! आप विश्वपालक, दिव्य, दूरदर्शी व राजा जैसे हैं. आप वाणी से की गई हमारी स्तुति को सुनने की कृपा कीजिए. (९)

तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने. शं यद्गवे न शाकिने.. (१०)

हे यजमानो! आप इंद्र के लिए एकत्रित हो कर प्रार्थनाएं गाइए. इंद्र को स्तोत्र ऐसे प्रिय लगते हैं, जैसे गायों को घास. (१०)

न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः. यत्सीमुपश्रवद्गिरः. (११)

हे इंद्र! स्तुति से भरी हुई हमारी वाणियां जब आप के समीप पहुंचती हैं तो आप यजमान को धनवान और गोवान बनाने में नहीं चूकते हैं. (११)

कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत्. शचीभिरप नो वरत्.. (१२)

हे इंद्र! चोर व डाकू जो गाएं चुराते हैं, आप उन गायों को अपने अधीन कर लेते हैं. आप उन गायों से हमें गोवान बना देते हैं. (१२)

दूसरा खंड

इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्. समूढमस्य पा ꣳ सुले.. (१)

विष्णु ने अपने पैरों को तीन प्रकार से रखा. उन पैरों की पदधूलि में ही सारा संसार समा गया. (१)

त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः. अतो धर्माणि धारयन्.. (२)

विष्णु अपने तीन पैरों में धर्म को धारण करते हुए संसार को संचालित करते हैं. वे सर्वत्र व्याप्त हैं. (२)

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे. इन्द्रस्य युज्यः सखा.. (३)

हे यजमानो! आप विष्णु के कर्मों को देखने की कृपा कीजिए. उन कर्मों के वे प्रेरक और इंद्र के योग्य मित्र हैं. (३)

तद्विष्णोः परमं पद ꣳ सदा पश्यन्ति सूरयः. दिवीव चक्षुराततम्.. (४)

स्वर्गलोक में स्थित सूर्य को जैसे साधारण आंखों से आसानी से देख सकते हैं, वैसे ही बुद्धिमान यजमान विष्णु के परमपद को देख लेते हैं. (४)

तद्विप्रासो विपन्युवो जागृवा सः समिन्धते. विष्णोर्यत्परमं पदम्.. (५)

जाग्रत यजमान अपने श्रेष्ठ यज्ञ कर्मों से विष्णु के श्रेष्ठ पद को प्राप्त करते हैं. (५)

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे. पृथिव्या अधि सानवि.. (६)

विष्णु ईश्वर हैं. उन्होंने पृथ्वी के सब से ऊंचे स्थान से अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की है. उस श्रेष्ठ लोक से देवता हमारी रक्षा करने की कृपा करें. (६)

मो षु त्वा वाघतश्च नारे अस्मन्नि रीरमन्.
आरात्ताद्वा सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि.. (७)

हे इंद्र! आप हम से बहुत दूर हैं. फिर भी हमारे यज्ञ में पधारने की कृपा कीजिए. हमारे मन की भावनाओं से हुई प्रार्थनाओं पर ध्यान देने की कृपा कीजिए. विद्वानों का ज्ञान भी आप को हम से दूर न कर सके. हमारा आप से यही अनुरोध है. (७)

इमे हि ते ब्रह्मकृतः सु ते सचा मधौ न मक्ष आसते.
इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पादमा दधुः.. (८)

हे इंद्र! हम आप के लिए सोमरस तैयार कर के उसी तरह बैठे हुए हैं, जिस तरह शहद पर मधुमक्खियां बैठती हैं. वीर जैसे धन की इच्छा से रथ पर पैर रखता है, वैसे ही हम भी धन की इच्छा से आप पर अपनी आशाएं केंद्रित कर रहे हैं. (८)

अस्तावि मन्म पूर्व्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत.
पूर्वीर्ऋतस्य बृहतीरनूषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत.. (९)

हे यजमानो! आप इंद्र के लिए प्रार्थनाएं याद कीजिए, उन प्रार्थनाओं को गाइए. पहले यज्ञों में हम ने बृहती छंद में साम गाए. इस से यजमानों में बुद्धि उपजती है और वह बुद्धि मंजती है. (९)

समिन्द्रो रायो बृहतीरधूनुत सं क्षोणी समु सूर्यम्.
स शुक्रासः शुचयः सं गवाशिरः सोमा इन्द्रममन्दिषुः.. (१०)

हे इंद्र! गाय के दूध में मिला हुआ सोमरस आप के लिए समर्पित है. यह मददायी है. आप इस से तृप्त होइए. आप हमें सूर्य जैसी प्रकाश वाली गाएं और धन प्रदान कीजिए. (१०)

इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे.
नरे च दक्षिणावते वीराय सदनासदे.. (११)

हे इंद्र! आप ने वृत्रासुर का नाश किया. आप दक्षिणा दाता हैं. आप को मद देने के लिए

द्रोणकलश में स्थिर किया जाता है. यजमानों की मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए सोमरस को सत्पात्र में रखा जाता है. (११)

तꣳ सखायः पुरूरुचं वयं यूयं च सूरयः.
अश्याम वाजगन्ध्यꣳ सनेम वाजपस्त्यम्.. (१२)

हे यजमानो! तुम सब और हम सब सोमरस को प्राप्त करें. वह सोमरस दूधिया (सफेद), पराक्रमी, स्फूर्तिदायी, सुगंधमय और क्षमताशाली है. (१२)

परि त्यꣳ हर्यतꣳ हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण.
यो देवान् विश्वाँ इत् परि मदेन सह गच्छति.. (१३)

सोमरस हरा, भूरा व मनोहर है. वह सभी देवताओं की प्रसन्नता के साथ द्रोणकलश में जाता है. (१३)

कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति.
श्रद्धा इत् ते मघवन पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति.. (१४)

हे इंद्र! किस में इतनी सामर्थ्य है जो आप का तिरस्कार कर दे. आप ऐश्वर्यशाली हैं. आप के भक्त आप के प्रति श्रद्धा के कारण ही दुर्दिन में आप से शक्ति और सामर्थ्य प्राप्त करते हैं. (१४)

मघोनः स्म वृत्रहत्येषु चोदय ये ददति प्रिया वसु.
तव प्रणीती हर्यश्व सूरिभिर्विश्वा तरेम दुरिता.. (१५)

हे इंद्र! आप ऐश्वर्यशाली और अश्ववान हैं. आप वृत्रासुर जैसे अत्याचारियों को नष्ट करने की शक्ति दीजिए. यजमानों को देने के लिए आप प्रिय धनों को प्रेरित कीजिए. शूरवीर और ज्ञानी आप की कृपा से पापों से छुटकारा पाएं. (१५)

तीसरा खंड

एदु मधोर्मदिन्तरꣳ सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः. एवा हि वीर स्तवते सदावृधः.. (१)

हे यजमानो! सोमरस मधुर, सुखदायी व इंद्र के लिए आनंददायी है. आप इंद्र की स्तुति कीजिए. वे ही स्तुति के योग्य हैं. आप सोमरस भी उन्हीं की सेवा में समर्पित कीजिए. (१)

इन्द्र स्थातर्हरीणां न किष्टे पूर्व्यस्तुतिम्. उदानꣳश शवसा न भन्दना.. (२)

हे इंद्र! आप अश्वपति हैं. ऋषियों ने आप के लिए प्रार्थनाएं रची हैं. उन प्रार्थनाओं को (आप द्वारा दी गई) सामर्थ्य के अलावा और किसी तरह नहीं प्राप्त किया जा सकता है. (२)

तं वो वाजानां पतिमहूमहि श्रवस्यवः. अप्रायुभिर्यज्ञेभिर्वावृधेन्यम्.. (३)

हे इंद्र! आप वैभवशाली, धनपति व फुर्तीले हैं. यजमान जो यज्ञ करते हैं, उन यज्ञों से आप बढ़ोतरी प्राप्त करते हैं. हम आप का आह्वान करते हैं. (३)

तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे. देवत्राहव्यमूहिषे.. (४)

हे यजमानो! यज्ञ देवलोक का प्रतिनिधित्व करते हैं. आप इन यज्ञों की पूजा कीजिए. इन यज्ञों के माध्यम से यजमान दिव्य विभूतियां पाते हैं और धारण करते हैं. अग्नि हमारी हवियों को देवताओं तक पहुंचाने के लिए मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं. (४)

विभूतरातिं विप्र चित्रशोचिषमग्निमीडिष्व यन्तुरम्.
अस्य मेधस्य सोम्यस्य सोभरे प्रेमध्वराय पूर्व्यम्.. (५)

हे ब्राह्मणो! आप अग्नि की उपासना कीजिए. यज्ञ की सफलता के लिए आप को यह उपासना करनी है. वे अतिशय वैभवदाता, प्रकाशमान, श्रेष्ठ और यज्ञ के प्रमुख हैं. (५)

आ सोम स्वानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया.
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दध्रिषे.. (६)

हे सोम! पत्थरों से कूट कर आप का रस निकाला गया है, छान कर उस रस को पवित्र किया गया है. हरा सोमरस वन की लकड़ी के बने पात्र में उसी तरह प्रवेश कर रहा है, जैसे शूरवीर अपनी वीरता से नगर में प्रवेश करने जाता है. (६)

स मामृजे तिरो अण्वानि मेष्यो मीढ्वांत्सप्तिर्न वाजयुः.
अनुमाद्यः पवमानो मनीषिभिः सोमो विप्रेभिर्ऋक्वभिः.. (७)

ब्राह्मण ऋत्विज् सोमरस को पवित्र कर रहे हैं. स्तोत्रों से वे इस की प्रशंसा कर रहे हैं. वे भेड़ के बाल से बनी छलनी से इसे छान रहे हैं. इसे छानने वाले ऋत्विज् शक्तिमान, हृष्टपुष्ट और घोड़े जैसे बलवान हैं. (७)

वयमेनमिदा ह्यो ऽ पीपेमेह वज्रिणम्.
तस्मा उ अद्य सवने सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते.. (८)

हे यजमानो! हम वज्रधारी इंद्र को पहले से ही सोमरस पिलाते रहे हैं. आज भी हमें उन्हें यह सोमरस पिलाना चाहिए. वे सोमपान और स्तोत्र श्रवण (सुनने) हेतु हमारे यज्ञ में पधारने की कृपा करें. (८)

वृकश्चिदस्य वारण उरामथिरा वयुनेषु भूषति.
सेमं न स्तोमं जुजुषाण आ गहीन्द्र प्र चित्रया धिया.. (९)

हे यजमानो! भेड़िए जैसे भयंकर शत्रु भी इंद्र के सामने झुक जाते हैं. वे इंद्र हमारी प्रार्थना स्वीकार करने की कृपा करें. इंद्र हमें विवेक व अद्भुत बुद्धि प्रदान करने की कृपा करें. (९)

इन्द्राग्नी रोचना दिवः परि वाजेषु भूषथः. तद्वां चेति प्र वीर्यम्.. (१०)

हे इंद्र! हे अग्नि! यह दिव्य गुण आप दोनों के लिए वीरता का परिचायक है. आप गुण रूपी धन से स्वर्गलोक में शोभायमान और भूषित होते हैं. (१०)

इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः. ऋतस्य पथ्या ३ अनु.. (११)

हे इंद्र! हे अग्नि! होता ऋत् (सत्य) के पथ का अनुगमन कर के सिद्धि की ओर समीप जाते हैं. (११)

इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च. युवोरप्तूर्यं हितम्.. (१२)

हे इंद्र! हे अग्नि! आप दोनों की शक्ति और विद्या हितकारी भाव से कार्य करती है. आप शीघ्र कार्य करने की सामर्थ्य रखते हैं. (१२)

क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद् वयो दधे.
अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः.. (१३)

इंद्र और उन की आयु को कौन जान सकता है? वे शत्रुओं के नगर को अपने ओज से नष्ट करने वाले हैं. वे मदमस्त रहते हैं और सुरक्षा कवचधारी हैं. (१३)

दाना मृगो न वारणः पुरुत्रा च रथं दधे.
न किष्ट्वा नि यमदा सुते गमो महा श्चरस्योजसा.. (१४)

हे इंद्र! आप महान, विचरण कर्ता और आदरणीय हैं. आप अपने बल सहित यज्ञ में पधारने की कृपा कीजिए. आप को रथ ले कर यज्ञ में आने से भला कौन रोक सकता है? आप शत्रु को वैसे ही खोजते हैं, जैसे मतवाला हाथी अपने शत्रु को खोजता है. (१४)

य उग्रः सन्ननिष्टृतः स्थिरो रणाय स ꣳ स्कृतः.
यदि स्तोतुर्मघवा शृणवद्धवं नेन्द्रो योषत्या गमत्.. (१५)

हे इंद्र! हमारी संस्कृत में रची हुई स्तुतियों को सुन कर आप अवश्य ही कहीं और नहीं जाएंगे. आप हमारे ही यज्ञ में आने की कृपा करेंगे. वे रण (युद्ध) में स्थिर, अस्त्रशस्त्र से सज्जित व उग्र रहते हैं. (१५)

चौथा खंड

पवमाना असृक्षत सोमाः शुक्रास इन्दवः. अभि विश्वानि काव्या.. (१)

हे सोम! आप का रस पवित्र व चमकीला है. उसे सभी काव्यों (वेद मंत्रों) के साथ संस्कारित किया जाता है. (१)

पवमाना दिवस्पर्यन्तरिक्षादसृक्षत. पृथिव्या अधि सानवि.. (२)

हे सोम! आप का रस पवित्र और वह स्वर्गलोक से धरती के उच्च शिखर को स्पर्श करता हुआ बहता है. (२)

पवमानास आशवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः. घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः.. (३)

हे सोम! आप का रस पवित्र और चमकीला है. वह (स्वास्थ्य संबंधी) सभी गड़बड़ियों का नाश करता है. आप जल्दी द्रोणकलश में पधारते हैं. (३)

तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापराजिता. इन्द्राग्नी वाजसातमा.. (४)

हे इंद्र! हे अग्नि! आप वृत्रनाश से संतोष करते हैं. आप को कोई पराजित नहीं कर सकता. आप उपासकों को प्रचुर धन देते हैं. हम आप की उपासना करते हैं. (४)

प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः. इन्द्राग्नी इष आ वृणे.. (५)

हे इंद्र! हे अग्नि! हम मनोकामना पूर्ति के लिए आप का वरण करते हैं. हम वैदिक मंत्रों से व साम गागा कर आप की उपासना करते हैं. (५)

इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम्. साकमेकेन कर्मणा.. (६)

हे इंद्र! हे अग्नि! दासों और उन की पत्नियों के नगर आप ने एक साथ एक कार्य (युद्ध) से ही कंपकंपा कर नष्ट कर दिए. हम आप दोनों की स्तुति करते हैं. (६)

उप त्वा रण्वसंदृशं प्रयस्वन्तः सहस्कृत. अग्ने ससृज्महे गिरः.. (७)

हे अग्नि! आप (अरणियों में) रगड़ से पैदा होते हैं. आप दर्शनीय हैं. हम वाणी से आप की स्तुति करते हैं. हम आप की समीपता चाहते हैं. हम आप की उपासना करते हैं. (७)

उप च्छायामिव घृणेरगन्म शर्म ते वयम्. अग्ने हिरण्यसंदृशः.. (८)

हे अग्नि! आप सोने की तरह चमकीले हैं. हम आप से उसी प्रकार सुख पाते हैं, जिस प्रकार लोग गरमी में छाया से पाते हैं. (८)

य उग्र इव शर्यहा तिग्मशृङ्गो न वं सगः. अग्ने पुरो रुरोजिथ.. (९)

हे अग्नि! आप उग्र, वीर व धनुर्धर हैं. आप की ज्वालाएं (बैलों के) तीखे सींग की भांति हैं. आप ने दुश्मनों के ठिकानों को नष्ट किया है. (९)

ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम्. अजस्रं घर्ममीमहे.. (१०)

हे अग्नि! आप सत्यवान हैं. सभी मनुष्यों के लिए अमृत जैसे कल्याणकारी हैं. आप ज्योति के स्वामी व अजस्र हैं. हम आप से यज्ञ की रक्षा करने का अनुरोध करते हैं. (१०)

य इदं प्रतिपप्रथे यज्ञस्य स्वरुत्तिरन्. ऋतूनुत्सृजे वशी.. (११)

हे अग्नि! आप सत्य के मार्ग में आने वाली रुकावटों को दूर हटाते हैं. संसार को

वशीभूत रखते हैं. आप की कृपा से संसार विस्तृत होता है. आप ऋतुओं का सृजन करते हैं. (११)

अग्निः प्रियेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य. सम्राडेको विराजति.. (१२)

हे अग्नि! आप एकमात्र सम्राट् हैं. आप अपने प्रिय धामों में सुशोभित होते हैं. आप अतीत और भविष्य में चाहने वालों की इच्छा पूरी करते हैं. (१२)

उन्नीसवां अध्याय

पहला खंड

अग्निः प्रत्नेन जन्मना शुम्भानस्तन्व ३ ꣳ स्वाम्. कविर्विप्रेण वावृधे.. (१)

हे अग्नि! आप प्रकाशमान व मेधावी हैं. पुराने स्तोत्रों से यजमान आप को प्रज्वलित कर के आप का विस्तार करते हैं. (१)

ऊर्जो नपातमा हुवे ऽ ग्निं पावकशोचिषम्. अस्मिन्यज्ञे स्वध्वरे.. (२)

हे अग्नि! हम अपने इस यज्ञ में अग्नि को आमंत्रित करते हैं. आप पवित्र व प्रकाशमान हैं. आप ऊर्जा को नीचे नहीं गिरने देते हैं. (२)

स नो मित्रमहस्त्वमग्ने शुक्रेण शोचिषा. देवैरा सत्सि बर्हिषि.. (३)

हे अग्नि! आप अपनी चमकीली लपटों से अन्य देवताओं के साथ कुश के आसन पर विराजिए. आप हमारे मित्र हैं. (३)

उत्ते शुष्मासो अस्थू रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः. नुदस्व याः परिस्पृधः.. (४)

हे सोम! पत्थरों से कूट कर आप का रस निकाला जाता है. आप की उमड़ती हुई लहरों से राक्षसों का नाश होता है. जो हम से प्रतिस्पर्धा करते हैं, आप उन शत्रुओं का नाश करने की कृपा कीजिए. (४)

अया निजघ्निरोजसा रथसङ्गे धने हिते. स्तवा अबिभ्युषा हृदा.. (५)

हे सोम! आप सामर्थ्यवान व शत्रुनाशक हैं, रथ को साथ ले कर शत्रुओं को नष्ट कीजिए. हम हृदय से आप से धन देने के लिए अनुरोध करते हैं. (५)

अस्य व्रतानि नाधृषे पवमानस्य दूढ्या. रुज यस्त्वा पृतन्यति.. (६)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप के दृढ़ व्रतों से दुष्ट राक्षस प्रगति नहीं कर सकते. जो शत्रु युद्ध करना चाहते हैं, आप उन शत्रुओं का नाश कीजिए. (६)

त ꣳ हिन्वन्ति मदच्युत ꣳ हरिं नदीषु वाजिनम्. इन्दुमिन्द्राय मत्सरम्.. (७)

सोमरस मद बरसाने वाला, स्फूर्तिदायक व हरी कांति वाला है. इंद्र हेतु सोम को नदी के जल से प्रेरित किया जाता है. (७)

आ मन्द्रैरिन्द हरिभिर्याहि मयूररोमभिः.
मा त्वा के चिन्नि येमुरिन्न पाशिनो ऽ ति धन्वेव ताँ इहि.. (८)

हे इंद्र! आप के घोड़े मनोहर हैं. उन के बाल मोरपंख जैसे हैं. आप उन घोड़ों सहित यज्ञ में पधारने की कृपा कीजिए. शिकारी आप की राह में जाल न फैला सकें, अतः आप उन्हें रेगिस्तान में पहुंचा दीजिए. (८)

वृत्रखादो वलं रुजः पुरां दर्मो अपामजः.
स्थाता रथस्य हर्योरभिस्वर इन्द्रो दृढा चिदारुजः.. (९)

हे इंद्र! आप घोड़ों से सजे हुए रथ में बैठ कर बलवान शत्रुओं को भी हरा देते हैं. आप उन की नगरियों का भी नाश कर देते हैं. आप राक्षसों के बलनाशक हैं. आप दुष्टों की दुष्ट प्रवृत्तियों का भी नाश करते हैं. (९)

गम्भीराँ उदधी ꣳ रिव क्रतुं पुष्यसि गा इव.
प्र सुगोपा यवसं धेनवो यथा ह्रदं कुल्या इवाशत.. (१०)

हे इंद्र! गंभीर समुद्र को जैसे छोटे तालाब अधिक जल दे कर पोसते हैं, वैसे ही आप यजमान की मनोकामना पूरी कर के उन्हें पोसते हैं. ग्वाले जैसे गायों को घास चारा डाल कर पोसते हैं, वैसे ही यजमान इंद्र को सोमरस भेंट कर के पोसते हैं. (१०)

यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम्.
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब.. (११)

हे इंद्र! आप हमारे दोस्त की तरह आइए. आप उसी ललक से आइए, जैसे प्यास से व्याकुल हिरण तालाब के पास जाता है. आप कण्वों के निकट सोमपान करने की कृपा कीजिए. (११)

मन्दन्तु त्वा मघवन्निन्द्रेन्दवो राधोदेयाय सुन्वते.
आमुष्या सोममपिबश्चमू सुतं ज्येष्ठं तद्दधिषे सहः.. (१२)

हे इंद्र! आप धनवान हैं. सोमरस आप को मदमस्त बना दे. आप इस सोमरस को पीजिए. आप हमें और हमारे बेटों को खूब धन दीजिए. (१२)

त्वमङ्ग प्र श ꣳ सिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम्.
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः.. (१३)

हे इंद्र! आप हमारी प्रशंसा करते हैं. आप सब से बढ़िया सुख देते हैं. हम आप ही से प्रार्थना करते हैं, क्योंकि आप के अतिरिक्त कोई दूसरा उतना धनवान और सुखदायक नहीं है. (१३)

मा ते राधा ꣳ सि मा त ऊतयो वसो ऽ स्मान्कदा चना दभन्.

विश्वा च न उपमिमीहि मानुष वसूनि चर्षणिभ्य आ.. (१४)

हे इंद्र! आप के धन कभी भी हमारे लिए हानिकारक न हों. आप के रक्षा साधन भी कभी हमें हानि न पहुंचाएं. आप संसार के शरणदाता हैं. आप मनुष्यों को सभी धन देने की कृपा कीजिए. (१४)

दूसरा खंड

प्रति ष्या सूनरी जनी व्युच्छन्ती परि स्वसुः. दिवो अदर्शि दुहिता.. (१)

उषा सूर्य की बेटी हैं. वे श्रेष्ठ नारी हैं. वे अपना प्रकाश चारों ओर फैलाती हुई जाती हैं. दिन के न दिखाई देने पर वे अपना प्रकाश फैलाती हैं. (१)

अश्वेव चित्रारुषी माता गवामृतावरी. सखा भूदश्विनोरुषाः.. (२)

उषा रश्मियों की मां हैं. वे रश्मियां अद्‌भुत और चमकीली हैं. वे अश्विनीकुमारों की मित्र हैं. (२)

उत सखास्यश्विनोरुत माता गवामसि. उतोषो वस्व ईशिषे.. (३)

उषा उपासना के योग्य हैं. वे रश्मियों की मां हैं और अश्विनीकुमारों की मित्र हैं. (३)

एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः. स्तुषे वामश्विना बृहत्.. (४)

हे अश्विनी! उषा अपूर्व, प्रिय व दिन लाती हैं. हम विशाल स्तोत्रों से उन की उपासना करते हैं. (४)

या दस्रा सिन्धुमातरा मनोतरा रयीणाम्. धिया देवा वसुविदा.. (५)

हे अश्विनीकुमारो! आप बुद्धिमानों के धनदाता हैं. आप नदियों को पैदा करने वाले, मनोहर व धनवान हैं. (५)

वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि. यद्वा ꣳ रथो विभिष्पतात्.. (६)

जब आप दोनों अश्विनीकुमारों का रथ पक्षी की भांति उड़ कर ऊपर जाता है तब आप दोनों के लिए स्वर्ग में भी स्तोत्र पढ़े जाते हैं. (६)

उषस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति. येन तोकं च तनयं च धामहे.. (७)

हे उषा! आप धनवती और यज्ञ कार्य भी आरंभ करने वाली हैं. आप अद्‌भुत वैभव दीजिए, जिस से हम संतान और अपने मित्रों का भरणपोषण करने में समर्थ हो सकें. (७)

उषो अद्येह गोमत्यश्वावति विभावरि. रेवदस्मे व्युच्छ सूनृतावति.. (८)

हे उषा! आप गोवती व अश्ववती हैं. आप रात्रि के बाद दिन लाने वाली हैं. आप हमें पुत्र

और धन दीजिए. (८)

युंक्ष्वा हि वाजिनीवत्यश्वाँ अद्यारुणाँ उषः. अथा नो विश्वा सौभगान्या वह.. (९)

हे उषा! आप यज्ञ कार्य आरंभ कराने वाली व धनवती हैं. आप अपने रथ में लाल घोड़ों को जोतिए. हमें संसार में सौभाग्यवान बनाने की कृपा कीजिए. (९)

अश्विना वर्तिरस्मदा गोमद्दस्रा हिरण्यवत्. अर्वाग्रथ ꣳ समनसा नि यच्छतम्.. (१०)

हे अश्विनीकुमारो! आप शत्रुओं का नाश करने वाले हैं. आप हमें गोवान बनाइए. आप अपने सुनहरे रथ को मन से हमारे यज्ञ में लाने की कृपा कीजिए. (१०)

एह देवा मयोभुवा दस्रा हिरण्यवर्तनी. उषर्बुधो वहन्तु सोमपीतये.. (११)

उषा के साथ उद्बुद्ध (जाग्रत) सुनहरी किरणें, इन सुखमय अश्विनीकुमारों को सोमपान करने के लिए हमारे यज्ञ में लाने की कृपा करें. (११)

यावित्था श्लोकमा दिवो ज्योतिर्जनाय चक्रथुः.
आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम्.. (१२)

हे अश्विनीकुमारो! आप स्वर्गलोक से यज्ञ के लिए ज्योति ला कर लोगों का हित करने की कृपा कीजिए. आप दोनों हमें अन्नवान व ऊर्जावान बनाने की कृपा कीजिए. (१२)

तीसरा खंड

अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः.
अस्तमर्वन्त आशवो ऽ स्तं नित्यासो वाजिन इष ꣳ स्तोतृभ्य आ भर.. (१)

हे अग्नि! आप सर्वव्यापक हैं. हम आप की उपासना करते हैं. घोड़े व गाएं जिन की शरण में हैं, हम यजमानों को भी आप अपनी शरण में लीजिए. हम नित्य नियम निभाने वाले और हवि देने वाले हैं. आप हमें अन्नदान कीजिए. हम आप की उपासना करते हैं. (१)

अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः.
अग्नी राये स्वाभुव ꣳ स प्रीतो याति वार्यमिष ꣳ स्तोतृभ्य आ भर.. (२)

हे अग्नि! आप यजमान को अन्नवान बनाने वाले, व्यापक दृष्टि वाले और पूजनीय हैं. आप प्रसन्न हो कर आसानी से यजमानों को धन देते हैं. आप उपासकों को भरपूर धन देने की कृपा कीजिए. (२)

सो अग्निर्यो वसुर्गृणे सं यमायन्ति धेनवः.
समर्वन्तो रघुद्रुवः स ꣳ सुजातासः सूरय इष ꣳ स्तोतृभ्य आ भर.. (३)

हे अग्नि! सारी गौएं तेज गति वाले घोड़े व विद्वान् आप की शरण में हैं. आप पूजनीय

हैं. आप यजमानों को भरपूर अन्न प्रदान करने की कृपा कीजिए. (३)

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती.
यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते.. (४)

हे उषा! आप प्रकाशवती हैं. आप हम सभी को पहले की तरह आज भी बोधित (जाग्रत) करने की कृपा कीजिए. आप हम पर भी वैसी ही कृपा कीजिए, जैसी आप ने वय्य के पुत्र सत्यश्रवा पर की. जैसा आप ने उन्हें (सत्यश्रवा को) जाग्रत किया, वैसे ही हमें भी जाग्रत करने की कृपा कीजिए. (४)

या सुनीथे शौचद्रथे व्यौच्छो दुहितर्दिवः.
या व्युच्छ सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते.. (५)

हे उषा! आप स्वर्गलोक की दुहिता (पुत्री) हैं. आप शुचद्रथ के पुत्र सुनीथ हेतु अंधेरे को भगा कर प्रकट हुईं. आपने सुनीथ पर जैसी कृपा की, वैसी ही आप वय्य के पुत्र सत्यश्रवा पर भी कीजिए. (५)

सा नो अद्याभरद्वसुर्व्युच्छा दुहितर्दिवः.
यो व्यौच्छः सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते.. (६)

हे उषा! आप स्वर्गलोक की दुहिता (बेटी) हैं. आप हमें भरपूर धन देने व आज हमारे अंधेरे (प्राकृतिक और अज्ञान रूप दोनों) को नष्ट करने की कृपा कीजिए. आप सत्यस्वरूपा हैं. आप वय्य के पुत्र सत्यश्रवा पर अपनी कृपा कीजिए. (६)

प्रति प्रियतम ꣳ रथं वृषणं वसुवाहनम्.
स्तोता वामश्विनावृषि स्तोमेभिर्भूषति प्रति माध्वी मम श्रुत ꣳ हवम्.. (७)

हे अश्विनीकुमारो! आप का रथ वैभव व पराक्रम धारण करता है. आप का रथ उपासकों की प्रार्थना से सुशोभित होता है. आप हमारी प्रार्थनाओं को सुनने की कृपा कीजिए. (७)

अत्यायातमश्विना तिरो विश्वा अह ꣳ सना.
दस्रा हिरण्यवर्तनी सुषुम्णा सिन्धुवाहसा माध्वी मम श्रुत ꣳ हवम्.. (८)

हे अश्विनीकुमारो! आप दूसरों का अतिक्रमण कर के (लांघ कर) हमारे पास पधारने की कृपा कीजिए. आप शत्रुनाशक हैं. आप की कृपा से हम अपने शत्रु पर विजय पा सकें. आप सोने के रथ वाले हैं. आप धनवान हैं. आप नदी के समान बहते हैं. आप हमारी प्रार्थनाओं को सुनने की कृपा कीजिए. (८)

आ नो रत्नानि बिभ्रतावश्विना गच्छतं युवम्.
रुद्रा हिरण्यवर्तनी जुषाणा वाजिनीवसू माध्वी मम श्रुत ꣳ हवम्.. (९)

हे अश्विनीकुमारो! आप सोने के रथ वाले, शत्रुनाशी, धनधारी, धनधान्य वाले व यज्ञ प्रेमी हैं. आप हमारे यज्ञ में पधारिए और प्रतिष्ठित होइए. आप हमारी प्रार्थनाओं को सुनने की कृपा कीजिए. (९)

चौथा खंड

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्.
यह्वा इव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सस्रते नाकमच्छ.. (१)

हे अग्नि! आप लोगों (यजमानों) की समिधा से प्रदीप्त होते हैं. नींद से उठ कर गौएं जैसे जाग्रत होती हैं, वैसे ही आप जाग्रत हैं. पेड़ों की शाखाएं जैसे आकाश की ओर फैलती हैं, वैसे ही आप की लपटें स्वर्ग की ओर फैलती हैं. (१)

अबोधि होता यजथाय देवानूर्ध्वो अग्निः सुमनाः प्रातरस्थात्.
समिद्धस्य रुशददर्शि पाजो महान् देवस्तमसो निरमोचि.. (२)

हे अग्नि! आप यज्ञ के प्रबल आधार हैं. देवों के लिए (हवि पहुंचाने हेतु) आप को प्रज्वलित किया जाता है. आप ऊर्ध्वगामी हैं व सुबह अच्छे मन से ऊपर की ओर जाते हैं. आप महान हैं. आप को हम प्रत्यक्ष देख सकते हैं. आप देवताओं व संसार को अंधकार से दूर करते हैं. (२)

यदीं गणस्य रशनामजीगः शुचिरङ्क्ते शुचिभिर्गोभिरग्निः.
आद्दक्षिणा युज्यते वाजयंत्युत्तानामूर्ध्वो अधयज्जुहूभिः.. (३)

हे अग्नि! आप बाधाएं व अंधेरे को दूर करते हैं. आप संसार को प्रकाशमान व यजमान घी की आहुतियों से बलवान बनाते हैं. आप ऊर्ध्वगामी हो कर उस घी वाली आहुतियों को स्वीकारते हैं. (३)

इद ꣳ श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागाच्चित्रः प्रकेतो अजनिष्ट विभ्वा.
यथा प्रसूता सवितुः सवायैवा रात्र्युषसे योनिमारैक्.. (४)

हे उषा! आप सभी ज्योतियों से श्रेष्ठ ज्योति वाली हैं. आप की ज्योति सर्वत्र फैलती है. सभी वस्तुओं को ज्योतिर्मय बना देती हैं. सविता के अस्त होने के बाद रात्रि उषा को उत्पन्न होने के लिए जगह देती हैं. (४)

रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्यागादारैगु कृष्णा सदनान्यस्याः.
समानबन्धू अमृते अनूची द्यावा वर्णं चरत आमिनाने.. (५)

हे उषा! आप सूर्य का चमकीला स्वरूप ले कर पैदा हुईं और रात्रि काले रंग का. सूर्य दोनों के समान रूप से बंधु हैं, दोनों अमर हैं. स्वर्गलोक में एक के बाद एक आतीजाती हैं. दोनों एकदूसरे का प्रभाव समाप्त करती हैं. (५)

समानो अध्वा स्वस्रोरनंतस्तमन्यान्या चरतो देवशिष्टे.
न मेथेते न तस्थतुः सुमेके नक्तोषासा समनसा विरूपे.. (६)

दोनों बहनों (उषा और रात्रि) की एक ही राह है. वह राह अनंत है. उसी राह पर ये दोनों एकदूसरे के पीछे चलती हैं, भले ही इन के स्वरूप एकदूसरे से अलग हैं पर इन के मन समान हैं. ये दोनों अपनेअपने कार्यों में लगी रहती हैं. (६)

आ भात्यग्निरुषसामनीकमुद्विप्राणां देवया वाचो अस्थुः.
अर्वाञ्चा नून ꣳ रथ्येह यातं पीपिवा ꣳ समश्विना घर्ममच्छ.. (७)

अग्नि प्रज्वलित हो गए हैं. उषा के प्रकट होते ही अग्नि प्रज्वलित हो जाते हैं. दिव्य प्रार्थनाएं शुरू हो गई हैं. अश्विनीकुमार रथ में विराज गए हैं. हम उन से सोमरस पीने के लिए यज्ञ में पधारने का अनुरोध करते हैं. (७)

न स ꣳ स्कृतं प्र मिमीतो गिमष्ठान्ति नूनमश्विनोपस्तुतेह.
दिवाभिपित्वे ऽ वसागमिष्ठा प्रत्यवर्तिं दाशुषे शम्भविष्ठा.. (८)

हे अश्विनीकुमारो! आप परिष्कृत पदार्थों को ग्रहण करने की कृपा कीजिए. यज्ञस्थान के समीप आने वाले आप के लिए उपासना की जाती है. दिन के आते ही आप प्रतिष्ठित हो जाते हैं. आप यजमान को प्रतिष्ठा प्राप्त कराने की कृपा कीजिए. (८)

उता यात ꣳ संगवे प्रातरह्नो मध्यन्दिन उदिता सूर्यस्य.
दिवा नक्तमवसा शन्तमेन नेदानीं पीतिरश्विना ततान.. (९)

हे अश्विनीकुमारो! सूर्य उगने के समय, दिन के मध्य में, शाम और दिन रात में आप पधारिए. आप अपने रक्षा साधनों सहित पधारने की कृपा कीजिए. आप के ये साधन दिनरात सुखदायी हैं. अभी तक आप के बिना सोमरस पीने का कार्य शुरू नहीं किया गया है. (९)

पांचवां खंड

एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते.
निष्कृण्वाना आयुधानीव धृष्णवः प्रति गावो ऽ रुषीर्यन्ति मातरः.. (१)

हे उषा! आप उजाला फैलाती हैं. आप के आने से पूर्व दिशा में प्रकाश हो जाता है. वीर अपने आयुधों को जैसे चमकाते हैं, वैसे ही आप संसार को चमचमा देती हैं. माता उषा प्रतिदिन आती और जाती हैं. (१)

उदपप्तन्नरुणा भानवो वृथा स्वायुजो अरुषीर्गा अयुक्षत.
अक्रन्नुषासो वयुनानि पूर्वथा रुशन्तं भानुमरुषीरशिश्रयुः.. (२)

उषा के आते ही लाल किरणें आकाश में छा गई हैं. अपनेआप जुते हुए रथ से वे चेतना

फैलाती हैं तथा सूर्य की सेवा करती हैं. (२)

अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः समानेन योजनेना परावतः.
इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे विश्वेदह यजमानाय सुन्वते.. (३)

जो यजमान अर्चना करते हैं, सोमरस को परिष्कृत करते हैं, अच्छे कार्य करते हैं, दान करते हैं, उन यजमानों को उषा अन्न व बल देती हैं और प्रकाशमान बना देती हैं. युद्ध में सज्जित वीर की भांति वे आकाश की शोभा बढ़ा देती हैं. (३)

अबोध्यग्निर्ज्म उदेति सूर्यो व्यू ३ षाश्चन्द्रा मह्यावो अर्चिषा.
आयुक्षातामश्विना यातवे रथं प्रासावीद्देवः सविता जगत्पृथक्.. (४)

अग्नि वेदी में प्रज्वलित हो गए हैं. सूर्य आकाश में उदित हो गए हैं. उषा महान हैं. वे अपनी तेजस्विता से सब को प्रसन्न कर देती हैं. हे अश्विनीकुमारो! आप अपने घोड़े रथ में जोतिए, यहां प्रस्थान करिए. सूर्य सभी को अलगअलग कार्य करने की प्रेरणा दे रहे हैं. (४)

युद्युञ्जाथे वृषणमश्विना रथं घृतेन नो मधुना क्षत्रमुक्षतम्.
अस्माकं ब्रह्म पृतनासु जिन्वतं वयं धना शूरसाता भजेमहि.. (५)

हे अश्विनीकुमारो! आप अपने रथ में घोड़े जोत कर हमारे यज्ञ में पहुंचिए. हमें घृत से पुष्ट करिए, हमें आत्मज्ञान दीजिए, हमें शत्रुओं को जीतने की क्षमता दीजिए. हम धन पा सकें. हम आप को भजते हैं. (५)

अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो जीराश्वो अश्विनोर्यातु सुष्टुतः.
त्रिबन्धुरो मघवा विश्वसौभगः शं न आ वक्षद्द्विपदे चतुष्पदे.. (६)

हे अश्विनीकुमारो! आप रथ पर विराज कर यज्ञ में पधारिए. आप का रथ तीन पहियों वाला, मधुर अमृतधारी, द्रुतगामी, अश्वजुत, सराहनीय व तीन लोगों के बैठने की जगह वाला है. वह प्रचुर ऐश्वर्यवान और सौभाग्यवान है. आप सब के प्रति कल्याणकारी भावना रख कर हमारे यज्ञ स्थान में पधारने की कृपा कीजिए. (६)

प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः. अच्छा वाज ꣳ सहस्रिणम्.. (७)

हे सोम! आप की झरने वाली धाराएं वैसे ही बरसती हैं, जैसे स्वर्गलोक से बरसात होती है. आप की धाराएं अन्न बरसाती हैं. (७)

अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति. हिरस्तुञ्जान आयुधा.. (८)

हे सोम! आप सर्वप्रिय, सर्वद्रष्टा व हरिताभ हैं. आप शत्रुओं पर आयुधों से प्रहार करते हैं. (८)

स मर्मृजान आयुभिरिभो राजेव सुव्रतः. श्येनो न व ꣳ सु षीदति.. (९)

आप को परिष्कृत करते

हैं. आप राजा के समान व अच्छे संकल्पों वाले हैं. बाज पक्षी जैसे वेगवान होता है, वैसे ही आप वेगवान हैं. आप बहुत वेग से जल में मिल जाते हैं. (९)

स नो विश्वा दिवो वसूतो पृथिव्या अधि. पुनान इन्दवा भर.. (१०)

हे सोम! आप स्वर्गलोक, पृथ्वीलोक और सर्वत्र व्याप्त हैं. आप हमें सब प्रकार का कल्याण प्रदान करने की कृपा कीजिए. (१०)

बीसवां अध्याय

पहला खंड

प्रास्य धारा अक्षरन्वृष्णः सुतस्यौजसः. देवाँ अनु प्रभूषतः.. (१)

हे सोम! आप का रस बलवर्द्धक है. देवताओं पर अनुकूल प्रभाव डालने वाला है. सोमरस की धाराएं वेगवती व द्रोणकलश में सुशोभित हो रही हैं. (१)

सप्तिं मृजन्ति वेधसो गृणन्तः कारवो गिरा. ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्यम्.. (२)

हे सोम! आप प्रकाशमान, उपासना के योग्य, अश्व के समान वेगशाली और विद्वान् हैं. अध्वर्युगण (पुरोहित) वाणीमय प्रार्थनाओं से सोमरस को परिष्कृत करते हैं. (२)

सुषहा सोम तानि ते पुनानाय प्रभूवसो. वर्धा समुद्रमुक्थ्य.. (३)

हे सोम! आप धनवान, उपासना के योग्य, पवित्र, बहुत शक्तिशाली हैं और रक्षक हैं. आप समुद्र के समान इस पात्र को भर देने की कृपा कीजिए. (३)

एष ब्रह्मा य ऋत्विय इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे.. (४)

हे इंद्र! आप मौसम के अनुसार बढ़ोतरी पाते हैं. आप यज्ञ जैसे कामों से बढ़ोतरी पाते हैं. आप बुद्धिमान और ज्ञानी हैं. हम आप की उपासना करते हैं. (४)

त्वामिच्छवसस्पते यन्ति गिरो न संयतः.. (५)

हे इंद्र! आप महान व बलवान हैं. सदाचारी पुरुष के पास जैसे कल्याण हेतु जाया जाता है, वैसे ही हमारी वाणीमय प्रार्थनाएं आप के पास पहुंचती हैं. (५)

वि स्रुतयो यथा पथा इन्द्र त्वद्यन्तु रातयः.. (६)

हे इंद्र! राजपथ से जैसे दूसरे पथ मिलते हैं, वैसे ही आप से भांतिभांति के दान अनुदान प्राप्त होते हैं. (६)

आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि.
तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्रं शविष्ठं सत्पतिम्.. (७)

हे इंद्र! आप अच्छे मन वाले हैं. आप सत्पति हैं. आप श्रेष्ठ मार्गगामी हैं. हम सुख और कल्याण के लिए उसी प्रकार आप की उपासना करते हैं, जिस प्रकार रथ की परिक्रमा की जाती है. (७)

तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवो विश्वया मते. आ पप्राथ महित्वना.. (८)

हे इंद्र! आप महिमाशाली व शक्तिशाली हैं. आप श्रेष्ठ कर्म करने वाले और समस्त विश्व में व्याप्त हैं. (८)

यस्य ते महिना महः परि ज्मायन्तमीयतुः. हस्ता वज्र हिरण्ययम्.. (९)

हे इंद्र! आप अपने हाथ में स्वर्णमय वज्र धारण करते हैं. आप की महिमा अनंत है. (९)

आ यः पुरं नार्मिणीमदीदेदत्यः कविर्नभन्यो ३ नार्वा.
सूरो न रुरुक्वां छतात्मा.. (१०)

हे अग्नि! आप सूर्य के समान प्रकाशमान हैं. यजमान यज्ञवेदी बनाते हैं. आप उन यज्ञवेदियों को प्रज्वलित करते हैं. आप वेगवान घोड़े की तरह हैं. वायु की भांति गतिशील हैं. आप दूरदर्शी और अनेक रूपों में सुशोभित होते हैं. (१०)

अभि द्विजन्मा त्री रोचनानि विश्वा रजा सि शुशुचानो अस्थात्.
होता यजिष्ठो अपा सधस्थे.. (११)

हे अग्नि! आप पृथ्वीलोक, अंतरिक्षलोक और स्वर्गलोक तीनों को प्रकाशित करते हैं. आप देवताओं को बुलाने वाले हैं. आप जल में बड़वानल के रूप में विराजमान रहते हैं. आप यज्ञस्थान में यज्ञाग्नि के रूप में सुशोभित होते हैं. (११)

अय स होता यो द्विजन्मा विश्वा दधे वार्याणि श्रवस्या.
मर्तो यो अस्मै सुतुको ददाश.. (१२)

हे अग्नि! जो द्विजन्मा है (ब्राह्मण), जो वीर हैं, जो जग के धारक हैं, वे यजमान अग्नि का आह्वान करने वाले हैं. अग्नि यजमानों को श्रेष्ठ संतान प्रदान करते हैं. (१२)

अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम्. ऋध्यामा त ओहैः.. (१३)

हे अग्नि! आप इंद्र को उसी तरह हवि पहुंचाते हैं जैसे उन के घोड़े उन्हें निर्धारित स्थान पर पहुंचाते हैं. आप वैसे ही हमारा कल्याण करते हैं, जैसे यज्ञ हमारा कल्याण करते हैं. आप हृदयग्राही हैं. हम उपासना और प्रार्थनाओं से आप को भजते हैं. (१३)

अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य दक्षस्य साधोः. रथीर्ऋतस्य बृहतो बभूथ.. (१४)

हे अग्नि! आप बल की बढ़ोतरी करने वाले, कल्याणकारी, मनोकामना पूरक हैं और ऋत् (सत्य) स्वरूप हैं. आप यज्ञ के मुख्य कर्ताधर्ता हैं. (१४)

एभिर्नो अर्कैर्भवा नो अर्वाङ्स्व ३ र्ण ज्योतिः.
अग्ने विश्वेभिः सुमना अनीकैः.. (१५)

हे अग्नि! आप सुमन (अच्छे मन वाले) और सूर्य की तरह ज्योतिमान हैं. आप सभी पूजनीय देवों के साथ हमारे यज्ञ में पधारने की कृपा कीजिए. (१५)

दूसरा खंड

अग्ने विवस्वदुषसश्चित्र ꣳ राधो अमर्त्य.
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः.. (१)

हे अग्नि! आप अमर, सर्वज्ञाता और सर्वद्रष्टा हैं. आप उषा से अनेक प्रकार का धन प्राप्त कीजिए. उस धन को आप यजमान को प्रदान करने व विशेष रूप से जाग्रत देवों को यज्ञ में लाने की कृपा कीजिए. (१)

जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनो ऽ ग्ने रथीरध्वराणाम्.
सजूरश्विभ्यामुषसा सुवीर्यमस्मे धेहि श्रवो बृहत्.. (२)

हे अग्नि! आप देवदूत, हव्यवाहक व मार्गों के रथी हैं. आप उषा और अश्विनीकुमारों सहित हमें शक्तिशाली और यशस्वी बनाने की कृपा कीजिए. (२)

विधुं दद्राण ꣳ समने बहूनां युवान ꣳ सन्तं पलितो जगार.
देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान.. (३)

हे यजमानो! भले ही कोई कई कार्य करने की क्षमता रखता हो, भले ही कोई कितना ही अधिक शत्रुनाशक हो, किंतु ऐसे युवा को भी वृद्धावस्था ग्रसित कर लेती है. वृद्धावस्था के बाद मृत्यु पाने वाला पुनः जन्म पा लेता है. यह सब इंद्र की कृपा से ही संभव है. हमें उन के इस महान कार्य को बारबार स्मरण करना चाहिए. (३)

शाक्मना शाको अरुणः सुपर्ण आ यो महः शूरः सनादनीडः.
यच्चिकेत सत्यमित्तन्न मोघं वसु स्पार्हमुत् जेतोत दाता.. (४)

हे इंद्र! आप दृढ़मन, सर्वशक्तिमान व सुपर्ण पक्षी के समान हैं. आप जो ठान लेते हैं, वही करते हैं. आप शक्तिपूर्वक जो वैभव प्राप्त करते हैं, उसे अपने उपासकों को दे देते हैं. (४)

ऐभिर्ददे वृष्ण्या पौ ꣳ स्यानि येभिरौक्षद्वृत्रहत्याय वज्री.
ये कर्मणः क्रियमाणस्य मह्न ऋते कर्ममुदजायन्त देवाः.. (५)

हे इंद्र! आप मरुद्गणों के सहयोग से पुरुषार्थपूर्ण काम करते हैं. आप वज्रधारी व वृत्रनाशक हैं. आप शत्रुनाश हेतु जलवृष्टि करते हैं. महान कार्य करने वाले अन्य देवता भी उन का सहयोग करते हैं. (५)

अस्ति सोमो अय ꣳ सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः. उत स्वराजो अश्विना.. (६)

हे सोम! सोमरस को मरुद्गणों के लिए निचोड़ा गया है. इसे मरुद्गण और अश्विनीकुमार सुरुचि से पीते हैं. (६)

पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पूतस्य वरुणः. त्रिषधस्थस्य जावतः.. (७)

हे सोम! परिष्कृत किया हुआ सोमरस तीन बरतनों में रखा हुआ है. मित्र, अर्यमा और वरुण उस को पीने की कृपा करें. (७)

उतो न्वस्य जोषमा इन्द्रः सुतस्य गोमतः. प्रातर्होतेव मत्सति.. (८)

हे इंद्र! प्रातः जैसे होता यज्ञ में उपासना करने की इच्छा रखते हैं, वैसे ही आप प्रातः सोमरस को पीने की इच्छा रखते हैं. वह परिष्कृत और गाय के दूध में मिला हुआ रहता है. (८)

बण्महाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि.
महस्ते सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महाँ असि.. (९)

हे सूर्य! आप महान हैं. हे प्रकाशकर्ता! आप महान हैं. हे स्तुत्य! आप महान हैं. हम आप की महानता की उपासना करते हैं. आप की महिमा महान है. (९)

बट् सूर्य श्रवसा महाँ असि सत्रा देव महाँ असि.
मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम्.. (१०)

हे सूर्य! आप का यश महान है. देवों में आप विशेष महान हैं. आप तम नाशक, देवताओं के नेता हैं. आप की ज्योति अमर व सर्वव्यापक है. (१०)

तीसरा खंड

उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते. उप नो हरिभिः सुतम्.. (१)

हे इंद्र! आप सोम के स्वामी हैं. आप के घोड़े मनोहर हैं. आप उन घोड़ों के द्वारा इस यज्ञ में अवश्य ही पधारने की कृपा कीजिए. (१)

द्विता यो वृत्रहन्तमो विद इन्द्रः शतक्रतुः. उप नो हरिभिः सुतम्.. (२)

हे इंद्र! आप सैकड़ों कर्म करने वाले हैं. आप वृत्रहंता हैं. आप अपने घोड़ों से इस यज्ञ में अवश्य ही पधारने की कृपा करें. (२)

त्व ꣳ हि वृत्रहन्नेषां पाता सोमानामसि. उप नो हरिभिः सुतम्.. (३)

हे इंद्र! आप वृत्रहंता एवं सोमरस पीने के इच्छुक हैं. आप अपने घोड़ों से हमारे यज्ञ में पधारने की कृपा कीजिए. (३)

प्र वो महे महेवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम्.
विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः.. (४)

हे इंद्र! मनुष्य अपने धन की बढ़ोतरी के लिए आप को सोमरस समर्पित करते हैं. किंतु

ऐसी श्रेष्ठ प्रार्थनाओं से आप की उपासना करते हैं. आप प्रजापालक हैं. आप हवि देने वाले यजमानों के पास पधारने की कृपा कीजिए. (४)

उरुव्यचसे महिने सुवृक्तिमिन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः.
तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः.. (५)

हे इंद्र! आप विशाल और महान हैं. यजमान आप की स्तुति व हवि अर्पित करते हैं. धीर पुरुष इंद्र के व्रतों को डगमगाने नहीं देते हैं. (५)

इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव सत्रा राजानं दधिरे सहध्यै. हर्यश्वाय बर्हया समापीन्.. (६)

हे इंद्र! आप सब के राजा हैं. आप के गुस्से के आगे कोई नहीं टिक सकता. आप की उपासना करने से शत्रु हारते हैं. हम अपने बंधुबांधवों को भी उन की उपासना के लिए प्रेरित करते हैं. (६)

यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय.
स्तोतारमद्दिधिषे रदावसो न पापत्वाय रꣳ सिषम्.. (७)

हे इंद्र! हम भी आप के समान धनपति होने की इच्छा रखते हैं. आप हम यजमानों को पोषक धन दीजिए. आप पापियों को धन मत दीजिए. हम उपासक आप से यही प्रार्थना करते हैं. (७)

शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद्विदे.
न हि त्वदन्यमघवन्न आप्यं वस्यो अस्ति पिता च न.. (८)

हे इंद्र! हम कहीं भी रहें पर आप के लिए यज्ञ करने के लिए समय व धन निकालते हैं. आप के अलावा हमारा कोई घनिष्ठ नहीं है, कोई पिता के समान सहायक भी (पालक) नहीं है. (८)

श्रुधी हवं विपिपानस्याद्रेर्बोधा विप्रस्यार्चतो मनीषाम्.
कृष्वा दुवाꣳ स्यन्तमा सचेमा.. (९)

हे इंद्र! आप हमारे आमंत्रण को ध्यान से सुनने की कृपा कीजिए. आप ब्राह्मणों व मनीषियों की प्रार्थना पर ध्यान दीजिए. आप हमें समान चित्त वाला मान कर हमारे अनुरोध पर ध्यान देने की कृपा कीजिए. (९)

न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य न सुष्टुतिमसुर्यस्य विद्वान्.
सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि.. (१०)

हे इंद्र! हम आप का नाम (यश) बढ़ाने वाली प्रार्थनाएं करते हैं (स्तोत्र गाते हैं). आप विद्वान् हैं. आप की शूरवीरता को हम जानते हैं. हम आप की उपासना करना नहीं छोड़ सकते. (१०)

भूरि हि ते सवना मानुषेषु भूरि मनीषी हवते त्वामित्.
मारे अस्मन्मघवं ज्योक्कः.. (११)

हे इंद्र! मनुष्य आप के लिए सोमयज्ञ करते रहे हैं. मनीषी आप के लिए हवन भी करते रहे हैं. यज्ञ करने वालों को आप अपनेआप से कभी दूर मत कीजिए. (११)

चौथा खंड

प्रो ष्वस्मै पुरोरथमिन्द्राय शूषमर्चत.
अभीके चिदु लोककृत्सङ्गे समत्सु वृत्रहा.
अस्माकं बोधि चोदिता नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु.. (१)

हे यजमानो! आप इंद्र के रथ के सामने उपासना करिए. आप शक्ति की उपासना कीजिए. इंद्र संसार के पालक, वृत्रहंता व प्रेरक हैं. हमारी हार्दिक इच्छा है कि हमारे शत्रुओं के धनुष की प्रत्यंचा टूट जाए. (१)

त्व सिंधू रवासृजो ऽ धराचो अहन्नहिम्.
अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे विश्वं पुष्यसि वार्यम्.
तं त्वा परि ष्वजामहे नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु.. (२)

हे इंद्र! आप मेघों को भेदते हैं. आप नदियों के बहाव में आने वाली रुकावटों को दूर करते हैं. हम आप को हवि भेंट करते हुए प्रसन्न होते हैं. हमारी इच्छा है कि हमारे शत्रुओं के धनुष की प्रत्यंचा टूट जाए. (२)

वि षु विश्वा अरातयो ऽ र्यो नशन्त नो धियः.
अस्तासि शत्रवे वधं यो न इन्द्र जिघा सति.
या ते रातिर्ददिर्वसु नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु.. (३)

हे इंद्र! हम पर आक्रमण करने वाले को आप स्वयं अपने शस्त्रों से मार डालते हैं. हमारी बुद्धि को आप प्रेरणा दीजिए. आप हमें धनादि दान कीजिए. हमारी हार्दिक इच्छा है कि हमारे शत्रुओं के धनुष की प्रत्यंचा टूट जाए. (३)

रेवाँ इद्रेवत स्तोता स्यात्त्वावतो मघोनः प्रेदु हरिवः सुतस्य.. (४)

हे इंद्र! आप धनवान हैं. आप के उपासक भी धनवान हो जाते हैं. आप के उपासकों को सब प्रकार का धन प्राप्त होता है. (४)

उक्थं च न शस्यमानं नागो रयिरा चिकेत. न गायत्रं गीयमानम्.. (५)

हे इंद्र! आप वाणी से स्तुति न करने वाले अज्ञानी के भी मन की भावना जानते हैं. स्तुति करने वालों के मन की भावना को भी जानते हैं. आप गाया जाता हुआ साम गायन भी जानते हैं. (५)

मा न इन्द्र पीयत्नवे मा शर्धते परा दाः. शिक्षा शचीवः शचीभिः.. (६)

हे इंद्र! आप हमें दुष्टों और अपमान करने वालों के भरोसे मत छोड़िए. आप पवित्र शिक्षा के द्वारा शची की तरह पवित्र धन प्रदान कीजिए. (६)

एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम्.
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो.. (७)

हे इंद्र! आप घोड़ों के द्वारा पधारिए. आप कण्व की स्तुति सुनिए. हे स्वर्गलोकवासी! हम आप के राज में सुखी हैं. (७)

अत्रा वि नेमिरेषामुरां न धूनुते वृकः.
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो.. (८)

हे इंद्र! सोम को कूटने वाले पत्थर भी मानो बोलते हुए आप को बुला रहे हैं. हे स्वर्गलोकवासी! हम आप के राज में सुखी हैं. (८)

आ त्वा ग्रावा वदन्निह सोमी घोषेण वक्षतु.
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो.. (९)

हे सोम! कूटने वाला पत्थर आवाज करता हुआ सोमरस निकाल रहा है. उस से निकलने वाली सोम की धारा वैसे ही कांप रही है, जैसे भेड़िए के डर से भेड़ कांपती है. हम स्वर्गलोकवासी इंद्र के राज में सुखी हैं. आप पधारिए. (९)

पवस्व सोम मन्दयन्निन्द्राय मधुमत्तमः.. (१०)

हे सोम! आप पवित्र हैं. आप मदमाते हुए इंद्र के लिए श्रेष्ठ रस झरने की कृपा कीजिए. (१०)

ते सुतासो विपश्चितः शुक्रा वायुमसृक्षत.. (११)

हे सोम! आप प्रकाशमान व बुद्धिवर्द्धक हैं. आप को वायु देव के लिए परिष्कृत किया जाता है. (११)

असृग्रं देववीतये वाजयन्तो रथा इव.. (१२)

हे सोम! आप को अन्न धन के इच्छुक यजमान ऐसे तैयार करते हैं, जैसे रथ को तैयार किया जाता है. (१२)

पांचवां खंड

अग्निꣳ होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः सूनुꣳ सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम्.
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा.

घृतस्य विभ्राष्टिमनु शुक्रशोचिष आजुह्वानस्य सर्पिषः.. (१)

हे अग्नि! आप को हम होता, धनवान, सर्वज्ञाता और ब्राह्मण (यज्ञवेत्ता) मानते हैं. आप ऊंचाई की ओर स्वयं अपना मार्ग बनाते हैं. आप घी की आहुतियों से चमकीले हो जाते हैं. हम आप की उपासना करते हैं. (१)

यजिष्ठं त्वा यजमाना हुवेम ज्येष्ठमङ्गिरसां विप्र मन्मभिर्विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः.
परिज्मानमिव द्या ई३ होतारं चर्षणीनाम्.
शोचिष्केशं वृषणं यमिमा विशः प्रावन्तु जूतये विशः.. (२)

हे अग्नि! आप मनीषी हैं. ब्राह्मणों द्वारा रचे गए मंत्रों से हम यज्ञ में आप का आह्वान करते हैं. आप होता, सर्वद्रष्टा व ऊंची लपटों वाले हैं. हम अपनी रक्षा के लिए आप की रक्षा करते हैं. (२)

स हि पुरू चिदोजसा विरुक्मता दीद्यानो भवति द्रुहन्तरः परशुर्न द्रुहन्तरः.
वीडु चिद्यस्य समृतौ श्रुवद्वनेव यत्स्थिरम्.
निष्षहमाणो यमते नायते धन्वासहा नायते.. (३)

हे अग्नि! परशु (फरसे) से जैसे शत्रुओं का नाश किया जाता है, वैसे ही आप की सामर्थ्य से शत्रुओं में भय फैल जाता है, उन का नाश हो जाता है. आप की कृपा से कितना ही बलशाली शत्रु क्यों न हो, वह आप के वशीभूत हो जाता है. आप धनुषधारी वीर जैसे हैं. आप पत्थर जैसे कठोर शत्रुओं का भी नाश कर देते हैं. (३)

अग्ने तव श्रवो वयो महि भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो.
बृहद्भानो शवसा वाजमुक्थ्यां ३ दधासि दाशुषे कवे.. (४)

हे अग्नि! आप की हवि सराहनीय है. आप कवि (विद्वान्) और प्रकाशमान हैं. आप की विशाल लपटें सुशोभित होती हैं. आप यजमानों को धन देते हैं. (४)

पावकवर्चाः शुक्रवर्चा अनूनवर्चा उदियर्षि भानुना.
पुत्रो मातरा विचरन्नुपावसि पृणक्षि रोदसी उभे.. (५)

हे अग्नि! आप की किरणें पवित्र, चमकीली व प्रखर हैं. आप सूर्य जैसे उदय होते हैं, फिर आकाश में पूर्ण प्रकाशमय हो जाते हैं. माता के साथ घूमते हुए पुत्र की तरह आप यजमानों के साथ रहते हैं. (५)

ऊर्जो नपाज्जातवेदः सुशस्तिभिर्मन्दस्व धीतिभिर्हितः.
त्वे इषः सं दधुर्भूरिवर्पसश्चित्रोतयो वामजाताः.. (६)

हे अग्नि! आप शक्तिमान व सर्वज्ञाता हैं. आप हमारी प्रशस्तियों को सुनिए, हमारी सेवा से संतुष्ट होइए. आप विलक्षण व असंख्य रूपधारी हैं. आप यजमानों द्वारा दी गई हवि को ग्रहण करने की कृपा कीजिए. (६)

इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व जन्तुभिरस्मे रायो अमर्त्य.
स दर्शतस्य वपुषो वि राजसि पृणक्षि दर्शतं क्रतुम्.. (७)

हे अग्नि! आप अमर हैं. आप प्रज्वलित होइए. आप हमारे धन की बढ़ोतरी कीजिए. आप यज्ञ में तेजस्वी स्वरूप धारण करते हैं. आप हमारे यज्ञ पर पूर्ण दृष्टि रखते हुए सुशोभित होते हैं. (७)

इष्कर्तारमध्वरस्य प्रचेतसं क्षयन्त राधसो महः.
रातिं वामस्य सुभगां महीमिषं दधासि सानसि रयिम्.. (८)

हे अग्नि! आप यज्ञ के कर्ताधर्ता हैं. आप विशिष्ट चेतना से संपन्न हैं. आप अपार धन के स्वामी हैं. हम आप की उपासना करते हैं. आप हमें महिमा, सौभाग्य, अन्न व धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (८)

ऋतावानं महिषं विश्वदर्शतमग्नि सुम्नाय दधिरे पुरो जनाः.
श्रुत्कर्ण सप्रथस्तमं त्वा गिरा दैव्यं मानुषा युगा.. (९)

हे अग्नि! आप सत्यवान व विश्वद्रष्टा हैं. आप हमारी स्तुति सुनने वाले हैं. सुख्यात व आप दिव्य हैं. हम वाणी से आप की प्रार्थना करते हैं. यजमान सुखवृद्धि के लिए आप को प्रतिष्ठित करते हैं. (९)

छठा खंड

प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्मभिः.
यस्य त्व सख्यमाविथ.. (१)

हे अग्नि! जो आप को मैत्री भाव से पा लेता है, वह यजमान श्रेष्ठ वीर और श्रेष्ठ कर्मवान हो जाता है. आप की रक्षा (आशीर्वाद) से उस का बेड़ा पार हो जाता है. (१)

तव द्रप्सो नीलवान्वाश ऋत्विय इन्धानः सिष्णवा ददे.
त्वं महीनामुषसामसि प्रियः क्षपो वस्तुषु राजसि.. (२)

हे अग्नि! आप को सोमरस से सींचा जाता है. वह प्रवहमान, इच्छित व प्रकाशमान है. उस को आप के लिए तैयार किया जाता है. आप महिमा वाली उषा देवियों के प्रिय हैं. आप रात को वस्तुओं में शोभित होते हैं. (२)

तमोषधीर्दधिरे गर्भमृत्वियं तमापो अग्निं जनयन्त मातरः.
तमित्समानं वनिनश्च वीरुधो ऽ न्तर्वतीश्च सुवते च विश्वहा.. (३)

हे अग्नि! जलधाराएं मां की तरह आप को मानती हैं. आप को ओषधियां गर्भ में धारण करती हैं. वनस्पतियां आप को गर्भ में धारण करती हैं और संसार के सम्मुख प्रकट करती हैं. (३)

अग्निरिन्द्राय पवते दिवि शुक्रो वि राजति। महिषीव वि जायते.. (४)

अग्नि इंद्र के लिए प्रज्वलित होती है. वह स्वर्गलोक में विशेष रूप से चमकती हुई शोभित होती है. वह महारानी के समान दिखाई देती है. (४)

यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति.
यो जागार तमय सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः.. (५)

जो जाग्रत हैं, ऋचाएं उन की कामना करती हैं. जो जाग्रत हैं, उन्हें ही सोम प्राप्त होते हैं. जो जाग्रत हैं, उन्हीं से सोम कहते हैं कि मैं तुम्हारा मित्र हूं. (५)

अग्निर्जागार तमृचः कामयन्ते ऽ ग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति.
अग्निर्जागार तमय सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः.. (६)

अग्नि जाग्रत हैं, अतः ऋचाएं उन की कामना करती हैं, सोम उन्हें प्राप्त होते हैं. अग्नि जाग्रत हैं, अतः उन्हीं से सोम कहते हैं कि मैं तुम्हारा मित्र हूं. (६)

नमः सखिभ्यः पूर्वसद्भ्यो नमः साकंनिषेभ्यः. युञ्जे वाच शतपदीम्.. (७)

यज्ञ में शुरू से प्रतिष्ठित देवताओं को हमारा नमस्कार. मित्र देवताओं को नमस्कार. सैकड़ों पदों वाली ऋचाएं देवताओं तक पहुंचने की कृपा करें. (७)

युञ्जे वाच शतपदीं गाये सहस्रवर्तनि. गायत्रं त्रैष्टुभं जगत्.. (८)

गायत्री, त्रिष्टुप् एवं जगती छंद में सामों को हजारों प्रकार से गाते हैं. सैकड़ों पदों वाली ऋचाएं देवताओं के लिए गाई जाती हैं. (८)

गायत्रं त्रैष्टुभं जगद्विश्वा रूपाणि सम्भृता. देवा ओका सि चक्रिरे.. (९)

हे अग्नि! गायत्री, त्रिष्टुप् और जगती छंद में निबद्ध सामों को अनेक रूपों में (अनेक प्रकार से) आप के लिए गाया जाता है. (९)

अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निरिन्द्रो ज्योतिर्ज्योतिरिन्द्रः. सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः.. (१०)

हे अग्नि! अग्नि ज्योति है, ज्योति अग्नि है. इंद्र ज्योति है, ज्योति इंद्र है. सूर्य ज्योति है, ज्योति ही सूर्य है. (१०)

पुनरूर्जा नि वर्तस्व पुनरग्न इषायुषा. पुनर्नः पाह्य हंसः.. (११)

हे अग्नि! आप ऊर्जा रूप में पधारिए. आप हमें अन्न प्रदान कीजिए. आप हमें दीर्घायु दीजिए. आप बारबार पापों से हमें बचाइए. (११)

सह रय्या नि वर्तस्वाग्ने पिन्वस्य धारया. विश्वप्स्न्या विश्वतस्परि.. (१२)

हे अग्नि! आप सभी धनों को साथ ले कर पधारने की कृपा कीजिए. संसार में आनंद

की धारा से हमें सींचने की कृपा कीजिए. (१२)

सातवां खंड

यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्. स्तोता मे गोसखा स्यात्.. (१)

हे इंद्र! आप धन के एकमात्र ईश्वर हैं. हम भी आप जैसे हो जाएं तो हमारे उपासक गायों के साथ हमारी प्रशंसा करेंगे. (१)

शिक्षेयमस्मै दित्सेय ꣳ शचीपते मनीषिणे. यदहं गोपतिः स्याम्.. (२)

हे शचीपति (इंद्र)! यदि हम गोपति हो जाएं तो अपने इन मनीषी उपासकों को धन देने की इच्छा करें और उन्हें धन भी दें. (२)

धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते. गामश्वं पिप्युषी दुहे.. (३)

हे इंद्र! आप अपने पुत्र यजमानों को इष्ट पदार्थ गाय, घोड़े आदि प्रदान करने की कृपा कीजिए. (३)

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन. महे रणाय चक्षसे.. (४)

हे जल! आप ऊर्जा धारक व सुखदायी हैं. आप हमें संग्राम के लिए बल प्रदान करने की कृपा कीजिए. (४)

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः. उशतीरिव मातरः.. (५)

हे जल! मां जैसे बालक को दूध (रस) से पोसती है, उसी तरह आप अपने कल्याणकारी रस से हमें पोसने की कृपा कीजिए. (५)

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ. आपो जनयथा च नः.. (६)

हे जल! आप हमें पुत्रपौत्र सहित क्षयकारी रोगों को जीतने की शक्ति उपजाने की कृपा कीजिए. (६)

वात आ वातु भेषज ꣳ शम्भु मयोभु नो हृदे. प्र न आयू ꣳ षि तारिषत्.. (७)

हे वायु! आप पधारिए. आप हमारे हृदय को खिलाइए (खुश रखिए). आप हमारे लिए कल्याणकारी ओषधियां ले कर आइए. आप हमें दीर्घायु प्रदान कीजिए. (७)

उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा. स नो जीवातवे कृधि.. (८)

हे वायु! आप के सिवाय कोई हमारा पिता, भाई व मित्र नहीं है. आप हमारे जीवन को सामर्थ्यवान बनाने की कृपा कीजिए. (८)

यददो वात ते गृहे ३ ऽ मृतं निहितं गुहा. तस्य नो धेहि जीवसे.. (९)

हे वायु! आप के पास गुप्त रूप से अमृत है. आप हमें जीने के लिए छिपा कर रखा हुआ वह गुप्त अमृत प्रदान करने की कृपा कीजिए. (९)

अभि वाजी विश्वरूपो जनित्र ꣳ हिरण्ययं बिभ्रदत्क ꣳ सुपर्णः.
सूर्यस्य भानुमृतुथा वसानः परि स्वयं मेधमृज्रो जजान.. (१०)

हे अग्नि! आप विश्वरूप व सुपर्ण (गरुड़) जैसे वेगवान हैं. आप उत्पत्ति स्थान (यज्ञवेदी) को सोने सा चमका देते हैं. आप ऋतु के अनुकूल सूर्य व मेघ को धारण करते हैं. (१०)

अप्सु रेतः शिश्रिये विश्वरूपं तेजः पृथिव्यामधि यत्संबभूव.
अन्तरिक्षे स्वं महिमानं मिमानः कनिक्रन्ति वृष्णो अश्वस्य रेतः.. (११)

हे अग्नि! आप का वीर्य घोड़े के वीर्य की तरह है, विश्वरूप है, तेजोमय है, जल में (बादल रूप में) आश्रय पाता है, पृथ्वी पर जीवन शक्ति के रूप में है. अंतरिक्ष में अपनी व्यापक महिमा को फैलाए हुए है. वह सर्वत्र अपनी व्यापकता लिए हुए है. (११)

अय ꣳ सहस्रा परि युक्ता वसानः सूर्यस्य भानुं यज्ञो दाधार.
सहस्रदाः शतदा भूरिदावा धर्ता दिवो भुवनस्य विश्पतिः.. (१२)

हे यजमानो! अग्नि हजारों किरणों वाले सूर्य के तेज को धारण करते हैं. वे यज्ञ का मूल आधार है. वे स्वर्गलोक व पृथ्वीलोक को धारण करते हैं. वे सैकड़ोंहजारों प्रकार के ऐश्वर्यदाता व विश्वपति हैं. (१२)

नाके सुपर्णमुप यत्पतन्त ꣳ हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा.
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम्.. (१३)

हे वेन! उपासक आप को हृदय से पाने की इच्छा करते हैं. इस इच्छा से वे ऊपर देखते हैं. तब वे आप को अंतरिक्षलोक में अग्नि (विद्युत् रूपधारी) के पास पाते हैं. आप वरुण के दूत हैं, सोने के पंखों वाले हैं, यम की योनि में हैं व विश्व का भरणपोषण करने वाले हैं. (१३)

ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थात्प्रत्यङ्चित्रा बिभ्रदस्यायुधानि.
वसानो अत्क ꣳ सुरभिं दृशे क ꣳ स्वा ३ र्ण नाम जनत प्रियाणि.. (१४)

हे वेन! आप ऊंचे स्वर्गलोक के पास रहते हैं. आप अद्भुत आयुध धारण कर के सुशोभित होते हैं. आप सूर्य की तरह प्राणियों के लिए जल धारण कर के उसे बरसाते हैं. (१४)

द्रप्सः समुद्रमभि यज्जिगाति पश्यन् गृध्रस्य चक्षसा विधर्मन्.
भानुः शुक्रेण शोचिषा चकानस्तृतीये चक्रे रजसि प्रियाणि.. (१५)

हे वेन! जब आप समुद्र के जल को ले कर गिद्ध जैसी दृष्टि से देखते हुए मेघों के पास

पहुंचते हैं तब सूर्य की तरह चमकते हुए तीसरे लोक से प्राण जल बरसाते हैं. (१५)

इक्कीसवां अध्याय

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्.
सङ्क्रन्दनो ऽ निमिष एकवीरः शत ꣳ सेना अजयत्साकमिन्द्रः.. (१)

हे इंद्र! आप बैल की तरह भीमकाय, दुष्टनाशक, वैरियों के लिए क्षोभदायी, स्फूर्तिवान व आलस्यरहित हैं. अकेले आप ही ऐसे वीर हैं, जो सारी शत्रु की सेना को पराजित कर देते हैं. (१)

सङ्क्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना.
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा.. (२)

हे इंद्र! आप शत्रुओं को क्रंदन करा (रुला) देने वाले हैं. आप आलस्यरहित हैं. आप विजेता व निपुण हैं. योद्धा इंद्र की सहायता से युद्ध जीत कर शत्रुओं को भगाते हैं. (२)

स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी स ꣳ स्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन.
स ꣳ सृष्टजित्सोमपा बाहुशर्ध्यू ३ ग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता.. (३)

इंद्र युद्ध (विद्या) में दक्ष हैं. वे सृष्टि के विजेता, सोमरस पीने वाले, बाहुबली, धनुर्धारी व शत्रुओं के नाशक हैं. वे तलवार और बाण धारण करने वाले योद्धाओं के सहयोग से शत्रुओं को वशीभूत कर लेते हैं. (३)

बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहामित्राँ अपबाधमानः.
प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम्.. (४)

हे इंद्र! आप सब के पालनहार, राक्षसों के नाशक, शत्रुओं के बाधक, सेना के विध्वंसक व हमारे रथों के रक्षक हैं. युद्ध में हम विजयी हों. (४)

बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमान उग्रः.
अभिवीरो अभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित्.. (५)

हे इंद्र! आप सब के बल को जानते हैं. आप अत्यंत वीर, स्थविर और उग्रता सहन करने वाले हैं. आप बल सहित ही पैदा हुए हैं. आप महावीर व गोपालक हैं. आप विजयी रथ में बैठने की कृपा कीजिए. (५)

गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा.
इम ꣳ सजाता अनु वीरयध्वमिन्द्र ꣳ सखायो अनु स ꣳ रभध्वम्.. (६)

हे इंद्र! आप दुश्मनों के गढ़ भेद देते हैं. आप वज्रबाहु, शत्रुनाशक, विजेता, गोपालक, नेता और पराक्रमशील हैं. शत्रु पर क्रोध करने में आप इंद्र का अनुगमन कीजिए. (६)

अभि गोत्राणि सहसा गाहमानो ऽ दयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः.
दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्यो ३ स्माक ꣳ सेना अवतु प्र युत्सु.. (७)

हे इंद्र! आप हमारी व सेनाओं की रक्षा कीजिए. आप अद्‌भुत युद्धवीर, शत्रुजित्, स्थिर, वीर, अनीति के प्रति क्रोधी व शत्रु पर दया न करने वाले हैं. आप शत्रु के गढ़ भेदने वाले हैं. (७)

इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः.
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्.. (८)

हे इंद्र! आप हमारे नेता होइए. बृहस्पति सब से आगे होने की कृपा करें. सोम दक्षिण यज्ञ के संचालक हैं. वे भी अग्रगामी हों. मरुद्‌गण शत्रुनाशक हैं. वे देवताओं की सेना में सब से आगे होने की कृपा करें. (८)

इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुता ꣳ शर्ध उग्रम्.
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्.. (९)

हे इंद्र! आप शक्तिमान हैं. वरुण राजा हैं. मरुद्‌गण तीव्र बल वाले हैं. आप शत्रु के डेरों के नाशक, महान मन वाले व विजयशील हैं. देवताओं का जयघोष सर्वत्र व्याप्त हो, सर्वत्र गूंजे. सभी देवताओं का हमें सहयोग प्राप्त हो. (९)

उद्‌वृर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वनां मामकानां मना ꣳ सि.
उद्‌वृत्रहन्वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः.. (१०)

हे इंद्र! आप क्षमतावान हैं. आप अस्त्रशस्त्रधारी युद्धवीरों के मन में उत्साह भरें. आप हमारे मन में भी जोश भरें. आप हमारे युद्धरथ के घोड़ों को वेगवान बनाइए. विजयी हो कर आते हुए हमारे रथों के जयघोष गूंजें. (१०)

अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु.
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माँ उ देवा अवता हवेषु.. (११)

हे इंद्र! आप युद्धों में हमारी सेना के रक्षक होइए. हमारे बाण शत्रुविजय करें. हमारे वीर युद्धों में विजय प्राप्त करें. यज्ञ में देवता हमारी रक्षा करें. हमारे ध्वजों पर विजय अंकित हो. (११)

असौ या सेना मरुतः परेषामभ्येति न ओजसा स्पर्धमाना.
तां गूहत तमसापव्रतेन यथैतेषामन्यो अन्यं न जानात्.. (१२)

हे मरुद्‌गणो! बल से स्पर्धा करती हुई शत्रुसेना हम पर आक्रमण करे तो आप उस सेना

को घने अंधकार से घेर लीजिए, जिस से वे एकदूसरे को पहचान तक न सकें और अपनी ही सेना का संहार कर दें. (१२)

अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि.
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम्.. (१३)

हे पाप के देवता! आप शत्रुओं के चित्त प्रति लोभी बनाइए. आप शत्रुओं के अंगों को भी कस लीजिए. आप शोकों की ज्वालाओं से शत्रुओं का हृदय दहलाइए. आप घनघोर अंधेरा कर के शत्रु को अचेत (बेहोश) बना दीजिए. (१३)

प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु.
उग्रा वः सन्तु बाहवो ऽ नाधृष्या यथासथ.. (१४)

हे वीर मनुष्यो! इंद्र आप को सुखशांतिमय बनाने की कृपा करें. आप के बाहु उग्र हों. आप को शत्रु अधीन न बना सके. आप उन पर आक्रमण कर के विजय प्राप्त कीजिए. (१४)

अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मस ꣳ शिते.
गच्छामित्रान्प्र पद्यस्व मामीषां कं च नोच्छिषः.. (१५)

हमारे बाण वेदमंत्रों और स्तुतियों से प्रेरित किए गए हैं. वे बाण जब हम छोड़ें तो शत्रु कितना ही दूर क्यों न हो, उस पर जा कर गिरें. उन शत्रुओं में से कोई भी बच न पाए. (१५)

कङ्काः सुपर्णा अनु यन्त्वेनान् गृध्राणामन्नमसावस्तु सेना.
मैषां मोच्यघहारश्च नेन्द्र वया ꣳ स्येनाननुसंयन्तु सर्वान्.. (१६)

हे इंद्र! बाण मांसाहारी बाज की तरह शत्रुओं का अनुगमन (पीछा) करें. शत्रुओं की सेना गिद्धों का भोजन हो जाए. उन का कोई अवशेष न रह पाए. पाप में लगे पापी भी बच न पाएं. मांसाहारी पक्षी उन का भी अनुगमन (पीछा) करें. (१६)

अमित्रसेनां मघवन्नस्मां छत्रुयतीमभि. उभौ तामिन्द्र वृत्रहन्नग्निश्च दहतं प्रति.. (१७)

हे इंद्र! आप अमित्रों की सेना का नाश कीजिए. आप वृत्रहंता व धनवान हैं. आप और अग्नि मिल कर शत्रुओं की सेना को भस्म करने की कृपा करें. (१७)

यत्र बाणाः संपतन्ति कुमारु विशिखा इव.
तत्र नो ब्रह्मणस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु.. (१८)

जहां बाण इस तरह गिरते हैं, जैसे बिना चोटी वाले चंचल बालक गिर रहे हों, वहां अदिति और ब्रह्मणस्पति हमें सुख देने की कृपा करें. वे सदैव हमारा कल्याण करने की कृपा करें. (१८)

वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज.
वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन्नमित्रस्याभिदासतः.. (१९)

हे इंद्र! आप राक्षसों व हिंसकों का विनाश करने की कृपा कीजिए. आप वृत्रासुर जैसे राक्षसों की ठोड़ी तोड़ दीजिए. आप अमित्रों का क्रोध और घमंड दूर करने की कृपा कीजिए. (१९)

वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः.
यो अस्माँ अभिदासत्यधरं गमया तमः.. (२०)

हे इंद्र! हमारी सेना युद्धों में शत्रुओं को पराजित कर दे. हमारे शत्रु मुंह नीचा कर के हमारे सामने आएं. आप उन शत्रुओं को पतन के गर्त में डाल दीजिए, जो हमें अपने अधीन (वश में) करना चाहते हैं. (२०)

इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ युवानावनाधृष्यौ सुप्रतीकावसह्यौ.
तौ युञ्जीत प्रथमौ योग आगते याभ्यां जितमसुराणा ं३ सहो महत्.. (२१)

इंद्र के बाहु हाथी की सूंड़ की तरह हैं. आप सर्वप्रथम उन भुजाओं को युद्ध में प्रेरित करने की कृपा कीजिए. आप बलजित्, स्थिर व जवान हैं. आप पर किसी का वश नहीं चल सकता. (२१)

मर्माणि ते वर्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्.
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु.. (२२)

हे इंद्र! हम आप के मर्म स्थानों को कवच से ढकते हैं. राजा सोम आप को अमृतमय बनाने की कृपा करें. वरुण आप को सुख प्रदान करने की कृपा करें. देवता आप को प्रसन्नता प्रदान करें. (२२)

अन्धा अमित्रा भवताशीर्षाणो ऽ हय इव.
तेषां वो अग्निनुन्नानामिन्द्रो हन्तु वरंवरम्.. (२३)

हे इंद्र! सिर रहित सांप जैसे अंधा होता है, वैसे ही हमारे अमित्र हो जाएं. उन में से जो अग्नि की ज्वाला से बच जाएं, उन बचे हुए शत्रुओं को आप स्वयं नष्ट करने की कृपा कीजिए. (२३)

यो नः स्वो ऽ रणो यश्च निष्ठ्यो जिघा ं३ सति.
देवास्त ं३ सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरं ं३ शर्म वर्म ममान्तरम्.. (२४)

जो हमारे अपने हो कर विश्वासपूर्वक छल से हमें मारना चाहते हैं, देवगण उन सभी धूर्तों को नष्ट करने की कृपा करें. वेदों के मंत्र हमारे मर्मस्थान के कवच हैं. वे हमें सुख प्रदान करने की कृपा करें. (२४)

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः.
सृक ं३ स ं३ शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रूं ताढि विमृधो नुदस्व.. (२५)

हे इंद्र! आप पर्वत में रहने वाले शेर के समान भयंकर हैं. दूर से यहां आ कर दूर तक मारक तीखे वज्र से शत्रुओं का नाश करने की कृपा कीजिए. आप लड़ाकू शत्रुओं को दूर करने की कृपा कीजिए. (२५)

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः.
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः.. (२६)

हे देवगणो! आप की कृपा से कानों से कल्याणकारी वचन सुनें, आंखों से मंगलमय दृश्य देखने को मिलें. हम स्वस्थ हाथपैर और अंगों से आप की स्तुति कर सकें. आप देवताओं की कृपा से हमें जो भी आयु प्राप्त हुई है, उस का हम स्तुतिपूर्वक सदुपयोग कर सकें. (२६)

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः.
स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु.. (२७)

इंद्र हमारा कल्याण करने की कृपा करें. सर्वज्ञाता पूषा हमारा कल्याण करने की कृपा करें. अहिंसक अस्त्रशस्त्र वाले गरुड़ व ज्ञान धारण करने वाले बृहस्पति हमारा कल्याण करने की कृपा करें. (२७)

(सामवेद पूर्ण)